इङ्गलैण्ड का इतिहास

A
HAND BOOK
OF

ENGLISH HISTORY



Recommended as a Text Book for the High School Classes by the Boards of High School and Intermediate Education, U P C P & Rajputana

लेखक

रामकृष्ण माथुर, एम० ए०



प्रकाशक

एस० एस० माथुर,

आनन्द पुस्तकमाला आफिस

कानपुर



चौथी बार } २५०० प्रति }

१९३१

{ मूल्य { २)

PRINTER—

S K MATHUR,

The Gopal Printing Press, Cawnpore

प्रस्तावना

जो मनुष्य भारतवर्ष के स्कूलों के लिये इङ्गलैण्ड का इतिहास लिखने बैठता है उसे अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यद्यपि क्लाइव को प्लासी जीत और अंग्रेजी राज्य की नींव इस देश में डाले लगभग १७५ वर्ष बीत चुके हैं, तथापि बहुत कम भारत निवासियों को इङ्गलैण्ड के इतिहास का ज्ञान प्राप्त होसका है। विशेष कर हाई स्कूल कक्षाओं के बालक, जिनके लिये यह पुस्तक लिखी गई है, उस से पूर्णतः अनभिज्ञ हैं। इसके अतिरिक्त एक अड़चन यह भी है कि अन्य विषयों का विषय-क्रम भारी होने के कारण उनके पास इङ्गलैण्ड का इतिहास पठन करने के लिये बहुत कम समय बचता है। परन्तु इन कठिनाइयों के उपस्थित होने के कारण उसका गौरव कम नहीं होता क्योंकि यूरप में रोम तथा यूनान को छोड़ कर केवल इङ्गलैण्ड ही एक ऐसा देश है जिसका इतिहास अन्य यूरपियन देशों के इतिहासों को प्राचीन काल से अब तक बड़ी मात्रा में प्रभावित करता रहा है। इन बातों को ध्यान में रखते हुये इस पुस्तक में आदि से अन्त तक घटनाओं को सूक्ष्म रीति से इस प्रकार वर्णन करने का प्रयत्न किया गया है कि उनका क्रमबद्ध और कार्य्य-कारण सम्बन्ध तथा उनके शिक्षादायक आदर्श विद्यार्थियों के हृदयों में भली प्रकार से अङ्कित होजावें।

इस उद्देश की पूर्त्ति के लिये विभिन्न प्रणाली और साधनों का आश्रय लिया गया है। इन में से एक साधन घटनाओं का उचित रूप से क्रमबद्ध करना है। समस्त पुस्तक पाँच खण्डों में विभक्त की गई है जो घटना क्रम से चार प्रसिद्ध तिथियों अर्थात् सन् १४८५ ई०, सन् १६०३ ई०, सन् १६८८ ई० तथा सन् १८१५ ई०

मे अलग होते हैं। प्रथम खण्ड गुलाबों के युद्ध के अन्त तथा हेनरी सप्तम के सिंहासनारूढ होने के साथ २ समाप्त होजाता है। इस के अन्तर्गत प्राचीन तथा मध्यवर्ती काल का वर्णन है। यह काल इतना विस्तृत है कि यदि इसका इतिहास एक पृथक् पुस्तक में स्पष्ट रीति से वर्णन किया जावे तो एक छ सात सौ पृष्ठों की पुस्तक लिखी जा सकती है। दूसरे, हाई स्कूल परीक्षा के लिये केवल आधुनिक काल का इतिहास जानने की आवश्यकता है। अतएव प्रथम खण्ड में केवल उन विषयों पर संक्षेप रूप से विचार प्रगट किया गया है जिनका जानना आधुनिक काल का इतिहास समझने के लिये अति आवश्यक है। यों तो पार्लियामेण्ट की उत्पत्ति तथा विकास, धार्मिक संस्थापना तथा उन्नति, सामाजिक दशा, व्यापार तथा कला-कौशल की वृद्धि, इत्यादि २ सभी विषयों की व्याख्या के लिये पूर्ण प्रयत्न किया गया है परन्तु विशेष ध्यान प्रथम चार अध्यायों पर दिया गया है जिनमें इतिहास जानने की आवश्यकता, इतिहास तथा भूगोल का पारस्परिक सम्बन्ध, बृटिश द्वीपसमूह का भूगोल और अंग्रेजी साम्राज्य के विस्तार का वर्णन हुआ है।

शेष चार खण्डों के शासन और शासकों का हाल अलग अलग अध्यायों में वर्णन किया गया है। एलिजबेथ, जार्ज तृतीय तथा महारानी विक्टोरिया की भांति जिन शासकों ने बहुत समय तक शासन किया है उनके राज्यकाल का वर्णन, विषयों के अनुसार, कई भागों में हुआ है। इस से दो विशेष लाभ हैं। प्रथम—विद्यार्थी को राज्यकाल का व्यापक, विस्तृत तथा दीर्घ-कालीन होना खलेगा नहीं। दूसरे—उसे भिन्न २ विषयों पर अलग २ ध्यान देने तथा उनकी महत्ता समझने का सुअवसर प्राप्त होगा। जो राजा, प्रधान मन्त्री तथा राजनीतिज्ञ पुरुष बहुत प्रसिद्ध हुये हैं उनके चरित्र तथा सिद्धान्त भली प्रकार दर्शाये गये हैं और यह भी बताया गया है कि इनकी सहायता से उन्हों ने भिन्न २ कठिनाइयों का सामना किस प्रकार तथा कितनी सफलता पूर्वक किया है। किसी देश

का इतिहास पढने तथा पढाये जाने का एक मुख्य उद्देश उस से शिक्षा ग्रहण करना है, अतएव, चरित्र के अतिरिक्त मार्टिन लूथर, क्रॉम्वेल, नेपोलियन बोनापार्ट और ग्लेडस्टन जैसे ऐतिहासिक नरपुगवों के प्रारम्भिक जीवन और उनके कार्यक्षेत्र में सफल अथवा असफल होने के कारणों पर पूरा प्रकाश डाला गया है। जहा तक सम्भव होसका है, इन वीरवरों के चित्र भी दे दिये गये हैं। आदि से अंत तक इस बात का पूरा ध्यान रक्खा गया है कि पुस्तक बढने न पावे और ऐसी अनावश्यक घटनाओं का समावेश न होने पावे जो हाई स्कूल क्लासों के विद्यार्थियों की समझ के बाहर है।

विद्यार्थियों की सुविधा के विचार से, प्रत्येक अध्याय के अन्त में, कुछ प्रश्न अभ्यास के लिये दे दिये गये हैं। इन में से कुछ प्रश्न संयुक्त प्रदेश, पंजाब, मध्यप्रदेश तथा बिहार उडीसा आदि प्रान्तों के हाई स्कूल तथा मैट्रीकूलेशन परीक्षाओं में से लिये गये हैं, परन्तु विशेष कर प्रश्न ऐसे हैं जो अपनी ओर से बनाकर विद्यार्थी की समझ की जाँच करने के अभिप्राय से दिये हैं। प्रत्येक विद्यार्थी का कर्तव्य है कि किसी अध्याय को पढ़ने के पश्चात् उसके अन्त में दिये हुए प्रश्नों के उत्तर सोचने का प्रयत्न अवश्य करे। अध्यापकगण से भी विनम्र प्रार्थना है कि इस विषय में विद्यार्थियों को पूर्ण सहायता दें और उन पुस्तकों को स्कूल के पुस्तकालय में खोजने का कष्ट उठायें जिनके पढने की सलाह कहीं २ पर विद्यार्थी को दी गई है। प्रश्नावली तथा अभ्यास के अतिरिक्त एक विशेष बात इस पुस्तक में यह भी रक्खी गई है कि जहाँ तक सम्भव हो सका है भिन्न २ कालों के सामाजिक जीवन, व्यापार और कला कौशल की उन्नति, पार्लियामेण्ट की बनावट आदि आवश्यक विषयों पर पृथक् अध्यायों में विचार प्रकट किये गये हैं। पुस्तक के अन्त में तिथियों, राजाओं तथा प्रधान मन्त्रियों की एक सूची दे दी गई है जिस से विद्यार्थी को अपना पाठ याद करने में बड़ी सहायता मिलेगी। चित्रों, मानचित्रों और रणक्षेत्रों के मानचित्रों की कमी भी पूरी कर दी गई है।

से अलग होते हैं। प्रथम खण्ड गुलाबों के युद्ध के अन्त तथा हेनरी सप्तम के सिंहासनारूढ़ होने के साथ २ समाप्त होजाता है। इस के अन्तर्गत प्राचीन तथा मध्यवर्ती काल का वर्णन है। यह काल इतना विस्तृत है कि यदि इसका इतिहास एक पृथक् पुस्तक में स्पष्ट रीति से वर्णन किया जावे तो एक छः सात सौ पृष्ठों की पुस्तक लिखी जा सकती है। दूसरे, हाई स्कूल परीक्षा के लिये केवल आधुनिक काल का इतिहास जानने की आवश्यकता है। अतएव प्रथम खण्ड में केवल उन विषयों पर सक्षेप रूप से विचार प्रगट किया गया है जिनका जानना आधुनिक काल का इतिहास समझने के लिये अति आवश्यक है। यों तो पार्लियामेण्ट की उत्पत्ति तथा विकास, धार्मिक सम्स्थापना तथा उन्नति, सामाजिक दशा, व्यापार तथा कला-कौशल की वृद्धि, इत्यादि २ सभी विषयों की व्याख्या के लिये पूर्ण प्रयत्न किया गया है परन्तु विशेष ध्यान प्रथम चार अध्यायों पर दिया गया है जिनमें इतिहास जानने की आवश्यकता, इतिहास तथा भूगोल का पारस्परिक सम्बन्ध, बृटिश द्वीपसमूह का भूगोल और अंग्रेजी साम्राज्य के विस्तार का वर्णन हुआ है।

शेष चार खण्डों के शासन और शासकों का हाल अलग अलग अध्यायों में वर्णन किया गया है। एलिज़बेथ, जार्ज तृतीय तथा महारानी विक्टोरिया की भांति जिन शासकों ने बहुत समय तक शासन किया है उनके राज्यकाल का वर्णन, विषयों के अनुसार, कई भागों में हुआ है। इस से दो विशेष लाभ हैं। प्रथम—विद्यार्थी को राज्यकाल का व्यापक, विस्तृत तथा दीर्घ—कालीन होना खलेगा नहीं। दूसरे—उसे भिन्न २ विषयों पर अलग २ ध्यान देने तथा उनकी महत्ता समझने का सुअवसर प्राप्त होगा। जो राजा, प्रधान मन्त्री तथा राजनीतिज्ञ पुरुष बहुत प्रसिद्ध हुये हैं उनके चरित्र तथा सिद्धान्त भली प्रकार दर्शाये गये हैं और यह भी बताया गया है कि इनकी सहायता से उन्हों ने भिन्न २ कठिनाइयों का सामना किस प्रकार तथा कितनी सफलता पूर्वक किया है। किसी देश

से अलग होते हैं। प्रथम खण्ड गुलाबों के युद्ध के अन्त तथा हेनरी सप्तम के सिंहासनारूढ होने के साथ २ समाप्त होजाता है। इस के अन्तर्गत प्राचीन तथा मध्यवर्ती काल का वर्णन है। यह काल इतना विस्तृत है कि यदि इसका इतिहास एक पृथक् पुस्तक में स्पष्ट रीति से वर्णन किया जावे तो एक छः सात सो पृष्ठों की पुस्तक लिखी जा सकती है। दूसरे, हाई स्कूल परीक्षा के लिये केवल आधुनिक काल का इतिहास जानने की आवश्यकता है। अतएव प्रथम खण्ड में केवल उन विषयों पर संक्षेप रूप से विचार प्रगट किया गया है जिनका जानना आधुनिक काल का इतिहास समझने के लिये अति आवश्यक है। यों तो पार्लियामेण्ट की उत्पत्ति तथा विकास, धार्मिक संस्थापना तथा उन्नति, सामाजिक दशा, व्यापार तथा कला-कौशल की वृद्धि, इत्यादि २ सभी विषयों की व्याख्या के लिये पूर्ण प्रयत्न किया गया है परन्तु विशेष ध्यान प्रथम चार अध्यायों पर दिया गया है जिनमें इतिहास जानने की आवश्यकता, इतिहास तथा भूगोल का पारस्परिक सम्बन्ध, ब्रिटिश द्वीपसमूह का भूगोल और अंग्रेजी साम्राज्य के विस्तार का वर्णन हुआ है।

शेष चार खण्डों के शासन और शासकों का हाल अलग अलग अध्यायों में वर्णन किया गया है। एलिजबेथ, जार्ज तृतीय तथा महारानी विक्टोरिया की भांति जिन शासकों ने बहुत समय तक शासन किया है उनके राज्यकाल का वर्णन, विषयों के अनुसार, कई भागों में हुआ है। इस से दो विशेष लाभ हैं। प्रथम–विद्यार्थी को राज्यकाल का व्यापक, विस्तृत तथा दीर्घ-कालीन होना खलेगा नहीं। दूसरे–उसे भिन्न २ विषयों पर अलग २ ध्यान देने तथा उनकी महत्ता समझने का सुअवसर प्राप्त होगा। जो राजा, प्रधान मन्त्री तथा राजनीतिज्ञ पुरुष बहुत प्रसिद्ध हुये हैं उनके चरित्र तथा सिद्धान्त भली प्रकार दर्शाये गये हैं और यह भी बताया गया है कि इनकी सहायता से उन्हों ने भिन्न २ कठिनाइयों का सामना किस प्रकार तथा कितनी सफलता पूर्वक किया है। किसी देश

का इतिहास पढ़ने तथा पढ़ाये जाने का एक मुख्य उद्देश उस से शिक्षा ग्रहण करना है, अतएव, चरित्र के अतिरिक्त मार्टिन लूथर, क्रॉम्वेल, नैपोलियन बोनापार्ट और ग्लेडस्टन जैसे ऐतिहासिक नरपुगवों के प्रारंभिक जीवन और उनके कार्य्यक्षेत्र में सफल अथवा असफल होने के कारणों पर पूरा प्रकाश डाला गया है। जहा तक सम्भव होसका है, इन वीरवरों के चित्र भी दे दिये गये हैं। आदि से अंत तक इस बात का पूरा ध्यान रक्खा गया है कि पुस्तक बढने न पावे और ऐसी अनावश्यक घटनाओं का समावेश न होने पावे जो हाई स्कूल क्लासों के विद्यार्थियों की समझ के बाहर है।

विद्यार्थियों की सुविधा के विचार से, प्रत्येक अध्याय के अन्त में, कुछ प्रश्न अभ्यास के लिये दे दिये गये है। इन में से कुछ प्रश्न संयुक्त प्रदेश, पंजाब, मध्यप्रदेश तथा बिहार-उड़ीसा आदि प्रान्तो के हाई स्कूल तथा मेट्रीकूलेशन परीक्षाओं में से लिये गये है, परन्तु विशेष कर प्रश्न ऐसे है जो अपनी ओर से बनाकर विद्यार्थी की समझ की जाँच करने के अभिप्राय से दिये है। प्रत्येक विद्यार्थी का कर्तव्य है कि किसी अध्याय को पढ़ने के पश्चात् उसके अन्त मे दिये हुए प्रश्नो के उत्तर सोचने का प्रयत्न अवश्य करे। अध्यापकगण से भी विनम्र प्रार्थना है कि इस विषय में विद्यार्थियों का पूर्ण सहायता दें और उन पुस्तकों को स्कूल के पुस्तकालय में खोजने का कष्ट उठाये जिनके पढ़ने की सीख कहीं २ पर विद्यार्थी को दी गई हैं। प्रश्नावली तथा अभ्यास के अतिरिक्त एक विशेष बात इस पुस्तक में यह भी रक्खी गई है कि जहाँ तक सम्भव हो सका है भिन्न २ कालो के सामाजिक जीवन, व्यापार और कला कौशल की उन्नति, पार्लियामेण्ट की बनावट आदि आवश्यक विषयों पर पृथक् अध्यायों मे विचार प्रकट किये गये है। पुस्तक के अन्त में तिथियों, राजाओं तथा प्रधान मन्त्रियों की एक सूची दे दी गई है जिस से विद्यार्थी को अपना पाठ याद करने में बड़ी सहायता मिलेगी। चित्रों, मानचित्रों और रणक्षेत्रों के मानचित्रों की कमी भी पूरी कर दी गई है।

भाषा का विशेष ध्यान रक्खा गया है। जिन शब्दों का प्रयोग हम दैनिक वार्तालाप में करते हैं उन्हीं शब्दों का प्रयोग इस पुस्तक में किया गया है। जहां कोई कठिन शब्द पहली बार आया है वहां वह अंग्रेजी में भी लिख दिया गया है। हिज्जों का विशेष ध्यान रक्खा गया है। कहीं २ अंग्रेजी शब्दों का अनुवाद करने की आवश्यकता प्रतीत हुई है। ऐसे स्थानों में आदि से अन्त तक इस नियम का पालन किया गया है कि जिन शब्दों का अनुवाद ठीक ठीक मीठे वाक्यों में हो सका है केवल उनका अनुवाद किया गया है और शेष ज्यों के त्यों अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषाओं में लिख दिये गये हैं।

पुस्तक लिखने के पूर्व बड़ी छान बीन करनी पड़ी है। इसके लिखने में टाउन, ग्रीनी, गार्डिनर, ट्रेवेलियन, रावर्टसन और मेरियट की पुस्तकों से अधिक सहायता मिली है। अंग्रेजी साम्राज्य की बढ़ती के विषय में सीले, केर्रे और राम्जे मियोर आदि के ग्रन्थों से सहायता मिली है। पोलार्ड, मेटलेण्ड तथा टास्वेललैङ्गमीड की पुस्तकों से पार्लियामेण्ट की रचनाविधान तथा विकास के विषय में काम लिया गया है। क्रॉम्वेल, वालपोल, छोटे और बड़े पिट आदि नीतिज्ञों पर एक एक दो दो पुस्तकें पढ़नी पड़ी हैं। हर्नशा ने जो पुस्तक उन्नीसवीं शताब्दि के प्रधान मन्त्रियों पर हाल ही में लिखी है उसका भी उचित उपयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त "केम्ब्रिज माडर्न हिस्ट्री" जैसी अनेकों पुस्तकें हैं जिनके कुछ अध्याय, जो आवश्यक समझे गये, पढ़लिये गये हैं। इन सब ऐतिहासिकों को हृदय से धन्यवाद दिया जाता है।

यदि इस पुस्तक से इङ्गलेण्ड के इतिहास के विषय में विद्यार्थियों की सारी कठिनाइयां दूर होजावेंगी तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा।

पं० पृथीनाथ हाई स्कूल, कानपुर,
१५ सितम्बर, १९२८ ई०

रामकृष्ण माथुर

विषय-सूची



प्रथम खण्ड

प्राचीन इङ्गलैंड (५५ पूर्व ईसा–१४८५ ई०)

राजनैतिक तथा धार्मिक संस्थापना, पृष्ठ १–८२

द्वितीय खण्ड

ट्यूडर काल (१४८५–१६०३)

लोकनिद्रा तथा धर्मसुधार, पृष्ठ ८३–१७२

तृतीय खण्ड

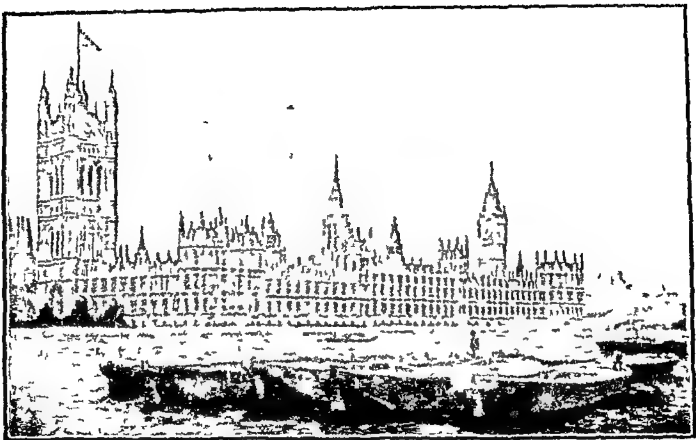
स्टुअर्टवंश (१६०३–१६८८)

राष्ट्रीय जाग्रति तथा धर्मविभाग, पृष्ठ १७३–२६८

तृतीय खण्ड

स्टुअर्टवंश (१६०३–१६८८)

राष्ट्रीय जाग्रति तथा धर्मविभाग, पृष्ठ १७३–२९८



पार्लियामेण्ट के भवन ।

चतुर्थ खण्ड

इङ्गलैंड सन् १६८८ के पश्चात् (१६८८–१८१५)

राष्ट्रीय शासन तथा धार्मिक स्वतन्त्रता, पृष्ठ २९९–४१६

विषय	पृष्ठ

चतुर्थ खण्ड

इङ्गलैंड सन् १६८८ के पश्चात् (१६८८–१८१५

राष्ट्रीय शासन तथा धार्मिक स्वतन्त्रता, पृष्ठ २६६-१

पहला अध्याय।

इतिहास जानने की आवश्यकता।

प्राय मनुष्य पूछते हैं कि इतिहास जानना क्यों आवश्यक है? यदि यह विषय स्कूलों और कालेजों में न पढाया जाय तो क्या हानि है? इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर जान लेना विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु इनके जानने के पूर्व 'इतिहास' शब्द का अर्थ समझ लेना उनके लिये और भी आवश्यक है।

इतिहास शब्द का अर्थ है घटनाओं का क्रमश इस प्रकार उल्लेख करना कि उनका जो प्रभाव मनुष्य के जीवन अथवा ससार की सभ्यता पर पड़ा है वह स्पष्ट रीति से प्रकट हो जाय। इतिहास और कहानी के बीच एक मुख्य अन्तर यह है कि कहानी लिखते समय लेखक इन दो विशेषताओं का ध्यान नहीं रखता। विद्वानों की सम्मति में इतिहास शब्द से प्राय प्राचीन घटनाओं से सम्बन्ध होता है यद्यपि हम वर्तमान तथा भावी घटनाओं का वर्णन भी इतिहास के अन्तर्गत कर सकते हैं। प्राय मनुष्य ऐसा समझते हैं कि इतिहास के अन्तर्गत केवल देशी अथवा राजनैतिक घटनाओं का उल्लेख हो सकता है। यह उनकी भूल है। कारण यह है कि इतिहास में मनुष्य धार्मिक तथा सामाजिक जीवन इत्यादि पर भी विचार प्रकट कर सकते हैं।

कुछ मनुष्य इतिहास का पाठ केवल आनन्द प्राप्त करने के लिए करते हैं। उनका कथन है कि जिस प्रकार हमको उपन्यास पढ़ने से आनन्द मिलता है उसी प्रकार इतिहास पढने से भी आनन्द प्राप्त होता

है। इस श्रेणी के इतिहास-प्रेमी उसकी वास्तविकता किञ्चित् मात्र भी नहीं समझते और उसे अलिफलेला, अनवारसुहेली और अरेबियननाइट्स जैसी रोचक पुस्तकों की भांति पढते हैं। इतिहास प्रेमियों की दूसरी श्रेणी उसको लैलामजनू की कहानी समझ कर नहीं पढती वरन् इस लिये कि ऐतिहासिक घटनाओं को क्रमशः कण्ठाग्र कर लें तथा स्वार्थ निकाल कर उसे शीघ्र ही भुला दें। प्राय: स्कूल तथा कालेजों के विद्यार्थियों की गणना इसी श्रेणी के अन्तरगंत होती है।

इतिहास का पाठ मनुष्य किसी भाव से क्यों न करे परन्तु उसके पढ़ने से उसे कुछ न कुछ लाभ सदैव ही होता है। शिक्षा सम्बन्धी बातों में इतिहास का कोष भरा रहता है। इसके अन्तर्गत सहस्रों पुरुषों की उन्नति तथा अधःपतन का वर्णन होता है। इसमें यह भी बताया जाता है कि उनकी उन्नति अथवा अवनति के क्या कारण हैं। इसका पाठ करते समय हमारे चित्त में स्वभावत यह उमङ्ग उठती है कि हम उस से शिक्षा प्राप्त करें और उन मार्गों का अनुसरण करें जिनके द्वारा इन मनुष्यों की उन्नति हुई है और उनका अनुसरण न करें जिनके द्वारा वे अवनति को प्राप्त हुये हैं। जब हम भीम, अर्जुन और महाराणा प्रतापसिंह की वीरता, सीता, गान्धारी और पद्मिनी के सतीत्व और उत्साह, राजा नल और हरिश्चन्द्र के सत्य का वर्णन इतिहास में पढते हैं तो हमारे चित्त में अकस्मात् यह आकांक्षा उत्पन्न होती है कि क्या ही गौरवपूर्ण कृत्य हो यदि हम भी इन ऐतिहासिक वीरों के समान वीरता गम्भीरता एवं ख्यातियुक्त जीवन व्यतीत करें और मृत्यु के अनन्तर उनकी भांति निर्मल तथा प्रसिद्ध कार्य्यों का यश पृथ्वी पर छोड़ जावें।

यूनान के प्रसिद्ध विद्वान् प्लेटो का अनुमान है कि स्कूलों और कालेजों में इतिहास के विषय में शिक्षा देना अत्यन्त आवश्यक है। प्लेटो का कथन अक्षरशः सत्य है क्योंकि इतिहास के बिना पढे मनुष्य

मनुष्य नहीं बन सकता है। जिस देश के मनुष्य इतिहास पढने से प्रेम नहीं करते वह देश कदापि उन्नति नहीं कर सकता है। उन जातियों की उन्नति का पर्याप्त ज्ञान रक्खे बिना जो वर्तमान समय में अग्रसर हैं, हमारे हृदय में देशोन्नति तथा जाग्रति की लहर कदापि नहीं उठ सकती और न उन कुरीतियों तथा कठिनाइयों के निवारणार्थ उचित उपाय ही ज्ञात हो सकता है जो वर्तमान समय में हमारे देश में विद्यमान हैं। जब हम इतिहास में यह पढ़ते हैं कि प्राचीन काल में भारतवर्ष की क्या दशा थी और अब उसकी क्या दशा है, अथवा जब हम यह देखते हैं कि छोटे छोटे देश, जो कुछ समय पूर्व हमारे सम्मुख बालक समान थे, हम से आगे निकले जा रहे हैं, तब हमारे हृदयसागर में स्वाभाविक उत्साह की हिलोरें उठने लगती हैं और हम विचारने लगते हैं कि क्या ही सुन्दर होता यदि हमारी गणना भी उन्हीं राष्ट्रों में होती जो कला और विज्ञान में अग्रसर हैं और हो रहे हैं।

इतिहास के पढ़ने से तर्कशास्त्र एवं भावी घटनाओं के अनुमान करने में भी पर्याप्त सहायता मिलती है। वास्तव में विद्वान् वही व्यक्ति है जो ऐतिहासिक घटनाओं के घटित होने के पूर्व ही उनका अनुमान कर लेता है और उनके लिये उचित औषधि संग्रह कर लेता है। जब हम किसी युद्ध के कारणों पर दृष्टि डालते हैं और वर्तमान समय में भी उन्हीं कारणों को उसी रूप में विद्यमान देखते हैं तो हम शीघ्र ही यह परिणाम निकाल लेते हैं कि यदि इन कारणों को दूर करने का प्रयत्न शीघ्र न हुआ तो एक नवीन युद्ध उसी भांति छिड़ जायगा जिस भांति इन कारणों के उपस्थित होने से प्राचीन काल में छिड़ गया था। इस प्रकार प्राचीन घटनाओं का स्मरण करके भविष्य की घटनाओं का अनुमान करना इतिहास के पढ़ने से सम्भव होता है। महान् युद्ध (१९१४–१९१९) के आरम्भ होने के वर्षों पूर्व विद्वानों ने उसके विषय में सूचना दे दी थी। वर्तमान काल में भी

बहुत से विद्वान् भविष्य में घटित होने वाले युद्ध की सूचना दे रहे हैं। देखना है कि उनका अनुमान किस सीमा तक ठीक है ।



अभ्यास

(१) तुम अपने स्कूल में जो विषय पढ़ते हो उन से तुम्हें क्या लाभ होता है ? इन विषयों में तुम इतिहास को कौन सा स्थान देते ?

(२) यदि तुम जापान तथा अमेरिका के संयुक्त प्रदेश के इतिहासों का पाठ करो तो उनके द्वारा स्वदेश की उन्नति कैसे करोगे ?



बहुत से विद्वान् भविष्य मे घटित होने वाले युद्ध की सूचना दे रहे हैं। देखना है कि उनका अनुमान किस सीमा तक ठीक है ।



अभ्यास

(१) तुम अपने स्कूल में जो विषय पढते हो उन से तुम्हें क्या लाभ होता है ? इन विषयों में तुम इतिहास को कौन सा स्थान देते हो ?

(२) यदि तुम जापान तथा अमेरिका के संयुक्त प्रदेश के इतिहासों का पाठ करो तो उनके द्वारा स्वदेश की उन्नति कैसे करोगे ?



दूसरा अध्याय

इतिहास और भूगोल का पारस्परिक सम्बन्ध



इतिहास का भूगोलविद्या से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि हम किसी देश का इतिहास भली भांति समझना चाहते हैं तो उसकी प्राकृतिक दशा का जानना अत्यन्त आवश्यक है। एक विद्वान् की सम्मति तो यहाँ तक है कि किसी देश का इतिहास जानने के पूर्व उसके भूगोल का ज्ञान प्राप्त करलेना लगभग उतना ही आवश्यक है जितना गणित विद्या के जानने के पूर्व अङ्कों का पहचानना।

स्थिति—किसी देश के सुखी होने के लिये आवश्यक है कि उसकी स्थिति ऐसे स्थान पर हो जो जलवायु और व्यापार दोनों की दृष्टि से उपयोगी है। आधुनिक काल में संसार की डोरी उन्हीं देशों के हाथ में है जिनका जलवायु अत्यन्त उपयोगी तथा उत्तम है और जो बड़े बड़े समुद्रों के किनारे पर स्थित होने के कारण संसार के व्यापार में सुगमता से भाग ले सकते हैं। इन देशों में मुख्य २ अमेरिका के संयुक्त प्रदेश, बृटिश द्वीपसमूह और जापान हैं।

यदि कोई देश किसी शक्तिशाली और धनी देश के समीप अथवा दो या दो से अधिक अत्याचारी देशों के बीच स्थित है तो समझ लेना चाहिये कि उसकी कुशल नहीं है। उसकी स्वतन्त्रता सदैव उन्हीं देशों पर निर्भर रहेगी जो उसको चारों ओर से घेरे हुये हैं। यूरप का इतिहास बताता है कि जर्मनी और फ्रान्स के मध्य में स्थित होने के कारण बेल्जियम अनेकों बार इन शक्तिशाली देशों का शिकार बन चुका है।

देशोन्नति के लिये यह भी आवश्यक है कि उसकी स्थिति विद्या तथा कला कौशल के केन्द्र के निकट हो । इसका क्या कारण है कि प्राचीन काल में इङ्गलैण्ड का दक्षिणी-पूर्वी भाग उसके शेष भाग से सदा अधिक सभ्य रहा है ? केवल यही कि वह यूरुप महाद्वीप के बहुत समीप है । अतः वह वहा की विद्या, गुण, कला, धार्मिक एव व्यापारिक परिवर्तनों मे उतना लाभ उठाता रहा है जितना लाभ इङ्गलैण्ड का शेष भाग नहीं उठा सका है । परन्तु वर्तमान काल में रेल, तार तथा जहाजों और वायु-यानों के आविष्कार के कारण ससार के सब देश एक दूसरे के गुण, विद्या तथा कला से समान लाभ उठा रहे है ।

जल-वायु—मनुष्य की रहन सहन के लिये जल-वायु का अनुकूल होना भी अत्यन्त आवश्यक है । जिन देशों का जल-वायु अत्यन्त ऊष्ण है वहा के निवासी स्वस्थ, चतुर और वीर नहीं होते । तनिक परिश्रम करने से ही उन्हें थकावट जान पडने लगती है। यह दशा अफ्रीका तथा दक्षिणी भारतनिवासियों की है । अत्यन्त शीत देश के निवासी भी अधिक देर तक परिश्रम नहीं कर सकते । अत॰ वे उन्नति की दौड में सदा पीछे रहते हैं । यही कारण है कि रूस इतना विस्तृत होने पर भी यूरुप की अन्य शक्तिशाली जातियों के समान उन्नति नहीं कर रहा है । किसी देश की उन्नति के लिये मध्यम श्रेणी की शीत तथा उष्णता आवश्यक है । इङ्गलैण्ड और जापान शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित है । अतएव वहाँ के निवासी शक्ति एव परिश्रम का उच्च आदर्श हमारे सामने उपस्थित करते हैं। विद्वान् जन इस विषय में सहानुभूति रखते है और ऐतिहासिक ज्ञान भी सदैव यही शिक्षा देता है कि उष्ण देशवासी शीत प्रदेश वालों के सम्मुख सदैव नीचा देखते रहे हैं । भारतवर्ष और अफ्रीका के इतिहास इस बात को स्पष्ट पुकार २ कर कह रहे हैं ।

पर्वत-श्रेणियां—पर्वत श्रेणियों का भी इतिहास के ऊपर बडा

प्रभाव पडता है । जिन देशों के चारों ओर पर्वत ही पर्वत होते हे वे अन्य जातियों के आक्रमण से सदैव सुरक्षित रहते हे । यदि इन पर्वतों के मध्य दर्रे स्थित होंगे तो शत्रुसेना इन मार्गों द्वारा आ जा सकेगी । अत. देशवासियों के प्राण सदेव भयभीत रहेंगे । इस प्रकार के दर्रों पर अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित रहना अत्यन्त आवश्यक है । कौनसा ऐसा विद्यार्थी है जिसने यूनान के ऐतिहासिक दर्रे थरमापली का नाम न सुना हो ? यह वही दर्रा हे जिस मे स्वदेश को सुरक्षित रखने के लक्ष्य से सहस्त्रों यूनानियों ने अपने प्राण बलिदान कर दिये हैं । इसी प्रकार भारतवर्ष की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर भी हिमालय पर्वत मे दो प्रसिद्ध सङ्कीर्ण मार्ग हैं जिनके द्वारा मुसल्मानों ने भारतवर्ष पर बहुधा आक्रमण किये हैं । यदि इङ्गलैण्ड के पूर्वी तट पर हिमालय जैसा अगम्य पर्वत उत्तर-दक्षिण दिशाओं मे स्थित होता तो पूर्वी जातियों को आक्रमण करने में बडी कठिनाई होती और अंग्रेजी इतिहास आज कोई अन्य ही रूप धारण किये होता ।

पर्वतों के निवासी सदैव बली और वीर होते हैं । इसके प्रतिकूल मैदानों के निवासी न इतने वीर ही होते हैं और न इतने बली । अत' युद्ध के समय सरकार को पर्वतों के वीर सैनिकों पर भरोसा करना पडता है । गोरखे और मरहठे जिन्हों ने भारतवर्ष के इतिहास मे बहुत कुछ कर दिखाया हे पहाडी देशो के निवासी थे । इङ्गलैण्ड के इतिहास में भी एक पर्वत पर रहने वाली जाति का वर्णन आया हे जो हाईलैण्डर (Highlander) के नाम से प्रसिद्ध है । यह जाति इङ्गलैण्ड और स्काटलेण्ड के मध्यवर्ती भागों में यात्रियों को लूट कर अपना जीवन व्यतीत करती थी । जब कभी मैदान के निवासियों की उस से मुठभेड होती तो मैदानवासी सदैव नीचा देखते । पर्वतश्रेणियां ठहरने के लिये सुरक्षित स्थान होती हे । पर्वतवासिनी जातियों का सदैव से यह नियम रहा है कि प्रथम तो वे शत्रु का सामना करने के लिये मैदान

में आकर उद्यत ही नहीं होतीं । यदि उद्यत भी हुई तो युद्ध के अन्त तक बहुत कम ठहरती हैं । यही नहीं वरन् पहाडी जातिया अन्य अन्य रीतियों से भी मैदान निवासियों को कष्ट पहुचाती रहती है । सृष्टि के इतिहास का अवलोकन करने से इस बात का ज्ञान होता है कि जब तक कोई राजा निकटवर्ती पहाडी जातियों को परास्त नही कर लेता तब तक वह सुख शान्ति से कदापि राज्य नहीं कर पाता । महरठों, हाईलेण्डर और दक्षणी अफ्रीका की काफिर जाति का इतिहास पढने से यह बात पूर्णतया सिद्ध हो जाती है । वर्तमान समय में भी भारतवर्ष की उत्तर-पश्चिमी सीमान्त प्रान्तों की सरकार के सन्मुख यह प्रश्न उपस्थित है कि वह वहा के निवासियों को पहाडी जातियों के अत्याचारो से किस प्रकार सुरक्षित रक्खे ।

देशी सरकार पर पर्वतश्रेणियों का एक और प्रभाव पडता है । जिस देश में पर्वतश्रेणिया अधिक होती हैं उनमें प्राय अनेकों छोटे २ स्वतन्त्र राज्य स्थापित हो जाते हैं । प्राचीन इतिहास में प्राय इस प्रकार के स्वतन्त्र राज्यों का वर्णन आया है । इन में से कोई २ इतने अधिक बलवान और धनसम्पन्न थे कि इनके सन्मुख निकटवर्ती राज्यों की एक न चलती थी । उदाहरणार्थ हम चीन, यूनान और स्पेन के स्वतन्त्र राज्यों को ले सकते हैं । परन्तु यदि कोई पर्वतश्रेणी दो देशों के मध्य स्थित है तो उनके रहन सहन में बडा अन्तर पड जावेगा । यही कारण है जो प्राचीनकाल मे भारतवर्ष और ब्रह्मा के इतिहासों में इतना अन्तर रहा है ।

मैदान—मैदानों का प्रभाव भी किसी जाति के इतिहास पर लगभग उतना ही होता है जितना पहाडों का । प्राय मैदानों के निवासी आलसी और निर्बल होते हैं । पृथ्वी उपजाऊ होने के कारण वे थोडे ही परिश्रम से अधिक अनाज उत्पन्न कर लेते हैं जिस से उन्हें अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं होती । परन्तु साथ ही साथ मैदानों में रहने

वाले सभ्यता शीघ्र प्राप्त कर लेते है । कृषि से बचा हुआ समय वे विद्या एव गुण के प्राप्त करने में व्यतीत करते है और भोगविलास की भाति २ की सामग्री एकत्रित कर लेते हैं । यदि मैदान में, जैसा कि प्राय देखने मे आया है, कोई निर्मल जल का सोता बहता है तो विद्या और विज्ञान की उन्नति और भी अधिक होती है । इतिहास पढने से ज्ञात होता है कि ससार के विद्या तथा विज्ञान के सब से बडे केन्द्र मिश्र, एशियाई कोचक, रोम, उत्तरी भारतवर्ष इत्यादि नदियों की सुन्दर उपजाऊ तर हटियों में स्थित है ।

इतिहास यह भी बताता है कि मैदान के निवासियों के प्राण सदैव भयभीत रहते हैं । निकटवर्ती पहाड के निवासी उन पर आक्रमण करते और उनकी धन सम्पत्ति छीनते रहत हैं । यही कारण है जो ईरान और उत्तरी भारतवर्ष पर प्राय पहाडी जातियों के धावे होते रहे है । वर्तमान समय में वायुयानों के बनजाने से मैदानों की सुरक्षितता और भी कम हो गई है ।

महासागर—प्राचीन काल में जब जलयान सञ्चालन गुण में पर्याप्त उन्नति नहीं हुई थी समुद्र सदैव रक्षा के निमित्त प्राकृतिक दीवार का काम देते थे । यही कारण है जो यूरप निवासियों के आगमन के पूर्व किसी देश ने समुद्र के मार्ग से भारतवर्ष पर आक्रमण नहीं किया । वर्तमान समय में इसके पूर्णतया विपरीत दृष्टिगोचर हो रहा है अर्थात् रक्षा करने की अपेक्षा समुद्र आक्रमण करने वालों के जहाजों को स्थान २ पर पहुचाने में सहायता करते है । अत वे देश जो प्राचीन काल में समुद्र के कारण सुरक्षित थे आधुनिक काल में जहाजों के कारण असुरक्षित हो गये हैं ।



अभ्यास

(१) किसी देश का भूगोल उसकी ऐतिहासिक धारा को कैसे प्रभावित करता है ? देशोन्नति के लिये कौन कौन भूगोलिक गुण आवश्यक हैं ?

(२) किसी देश के इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ता है :

[अ] पर्वत श्रेणियों का ?

[ब] मैदानों का ?



तीसरा अध्याय।

बृटिश द्वीपों का भूगोल।



स्थिति—बृटिश द्वीपसमूह यूरुप महाद्वीप के उत्तर-पश्चिम में है। वे उस से उत्तरी समुद्र और अंग्रेजी नहर द्वारा अलग होते हैं। इन दोनों के मध्य डोवर का जलडमरूमध्य है जो बीस मील चौड़ा है। उत्तरी सागर किसी स्थान पर भी ६०० फुट से अधिक गहरा नहीं है। उसकी चौड़ाई भी अधिक नहीं है। अंग्रेजी नहर कहीं पर भी १५० मील से अधिक चौड़ी नहीं है। इससे विदित होता है कि प्राचीन काल में बृटिश टापू यूरुप महाद्वीप से सम्मिलित थे। अब यह प्रश्न उठता है कि बृटिश टापुओं को महाद्वीप के अत्यन्त निकट होने से क्या लाभ है? यूरुप के चित्र को देखते ही इस बात का पता चल जायगा कि बृटिश टापुओं की स्थिति बड़ी उपयोगी है। निकट के महाद्वीप पर होने वाली राजनैतिक, धार्मिक तथा व्यापारिक घटनाओं का प्रभाव इनके इतिहास पर सदैव पड़ता रहा है।

महाद्वीप के उत्तरी-पश्चिमी देशों के जहाजों को उत्तरी सागर और अंग्रेजी नहर से हो कर जाना पड़ता है। बृटिश टापू उनके मार्ग को रोके खड़े हैं। अतः जब कभी उनकी सरकार इन देशों से युद्ध करती है तो वह इनके जहाजों को सरलता पूर्वक रोक लेती है। जहाजों के रुक जाने से व्यापार को बहुत बड़ी हानि पहुंचती है। सेनायें भी समय पर युद्धस्थल तक नहीं पहुंच सकतीं और न इन सेनाओं के लिये अमेरिका, भारतवर्ष, जापान इत्यादि से जहाजी मार्गों द्वारा भोजन सामग्री ही

आ सकती है। अत एक प्रकार से जर्मनी, हालैण्ड, बेल्जियम, रूस, नार्वे इत्यादि की उन्नति और उनका गौरव अंग्रेजी सरकार के हाथों में है। यह केवल बृटिश टापुओं की स्थिति के सुन्दर होने का परिणाम है जो महान् युद्ध के दिनों में जितने जहाज उनकी सरकार ने जर्मनी के डुबोये उतने जर्मनी ने नहीं डुबोये। जर्मनी की पराजय का एक मुख्य कारण उसकी स्थिति का हानिकारक होना है।

बृटिश द्वीपसमूह की जो स्थिति यूरप महाद्वीप के उत्तरी पश्चिमी देशों को अत्यन्त भय उत्पादक है वही स्थिति इन द्वीपों के लिये कई प्रकार से लाभदायक है। चारों ओर से जल से घिरे होने के कारण वे सदैव शत्रुओं के आक्रमणों से सुरक्षित रहे हैं। ग्यारहवीं शताब्दी तक अवश्य, जैसा कि हम आगे लिखेंगे, यूरप की कुछ जातियों ने इङ्गलैण्ड पर आक्रमण करके उसे अपने अधिकार में कर लिया। परन्तु इसके पश्चात प्रथम तो समुद्र के कारण कभी भी शत्रु को इङ्गलैण्ड पर आक्रमण करने का साहस हुआ ही नहीं और यदि कभी कुछ साहस भी हुआ तो वह सम्पूर्ण इङ्गलैण्ड को तो क्या उसके एक भाग को भी विजय नहीं कर सका। बृटिश टापुओं के चारों ओर जल से घिरे होने और संसार के मध्य में होने के कारण उनका व्यापार प्रति दिन उन्नति कर रहा है। इनके चतुर्दिक समुद्र होने से इनके निवासियों के रहन-सहन में बहुत बड़ा अन्तर हो गया है। समुद्र भी गहरे नहीं हैं और टापुओं के किनारे भी कटे हुये हैं। अत बृटिश टापुओं के निवासी जहाज चलाने के गुण में संसार के अन्य राष्ट्रों से आगे हैं। आसपास के समुद्रों में अनेक प्रकार की मछलियाँ मिलती हैं जिनको पकड़ कर बहुत से मनुष्य अपना जीवन व्यतीत करते हैं। प्रत्येक वर्ष पन्द्रह करोड़ की मछलियाँ इन समुद्रों से पकड़ी जाती हैं। इनमें से कुछ बृटिश द्वीपों में व्यय हो जाती हैं, कुछ सुखा कर बक्सों में बन्द कर के अन्य देशों को भेज दी जाती हैं।

धरातल, जल-वायु, उपज—बृटिश टापुओं के उत्तरी और पश्चिमी भागों में अनेकों पर्वतश्रेणियाँ और ऊँचे २ टीले हैं। दक्षिणी-पूर्वी भाग में एक बहुत बड़ा मैदान है। अत सेवर्न, मरे और क्लाइड के अतिरिक्त सब बड़ी २ नदियाँ पश्चिम की ओर से आकर पूर्व की ओर उत्तरी सागर में गिरती हैं।

आयरलैण्ड द्वीप में चारों ओर पर्वत हैं और उनके बीच में एक मैदान है। इस मैदान का कुछ भाग दलदली है। शेष भाग में आलू की खेती होती है। आयरलैण्ड तथा स्काटलैण्ड के पहाड़ी होने के कारण अंग्रेजी राजे उन्हें कई शताब्दियों तक विजय न कर सके। इनके मैदानों में सभ्यता का प्रचार भी उतना शीघ्र नहीं हुआ जितने शीघ्र इङ्गलैण्ड के मैदान में हुआ।

बृटिश द्वीपों का जल वायु मध्यम श्रेणी का है। अतः यहाँ के निवासी कार्यालयों तथा खनिजस्थानों में वर्ष भर लगातार परिश्रम से काम कर सकते हैं, जबकि भारतवर्ष ऐसे उष्ण देशों में ग्रीष्म ऋतु में हम उतना परिश्रम नहीं कर सकते जितना शरद ऋतु में कर सकते हैं। वर्षा पश्चिमी हवाओं से होती है। पूर्वी भाग की अपेक्षा जलवर्षा पश्चिमी भाग में अधिक होती है। वर्षा का परिमाण चालीस इंच प्रति वर्ष है। यहा पर भारतवर्ष के समान वर्षा की कोई मुख्य ऋतु नहीं होती वरन् साल भर थोड़ी २ वर्षा बराबर होती रहती है। यही नहीं किन्तु बहुधा प्रतिदिन पानी कई बार बरसता और बन्द होता है। अत छातों तथा बरसातियों का रखना आवश्यक है। उत्तरी सागर में बहुधा आँधियाँ आती रहती हैं। बृटिश टापुओं के उत्तरी-पूर्वी तथा दक्षिणी-पूर्वी किनारों पर आंधियाँ बहुत आती हैं। सन् १५८८ ई० में इन्हों ने इङ्गलैण्ड को अधिक लाभ पहुचाया। यदि आर्मेडा (Armada) की चढ़ाई के समय समुद्र में आँधी न चलने लगती और वह उसे व्यर्थ न बना देती तो सम्भव था कि वह लन्दन पर आक्रमण करके विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता।

पृथ्वी की दशा और जल-वायु द्वारा हम बृटिश द्वीपों की उपज जान सकते हैं। ये टापू कृषी के हेतु उपयोगी नहीं हैं। अत यहा पर अनाज बहुत कम उगता है। मुख्य उपज गेहू, जौ, मकाई और जकन्द हैं। आयरलेण्ड में आलू, शलजम और पटसन अधिक होते हैं। पशुओं मे भेड, गाये और घोडे अधिक मिलते हैं। इन समस्त वस्तुओं की अपेक्षा बृटिश टापू खनिजपदार्थों के लिये अधिक प्रसिद्ध हैं। यों तो इन में टीन, जस्ता, पेन्सिल, शीशा, पत्थर, स्लेट, नमक, मिट्टी का तेल थोडे बहुत सभी मिलते है परन्तु मुख्य पैदावार लोहे और उस से भी अधिक कोयले की है। बहुधा लोहा और कोयला एक ही स्थान में मिलते हैं। जहाँ ऐसा होता है वहाँ शिल्पकलाएँ बडी सरलता से उन्नति करती हैं। इङ्गलैण्ड के मध्य में जो कोयले की खानें हैं उन के चारों ओर का भाग शिल्पकलाओं में इतनी उन्नति कर रहा है कि वह कालादेश (Black Country) कहलाता है। बरमिंगैम नगर इसका केन्द्र है। निब, जिनको सभी प्रयोग करते है, बहुधा बरमिंगैम ही से आते है।

मनुष्यों के व्यवसाय—काले देश के अतिरिक्त और भी बहुत से स्थानों में लोहे की वस्तुयें बनती है। लन्दन, ग्लासगो, न्यूकासिल, लिवरपूल और बेल्फास्ट में जहाज बनते है। रुई बृटिश टापुओं में नहीं होती है। जितनी रुई कपडा बनाने में व्यय होती है वह सब अमेरिका, यूनान, भारतवर्ष इत्यादि से आती है। लिवरपूल और मैनचेस्टर इस कला के मुख्य नगर हैं। पेनाइन पर्वत के पूर्व मे यार्क का प्रान्त ऊन के काम के लिये प्रसिद्ध है। प्राचीनकाल में बृटिश टापुओं मे सहस्रों भेडें पाली जाती थीं। परन्तु आधुनिक काल मे मनुष्यों ने इस की ओर से ध्यान हटा लिया है क्योंकि अब ऊन दक्षिणी अमेरिका और आस्ट्रेलिया से सरलता पूर्वक आ जाता है। लीड्स ऊन के व्यापार का केन्द्र है। कुछ मनुष्य मछलियों के पकडने, सुखाने और बेचने मे लगे रहते हैं। कहीं २

कलकत्ते से आये हुये जूट की वस्तुयें तैयार होती हैं। सहस्त्रों मनुष्य रेशम और चमडे की वस्तुये बनाते हे। मिट्टी के खिलोने और अन्य वस्तुये भी वहुत बनती हे। कुछ मनुष्य कृषी करते हैं। परन्तु ऐसे मनुष्यों की सख्या वहुत कम हे। जनसख्या का सब से बडा भाग मजदूरों का हे जो कार्य्यालयो, खानों और रेलों इत्यादि में काम करते हैं। इनका जीवन भारतीय मजदूरो के जीवन की अपेक्षा वहुत अच्छा हे।



अभ्यास।

(१) इङ्गलेण्ड के इतिहास पर भूगोल का क्या प्रभाव पडा हे ?

(२) वृटिश द्वीपसमूह का भूगोल उसके आधुनिक महत्व का कहा तक उत्तरदायी हे ?

(३) बताओ किस प्रकार [अ] इङ्गलेण्ड की स्थिति, [ब] चतुर्दिक सागरों से उसके व्यापार में सहायता मिलती हे ?

(४) इङ्गलैण्ड ससार के शिल्पकार देशों में क्यों प्रसिद्द हे ?



चौथा अध्याय ।

वृटिश साम्राज्य का विस्तार ।

जब कभी हम ससार के चित्र में ब्रिटिश सामराज्य को देखते है तो हमें बडा आश्चर्य होता है । हम विचार करने लग जाते हैं कि वृटिश द्वीप का क्षेत्रफल भारतवर्ष के क्षेत्रफल का पन्द्रहवाँ भाग है अर्थात् इसका क्षेत्रफल पजाब के क्षेत्रफल से भी न्यून है फिर क्या कारण है जो वहाँ के राजा का राज्य चारों ओर दूर २ देशों में फैला हुआ है और कनाडा तथा आस्ट्रेलिया जैसे विस्तृत महाद्वीप उसके आधीन हैं ? ससार के चित्र से विदित है कि यह देश जल-वायु के प्रत्येक खण्ड में उपस्थित हैं । आर्कटिक और एन-टार्कटिक सागरों के द्वीपों के अतिरिक्त शेष अग्रेजी राज्य तीन भागों में विभक्त हो सकता है । प्रथम वे देश जो शीतोष्ण कटिबन्ध में हैं । द्वितीय, जो उष्ण कटिबन्ध मे है । तृतीय, छोटे २ द्वीपसमूह तथा बन्दरगाह जो भिन्न भिन्न भागों तथा समुद्रो मे स्थित है । इनका वर्णन क्रमश. नीचे करेंगे ।

स्वतंत्र देश—वृटिश द्वीपसमूह शीतोष्ण कटिबन्ध मे स्थित है । छोटे २ द्वीपों को छोड कर उनके चार प्राकृतिक भाग इङ्गलेण्ड, स्काटलेण्ड, वेल्स और आयरलैण्ड हैं । सन् १९२१ ई० में आयरलैण्ड ने तलवार के बल से स्वतन्त्रता प्राप्त करली । अत आयरलैण्ड आजकल स्वतन्त्र राज्य है और उसकी गणना डुमीनियन्स (Dominions) में होती है । आयरलैण्ड की भाँति अन्य अग्रेजी 'डुमीनियन' भी शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित हैं । यह कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और दक्षिणी अफ्रीका



बृटिश साम्राज्य का विस्तार।

है । स्वतन्त्र देशों का जल वायु मध्यम श्रेणी का है और अंग्रेजों की उपयोगी है । अतः इनकी मनुष्यगणना का बहुत बडा भाग अंग्रेज ही हैं जो अपना देश त्याग कर डुमीनियनों में बस गये हैं। डुमीनियन की सरकार वहाँ का राज्यप्रबन्ध अपने हाथों में रखती है । बृटिश द्वीपसमूह केवल उनकी बाह्य बातों की देख भाल और उनके अधिकारों की रक्षा करते हैं । वर्तमान समय में डुमीनियन की सरकार का उत्साह इतना बढ गया है कि वे कहती हैं कि हम जिस देश से चाहें सन्धि तथा युद्ध कर सकती हैं, चाहे इस में अंग्रेजी सरकार की सम्मति हो अथवा न हो ।

अधीनस्थ प्रदेश—उष्ण कटिबन्ध में बृटिश राज्य के देशों में सब से बडा और प्रसिद्ध भारतवर्ष है जिसका उत्तरी भाग शीतोष्ण कटिबन्ध में निकल जाता है । इसके अतिरिक्त एशिया में लङ्का, मलाया, सिंगापुर, पेनांग, मलाका, बोर्नियो द्वीप का उत्तरी भाग, गिनी का पूर्वी भाग इत्यादि हैं । अफ्रीका में सूडान, मिश्र, बृटिश पश्चिमी अफ्रीका और बृटिश पूर्वी अफ्रीका हैं । इसी प्रकार दक्षिणी अमेरिका में अंग्रेजों के आधीन बृटिश गायना और मध्य अमेरिका में दो छोटे छोटे भाग हैं । इन देशों में अंग्रेज बहुत कम हैं । इन पर और उन छोटे २ द्वीपसमूहों, बन्दरगाहों और इधर उधर के पृथ्वी के छोटे २ भागों पर जिनका वर्णन हम इसके पश्चात् करेंगे, बृटिश द्वीपसमूह की सरकार स्वयं राज्य करती है । इनका भीतरी और बाह्य समस्त प्रबन्ध उसी के आधीन है ।

द्वीपसमूह और बन्दरगाह—अंग्रेजी राज्य में द्वीप और बन्दरगाह असंख्य हैं । देखने में तो ये छोटे और अनावश्यक हैं परन्तु यथार्थ में ये बृटिश द्वीपसमूह की सरकार के लिये बहुत ही लाभदायक हैं। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो ज्ञात होगा कि यह भाग व्यापार और युद्ध दोनों के लिये उपयोगी तथा आवश्यक है । इन द्वीपसमूहों और बन्दरगाहों में अंग्रेजी सेना रहती है जो प्रत्येक समय व्यापार की रक्षा करती है और आवश्य-

कता के समय युद्ध में काम आती है। जिब्राल्टर और सईद बन्दर रूम सागर के पश्चिमी तथा पूर्वी द्वारों पर रक्षक तुल्य हैं। अदन और स्वेज के बन्दरगाह लालसागर की रक्षा करते हैं। सिंगापुर का बन्दरगाह भारतवर्ष, चीन और आस्ट्रेलिया के बीच व्यापार की रक्षा करता है। होनोलोलो का छोटा द्वीप, जो पेसिफिक महासागर के बीच में है, कम से कम सात जहाजी मार्गों का केन्द्र है। फिर यदि यह कहा जाय तो अनुचित न होगा कि इन्हीं छोटे बन्दरगाहों और द्वीपों पर, जो संसार के प्रत्येक भाग में उपस्थित हैं, बृटिश द्वीपसमूह की शक्ति और धन निर्भर है।



अभ्यास

(१) बृटिश सरकार की तुलना बहुधा एक महामाता से की जाती है जो अपने पुत्र तथा पौत्रों की देख भाल करती है। इस तुलना के विषय में तुम्हारी क्या अनुमति है?

(२) क्या कुछ ऐसे कारण वर्णन कर सकते हो जिन से समस्त डुमीनियन शीतोष्ण कटिबन्ध में और समस्त अधीनस्थ देश उष्ण कटिबन्ध में स्थित हैं?

(३) इङ्गलैण्ड के लिये क्यों आवश्यक है?—

[अ] होनोलोलो जैसे द्वीप।

[ब] सिंगापुर जैसे बन्दरगाह।



पांचवां अध्याय।

इङ्गलैण्ड पर विदेशी जातियों के आक्रमण।

कई सहस्र वर्ष व्यतीत हुये कि बृटिश द्वीपसमूह का समस्त देश वनों और पर्वतों से ढका हुआ था। इन पर्वतों के मध्य छोटी २ तथा सुन्दर नदियाँ इधर उधर हिलोरें ले रही थी। परन्तु उनके द्वारा व्यापार लेश मात्र भी न होता था। देशवासी जङ्गली थे और भारतवर्ष की जङ्गली जातियों की भाति वृक्षों, झोपड़ों और खोहों में निवास करके जीवन व्यतीत करते थे। उनका डील छोटा, शरीर मोटा तथा नाटा और वर्ण काला था। उनके समय की कोई ऐतिहासिक पुस्तक हमारे पास नहीं है। जो कुछ सूचना हमको उनके विषय मे प्राप्त हुई है वह उनके ऐसे चिह्नों से ज्ञात हुई है जो उनके पश्चात् आने वाली जातियों को मिले है। इन मे मुख्य मुख्य आभूषण, बर्तन, फिलिण्ट पत्थर के अस्त्र और पाषाण की दीवारे है। वर्तमान समय में भी कभी २ साल्जबरी के मैदान मे इन प्राचीन निवासियों की समाधियो के चिह्न मिलते है।



जङ्गली जातियों की समाधिया।

केल्ट जाति का आगमन—सैकड़ों वर्ष तक बृटिश द्वीप इन जङ्गली मनुष्यों के अधिकार में रहे। इसके पश्चात् ईसा मसीह के लगभग सात

सौ अथवा आठ सौ वर्ष पूर्व उन्हें केल्ट (Celt) नामक विदेशी जाति का सामना करना पड़ा। नवीन जाति पूर्व की ओर से आई। इस ने समस्त पश्चिमी यूरप पर भी अधिकार कर लिया था। इस ने दो बार बृटिश द्वीपों पर आक्रमण किया। प्रथम इस जाति के एक समूह ने, जो गेल (Gaels) का दल कहलाता था, आयरलेण्ड तथा स्काटलैण्ड पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् इसके द्वितीय समूह ने, जिसके मनुष्य बृटन (Britons) कहलाते थे, इङ्गलेण्ड के दक्षिणी भाग को अपने अधिकार में कर लिया। आज तक बृटिश द्वीपों के सब से बड़े द्वीप का नाम द्वितीय समूह के नाम पर बृटेन चला आता है।

केल्ट जाति प्राचीन निवासियों से अनेकों बातों में बढ़ी चढ़ी थी। ये मनुष्य सभ्य थे और कृषी करना भली भांति जानते थे। ये पशु पालते थे और कुछ व्यापार भी करते थे। यह जाति भिन्न २ समूहों में विभक्त थी। प्रत्येक दल का पृथक नेता अथवा राजा होता था जो प्रत्येक भांति से अपने समूह की रक्षा करता था। केल्ट जाति अपने देवताओं की पूजा करती थी जिन में मुख्य थर और ओडर थे।

रोमन विजय, ईसा के ५५ वर्ष पूर्व—ईसामसीह के ५५ वर्ष पूर्व केल्ट जाति पर रोम वालों ने आक्रमण किया। इस समय उनका राज्य यूरप, एशिया और उत्तरी अफ्रीका में फैला हुआ था। इनका प्रसिद्ध राजा जूलियस सीजर (Julius Caesar) अपनी शक्तिशाली सेना लेकर इङ्गलैण्ड पर चढ़ आया। केल्ट जाति इसके सन्मुख न ठहर सकी। अतएव दक्षिणी तथा पूर्वी इङ्गलैण्ड पर रोमनों का अधिकार होगया। उनके आधीन रह कर इङ्गलेण्ड ने बड़ी उन्नति की। सड़कें बनीं। नवीन उपनगर बसे। कृषी बहुत बढ़ी। उत्तम २ भवन बनवाये गये। रोम वालों की शासन प्रणाली भी उत्तम थी। परन्तु शोक है कि बृटन जाति अधिक दिनों तक उनकी अध्यक्षता में न रह सकी क्योंकि लगभग ३६० वर्ष तक इङ्गलैण्ड में निवास करने के पश्चात रोम निवासी अपने देश को लौट गये।

ज्योंहीं रोमनों ने पीठ फेरी त्योंही केल्ट जाति को उत्तर व पश्चिम की ओर से शत्रुओं का सामना करना पड़ा। ये पिक्ट (Picts) और स्काट (Scots) थे। इस समय पिक्ट स्काटलेण्ड में और स्काट आयरलेण्ड में निवास करते थे। रोम निवासियों ने केल्ट जाति को युद्धविद्या से पूर्णतः अनभिज्ञ रक्खा था। अतएव वे पिक्ट और स्काट के सम्मुख तनिक भी न ठहर सके। इन जातियों ने मनमानी लूट मार की और बहुत सी सम्पत्ति एकत्रित करके कुछ तो अपने देश को लौट गये और कुछ इङ्गलैण्ड ही में बस गये।

बृटिश द्वीपों का अंग्रेजी अधिकार में आना, ४४६ ई०—



अंग्रेजों की जन्म-भूमि।

सन् ४४९ ई० में इङ्गलेण्ड निवासियों को पुनः बाह्य आक्रमणों का सामना करना पड़ा। इस बार आक्रमण करने वाले डेन्मार्क और जर्मनी से आये थे। जहां वे एल्ब नदी के चारों ओर रहते थे। उनके तीन दल एङ्गिल, (Angles) सेक्सन (Saxons) और जूट (Jutes) थे। तीनों के तीनों साहसी, वीर, अत्याचारी और असभ्य थे। उन्होंने बृटन जाति के साथ अत्यन्त कठोरता का व्यवहार किया। समस्त दक्षिणी और पूर्वी ईङ्गलेण्ड उनके आधीन हो गया। इन दलों में सेक्सनों का दल सब से शक्तिशाली था, परन्तु इतिहास में तीनों

एक नाम से अंग्रेज अथवा एन्ग्लो सेक्सन कह कर पुकारे जाते हे। कुछ समय में अंग्रेजों ने अपना राज्य सात प्रान्तों में विभक्त कर लिया। इन में मरशिया, नार्थम्ब्रिया, ससेक्स और केण्ट मुख्य थे। प्रत्येक प्रान्त मे एक राजा राज्य करता था। सातवीं शताब्दि के प्रारम्भ में केण्ट और नार्दम्ब्रिया के प्रान्तों ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया। इसके उपरान्त यह धर्म अन्य प्रान्तों मे भी फैल गया।

डेन जाति का आगमन, ७८६ ई०—सन् ७८९ ई० में डेन्मार्क और स्केण्डिनेविया प्रायद्वीप के निवासियों ने इङ्गलेण्ड पर चढाई की। ये लोग दो दलों अर्थात डेन (Danes) और नार्मन (Normans) मे विभक्त थे। डेन डेनमार्क और नार्मन नारवे से आये थे। इङ्गलेण्ड में आने के पूर्व ये उत्तरी फ्रान्स, दक्षिणी इटली, आइसलेण्ड और ग्रीनलेण्ड विजय कर चुके थे। यही नहीं, वरन् वे कुस्तुनतुनिया नगर पर भी दो वार आक्रमण कर चुके थे*। नार्मन और डेन लूट मार करने के अभिप्राय से आये थे। अतएव



अंग्रेजी प्रान्त।

---

* कोई २ ऐतिहासिक लिखते हैं कि वे अमेरिका तक पहुंच गये थे यदि यह कथन सत्य है तो वास्तव में अमेरिका की खोज का गौरव डेन और नार्मन जातियों को होना चाहिये नकि एक निधन नाविक कोलम्बस को।

उन्हों ने निहारों को मनमाना लूटा और उनका बहुत सा धन सम्पति अपने देश को लेगये। सेक्सन जाति का राजा एग्बर्ट (Egbert), जिसने इङ्गलैण्ड के लगभग समस्त प्रान्त विजय कर लिये थे, इन से बहुत लड़ा, परन्तु उनका बाल बेंका न कर सका। एग्बर्ट के पौत्र एल्फ्रेड महान (Alfred the Great) ने उनके दाँत ऐसे खट्टे किये कि उनको सन्धि करनी पड़ी। इस सन्धिपत्र के अनुसार इङ्गलैण्ड दो भागों में विभक्त हुआ। उत्तरी भाग डेनों को और दक्षिणी भाग सेक्सनों को मिला*। एल्फ्रेड की मृत्यु पर उसके पुत्र तथा पौत्र ने धीरे २ डेनों का भाग विजय कर लिया। इस प्रकार सन् ९५४ ई० तक समस्त इङ्गलेण्ड एक अंग्रेजी राजा के शासन में आ चुका था। परन्तु इङ्गलैण्ड का शासन बहुत दिनों तक सेक्सन के हाथों में न रह सका।



एल्फ्रेड महान्।

नार्मन विजय, सन् १०६६ ई०—ग्यारहवीं शताब्दि में फ्रांस के प्रसिद्ध प्रान्त नार्मण्डी के ड्यूक विलियम नामक ने, जो इतिहास में "विलियम विजयी" (William the Conqueror) के नाम से प्रसिद्ध है, इङ्गलैण्ड पर आक्रमण किया। इङ्गलैण्ड का राजा हेरोल्ड

* यदि हम एक रेखा लन्दन नगर से मैनचेस्टर नगर तक खींचें तो हमें इन भागों के प्रसार का ठीक ठीक ज्ञान हो सकता है।

(Harold) अत्यन्त शक्तिहीन था। उत्तरी तथा मध्य के प्रान्त सर्वदा उसके विरुद्ध रहते थे। जिस समय विलियम के धावे का समाचार सुनाई पडा वह नार्वे के निवासियों के आक्रमण को रोकने के लिये उत्तर की ओर गया हुआ था। उसको सूचना पाकर वह तुरन्त दक्षिण को लौट आया और सेना एकत्रित करके हेस्टिङ्गज (Hastings) नगर के समीप एक पर्वतश्रेणी पर पडाव डाल दिया और विलियम की बाट जोहने लगा। विलियम की सेना हेरोल्ड की सेना की अपेक्षा बहुत शक्तिशाली थी। उसकी सेना में घुडसवार भी बहुत थे। उपरोक्त पर्वत-श्रेणी पर दोनों सेनाओं में कई घण्टों तक युद्ध होता रहा। तत्पश्चात नार्मन अचानक रणक्षेत्र छोड कर पीछे हट गये। हेरोल्ड ने समझा कि विलियम की सेना परास्त होकर भाग रही है। वह शीघ्र ही बिना सोचे विचारे सेनासहित पर्वत से नीचे उतर आया। उसका नीचे उतरना था कि विलियम की भागी हुई सेना लौट आई और हेरोल्ड की सेना को काट २ कर फेंकने लगी। एक बाण अंग्रेजी राजा की आँख में लगा जिसके कारण वह मृत्युलोक को सिधार गया। समस्त अंग्रेजी सेना मारी गई। विलियम विजयी ने सीधा लन्डन का मार्ग ग्रहण किया और शनैः शनैः उस ने समस्त उत्तरी, पूर्वी तथा दक्षिणी इङ्गलैण्ड पर अधिकार कर लिया। इस रीति से इङ्गलैण्ड में नार्मन जाति का राज्य स्थापित हुआ।

नार्मन विजय को इङ्गलैण्ड के इतिहास में एक उच्च स्थान प्राप्त है। विलियम विजयी के राजा बनने से इङ्गलैण्ड में स्थायी शासन स्थापित हुआ। देश में सामन्तता अथवा फ्यूडलिज्म (Feudalism) की नींव पडी। इङ्गलैण्ड का सम्बन्ध फ्रान्स तथा यूरप के अन्य देशों से बडा घनिष्ट हो गया। देशवासियों के रहनसहन और धार्मिक तथा व्यापारिक नीतियों में बडा अन्तर दृष्टिगोचर हुआ। स्थान स्थान पर विशाल गिर्जाघर और अन्य उत्तम भवन बने। युद्धविद्या में भी बडी उन्नति हुई। परन्तु अंग्रेजों

के आखेट से प्रेम न करने के कारण नर्मन जाति के आखेट सम्बन्धी नियमों से उन्हें बड़ी हानि पहुंची ।

अभ्यास ।

(१) इङ्गलेण्ड के प्राचीन निवासी किस प्रकार से जीवन व्यतीत करते थे ?

(२) केल्ट कौन थे ? उनका वृत्तान्त सक्षेप में लिखो ।

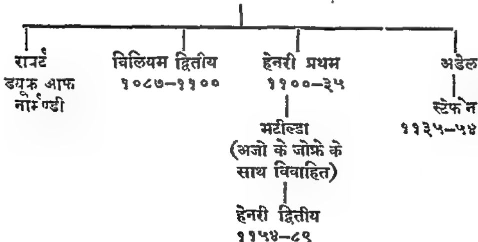
(३) इङ्गलेण्ड निवासियों ने रोमनों से मित्रता करके कैसे लाभ उठाया ? रोमनों ने अपने निकटवर्ती मनुष्यों को युद्धविद्या क्यों नहीं सिखाई

(४) किस सेक्सन राजा ने डेन जाति को परास्त किया ? वह राजा कैसा था ?

(५) सक्षेप में नार्मन विजय का वृत्तान्त लिखो ? यह इङ्गलेण्ड के इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है ?



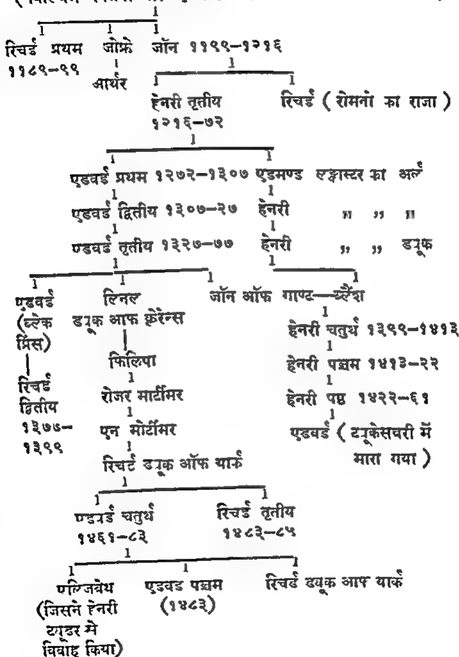
नार्मन वंश ।



अञ्जुवन अथवा प्लान्टेजेनेट वंश।

हेनरी द्वितीय

(विलियम विजयी और एडमण्ड आयरन साइड दोनों से उत्पन्न)



छठवां अध्याय।

पार्लियामेण्ट* का जन्म और उसकी उन्नति।



किसी राष्ट्र की उन्नति के लिये यह बात अत्यन्त आवश्यक है कि वह अपना राज्यप्रबन्ध स्वय करता हो। इङ्गलेण्ड निवासी प्राचीन काल से किसी न किसी रूप में देशी राजनीति में भाग लेते रहे हैं। यही कारण है जो इङ्गलेण्ड की शासन पद्धति सदैव से सुन्दर तथा लाभकारी रही है और ससार के अन्य देश उसको देख कर अपनी शासन पद्धति का सुधार करते रहे हैं।

सेक्सन जाति का शासन—विद्वानों की सभा—सेक्सनगण प्रारम्भ में अपना प्रबन्ध छोटी २ सस्थाओं द्वारा करते थे जो जनसभायें (Folk Moots†) कहलाती थीं। इनकी बैठक वर्ष में दो बार किसी बड़े मैदान में होती थी। उन में नियम बनते थे। युद्ध तथा सन्धि के विषय मे निर्णय होता था। नेता नियुक्त होते थे और अभियोगों का न्याय होता था। इन संस्थाओं में सैकड़ों मनुष्य सम्मिलित होते थे अत इन में कोलाहल मचना व झगडा होना कठिन बात न थी। जब सातों अंग्रेजी प्रान्तों पर एक सेक्सन राजा शासन करने लगा तो जन-सभाओं की शक्ति कम हो गई। राजा अपनी सहायतार्थ विद्वानों की सभा बनाकर देश सम्बन्धी विषयों पर परामर्श करने लगा। यह सभा विटन (Witan) अर्थात् विद्वानों

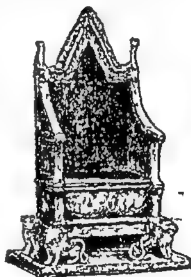
---

* पार्लियामेण्ट शब्द फ्रासीसी भाषा का है। परन्तु इस महान् सभा का जन्म सब से प्रथम इगलैण्ड ही में हुआ था।

† मूट का अर्थ एग्लो-सेक्सन भाषा में 'सम्मेलन' है।

की सभा कहलाती थी ? इसके सभासद विशप, आर्चविशप, बड़े २ धनाढ्य तथा राजकर्मचारी होते थे। इसकी बैठक वर्ष में तीन बार हुआ करती थी। राज के समस्त प्रबन्ध करने के अतिरिक्त यह सभा राज मन्त्री तथा राजाओं को भी नियुक्त करती थी। इङ्गलैण्डवासियों ने विलियम विजयी को विटन हा की सम्मति से इङ्गलेण्ड का राजा नियुक्त किया था।

नार्मन जाति का शासन—राजसभा—सेक्सन की भांति नार्मन जाति का राजा भी एक सभा रखते था जो क्यूरिया रेगिस (Curia Regis) अर्थात् 'राजसभा' कहलाती थी। इसमें केवल वे ही मनुष्य बैठ सकते थे जिन्हें राजा की ओर से जागीरें प्राप्त थीं। ऐसे सभासद विशप, आर्चविशप, धनाढ्य पुरुष, सामन्त, राजा के मित्र तथा सरकारी राजकर्मचारी थे। इस भांति नार्मन राजाओं की सभा के भी वे ही सदस्य होते थे जो सेक्सन राजाओं की सभा में बैठते थे। परन्तु ये दोनों सभायें वर्तमान काल के हाउस आफ लार्ड्स से समता रखती थीं। इनकी समता हाउस आफ कामन्स से तनिक भी नहीं हो सकती है क्योंकि इन में प्रजा की ओर से एक भी सदस्य निर्वाचित होकर न आता था। अत: इन में वही बात निश्चित होती थी जो राजा चाहता था चाहे उस में प्रजा का हित हो अथवा अहित।



नार्मन राजाओं का सिंहासन।

प्रथम राष्ट्रीय प्रकाशन—अञ्जवन वंश के तृतीय राजा जॉन (११९९-१२१६) के समय तक इङ्गलैण्ड के निवासी राजा के अत्याचार के

लक्ष्य बने रहे। इस राजा के शासनकाल के अन्त में लार्ड, सामन्तों तथा पादरियों ने एका करके स्टीफन लेङ्गटन (Stephen Langton) की सम्मति से, जो जॉन की इच्छा के प्रतिकूल पोप (Pope*) की ओर से केण्टरबरी का आर्च विशप नियुक्त हो कर आया था, सेण्टएलबन्स के स्थान पर एक सभा की। सामन्तों तथा पादरियों के अतिरिक्त सेण्ट एलबन्स की सभा में सम्मिलित होने के हेतु प्रत्येक प्रान्त से चार सदस्य निर्वाचित होकर आये। यह प्रथम अवसर था जबकि, समस्त इङ्गलैण्ड ने देशी विषयों पर विचार करने के अभिप्राय से सदस्य चुन कर भेजे जैसा कि आधुनिक काल में होता है।

मेगना कार्टा, १२१५ ई०—उपरोक्त सभा में राजा जॉन के अत्याचार को रोकने के लिये ६३ नियमों की एक नियमावली बनी। यह नियमावली महान् चार्टर (Magna Carta) के नाम से प्रसिद्ध है। प्रथम तो जॉन ने उसे स्वीकार करने तथा उस पर हस्ताक्षर करने में अरुचि दिखाई। परन्तु उसको बाध्य करने पर उसने विवश होकर १५ जून सन् १२१५ ई० को उस पर हस्ताक्षर करके अपनी स्वीकृति प्रगट की। यों तो इस महान् चार्टर से जितनी बातें निश्चित हुईं सभी आवश्यक हैं। परन्तु इन में तीन नियम मुख्य हैं जो इङ्गलैण्ड निवासियों के लिये अत्यन्त आवश्यक थे। प्रथम, राजा अपने सामन्त तथा धनाढ्य पुरुषों पर लगान के अतिरिक्त कोई कर नहीं लगा सकता। द्वितीय, राजा प्रजा पर चाहे वह उसकी भूमि जोतती हो अथवा न जोतती हो, उसकी इच्छा के प्रतिकूल कर नहीं लगा सकता। तृतीय, कोई मनुष्य उस समय तक बन्दी नहीं हो सकता जब तक न्यायालय उसे दोषी न ठहराये अथवा जब तक वह ग्राम के मुखिया की सम्मति में अपराधी न हो। इन नियमों से प्रजा की स्वतन्त्रता की रक्षा हुई।

* पोप ईसाई मत का सब से बड़ा पुजारी है जो रोम में रहता है।

इङ्गलेण्ड के इतिहास मे यह प्रथम अवसर था जब प्रजा ने साहस करके राजा के अत्याचारों का विरोध ऐसी वीरता से किया। अत आज दिन



राजा जॉन महान् चार्टर पर हस्ताक्षर कर रहा है।

जब कभी इङ्गलैण्ड में जातीय स्वतन्त्रता के विषय में वादाविवाद होता है तो पार्लियामेण्ट के सदस्य सदा सन् १२१५ ई० के महान् चार्टर की ओर सकेत करते हैं।

उन्मत्त पार्लियामेंट १२५८ ई०—राजा जान ने महान् चार्टर पर हस्ताक्षर तो कर दिये परन्तु शीघ्र ही वह उसकी प्रतिज्ञाओं को भग करके प्रजा से युद्ध करने को उद्यत हुआ। इसके एक वर्ष के भीतर ही उसकी मृत्यु हो गई। उसका पुत्र हेनरी तृतीय (सन् १२१६-७२ ई०) भी उपरोक्त चार्टर के अनुकूल न चलता था। उसने अनेकों सरकारी पद फ्रान्सीसियों को प्रदान किये थे। अत अंग्रेजी अमीर तथा सामन्त उसके शत्रु हो गये। उन्होंने साइमन डि माण्टफोर्ट (Simon de Montfort) नामक धनाढ्य पुरुष की अध्यक्षता में आक्सफोर्ड के समीप एक सभा की। वे इस सभा में अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित होकर आये। उनके उत्साह की सीमा न थी। प्रत्येक सदस्य क्रोध से लाल हो रहा था। सभों ने एक मत होकर हेनरी को सम्मति देने के लिये १५ सदस्यों की एक सभा स्थापित की। १२ सदस्यों की एक अन्य सभा राजप्रबन्ध करने को स्थापित हुई। परन्तु हेनरी ने उन्मत्त पार्लियामेण्ट (Mad Parliament) के समस्त कार्यों को अनुचित ठहराया। अत साइमन डि माण्टफोर्ट ने एक सेना एकत्रित करके उसे ससेक्स के प्रान्त में लिविस (Lewis) के स्थान पर पराजित किया। हेनरी स्वय बदी हुआ। तब तो उसने उन्मत्त पार्लियामेण्ट के किये हुये समस्त प्रबध को स्वीकार करलिया तथा साथ ही साथ अपने पुत्र एडवर्ड को भी साइमन को सौंप दिया।

हाउस आफ़ कामन्स की उत्पत्ति, १२६५ ई०—लिविस के युद्ध के पश्चात् शीघ्र ही यह बात प्रकट हुई कि जिन दो सभाओं को उन्मत्त पार्लियामेण्ट ने बड़ी आशाओं के साथ स्थापित किया है वे ठीक कार्य्य नहीं कर सकतीं। अत साइमन ने राजप्रबन्ध के

ठीक करने को एक और पार्लियामेण्ट बुलाई। इस में प्रत्येक नगर से दो २ सदस्य निर्वाचित हो कर आये। इस के अतिरिक्त इस में लार्ड, बिशप तथा छोटे पादरी भी सम्मिलित हुये। इस पार्लियामेण्ट की बैठक २८ जनवरी सन् १२६५ ई० को वेस्टमिन्स्टर में हुई। इस से वर्तमान हाउस आफ कामन्स की उत्पत्ति हुई। कारण यह है कि जनता भविष्य में आने वाली पार्लियामेण्टों में भी उसकी भांति सदस्य निर्वाचित करके भेजती रही। परन्तु उस समय की पार्लियामेण्टों में यह बड़ा दोष था कि उन में कामन्स, लार्ड तथा पादरी सब एक ही सभा में बैठते थे।

पूर्णतः तथा आदर्श पार्लियामेंट, १२६५ ई०—इस दोष के अतिरिक्त पार्लियामेण्ट में एक दोष और भी था। वह यह कि उसके सदस्यों में से जनता की ओर से केवल दो सदस्य प्रति नगर से निर्वाचित हो कर आते थे। यह दोष हेनरी तृतीय के पुत्र एडवर्ड प्रथम (१२७२-१३०७) के शासन में दूर हो गया। एडवर्ड को स्काटलैण्ड, वेल्स तथा फ्रांस से युद्ध करना पड़ा। उसे धन की सर्वदा आवश्यकता रहती थी। अतः उसने अंग्रेजी व्यापारियों से बहुत सा धन लेकर पार्लियामेण्ट के लिये बड़ी संख्या में सदस्य निर्वाचन करने की आज्ञा देदी। सन् १२९५ ई० में जिस पार्लियामेण्ट की बैठक हुई उस में लार्ड व छोटे बड़े पादरियों के अतिरिक्त दो दो सदस्य प्रति नगर, गाव तथा प्रांत से निर्वाचित होकर आये। अभी तक पार्लियामेण्ट की जितनी बैठकें हुई थीं उन में जनता के भेजे हुये सदस्य इतनी बड़ी संख्या में कभी नहीं आये थे। अतः इतिहास में यह पार्लियामेण्ट "पूर्णतः तथा आदर्श पार्लियामेण्ट" (Complete and Model Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है।

दो सभाओं का बनना, १३२२ ई०—पार्लियामेण्ट का दूसरा दोष अर्थात् लार्ड, पादरियों तथा जनता के चुने हुये सदस्यों का एक ही सभा में बैठना एडवर्ड प्रथम के पुत्र एडवर्ड द्वितीय (१३०७-१३२७) के

शासनकाल मे दूर हो गया। १३२२ ई० मे पार्लियामेण्ट तीन सभाओं में विभाजित हो गई। लार्डों ने अपनी सभा पृथक् स्थापित की, जो हाउस आफ लॉर्ड्स (House of Lords) के नाम से प्रसिद्ध हुई और कामनों ने अपनी सभा पृथक् स्थापित करली जो हाउस आफ कामन्स (House of Commons) कहलाई। पादरियों ने प्रथम तो देशी विषयों मे पूर्णतया हाथ खींच लिया परन्तु क्रमश: यह नियम बन गया कि जिनको राजा लार्ड पद प्रदान करता है वे हाउस आफ लॉर्ड्स में बैठते हैं और जिन्हें प्रजा निर्वाचित करके भेजती है वे हाउस आफ कामन्स मे बैठते हैं। इस भांति पार्लियामेण्ट ने वह रूप धारण किया जो वह आधुनिक काल में धारण किये हुये है।

कामन्स की शक्ति तथा अधिकारों की बढ़ती, १३२२-१४६१—कुछ काल तक दोनों सभाओं की शक्ति समान रही। परन्तु धीरे २ चौदहवीं तथा पन्द्रहवीं शताब्दियों मे लॉर्ड्स की शक्ति क्षीण और कामन्स की शक्ति अधिक होने लगी। एडवर्ड तृतीय (१३२७–७७) ने फ्रांस से शतवर्षीय युद्ध (१३३८–१४५३) करने के लिये धन एकत्रित करने के अभिप्राय मे कामन्स की आज्ञा का पालन करना स्वीकार कर लिया। धीरे २ कर लगाने का अधिकार भी कामनों को मिल गया। और भी अनेकों अधिकार उन्हे मिले। लार्ड देशी कार्य्यों की ओर ध्यान न देते थे। इसका एक मुख्य कारण यह है कि वे पारस्परिक तथा राजकुल मे सम्बन्ध जोड़ने में तत्पर थे। प्रत्येक अमीर की यही अभिलाषा थी कि मैं अपनी सन्तान का विवाह किसी अन्य अमीरकुल अथवा राजवंश मे करूँ। ऐसे विवाहों का एक मुख्य फल यह हुआ कि सामन्त तथा अमीर और भी अधिक धनी तथा शक्तिशाली हो गये। धीरे २ वे राजा का विरोध करने को उद्यत हुये। एक ओर सामन्त तथा अमीर अपना ध्यान पार्लियामेण्ट तथा राजकार्य्यों

से हटा रहे थे दूसरा और चौदहवा तथा पन्द्रहवीं शताब्दियों के राजाओं को देशी कार्य्यों की ओर ध्यान देने का अवसर न मिलता था। अत पार्लियामेण्ट ने अपनी शक्ति खूब बढाई। इस काल में अग्रेजी राजाओं की दृष्टि सौ वर्ष से अधिक शतवर्षीय युद्ध की ओर आकर्पित रही। जिस वर्ष यह युद्ध समाप्त हुआ (१४५३ ई०) उसी वर्ष इङ्गलैण्ड में लङ्कास्टर तथा यॉर्क वशों के बोच गुलाबों का युद्ध आरम्भ हो गया। इस युद्ध में राजा और अग्रेजी अमीर तथा सामन्त सभी लगे रहे। पार्लियामेण्ट को अपनी शक्ति बढाने का सुअवसर मिला। अत पार्लियामेण्ट और विशेप कर हाउस आफ कामन्स की शक्ति बहुत बढ गई।

१४८५ ई० मे पार्लियामेंट की अवस्था—यह दशा यॉर्क वश के शासन के आरम्भ होते समय तक रही। इस वश के राजाओं ने खोई हुई शक्ति को पुन प्राप्त कर लिया। इस का एक मुख्य कारण यह है कि जनता घरेलू झगडों से तग आगई थी। अत. उसने राजा के शक्तिशाली होने ही में अपना हित समझा। जब टयूडर वश का शासन आरम्भ हुआ तो पार्लियामेण्ट की शक्ति पूर्णतया न्यून हो गई थी। बहुत से आवश्यक अधिकार पार्लियामेण्ट को अभी तक प्राप्त ही नहीं हुये थे। न उसकी बैठक ठीक समय पर होती थी, न वह मनमाने नियम बना सकती थी और न मन्त्रियों तथा राजा के सम्मतिदाताओं पर अभियोग ही लगा सकती थी। पार्लियामेण्ट ने ये और अन्य आवश्यक अधिकार सत्रहवीं, अठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दियों में प्राप्त किये।

——⁂——

अभ्यास।

(१) तेरहवी तथा चौदहवीं शताब्दियों मे पालियामेण्ट की उन्नति वर्णन करो।

(२) महान् चार्टर का क्या महत्व हे? यह अंग्रेजी इतिहास में कौन सा पद रखता है?

(३) सेक्सन तथा नार्मन राज्यों की शासन प्रणाली कैसी थी?

(४) उन दोषों का वर्णन करो जो पार्लियामेण्ट में १४ वीं व १५ वीं शताब्दियों में उपस्थित थे। यदि हम उस समय की कठिनाइयों पर ध्यान दें तो क्या ये बहुत बड़े दोष मालूम होंगे?

(५) निम्नाङ्कित पर सक्षेप में नोट लिखो —

उन्मत्त पार्लियामेण्ट, महान् चार्टर और आदर्श पार्लियामेण्ट।



सातवां अध्याय।

प्राचीनकाल में धार्मिक उन्नति।



प्राचीनकाल से यूरुप का धार्मिक केन्द्र इटैली का प्रसिद्ध नगर रोम चला आता है। आजकल भी इसाई धर्म के एक अङ्ग अर्थात कैथोलिक मत (Catholicism) का सब से बड़ा पुजारी पोप (Pope) रोम ही में रहता है। जब रोमन जाति के राजा जूलियस सीज़र ने इङ्गलैण्ड को विजय कर लिया तब इस मत का प्रचार बृटिश द्वीपों में प्रारम्भ हुआ। परन्तु छै शताब्दियों तक यह उन्नति न कर सका क्योंकि सेक्सन, एंगिल्स तथा जूट, जिन्हों ने पांचवीं शताब्दि में इङ्गलैण्ड पर धावे किये और लूट मार करके यहीं बस गये, मूर्तिपूजक थे।

केन्ट का परिवर्तन, ५९७ ई०—सन् ५९७ ई० में पोप ग्रिगरी ने ऑगस्टाइन नामक पादरी को ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिये इङ्गलैण्ड भेजा। केण्ट के अंग्रेजी राजा एथिलबर्ट (Ethelbert) ने उसका भली भांति स्वागत किया और उसे केण्ट के प्रान्त में धार्मिक विधियों पर व्याख्यान देने तथा ईसाई धर्म का प्रचार करने की आज्ञा देदी। एथिलबर्ट ने अपनी स्त्री के कहने से, जो ईसाइ धर्मावलम्बिनी थी, ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया और उसे केण्ट प्रान्त का राजधर्म ठहराया। यही नहीं वरन उसने ऑगस्टाइन को केण्ट के प्रसिद्ध नगर तथा राजधानी केण्टरबरी में एक

गिर्जाघर दिया जो उस समय अत्यन्त शोचनीय दशा में था। धीरे २ यह नगर धार्मिक विषयों के लिये इतना प्रसिद्ध होगया कि वर्तमान काल में केण्टरबरी का आर्चबिशप इङ्गलैण्ड के समस्त आर्चबिशपों में श्रेष्ठ माना जाता है।

एथिलबर्ट की पुत्री एथिलबर्गा (Ethelburga) का विवाह नार्थम्ब्रिया के राजा एडविन (Edwin) के साथ हुआ था। यह ईसाई धर्मानुयायिनी थी और जब केण्ट से नार्थम्ब्रिया जाने लगी तो अपने साथ एक पादरी पोलीनस (Paulinus) को भी लेती गई। इन दोनों के कथनानुसार एडविन ने भी ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया। शनैः शनैः समस्त प्रान्त इसी धर्म का अनुयायी होगया। सन् ६६४ ई० तक सारा इङ्गलैण्ड इसे मानने लगा।

थ्यूडोर के सुधार, ६७२ ई०—सन् ६७२ ई० में थ्यूडोर (Theodore) नामक मनुष्य केण्टरबरी का आर्चबिशप नियुक्त होकर आया। उसने इङ्गलैण्ड में आकर कई आवश्यक सुधार किये। अभी तक गिर्जो की शासन पद्धति ठीक न थी। पादरी प्रायः परस्पर लड़ा करते थे। थ्यूडोर ने आकर गिर्जा में वैसी ही शासन प्रणाली स्थापित की जैसी रोम में प्रचलित थी। उसने पोप को सब से उच्च पद दिया। उसके नीचे आर्चबिशप रक्खे गये। उनका शासन एक प्रान्त में था। उनके अधिकार में बिशप थे जो प्रान्तों के भागों (Diocese) पर शासन करते थे। बिशप के आधीन पादरी थे जो पद में सब से छोटे थे और पेरिश (Parish) पर शासन करते थे। इस प्रणाली के स्थापित हो जाने से वे समस्त दोष दूर हो गये जो थ्यूडोर के आगमन के पूर्व चारों ओर फैले हुये थे।

आर्चबिशप डन्सटन, ९६० ई०—थ्योडोर की भांति डन्सटन भी ईसाई धर्म के इतिहास में केण्टरबरी का एक प्रसिद्ध आर्चबिशप हुआ

है। यह सेक्सन जाति के राजा एडगर (Edgar) को राजनैतिक विषयों पर सम्मति भी देता था। वरन यों कहना चाहिये कि एडगर के निर्बल होने के कारण डन्सटन राज्य की जोर्ती म्यर अपने हाथ में लिये हुये था। यह गान-विद्या तथा कविता का अत्यन्त प्रेमी था। उसने ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिये चारों ओर पुजारी और भिक्षुक भेजे। विद्या प्रचार के लिये स्थान २ पर पाठशालायें स्थापित हुईं जिन में धार्मिक शिक्षा दी जाती थी।

विलियम और ऐनसेल्म—इसके एक शताब्दि पश्चात् जब विलियम विजयी ने समस्त इङ्गलैण्ड को अपने अधिकार में कर लिया तो ईसाई धर्म ने अत्यन्त उन्नति की। विलियम ने अंग्रेजी गिर्जा में अनेकों सुधार किये। उसने पादरियों के अभियोगों के न्यायार्थ पृथक न्यायालय स्थापित किये और बहुत से नवीन गिर्जाघर तथा विहार बनाये। परन्तु उसके पुत्र विलियम रूफस (William Rufus) ने आकर पासा पलट दिया। अतः गिर्जा का सम्पूर्ण प्रबन्ध बिगड गया। विलियम रूफस प्रत्येक मनुष्य पर अत्याचार करता था। जब किसी विशप अथवा आर्चविशप की मृत्यु होती तो वह वर्षों उसके स्थान पर किसी को नियुक्त न करता और उसके वेतन का रुपया स्वयं हडप कर जाता। सन् १०८९ ई० में केण्टरबरी के आर्चविशप की मृत्यु हुई। चार वर्ष तक विलियम रूफस ने उसके स्थान पर किसी को नियुक्त न किया। जितना रुपया बचा वह स्वयं हडप कर गया। सन् १०९३ ई० में वह अचानक ऐसा रोगग्रसित हुआ कि उसके बचने की आशा न रही। तब विलियम ने अपनी भूल स्वीकार की और ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये एक बुद्धिमान् तथा सच्चरित्र मनुष्य को केण्टरबरी का आर्चविशप नियुक्त किया। इसका नाम ऐनसेल्म (Anselm) था। ऐनसेल्म ने विलियम रूफस की वह सम्पूर्ण अनुचित आय बन्द कर दी जो उसको गिर्जा से होती थी। इस

पर दोनों में विरोध आरम्भ हुआ। जब बात बढ़ी तो विलियम ने ऐनसेल्म को देश निकाला दे दिया। बेचारे ऐनसेल्म ने रोम में शरण ली। विलियम विजयी के तृतीय पुत्र हेनरी प्रथम (११००–११३५) ने, जो विलियम रूफस की मृत्यु के पश्चात् राजा बना, ऐनसेल्म को पुनः रोम से बुला लिया परन्तु उनकी भी बहुत दिन तक न पटी। कारण यह था कि हेनरी स्वयं को बड़ा समझता था और ऐनसेल्म स्वयं को। इस भांति विलियम रूफस तथा हेनरी के शासनों में वे झगड़े आरम्भ हुये जो सोलहवीं शताब्दि में धर्म सुधार (Reformation) से निर्धारित हुये।

हेनरी द्वितीय और बेकेट—हेनरी प्रथम के पौत्र हेनरी द्वितीय (११५४–८९) के शासनकाल में राजा और गिर्जा के बीच और भी झगड़े बढ़े। इस समय गिर्जा की ओर से युद्ध करने वाला बेकेट, लन्दन के एक व्यापारी का पुत्र था हेनरी ने उसे अपना प्रधान मन्त्री नियुक्त किया और कुछ समय उपरान्त उसे केण्टरबरी का आर्चबिशप बना दिया। परन्तु बेकेट के विचारों में विचित्र परिवर्तन दृष्टिगोचर हुये। वह सांसारिक वस्तुओं को घृणा की दृष्टि से देखने लगा। उसने प्रधान मंत्री का पद त्याग दिया। वह कहता था कि एक सेवक दो स्वामियों अर्थात राजा और ईश्वर की सेवा नहीं कर सकता। तत्पश्चात् उसने समस्त सांसारिक



बेकेट

सुखों को त्याग दिया और धार्मिक जीवन व्यतीत करने लगा। परन्तु धार्मिक जीवन व्यतीत करने तथा बड़ा ईश्वरभक्त होने पर भी उसका स्वभाव न बदला। वह पूर्व की भांति हठी, स्वच्छन्द स्वभावी, लड़ाका तथा लोभी बना रहा। उधर हेनरी द्वितीय भी स्वभाव का चिड़चिड़ा था। दोनों में विरोध आरम्भ हुआ। हेनरी ने बेकेट पर झूठे दोषारोपण करके उसे देशनिकाला दे दिया। बेकेट इङ्गलैण्ड छोड़ कर फ्रान्स चला गया परन्तु सन् ११७० ई० में दोनों में सन्धि हो गई। अत बेकेट इङ्गलैण्ड लौट आया।

बेकेट का वध—जब बेकेट फ्रान्स में था तब हेनरी द्वितीय ने अपने पुत्र रिचर्ड को युवराज पद दिया। युवराज पद देने को सदैव केण्टरबरी का आर्चबिशप निमन्त्रित किया जाता है। हेनरी ने बेकेट की अनुपस्थिति में उसके शत्रु लन्दन और यॉर्क के आर्चबिशपों द्वारा रिचर्ड को नवीन उपाधि प्रदान की। बेकेट को बहुत बुरा लगा। जब वह सन् ११७० ई० में इङ्गलैण्ड लौट कर आया तो उसने युवराज पद को अनुचित ठहराया और लन्दन और यॉर्क के आर्चबिशपों को गिर्जा से निकाल दिया। इस समय हेनरी फ्रान्स में युद्ध कर रहा था। वह बेकेट के व्यवहार से बड़ा क्रोधित हुआ। उसने तीव्र स्वर में चिल्ला कर कहा कि क्या मेरे कर्मचारियों में कोई ऐसा नहीं है जो इस दुष्ट पादरी का सर काट लावे। इतना सुनना था कि चार नाइट तुरन्त अंग्रेजी नहर पार करके इङ्गलैण्ड आये और बेकेट के घर जाकर उसका शीश उतार लिया। बेकेट ने भागने का तनिक भी प्रयत्न न किया। उसकी गणना धर्म पर बलिदान होने वालों में होने लगी। मनुष्य दूर २ से उसकी समाधि पर दर्शनार्थ आने लगे। हेनरी ने समस्त धार्मिक प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया परन्तु कैथोलिक मत के पुजारी पूर्व की भांति उसके शत्रु बने रहे।

रिचर्ड प्रथम और धार्मिक युद्ध—हेनरी का पुत्र रिचर्ड (११८९–९९), जो इतिहास में सिंह-हृदय (Lion-hearted) के नाम से प्रसिद्ध है, अपने पिता के समान गिर्जा पर अपना आधिपत्य स्थिर न रख सका। उसने पोप से सन्धि करके उसकी आज्ञा पालन करने की प्रतिज्ञा की। उसकी इच्छानुसार वह तुर्कों से धार्मिक युद्ध करने और ईसाइयों के पवित्र स्थान जेरूसलम को मुक्त करने के हेतु पूर्वी रूमसागर को गया। परन्तु यह स्थान पहले की भांति तुर्कों के अधिकार में बना रहा यद्यपि रिचर्ड के अतिरिक्त यूरप के अन्य राजाओं ने भी उसके छुड़ाने को तुर्कों से छै बार युद्ध किया।

जान और स्टेफन लैङ्गटन—रिचर्ड के भाई जॉन (११९९–१२१६) के शासनकाल में भी राजा और गिर्जा के बीच झगड़ा होता रहा। जॉन का शत्रु स्टेफन लेङ्गटन था जो पोप की ओर से कैण्टरबरी का आर्चबिशप नियुक्त होकर आया था। पिछले पाठ में हम वर्णन कर चुके हैं कि लेङ्गटन ने सामन्तों तथा धनाढ्य पुरुषों से मिल कर किस भांति महान् चार्टर को जॉन से स्वीकार कराके राजा के अत्याचार का अन्त किया। जॉन शक्तिहीन राजा था अत वह गिर्जा को अपने आधीन न रख सका। इस प्रकार हेनरी द्वितीय ने जो विजय गिर्जा पर पाई थी वह सब निष्फल सिद्ध हुई।

एडवर्ड प्रथम और गिर्जा की जागीरें, १२७६ ई०—जॉन का पुत्र हेनरी तृतीय (१२१६—७२ ई०) अत्यन्त कायर राजा था। इसलिये वह सर्वदा कैण्टरबरी के आर्चबिशप की आज्ञा पालन करता था और पोप को बराबर धन भेजता रहता था। परन्तु हेनरी तृतीय का पुत्र एडवर्ड प्रथम (१२७२—१३०७ ई०) बलवान तथा स्वतन्त्र स्वभाव का राजा था। उसने फिर अपने आप को पादरियों के अधिकार से बाहर निकाल लिया और उनके विरुद्ध एक नियम (Statute of Mort-

main) बनाया। इस से यह बात निश्चित हुई कि भविष्य में कोई जागीर चाहे छोटी हो अथवा बड़ी राजा की आज्ञा के बिना पादरी के अधिकार में नहीं रह सकती है। इस नियम के कारण पादरियों की जागीरें बहुत कम हो गई अत उनकी शक्ति भी न बढ़ सकी।

भिक्षुक और धर्म-प्रचारक—एडवर्ड प्रथम के शासनकाल के पश्चात प्राचीनकाल में इङ्गलैण्ड के गिर्जा में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ। अत हम धर्मप्रचारकों तथा शिक्षा का सम्बन्ध बता कर इस पाठ को समाप्त करेंगे। जिस भांति भारतवर्ष में बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिये भिक्षुक नियुक्त थे उसी भांति, जब पादरी सांसारिक सुखों में लिप्त होने के कारण अपना मुख्य कर्म भूल गये और गिर्जाघर में अनेकों दोष उत्पन्न हो गये, तो उनकी ओर मनुष्यों का ध्यान आकर्षित करने तथा उन्हें दूर कराने को भिक्षुक तथा धर्मप्रचारक नियुक्त हुये। इन धर्म प्रचारकों के कई विभाग थे। इन में सब से प्रसिद्ध फ्रान्सिसकन (Franciscan) तथा डोमेनिकन (Dominican) थे। समस्त देश में भ्रमण करना तथा मनुष्यों को अपने मार्ग पर लाना और गिर्जा के दोषों को दूर करना इन धर्म प्रचारकों का मुख्य कर्तव्य था।

गिर्जाघर और शिक्षा प्रचार—गिर्जा के दोषों को दूर करने का एक अन्य उपाय शिक्षा का प्रचार करना है। जिस भांति वर्तमान काल में भारतवर्ष में लगभग प्रत्येक मस्जिद से मिला हुआ एक मकतब होता है उसी भांति प्राचीन समय में इङ्गलैण्ड में गिर्जाघरों से मिली हुई छोटी सी पाठशालायें होती थीं जिनमें बालकों को धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। पादरी स्वयं शिक्षक होते थे। अधिकांश शिक्षा मुखाग्र तथा लेटिन भाषा में दी जाती थी। उस समय तक छापाखानों का आविष्कार न होने के कारण सम्पूर्ण पुस्तकें हस्तलिखित थीं। अत शिक्षा प्रचार में बड़ी कठिनाइया पड़ती थीं। तिस पर भी गिर्जा में अनेकों

प्रसिद्ध विद्वान हुये है। इन में सेडमन (Caedman) और बीड (Bede) मुख्य विद्वान् हैं। इन दोनों से भी अधिक प्रसिद्ध तथा गुणवान मनुष्य जॉन विक्लिफ (John Wycliffe) हे जिसके अनुयायी लोलार्ड (Lollards) * के नाम से प्रसिद्ध हैं।

जान विकलिफ़ १३२४-८४—जान विकलिफ यॉर्क के प्रान्त का निवासी था। उसने आक्सफोर्ड में शिक्षा पाई थी। वह विद्वान्, स्वतन्त्र विचार तथा बुद्धिमान पुरुष था। वह कहता था कि जितने दोष हम गिर्जा में देखते हैं वे सब उस के धनवान होने के कारण फैले हैं, अत: हमको चाहिये कि गिर्जाघरों को धनवान न होने दें और पोप को धन न भेजें। उसने ईसाई धर्म के नियमों पर भी आक्षेप किया। परन्तु इस विषय में उसे सफलता प्राप्त न हुई। धार्मिक सिद्धान्तों पर आक्षेप करने तथा उनके सुधार का समय अभी नहीं आया था। सोलह वीं शताब्दि में जर्मनी के एक कृषक मार्टिन लूथर (Martin Luther) ने इस कार्य्य में पूर्ण सफलता प्राप्त की। यह कैसे हुआ इसका वर्णन आगे चल कर होगा। विकलिफ ने भी उसी बात का प्रयन्त किया था जो धर्मसुधार द्वारा निश्चित हुई। अत वह सुधार का "ज्योतिमान तारा" (Morning Star of Reformation) कहलाता है।

जान विकलिफ ने इञ्जील का अनुवाद अंगरेजी भाषा में किया परन्तु उस से अधिक लाभ न हुआ। कारण कि अभी तक छापाखानों का आविष्कार नहीं हुआ था। इस से जनता इञ्जील को सहज ही में मोल न ले सकती थी। प्रारम्भ में धनाढ्यों ने विकलिफ के कहने तथा लिखने पर अधिक ध्यान दिया। परन्तु अन्त में उन्होंने उनकी ओर से अपना ध्यान हटा लिया। पादरियों ने विकलिफ को पकड़वाने तथा मरवाने का

* 'लोलार्ड' शब्द का अर्थ है व्यर्थ बकने वाला'।

बहुत प्रयत्न किया । परन्तु उन्हें सफलता प्राप्त न हुई । हा, उसके अनुयायी अवश्य सैकडों की संख्या में जीवित ही अग्नि में जला दिये गये ।



अभ्यास ।

(१) उस राजा का नाम बताओ जिसने ऑगस्टाइन का स्वागत किया ? उसने इंगलैण्ड में ईसाई धर्म का प्रचार कैसे किया ?

(२) ईसाई धर्म के इतिहास में थ्योडोर, डन्सटन धर्मप्रचारकों का क्या महत्व है ?

(३) बेकेट और हेनरी के चरित्र वर्णन करो । दोनों के चरित्रो में कौनसी ऐसी कमी थी जिस ने दोनों में अशान्ति उत्पन्न करदी ?

(४) धार्मिक युद्ध किन के बीच हुये थे ? इन में अंग्रेजी राजाओं ने कितना भाग लिया ?

(५) विक्लिफ कौन था ? उसे सुधार का "ज्योतिमान तारा" क्यों कहते हैं ?

(६) विक्लिफ के समय का वृत्तान्त पढ़ कर तुम सोलहवीं शताब्दि के धार्मिक इतिहास के विषय में क्या परिणाम निकाल सक्ते हो ?

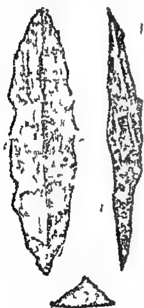
——•⊛•——

आठवां अध्याय।

प्राचीनकाल का सामाजिक जीवन।



सहस्त्रों वर्ष हुये जब इङ्गलैण्ड के निवासी भारतवर्ष के प्राचीन निवासियों की भाँति जङ्गली थे। या तो वे बन्दरों की भाँति वृक्षों पर रहते थे अथवा पृथ्वी के भीतर गुफायें बना कर जीवन व्यतीत करते थे। वे पत्थर के भद्दे बाण, चाकू, भाले, तथा कुल्हाड़िया बनाते थे और उनसे जङ्गली पशुओं का आखेट करते थे। ज्यों ज्यों समय व्यतीत होता गया जङ्गली लोग उन्नति करते गये। उन्हों ने अच्छे २ शस्त्र बनाये और रहन सहन में उन्नति की। गुफाओं के बदले वे छोटे छोटे झोपड़ों में रहने लगे। उन्हों ने कृषी करना आरम्भ कर दिया। कृषी के लिये वे घोड़े, गाय तथा भेड़ें पालने लगे। वे भेड़ों का ऊन कातते और उस से कपड़ा बनाते थे। कुछ समय में उनको धातु का प्रयोग ज्ञात हुआ और वे पत्थर के स्थान पर धातु के हथियार बनाने लगे। उन्होंने व्यापार भी आरम्भ कर दिया। उनके समय में बाहर की जातियाँ प्रायः इङ्गलैण्ड में आती थीं और कार्नवाल से टीन ले जाती थीं।



जंगली जातियों के पत्थर के हथियार।

कैल्ट जाति का समय—बहुत समय तक जङ्गली लोग सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते रहे। तत्पश्चात् केल्ट जाति के मनुष्यों ने, जो बृटन के नाम से प्रसिद्ध हुये, पूर्व की दिशा से आकर उन पर आक्रमण किया और घर बना कर इङ्गलैण्ड में रहने लगे। जङ्गली लोग उनके भय से पहाड़ों तथा वनों में भाग गये अथवा उनकी आधीनता स्वीकार कर ली। बृटन सभ्य मनुष्य थे और जङ्गली जातियों की अपेक्षा अच्छा जीवन व्यतीत करते थे। वे छोटे २ गांव बना कर रहते थे और कृषी तथा व्यापार करते थे। उनके समय में लोहा, मछलियां तथा टीन दूसरे देशों को जाते थे। जब व्यापार में अधिक उन्नति हुई तब बृटन ने ऊंचे टीलों तथा पर्वतश्रेणियों पर दुर्ग बनाये और उनके चारों ओर गहरी २ खाइयां खोदीं। वे धार्मिक विषयों पर भी बड़ा ध्यान देते थे। वे अनेकों देवताओं की उपासना करते थे जिन में थर तथा ओडर मुख्य हैं। उनके पुजारी (Druids) श्वेत वर्ण के लम्बे २ वस्त्र पहनते थे। और बलूत के पत्तों का मुकुट धारण करते थे। उनकी सम्मति से बृटन लोग देवताओं के आगे बकरों, भैंसा और कभी कभी मनुष्यों का बलिदान करते थे।

रोमन जाति की सभ्यता—ईसा से ५५ वर्ष पूर्व इङ्गलैण्ड रोम वालों के अधिकार में आया। रोम वालों का रहन सहन केल्ट जाति के रहन सहन की अपेक्षा प्रत्येक बात में उत्तम था। रोमन भवन-निर्माण में बहुत धन व्यय करते थे। उनहों ने इङ्गलैण्ड में बड़ी २ सड़कें बनाईं जो व्यापार तथा युद्ध दोनों के लिये लाभदायक थीं। आधुनिक काल की रेल की सड़कें उन्हीं मार्गों पर बनी हुई हैं जिन मार्गों पर प्राचीनकाल में रोमन जाति की सड़कें बनी था। रोम वालों ने रक्षा के लिये अनेकों दृढ़ दीवारें, दुर्ग तथा उपनगर बनाये। अतः उनके समय में इङ्गलैण्ड बाह्य आक्रमणों से सुरक्षित रहा। मन्दिर, गिर्जा-

घर और थियेटर भी बने। रोम वाले कृषी व शिल्पकार्य्य में बड़े निपुण थे। उनके समय में कृषा ने इतनी उन्नति की कि आज तक उनके समय के इङ्गलैण्ड को "उत्तर का अन्न भाण्डार" कहते हैं। रोम वाले महीन वस्त्र तथा मिट्टी के पात्र बनाते थे। कलाकौशल में चतुर होने के अतिरिक्त रोमन धार्मिक विषयों में भी बहुत भाग लेते थे। बृटिश द्वीपों में सबसे प्रथम ईसाई धर्म का प्रचार उन्हीं के समय में हुआ था। बृटन जाति ने रोम वालों की विद्या तथा कला कौशल सीख कर बड़ा लाभ उठाया।



रोम जाति का एक सैनिक।

इन समस्त बातों से हमको यह न समझना चाहिये कि रोमन राजाओं का शासन देश के हित सभी प्रकार से उपयोगी था। ये राजा बृटन के साथ कठोरता का व्यवहार करते थे। उनके समय में कर इतने अधिक थे कि जनता उनके बोझ से पिसी जाती थी। प्रायः युवा पुरुष बलात बन्दी कर लिये जाते थे और रोमन राजा की ओर से युद्ध करने को रोम, जर्मनी अथवा अन्य देशों को भेज दिये जाते थे। रोमन राजा सहस्रों टन अनाज प्रति वर्ष रोम भेज देते थे जिसके कारण बृटन को पर्य्याप्त अनाज न बचता था।

सेक्सन के समय का जीवन—सेक्सन जाति का जीवन रोमन

जाति के जीवन से अनेकों बातों में भिन्न था। सेक्सन जाति के मनुष्य दो बड़े भागों में विभक्त थे। प्रथम स्वतन्त्र मनुष्य और द्वितीय दास। द्वितीय भाग में बृटन, युद्ध के बन्दी तथा जाति से निकाले हुये मनुष्य सम्मिलित थे। इनको छोड़ कर शेष मनुष्य स्वतन्त्र थे। दास राज्य सम्बन्धी बातों में लेशमात्र भाग न पाते थे। परन्तु प्रत्येक स्वतन्त्र मनुष्य राजकार्य्यों में भाग लेता था। ग्रामों तथा नगरों का प्रबन्ध सभाओं द्वारा होता था जिनके सभ्य ग्राम अथवा नगर के सारे स्वतन्त्र पुरुष होते थे। जो मनुष्य अपना खेत न जोतता था या चोरी अथवा अन्य दुष्कर्म करता था उसका न्याय ग्राम अथवा नगर की सभा करती थी। यदि अपराधी न्याय के समय बारह स्वतन्त्र मनुष्यों को लाकर इस बात की शपथ खाता और उन सब से भी इस बात की शपथ दिलाता कि वह निर्दोष है तो वह मुक्त कर दिया जाता था। यदि अपराधी ऐसा न कर सकता था तो वह अपनी निर्दोषता का प्रमाण अन्य रीतियों से दे सकता था। इन में से एक रीति यह थी कि अपराधी अपने हाथों को नगा करके खौलते हुये जल के बर्तन में डाल कर उस में से पत्थर का टुकड़ा अथवा पात्र की पेंदी में पड़ी हुई कोई अन्य वस्तु निकालता था। तत्पश्चात् उसका हाथ तीन दिन तक पट्टी में बँधा रहता था। यदि इस समय में उसका हाथ अच्छा हो जाता तो वह निर्दोष ठहराया जाता अन्यथा दोषी होता और अपने अपराध का दण्ड पाता था।

सेक्सन के घर झोपड़ों की भांति लकड़ी तथा मिट्टी के बने होते थे। घर के चारों ओर एक छोटा सा उपवन होता था जिस में मधुमक्खियों के छत्ते होते थे। अभी तक इङ्गलैण्ड में शक्कर का प्रयोग ज्ञात न हुआ था। अतः सेक्सन मधु ही से शक्कर का काम निकालते थे। अमीरों के घर में एक बड़ा कमरा होता था जिस में एक लम्बी मेज बिछी रहती थी। इस मेज पर अमीर, उसके सम्बन्धी तथा उसके मित्र एक साथ बैठ कर

भोजन करते थे। प्रत्येक व्यक्ति की थाली पृथक् होती थी। भोजन भी दो प्रकार का होता था। अमीरों के लिये सुन्दर स्वादिष्ट तथा पौष्टिक और दासों के लिये साधारण तथा अस्वादिष्ट। अतिथि के भोजन के समय आने और सब के साथ बैठ कर भोजन करने मे अमीर अपना गौरव समझते थे। भोजन में मास तथा मदिरा बहुत उठती थी। परन्तु उस समय तक नमक पर्य्याप्त न मिलने के कारण मास फीका तथा अस्वादिष्ट होता था। भोजन समाप्त होने पर और कभी कभी भोजन के बीच ही में गवैये एक कोने में बैठ कर राग अलापते थे और वीर पुरुषों का यश वर्णन करके भोजन के आनन्द को दुगना कर देते थे। उनका राग सुन कर लोग मदिरा की उन्मत्तता में प्राय ऐसे मस्त हो जाते कि भोजन करते २ मेज पर से गिर पडते थे और सारी रात्रि यों ही पडे रहते थे।

सेक्सन के ग्राम अधिकांत किसी न किसी स्रोत के समीप होते थे। ग्राम के निकट कई बडे २ खेत होते थे। प्रत्येक खेत कई भागो में बटा होता था जिन को ग्राम के समस्त स्वतन्त्र कृषक मिल कर जोतते थे। एक खेत में एक ही अनाज उपजता था। बहुत सी भूमि घास उत्पन्न करने के अभिप्राय से छोड दी जाती थी। कुछ भूमि पशुओ के चरने के लिये रक्खी जाती थी। उस पर प्रत्येक व्यक्ति अपने पशु अर्थात् घोडे, गाय, भेड, सुअर आदि चरा सकता था। प्रत्येक उपनगर में एक गिर्जाघर होता था। कहीं कहीं पर महन्तो के निवासार्थ विहार बने हुये थे। ग्राम निवासी कुछ भूमि पादरियों तथा धर्मप्रचारक महन्तों के लिये छोड देते थे।

नार्मन का जीवन—ग्यारहवी शताब्दि में इङ्गलैण्ड में नार्मन जाति का शासन प्रारम्भ हुआ। विलियम विजयी अपने साथ नार्मण्डी के अमीरों को लाया था। इगलैण्ड विजय कर के उसने सेक्सन जाति की जागीरें नार्मन जाति के अमीरों तथा ड्यूकों को सौंप दीं। फिर

उसने इङ्गलैण्ड में भी उसी शासन प्रणाली की नींव डाली जो उस समय फ्रान्स और यूरप के अन्य देशों में प्रचलित थी। नार्मन सामन्तों तथा ड्यूकों को जागीरें प्रदान करके उसने उन से यह प्रतिज्ञा करा ली कि वे उसे कुछ वार्षिक कर तथा युद्ध के समय सहायता देंगे। सामन्तों तथा ड्यूकों ने अपनी जागीरें कृषकों में बांट दीं और उन से यह प्रतिज्ञा करा ली कि वे उन्हें थोड़ा सा धन कर के रूप में प्रति वर्ष दिया करेंगे और उनकी सेना से कभी मुख न मोड़ेंगे। भूमि जोतने की यह रीति सामन्तता कहलाती थी। प्रारम्भ में यह रीति उत्तम तथा शुद्ध थी। परन्तु जैसे २ समय व्यतीत होता गया सामन्त स्वतन्त्र तथा बलवान और राजा शक्तिहीन होते गये। परिणाम यह हुआ कि उन्हों ने स्वयं तो राजा की आज्ञा पालन करना छोड़ दिया परन्तु वे किसानों के साथ प्रत्येक भांति का अनुचित व्यवहार करते रहे।

सामन्तता के स्थापित होने से इङ्गलैण्ड में दासों की संख्या अधिक बढ़ गई। सेक्सन के समय में मनुष्य स्वयं को स्वतन्त्र कहने में अपना गौरव समझते थे। नार्मन के समय में ऐसे मनुष्य बहुत कम थे जो स्वयं को स्वतन्त्र कह सकते थे। परन्तु इसके साथ ही साथ सहज ही में स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेते थे। यदि कोई दास सामन्त की जागीर से भाग कर किसी उपनगर अथवा नगर में एक वर्ष और एक दिन तक छिपा रहता तो वह स्वतन्त्र हो जाता था। प्रायः अपराधी तथा दास गिर्जाघरों और मन्दिरों में गुप्त निवास करते थे क्योंकि उन में पुलिस नहीं घुस सकती थी। कुछ समय व्यतीत होने पर जब सिक्कों का प्रचार हुआ तो कृषक सामन्त की बेगार करने के बदले उसे कुछ धन देने लगे और अनाज तथा पशुओं के स्थान पर लगान देने में सिक्कों का प्रयोग करने लगे। इस भांति सिक्कों के प्रचार से दासों की स्वतन्त्रता प्राप्त करने में अधिक सुविधा होने लगी।

नार्मन के समय में प्रत्येक मनुष्य की हार्दिक इच्छा युद्ध में शूरता दिखाने और 'नाइट' का पद प्राप्त करने की होती थी। इस पद के प्राप्त करने के लिये युद्ध मे वीरता दिखाना आवश्यक था। प्राय' राजा इस पद को अन्य रीतियों से भी मनुष्यों को प्रदान करता था। नाइट टूर्नामेण्ट में



नार्मन टूर्नामेण्ट।

बड़े चाव से भाग लेते थे। नार्मन के समय मे टूर्नामेण्ट और वाण-

विद्या के खेल बहुधा होते थे। सेक्सन के समय की भांति प्रत्येक नार्मन के घर पर गवइये रहते थे। अमीर तथा सामन्त भी गानविद्या में निपुण होते थे। अमीरों के यहा विदूषक भी रहते थे जो हँसी की बातों से उनका चित्त प्रसन्न रखते थे। लोग जादूगरों के खेल, मुर्गों तथा बैलों की लड़ाइयों में भी प्रेम रखते थे।

मध्यकाल का जीवन—जैसे २ नार्मनों को इङ्गलेण्ड में निवास करते समय व्यतीत होता गया उन के रहन सहन मे भी अन्तर पड़ता गया। तेरहवीं, चौदहवीं तथा पन्द्रहवीं शताब्दियों के जीवन और ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दियों के जीवन में बड़ा अन्तर है। कृषी बराबर उन्नति कर रही थी। शनै शनै कृषक जमींदारों तथा सामन्तों को सिक्के कर में देकर स्वतन्त्र हो रहे थे। निर्धनों के घर पूर्व की भांति भद्दे बने रहे। परन्तु धनाढ्य पुरुषों के घरों में कई परिवर्तन हो गये थे। नार्मनों के समय में बहुत से दुर्ग तथा विशाल भवन बने थे। परन्तु न उन में शीशे दार खिड़कियाँ थीं और न धुआँ निकलने को चिमनियाँ थीं। चौदहवीं तथा पन्द्रहवीं शताब्दियों म यह कमी दूर हो गई। शनै शनै घरों में चिमनियाँ बनाने लगी और छिद्रों के स्थान पर घरों तथा दुर्गों में खिड़-कियाँ लगने लगीं। परन्तु चिमनियों का लगाना और शीशे की खिड़कियों का रखना विलासिता की सामिग्री में सम्मिलित था। धनाढ्य पुरुषों के वस्त्रों में भी अन्तर पड़ने लगा। उन्हों ने लाल मखमल क वस्त्र पहिनने प्रारम्भ किये। उनके जूतों मे सामने की ओर लम्बी २ नोकें होती थीं जो बहुधा इतनी लम्बी होती थीं कि उन को सोने और चांदी की जञ्जीरों से घुटनों से बाधने की आवश्यकता होती थी। टूर्नामेण्ट तथा बाणविद्या के खेल ज्यों के त्यों होते रहे। रविवार को गिर्जाघर से लौटते समय प्रत्येक मनुष्य को बाणविद्या में भाग लेना पड़ता था। लड़कों को दश वर्ष की अवस्था से यह विद्या सिखई जाती थी। अभी तक बन्दूक और

बारूद का अविष्कार न हुआ था। अतः युद्ध में बाणों का प्रयोग होता था।

भयङ्कर मृत्यु. १३४७–५० ई०—मध्यवर्त्ती शताब्दियों में लोग स्वच्छता की ओर विशेष ध्यान नहीं देते थे। अत उन्हे कभी २ भयङ्कर रोगों से पीडित होना पडता था। यद्यपि स्वास्थ्य के लिये अनेकों खेल होते थे तथापि इङ्गलेण्ड में चार वर्ष तक महामारी (Black Death) फैली रही जिस मे सैकडों गाव और नगर चौपट हो गये। वैसे तो धनी निर्धनी सभी काल के ग्रास हुये परन्तु मरने वालों में अधिक सख्या कृषकों और मजदूरों की थी जैसा कि महामारी इत्यादि बीमारियों के दिनों में प्राय देखने में आता है। बहुत से कृषक और मजदूर जमीदारों के खेत छोड २ कर भाग गये। जो शेष रहे वे लम्बा वेतन लेकर काम करते थे। अत जमीदारों का जीवन बडे सङ्कट में पड गया। विवश हो उन्हीं ने एका करके कृषकों और मजदूरों से बदला लेना निश्चित् किया।

मजदूरी का नियम, १३४९ ई०—जमीदारों की संख्या पार्लियामेण्ट में अधिक थी क्योंकि इस समय तक मजदूर और कृषक अपने सदस्य पार्लियामेण्ट में न भेजते थे। जमीदारों ने सन् १३४९ ई० में अपने शत्रुओं अर्थात् कृषकों और मजदूरों के विरुद्ध अनेकों नियम बनाये। इन नियमों मे से एक मुख्य नियम यह था कि मजदूरों को वही वेतन दिया जावेगा जो महामारी के आने से पूर्व उन्हे मिलता था। इस प्रकार के नियम बनाना सरल था परन्तु उनको कार्य्य रूप में परिणत करना कठिन था। कारण यह था कि अनाज महगा होने से मजदूर कम वेतन लेना स्वीकार न करते थे।

सन् १३४९ ई० के नियम का मजदूरों और कृषकों पर क्या प्रभाव पडा, यह पाठकगण स्वय समझ सकते हैं। उनको प्रकट हो गया कि जमीदार हमारे शत्रु है। जमीदारों ने कृषकों के साथ और भी अत्याचार किये। बहुत से जमीदार इस बात का प्रयत्न करने लगे कि वे दास

जो स्वतन्त्र हो चुके हैं पुनः दासत्व स्वीकार कर लें और कुछ समय तक दास रह कर पुनः स्वतन्त्रता मोल लें। इस प्रकार के तुच्छ विचार जमींदारों की नीचता प्रकट करते हैं। प्रायः जमींदारों ने अपने खेतों पर पशुचारन स्थान बना लिये और उनमें भेड़ें पालना आरम्भ कर दिया। भेड़ पालने में मजदूरों की आवश्यकता बहुत कम होती है अतएव सैकड़ों कृषक और मजदूर बेकार हो गये। यही नहीं किन्तु जमींदारों ने उस भूमि पर भी अपने पशुचारन स्थान बना लिये जो ग्राम के पशुओं के चरने को छोड़ दी गई थी। दुखी कृषक और मजदूरों के पशु भूखों मरने लगे। इन्हीं दिनों केण्ट प्रदेश में एक पादरी जॉन बाल (John Ball) नामक ने मजदूरों और कृषकों के मध्य एक भाषण दिया जिस में उस ने यह बात बताई कि धनी और निर्धनों में जो अन्तर है वह सब धनाढ्यों के स्वार्थ का ढकोसला है अन्यथा प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर के सम्मुख समान है*।

कृषक विद्रोह—कृषकों और मजदूरों के हृदयों में जमींदारों के विरुद्ध अस्त्र उठाने के विचार उत्पन्न होने लगे। अकस्मात् इस समय के राजा रिचर्ड द्वितीय (१३७७–९९) के बालक होने के कारण मन्त्रीगण कृषकों पर नाना प्रकार के अत्याचार कर रहे थे। विशेष कर राजकरों के कारण कृषक पिसे जाते थे। अतः लन्दन नगर के निकटवर्ती प्रान्तों में विप्लव की अग्नि प्रज्वलित हो उठी। केण्ट प्रांत के कृषक सब से वीर और युद्धप्रिय थे। उनका नेता वाट टलकर (Wat Taylor) था। वे केण्ट से चल कर लन्दन की ओर बढ़े। मार्ग में जितने धनी पुरुषों के भवन आये सब जला कर भस्म कर दिये गये। जब विद्रोही

* जान बाल के विचार इन दो पंक्तियों से प्रकट होते हैं

"When Adam delved and Eve Span
Who was then the Gentleman ?"

लन्दन में पहुँचे तो वहां के शिल्पज्ञों ने नगर के द्वार खोल दिये। विद्रोहियों ने राजप्रसाद का मार्ग लिया। बहुत से राजकर्मचारी वध कर दिये गये। समस्त नगर में कोलाहल मच गया। ऐसा प्रतीत होता था कि मानों विद्रोही राजा रिचर्ड ही का रक्तपान करके शान्त होंगे।

विद्रोह-दमन और उसके परिणाम—रिचर्ड द्वितीय बालक अवश्य था किन्तु वह बड़ा बुद्धिमान था। वह जानता था कि यदि विद्रोहियों के साथ कठोरता का व्यवहार होगा तो उनके हृदय की अग्नि और भी प्रज्वलित हो जावेगी। अतएव उसने दया और साहस से काम लिया। वह अश्वारूढ़ होकर बाहर आया और विद्रोहियों से शान्ति पूर्वक वार्तालाप किया। ऐसेक्स के विद्रोहियों को उसने स्वतन्त्रता प्रदान कर दी। तत्पश्चात् उसने केण्ट के विद्रोहियों से भेंट की। उनका नेता कुछ कहता हुआ रिचर्ड की ओर बढ़ा। राजा के सहचर समझे कि यह उसे वध करने के अभिप्राय से उसकी ओर बढ़ रहा है। अतएव उन्हों ने एक ही हाथ में उसका काम तमाम कर दिया। यह देख कर विद्रोहियों ने क्रोधित हो अपने धनुष राजा की ओर तान लिये। रिचर्ड ने हिम्मत न हार कर एक वक्तृता दी जिसमें उसने विद्रोहियों को स्वतन्त्रता देने और प्रत्येक भांति से सन्तुष्ट करने की प्रतिज्ञा की। राजा की वक्तृता सुन कर विद्रोही शान्ति पूर्वक अपने २ घरों को लौट गये।

कृषकों के विद्रोह के अनेकों अच्छे परिणाम हुये। इस विद्रोह के पश्चात् दासत्व का चिह्न तक न रहा। जब दासों की आवश्यकता न रही तब सामन्तों ने उन्हें प्रसन्नता पूर्वक स्वतन्त्रता प्रदान कर दी। खेत वर्तमान रीति से जुतने लगे। जमींदार कृषकों को भूमि लगान पर देने लगे और किसान उन्हें स्वयं मजदूरों की सहायता से जोतने और जमींदार को कर देने लगे।



अभ्यास।

(१) इङ्गलैण्ड के प्राचीन निवासी कैसा जीवन निर्वाह करते थे ? एक ऐसी भारतीय जाति का नाम बताओ जिस ने इसी भांति जीवन व्यतीत किया हो ?

(२) केल्ट लोगों की सभ्यता का वर्णन करो और प्रकट करो कि रोमन के आगमन ने उनके रहन सहन मे क्या अन्तर डाला ?

(३) रोमन राज्यकाल मे इङ्गलैण्ड ने कितनी उन्नति की ?

(४) सेक्सन राज्यकाल मे देश के प्रबन्ध और कृषि विभाग की क्या प्रणाली थी ?

(५) नार्मन राज्यकाल वीरता तथा वीरकृत्यों के लिये प्रसिद्ध है"। इस विचार का कैसे समर्थन तथा पुष्टि करोगे ?

(६) नार्मन शासनकाल मे कृषि प्रणाली मे क्या परिवर्तन हुआ ? नवीन रीति मे सब से बडा दोष क्या था ?

(७) कृषकविद्रोह के क्या कारण थे और वह कैसे शान्त हुआ ?

(८) 'नार्मन विजय', 'भयङ्कर मृत्यु' तथा 'मूट' पर सक्षेप में नोट लिखो।

—— ⊛ ——

नवां अध्याय ।

व्यापार तथा कलाकौशल की उन्नति ।



केल्ट जाति के आगमन के पूर्व इङ्गलेण्ड में व्यापार की मात्रा अत्यन्त न्यून थी। इस जाति के इंङ्गलेण्ड में बसने से व्यापार ने बडी उन्नति की। कृषि के अतिरिक्त केल्ट अन्य कार्य्य भी करते थे। उनके समय मे लोहा, मछलिया, टीन इत्यादि इङ्गलेण्ड से विदेश को जाते थे। जब रोम वालों ने इङ्गलेण्ड पर अधिकार कर लिया तब व्यापार तथा कलाकौशल ने और अधिक उन्नति की। व्यापार की उन्नति हेतु उन्होंने सुन्दर सड़कें बनाईं। कृषि ने ऐसी उन्नति की कि उनके समय के इङ्गलेण्ड को "उत्तर का अन्न भण्डार" कहते है। रोम वाले उत्तम वस्त्र बनाते और रंगते थे। ये अनाज, मिट्टी के पात्र, टीन, ताबा, सीसा, चमडा, खालें तथा दास इङ्गलेण्ड से रोम ले जाते थे। सेक्सनों के समय मे भी इङ्गलेण्ड निवासियों का मुख्य उद्यम कृषी ही बना रहा। सेक्सन तथा डेन दोनों लूट का माल तथा दास यूरप ले जाते थे और बहुत दामों में बेचते थे। सेक्सनों के समय मे लन्दन तथा ब्रिस्टल प्रसिद्ध बन्दरगाह थे। इनमे सोना, चाँदी, सीसा और अनाज इत्यादि बाहर जाते थे और उनके बदले मदिरा, मिर्च, नमक, वस्त्र, लोहा और कासे के पात्र बाहर से आते थे।

नार्मन जाति के मेले—नार्मन के आगमन से व्यापार मे अत्यन्त उन्नति हुई। परस्पर व्यापारिक वस्तुओं के बदलने के अभिप्राय से

नार्मन लोग अनेक स्थानों में मेले लगाते थे। विन्चेस्टर, केम्ब्रिज और लन्दन के मेले अत्यन्त प्रसिद्ध थे। इन मेलों में भांति भांति की सामिग्री बिक्रय होने को आती थी। अंग्रेजों के अतिरिक्त इन में महाद्वीप के निवासी भी सम्मिलित होते थे। लोग इन मेलों में छै २ मास और वर्ष २ भर के लिये आवश्यक सामिग्री मोल ले लेते थे क्योंकि उत्तम और सस्ती सामिग्री खरीदने के लिये ऐसे सुअवसर बहुत कम प्राप्त होते थे।

उपनगरों की बढ़ती—विन्चेस्टर और केम्ब्रिज के अतिरिक्त जहां मेले लगते थे और भी अनेकों ऐसे उपनगर तथा नगर नार्मन और अञ्जवन वंशों के समय में हुये हैं जो केवल व्यापार के कारण प्रसिद्ध हुये। उन की बढ़ती कई प्रकार से हुई। बहुत से ग्राम व्यापारिक वस्तुओं के बनाने के कारण नगर तथा उपनगर बन गये। कुछ ग्राम ऐसे थे जो स्वयं तो कोई वस्तु न बनाते थे परन्तु उपजाऊ प्रान्त के मध्य में स्थित होने के कारण चारों ओर से व्यापारिक सामिग्री वहां बिकने को आती थी। कुछ ग्राम नदी के पुल के निकट अथवा किसी ऐसे स्थान पर स्थित थे जहां नदी सहज ही में पार की जा सकती थी। कुछ राजप्रासाद अथवा किसी गढ़ के निकट, समुद्र के किनारे अथवा तङ्ग खाड़ी पर स्थित थे। ऐसे ग्राम अत्यन्त शीघ्र व्यापारिक केन्द्र तथा प्रसिद्ध नगर बन गये। नार्मनों के समय में इङ्गलैण्ड के दक्षिणी और पूर्वी ओर हेस्टिङ्ज, रोमने, डोवर, हायथ और सेंडिच के प्रसिद्ध बन्दरगाह थे। यह सब मिल कर सिंकी पोर्ट (Cinque* Port) कहलाते हैं। इन को राजा की ओर से बहुमूल्य व्यापारिक अधिकार प्राप्त थे जिन के स्थान में वे उसे युद्ध के समय जहाज भेजते थे।

---

* सिंकी शब्द का अर्थ है 'पांच'

प्राचीन समय के व्यापारिक उपनगर और नगर वर्तमान व्यापारिक उपनगरों और नगरों के सम्मुख बहुत छोटे थे । न तो उन की जनसंख्या ही अधिक थी और न उन के सम्पूर्ण निवासी वाणिज्य एवं कलाकौशल ही में निपुण थे । इन नगरों के चारो ओर खुले हुये खेत और पशुचारन स्थान थे जिन में लाखों भेड़ें चरती थीं । अतएव प्राचीनकाल में व्यापारिक उपनगरों की उन्नति अधिकतर ऊन के वाणिज्य द्वारा हुई । परन्तु ऊन का अधिक भाग हालैण्ड और बेल्जियम चला जाता था । एडवर्ड प्रथम (१२७२—१३०७) और एडवर्ड तृतीय (१३२७—७७) ने इस प्रथा को रोकने के अभिप्राय से सहस्त्रों शिल्पज्ञों को हालैण्ड और बेल्जियम से बुला कर इङ्गलेण्ड में बसाया । अंग्रेजों ने उन से ऊनी वस्तुयें बनाना सीखा । अतः कुछ समय पश्चात् इङ्गलेण्ड ऊनी वस्तुयें बड़ी मात्रा में स्वयं बनाने लगा । फिर भी अंग्रेजी व्यापार के मार्ग दो बड़ी असुविधायें बनी रहीं । प्रथम, अंग्रेजी राजाओं तथा व्यापारियों के पास बहुत कम जहाज थे । द्वितीय, व्यापार का बहुत बड़ा भाग यहूदियों के हाथों में था । इसका यह परिणाम हुआ कि तेरहवीं शताब्दी के अन्त तक इङ्गलैण्ड मसाला, आभूषण, लोहे की वस्तुयें, वस्त्र, नमक, मदिरा इत्यादि २ विदेशों से मँगाता रहा ।

व्यापारिक नगरों का स्वतन्त्र बनना—तेरहवीं शताब्दि तक अंग्रेजी व्यापार के अधिक उन्नति न करने का एक विशेष कारण और भी है । वह यह कि इस समय तक व्यापारिक नगर तथा उपनगर राजा और सामन्तों की निजी सम्पत्ति थे । अत वे इन के अत्याचार के कारण उन्नति न कर पाते थे । तेरहवीं शताब्दि के पश्चात् बहुत से व्यापारिक नगर तथा उपनगर स्वतन्त्र हो गये । उन के निवासियों ने स्वतन्त्रता दो प्रकार से प्राप्त की । प्रथम, जब सिक्के प्रचलित हो गये तब नगरों तथा उपनगरों के निवासी अनाज तथा बेगार के स्थान में नकद रुपया जमींदारों को देने

लगे । द्वितीय, जब राजा तथा अमीरों को मुसलमानों से धार्मिक युद्ध करने के लिये धन की आवश्यकता हुई तो उन्होंने अनेकों व्यापारिक नगरों तथा उपनगरों को स्वतन्त्रता प्रदान करके बदले में धन ले लिया ।

व्यापारिक संस्थायें—जब व्यापारिक नगर तथा उपनगर धनिकों के अत्याचार से स्वतन्त्र हो गये तो वे अपना प्रबन्ध अपनी इच्छा के अनुकूल स्वयं करने लगे । उन्हों ने प्रत्येक नगर तथा उपनगर में एक "व्यापारिक संस्था" (Merchant Guild) स्थापित की जो समस्त व्यापार सम्बन्धी बातों तथा नियमों की देख भाल करती थी । ये संस्थायें यह देखती थीं कि समस्त व्यापारी और शिल्पकार अपना कार्य्य ठीक ठीक सचाई से करते हैं । यही हाटों के आरम्भ और समाप्ति होने का समय और वस्तुओं का भाव निश्चित करती थीं और मेले लगवाती थीं । उन्हों ने यह नियम बनाया कि जब तक कोई व्यक्ति व्यापार के विषय में अनुभवी मनुष्यों के आश्रित रह कर निश्चित समय तक उसके नियमों को भली भांति न सीख ले तब तक वह स्वयं पृथक् होकर व्यापार नहीं कर सकता है ।

शिल्प संस्थायें—शीघ्र ही ऐसा प्रकट हुआ कि व्यापारिक संस्थाओं से काम न चलेगा । जब नगरों तथा उपनगरों में शिल्पकारों तथा व्यापारियों की संख्या बढ़ गई और एक ही नगर अथवा उपनगर में भांति भांति की वस्तुयें बनने लगीं तब व्यापारिक संस्थाओं के सभाले काम न सभल सका । इस के अतिरिक्त प्रत्येक शिल्पकला में कुछ ऐसे धनाढ्य दृष्टिगोचर हुये जो स्वयं तो काम न करते थे परन्तु शिल्पकारों को प्रसन्नता पूर्वक रुपया उधार दे रहे थे । कुछ समय तक इन दोनों के बीच अच्छी निपटी । फिर दोनों में झगड़े होने लगे । होते २ ये झगड़े इतने बढ़ गये कि व्यापारिक संस्थायें इन्हें रोक न सकीं । अतः साहूकारों तथा शिल्पकारों के पारस्परिक झगड़ों के निर्णय करने तथा आवश्यक प्रबन्ध

करने को प्रत्येक शिल्पकार्य्य के लिये पृथक् सस्था (Craft Guild) स्थापित हुईं। बढई, लोहार, दर्जी, मोचियों इत्यादि ने पृथक् २ सस्थायें बना लीं। इस प्रकार प्रत्येक नगर तथा उपनगर में एक व्यापारिक सस्था के स्थान पर कई सस्थायें बन गईं जो अपनी २ शिल्पकला की देख भाल करती थीं।



अभ्यास ।

(१) नार्मन और सेक्सनों के शासनकाल में कृषी करने की क्या रीति थी ?

(२) प्राचीनकाल में अंग्रेजी गाओं का विस्तार किन २ रीतियों से बढा और अब वे कैसी उन्नति कर रहे हैं ?

(३) "स्वतन्त्र नगर" का क्या आशय है ? कोई स्वतन्त्र नगर परतन्त्र नगर से किन २ बातों में भिन्न होता है ?

(४) "व्यापारिक सस्थाओं" "तथा शिल्प सस्थाओं" पर स्पष्ट नोट लिखो।

(५) क्या, आधुनिक काल में व्यापारिक सस्थायें हैं ? व्यापारिक सस्था और व्यापारिक सघ (Trade Union) में क्या अन्तर है ?

(६) तुम्हारे नगर अथवा ग्राम में व्यापार का प्रबन्ध कैसे होता है ? क्या कारण है जो अभी तक भारतवर्ष के मजदूरों में बहुत कम एका है ?

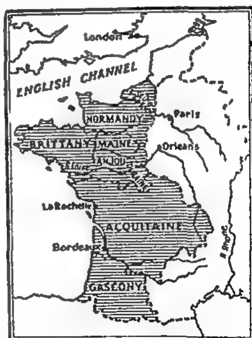
———:०:———

दसवां अध्याय।

इङ्गलैण्ड और फ्रांस का पारस्परिक सम्बन्ध।

सन् १०६६ ई० से पूर्व इङ्गलैण्ड का फ्रांस के साथ बहुत कम सम्बन्ध रहा है। इस वर्ष फ्रांस के विलियम विजयी ने अंग्रेजी राजा हरोल्ड को हेस्टिङ्ग्ज़ के युद्ध में परास्त करके सम्पूर्ण इङ्गलैण्ड को स्वाधीन कर लिया। विलियम स्वयं और उसके पीछे आने वाले नार्मन और अञ्जवन वंशों के राजा फ्रांस के किसी न किसी भाग में राज्य करते थे। अतः वे फ्रांस के राजा को अपना शिरोमणि मानते रहे।

हेनरी द्वितीय का फ्रांसीसी राज्य—इन राजाओं में हेनरी द्वितीय (११५४—११८९) अधिक प्रसिद्ध है। फ्रांस में उसका राज्य बहुत विस्तृत था। अंग्रेजी नहर से पिरेनीज पर्वत तक सम्पूर्ण पश्चिमी फ्रांस पर उसका अधिकार था। यह विस्तृत राज्य सात प्रान्तों में विभाजित था। इनमें से नार्मण्डी हेनरी को अपनी माता से, मेन और अञ्जो* अपने पिता से, ब्रटेनी, पोइटो और एक्यूटेन लुई सप्तम की विधवा एलीनर से विवाह



हेनरी द्वितीय का फ्रांसीसी राज्य।

* अञ्जो के नाम पर हेनरी का वंश अञ्जवन वंश कहलाता है।

ट्यूडर वंश का आगमन—मृत राजकुमारों की भगनी एलिज़बेथ का विवाह हेनरी ट्यूडर (Henry Tudor) से हुआ था। हेनरी मामर्सेट का पौत्र था। अतः वह लंकास्टर वंश की ओर से सिंहासन का अधिकारी था। जब सन् १४८० ई० में रिचर्ड की मृत्यु हुई तो यॉर्क वंश की ओर से कोई सिंहासनाधिकारी न था। अतएव पार्लियामेण्ट ने हेनरी को राजा बनाया। उसके राजा बनने से इङ्गलैण्ड में ट्यूडर वंश का राज्य आरम्भ हुआ।

अभ्यास।

(१) उन दो वंशों के नाम लो जिनके बीच गुलाबों का युद्ध हुआ, इस युद्ध के होने के क्या कारण थे ?

(२) एडवर्ड चतुर्थ के पुत्रों का वध किसने किया और क्यों ?

(३) एक वंशवृक्ष बना कर यह बात दिखाओ कि इङ्गलैण्ड का सिंहासन गुलाबों के युद्ध के पश्चात् ट्यूडर वंश को किस प्रकार मिला।

(४) गुलाबों के युद्ध का चित्र खींचो। मुख्य २ लड़ाइयों को लाल पेन्सिल से दिखाओ। प्रत्येक की तारीख लिखो और सोचो कि ये लड़ाइयां किन के बीच हुई थीं।

(५) अंग्रेजी राजाओं को सौ वर्ष से अधिक समय तक शतवर्षीय युद्ध करना पड़ा। इसके पश्चात् ३० वर्ष तक इङ्गलैण्ड में गुलाबों का युद्ध होता रहा। इन युद्धों का देशी सुख तथा शांति और व्यापार तथा शिल्पकला पर क्या प्रभाव पड़ा होगा ? सन् १४८५ ई० में प्रजा क्या चाहती होगी ? इन प्रश्नों के उत्तर सोच कर हेनरी ट्यूडर के शासन काल का वृत्तान्त पढ़ो और देखो कि प्रजा ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया।

ट्यूडर वंश का आगमन।

रिचर्ड ड्यूक ऑफ यॉर्क
(यॉर्क वंश का प्रथम अधिकारी)

- एडवर्ड चतुर्थ (१४६१ ८३)
  - एडवर्ड पञ्चम (रिचर्ड तृतीय ने वध करदिया)
  - रिचर्ड ड्यूक ऑफ यॉर्क (रिचर्ड तृतीय ने वध कर दिया)
  - एलिज़बेथ
- जार्ज ड्यूक ऑफ क्लेरेंस
- मारग्रेट
- रिचर्ड तृतीय (१४८३ ८५)

गाण्ट ड्यूक ऑफ लङ्कास्टर
(एडवर्ड तृतीय का चतुर्थ पुत्र)

- अर्ल ऑफ सामर्सेट (तृतीय स्त्री से)
  - ड्यूक ऑफ सामर्सेट
    - मारग्रेट ब्यूफर्ट = एडमण्ड ट्यूडर
      - हेनरी ट्यूडर (१४८५—१५०९)
- हेनरी चतुर्थ (चतुर्थ स्त्री से)

एलिज़बेथ = हेनरी ट्यूडर

द्वितीय खण्ड

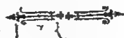
ट्यूडर वंश

सन् १४८५ ई०—१६०३ ई०

लोकनिद्रा तथा धर्मसुधार।

बारहवां अध्याय।

इस काल के विशिष्ट लक्षण।



ट्यूडरवंश का राज्य (सोलहवीं शताब्दि) इङ्गलैण्ड के इतिहास में कई बातों के लिये प्रसिद्ध है। इतिहास के पाठकों को इङ्गलेण्ड के इतिहास में क्या वरन् सारे यूरप के इतिहास में इस काल में ऐसी अपूर्व और आश्चर्यजनक घटनायें मिलेंगी जिनका इसके पूर्व किसी को भी ज्ञान न था। यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो ज्ञात होगा कि ट्यूडरवंश का राज्य इङ्गलैण्ड के इतिहास में उस दीवार के समान है जो दो जलधाराओं को भिन्न करने के हेतु रची गई हो। नीचे हम इन बातों की व्याख्या स्पष्ट रीति से करेंगे।

राजा का बल तथा जातीयता के भाव—कई शताब्दियों से यूरप में सामन्तता प्रचलित थी। जैसा कि हम आठवें अध्याय में वर्णन कर आये हैं सामन्तता का यह आशय है कि प्रत्येक देश में एक राजा शासन करता था और उसके आधिपत्य में सेकड़ों स्वतन्त्र जागीरदार होते थे जो फ्यूडल लार्ड कहलाते थे। प्रत्येक जागीरदार को राजा की ओर से जागीरें प्राप्त थीं। उसके बदले में वह राजा को कर और युद्ध के समय सहायता देता था। यदि राजा शक्तिमान होता तो जागीरदार उसकी आज्ञा पालन करते नहीं तो बहुधा जागीरदार राजा पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेते थे। उनके विजयी होने का एक प्रधान कारण यह है कि उनके अधिकार में सुदृढ गढ़ थे। उस समय तक उत्तम प्रकार की बन्दूकों और बारूद का प्रचार न हुआ था। इस कारण ये लोग गढ़ों के

भीतर निश्चिन्त तथा सुखमय जीवन व्यतीत करने और बेचारे कृषकों पर अत्याचार करते थे। यह दशा लगभग पन्द्रहवीं शताब्दि तक ज्यों की त्यों बनी रही। इसके पश्चात् उत्तम प्रकार की बारूद तथा बन्दूकों का बनना प्रारम्भ हुआ। अब सामन्तों की शक्तिभी क्षीण होने लगी। इसका आशय यह नहीं है कि सामन्तता का अस्तित्व यूरप में कुछ भी न रहा परन्तु अभिप्राय यह है कि शनै शनै जागीरदार शक्तिहीन होते गये और राजा की शक्ति उन्नति करती गई यहा तक कि १८ वीं शताब्दि के अन्त होने तक सामन्तता का लगभग समस्त यूरप में चिन्ह भी न रहा।

सामन्तता के नष्ट हो जाने से इङ्गलैण्ड मे ट्यूडर राजाओं की शक्ति बहुत बढ गई। जागिरदारों के शक्तिहीन होने के अतिरिक्त ट्यूडर राजाओं के शक्तिशाली होने के और भी अनेकों कारण है जो उन्नीसवें पाठ में स्पष्ट रीति से लिखे जायँगे। यहा केवल यह कह देना पर्याप्त होगा कि ये राजा बडे धनाढ्य थे। जनता उन पर विश्वास करती थी। गुलाबों के युद्ध से प्रजा यह भली प्रकार जान गई थी कि राजा की आज्ञा पालन करने ही में देशहित है। राजा की शक्तिशीलता के साथ जातीयता के भावों ने भी उन्नति की। फ्रास, स्पेन, इङ्गलैण्ड इत्यादि देश स्वतन्त्रता पर जीवन समर्पण करने को उद्यत हुये। परतु जर्मनी और इटैली अभी तक घोर निद्रा में मग्न थे।

नवीन साहित्य—जातीयता के भावों की उन्नति का एक मुख्य कारण यह है कि कुछ ही समय पूर्व समस्त यूरप मे नवीन साहित्य का प्रचार हो गया था। सन् १४५० ई० मे एशियाई कोचक के मुसलमानों ने तुर्की पर आक्रमण किया। अत वहा के निवासियों को अपनी जन्मभूमि त्याग कर पश्चिम की ओर प्रस्थान करना पडा जब पूर्व की ओर से उन पर आक्रमण होने लगे तब यूनानी लोग जर्मनी, फ्रास, इङ्गलैण्ड तथा यूरप के अन्य देशों में बस गये। इन मनुष्यों में यूनान के प्रसिद्ध विद्वान्

तथा विशारद पुरुष भी आये। वे अपने साथ उन बहुमूल्य पुस्तकालयों तथा विद्या और कलाकौशल को भी लाये जिन में वे विशेष रीति से प्रवीण थे। अन्य देशों के निवासियों ने इनकी विद्या और कलाकौशल से भली भांति लाभ उठाया। कुछ ही दिनों पश्चात् यूरप के समस्त निवासियों के विचार तथा रहन सहन में विशेष परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा। वे भी विद्या तथा स्वतन्त्रता देवी के उपासक बन गये। इनके हृदय में यह आकांक्षा उत्पन्न हुई कि संसार की उत्तम २ वस्तुयें संग्रह करें और उच्च कोटि का जीवन व्यतीत करें।

धर्म सुधार—नवीन साहित्य के प्रचार से मनुष्यों के धार्मिक विचारों में सुधार हुआ। इस सुधार (Reformation) की नींव पोप के शक्तिहीन तथा भोग विलासी होने से पड़ी। पन्द्रहवीं शताब्दि तक पोप का प्रभाव पश्चिमी यूरप पर स्थापित रहा तत्पश्चात् इसका प्रभाव क्षीण होने लगा। प्रारम्भ में पोप पवित्र, साधु स्वभाव तथा धर्मात्मा थे। जब कभी किसी धार्मिक विषय पर शास्त्रार्थ होता तो पोप का मत सत्य माना जाता। सात बार रिचर्ड प्रथम और यूरप के अन्य प्रसिद्ध राजाओं ने पोप की आज्ञानुसार मुसल्मानों पर आक्रमण करके पवित्र स्थान जेरूशलम को विजय करने का प्रयत्न किया। इस प्रकार कई शताब्दियों तक पोप का आधिपत्य स्थापित रहा। इसके पश्चात् पोप ने राजनैतिक कार्यों में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया। अतः जर्मनी के महाराजाधिराज* (Holy Roman Emperor) से विग्रह आरम्भ हुआ। प्राचीनकाल में

* जर्मनी के सात राजा इसका निर्वाचन करते थे। बहुधा परशिया का राजा महाराजाधिराज नियुक्त होता था। परन्तु किसी अन्य देश का राजा भी इस पद को प्राप्त कर सकता था। इसके अधिकार में किसी समय यूरप के बहुत से देश जैसे जर्मनी, फ्रांस, स्पेन, इटली, हालैण्ड, बेलजियम और स्विटज़रलैण्ड थे।

जर्मनी के महाराजाधिराज और पोप में बड़ी सुमति तथा मैत्री थी। दोनों मिल कर यूरप के धार्मिक उत्साह को बनाये हुये थे। जिस प्रकार पोप की आज्ञा धार्मिक विषयों में ईश्वरोक्त बाणी समझी जाती थी उसी प्रकार राजनैतिक कार्य्यों में जर्मनी के महाराजाधिराज की आज्ञा मान्य थी। परन्तु जब दोनों में फूट पड़ गई तब पोप और सम्राट दोनों का पतन आरम्भ हो गया।

अत पोप की अवनति का प्रथम मुख्य कारण राजनैतिक विषयों में हस्तक्षेप करना है। पोप ने धार्मिक कार्य्यों से अपना चित्त हटा कर सांसारिक कृत्यों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। बाज पाले और कबूतर उड़ाये और इस भांति सुखमय तथा विलासपूर्ण जीवन व्यतीत किया। जब उन्हें बहुत से धन की आवश्यकता प्रतीत हुई तो बहाना भी शीघ्र ही मिल गया अर्थात् दसवें लियो (Leo X) ने, जो सन् १५१३ ई० में पोप बना, यह बात प्रसिद्ध कर दी कि मुझे रोम नगर में सेण्ट पीटर* का विशाल गिर्जाघर बनवाना है। अत धन की आवश्यकता है। उसने अनेकों स्थानों में धन एकत्रित करने को कर्मचारी भेजे। उसने इन कर्मचारियों को धन के बदले मनुष्यों में बांटने को पत्र (Indulgences) दिये। इन पत्रों का आशय यह था कि जो लोग इन को मोल लेंगे उनके और उनके मित्रों, पिता और पितामह के पाप, चाहे वे जीवित हों अथवा मृतक, ईश्वर के यहाँ क्षमा कर दिये जावेंगे।

मार्टिन लूथर—दसवें लियो का भेजा हुआ एक कर्मचारी जर्मनी में आया। इसका नाम जॉन टेटजल (John Tetzel) था। पत्रों का क्रय विक्रय अधिकाधिक होने लगा। जब टेटजल सेक्सनी के प्रान्त में पहुचा तो

* सण्ट पीटर ईसाई धर्म के ऋषियों में से हैं।

उसका सामना मार्टिन लूथर से हुआ। लूथर का जन्म १० नवम्बर १४८३ ई० को थरगिया के प्रान्त में हुआ था। उसके माता पिता कृषी का व्यवसाय करते थे। लूथर भी कृषकों की भाति सरल स्वभाव, हठी और धार्मिक पुरुष था। उसके माता पिता की आकाक्षा उसे वकालत पढ़ाने की थी। परन्तु उसने वकालत न पढ कर सन् १५०५ ई० में महन्त बनना स्वीकार किया। इसके पाच वर्ष पश्चात् लूथर रोम की यात्रा को गया। यहा उसने पोप के सासारिक सुखों में लिप्त जीवन का दिग्दर्शन किया। रोम से लौट कर लूथर विटिनबर्ग नगर के एक विद्यालय में धार्मिक शिक्षक नियुक्त हुआ। जब जॉन टेटजेल ने सेक्सनी में पत्रों का क्रय विक्रय प्रारम्भ किया तब लूथर बड़ा दुःखित तथा क्रोधित हुआ। उसे इन पत्रों की वास्तविकता का ज्ञान भली प्रकार हो गया। उसने ढोल की पोल खोली। अस्तु, पोप से द्वेष तथा अनबन प्रारम्भ हुई। विद्या तथा कला-कौशल के प्रचार से जनता के नेत्र पोप के विलासपूर्ण जीवन का अवलोकन पूर्व ही कर चुके थे। इङ्गलैण्ड के एक पादरी जॉन विकलिफ ने भी जनता का ध्यान पोप के दोषों की ओर आकर्षित किया था। अब इञ्जील का अनुवाद जर्मन भाषा में हुआ, जिससे मनुष्यों के हृदयपट पर यह बात भली भांति अङ्कित हो गई कि पोप का धर्म क्या है और क्या होना चाहिये? जर्मनी के कई प्रान्तों ने लूथर की सहायता की। परन्तु महाराजाधिराज ने नवीन धर्म का सामना बड़े जोरों से किया। उसने लूथर को वध करने तक की आज्ञा दे दी। इस प्रकार लूथर और पोप के बीच कई वर्षों तक झगड़े होने के पश्चात् जर्मनी में एक नवीन धर्म की स्थापना हुई। इस नवीन धर्म का नाम प्रोटेस्टेन्ट धर्म (Protestantism) * पड़ा।

* अंग्रेजी भाषा में प्रोटेस्ट (**Protest**) शब्द का अर्थ है 'उज्र करना'। सन् १५२९ ई० में जर्मनी के सम्राट ने एक धार्मिक सभा

इङ्गलैण्ड मे भी नवीन धर्म की नीव अत्यन्त शीघ्र पडी। यह क्योंकर हुआ और इसका क्या परिणाम हुआ यह सब चौदहवें पाठ में वर्णन होगा। यहा केवल इतना अवश्य कथनीय है कि जब तक शासन ट्यूडरवंश के हाथों में रहा तब तक धार्मिक विषयो पर वादाविवाद अधिक होता रहा। परन्तु स्टुअर्टवंश के राजाओं के शासनकाल में धार्मिक उत्साह क्षीण हो गया। और राजनैतिक बातो का प्राबल्य हुआ।

इङ्गलैन्ड की सामुद्रिक शक्ति—धार्मिक सुधार के साथ साथ व्यापारिक सुधार भी हुआ। प्राचीनकाल से यूरप का व्यापार केवल भूमध्यसागर पर परिमित था। जो देश और बन्दरगाह भूमध्यासागर पर बसे थे वे धनो एव सुखी थे। उनमें मुख्य व्यापारिक केन्द्र वीनिस और जिनोआ थे। इन्ही पर यूरप का समस्त व्यापार निर्भर था। इङ्गलैण्ड फ्रास तथा यूरप के आजकल के अन्य व्यापारिक देश इस व्यापार में बहुत कम भाग लेते थे। यह दशा लगभग १५ वीं शताब्दि तक रही। इसके पश्चात् शीघ्र ही एक चमत्कार दृष्टिगोचर हुआ। सन् १४९२ ई० में जिनोआ के एक नाविक क्रिस्टोफ़र कोलम्बस (Christopher Columbus) नामक ने पश्चिम की ओर से भारतवर्ष पहुचने के प्रयत्न में अपना जहाज अटलाण्टिक महासगर के कुछ द्विपों से जा लगाया। प्रारम्भ में इन द्वीपों का नाम 'इण्डीज़' रक्खा गया क्योंकि कोलम्बस समझता था कि मैं भारतवर्ष के बहुत निकट पहुच गया हू। तत्पश्चात् इनका नाम बदल कर पूर्वी इण्डोज के प्रतिकूल पश्चिमी इण्डीज रख दिया गया। दूसरी

निकलाई जिसमें यह बात निश्चित हुई कि भविष्य में जर्मनी का कोई राजा अपना धर्म नहीं बदलेगा। लूथर के अनुयायियों ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार किया। इस लिये वे प्रोटेस्टेन्ट (Protestants) कहलाने लगें और उनका धर्म प्रोटेस्टेण्टज्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह मत रोमन कैथोलिक धर्म के विरुद्ध है जो पोप और प्राचीन यूरप का धर्म था।

यात्रा में कोलम्बस ने एक बड़े महाद्वीप का पता लगाया। इसका नाम 'नई दुनिया' पड़ा और कुछ समय पश्चात् वह एक अन्य नाविक अमेरिगो (Amerigo) के नाम पर अमेरिका (America) कहलाने लगा। अमेरिका की खोज के छे वर्ष पश्चात् अर्थात् १४९८ ई० में पुर्तगाल के एक नाविक ने जिसका नाम वास्कोडिगामा (Vasco de Gama) था भारतवर्ष पहुंचने का एक नवीन मार्ग अफ्रीका के दक्षिण होकर खोज निकाला।

इन नवीन अनुसन्धानों के ज्ञान का यूरप के व्यापार पर बहुत प्रभाव पड़ा। वीनिस, जेनोआ और भूमध्यसागर के किनारे के समस्त बन्दरगाहों का प्राचीन व्यापार कम हो गया और भविष्य के लिये संसार का व्यापार इङ्गलैण्ड, फ्रांस, हालैण्ड, स्पेन और पुर्तगाल के अधिकार में आगया। इन्हीं की ख्याति का डङ्का सारे संसार में बजने लगा।

राजवंशीय विवाह—अंतिम कृत्य जिसके कारण ट्यूडरवंश का राज्य यूरप के इतिहास में इतना प्रसिद्ध है, राजवंशीय विवाह है। इस काल के प्रत्येक राजा की यह इच्छा थी कि मैं स्वयं किसी उच्चकुल में विवाह कर लूं, परन्तु दूसरे राजाओं को ऐसे विवाह न करने दूं। मनुष्यों को भय हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि दो राजवंश सम्बंधित होकर एक हो जावें और इतने शक्तिशाली बन जावें कि अन्य देश वाले युद्ध में उनका सामना न कर सकें। लोगों का अनुमान बिल्कुल ठीक था। आस्ट्रिया के एक राजकुमार का विवाह स्पेन की एक राजकुमारी से हुआ। उनका पुत्र चार्ल्स पञ्चम स्पेन का राजा बना। तत्पश्चात् वह महाराजाधिराज बनने पर यूरप के दो पञ्चमांश का स्वामी बन बैठा और उसका विस्तृत राज्य सबों की आंखों में खटकने लगा।

इङ्गलैण्ड के राजाओं ने भी अनेकों बार ऐसे विवाह किये अथवा करने

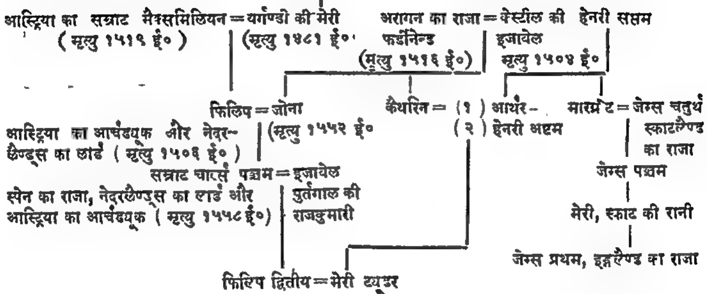
का उद्योग किया। उन में चार बहुत प्रसिद्ध हैं जिन में से दो विवाह ट्यूडरवंश के प्रथम राजा हेनरी ट्यूडर के समय में हुये।

अभ्यास।

(१) ट्यूडर राजाओं का राज्यकाल किन २ बातों के लिये प्रसिद्ध है?

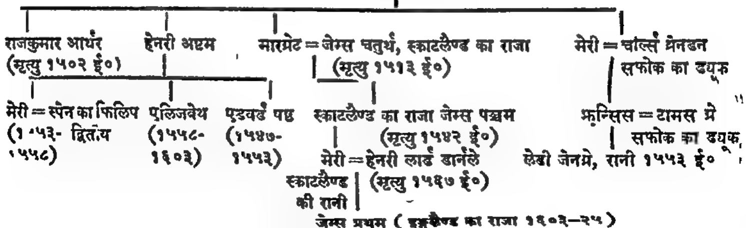
(२) सोलहवीं शताब्दि में कौन २ से अनुसन्धान हुये? उनका इङ्गलैण्ड के व्यापार पर क्या प्रभाव पडा?

सोलहवीं शताब्दि ।



वीर चार्ल्स
आस्ट्रिया का सम्राट मैक्समिलियन = बर्गण्डी की मेरी
(मृत्यु १५१९ ई०)
(मृत्यु १४८१ ई०
अरागन का राजा = कैस्टील की हेनरी सप्तम
फर्डीनेन्ड
(मृत्यु १५१६ ई०)
इजाबेल
मृत्यु १५०४ ई०
फिलिप = जोना
आस्ट्रिया का आर्चड्यूक और नेदर-
लैण्ड्स का लार्ड (मृत्यु १५०६ ई०)
(मृत्यु १५५२ ई०
कैथरिन = (१) आर्थर-
(२) हेनरी अष्टम
मारग्रेट = जेम्स चतुर्थ
स्काटलैण्ड
का राजा
सम्राट चार्ल्स पञ्चम = इजाबेल
स्पेन का राजा, नेदरलैण्ड्स का लार्ड और
आस्ट्रिया का आर्चड्यूक (मृत्यु १५५८ ई०)
पुर्तगाल की
राजकुमारी
जेम्स पञ्चम
मेरी, स्काट की रानी
जेम्स प्रथम, इङ्गलैण्ड का राजा
फिलिप द्वितीय = मेरी ट्यूडर

ट्यूडर वंश।


एङ्कास्टर की ब्लॅश = गाण्ट का जॉन = स्त्रनिफोर्ड की कैथरिन
हेनरी चतुर्थ और लङ्कास्टर का वंश
जॉन ब्यूफर्ट, सामसेंट का अर्ल
जॉन ब्यूफर्ट, सामसेंट का ड्यूक (मृत्यु सन् १४४४)
मारग्रेट ब्यूफर्ड = एडमण्ड ट्यूडर, अर्ल ऑफ रिचमण्ड
यॉर्क की एलिजवेथ = हेनरी सप्तम (१४८५–१५०९)
राजकुमार आर्थर (मृत्यु १५०२ ई०)
हेनरी अष्टम
मारग्रेट = जेम्स चतुर्थ, स्काटलैण्ड का राजा (मृत्यु १५१३ ई०)
मेरी = चार्ल्स ब्रेनडन सफोक का ड्यूक
मेरी = स्पेन का फिलिप द्वितीय (१ ५३- १५५८)
एलिजवेथ (१५५८- १६०३)
एडवर्ड षष्ठ (१५४७- १५५३)
स्काटलैण्ड का राजा जेम्स पञ्चम (मृत्यु १५४२ ई०)
फ्रन्सिस = टामस ग्रे सफोक का ड्यूक
मेरी = हेनरी लार्ड डार्नले
स्काटलैण्ड की रानी
(मृत्यु १५६७ ई०)
लेडी जेनग्रे, रानी १५५३ ई०
जेम्स प्रथम (इङ्गलैण्ड का राजा १६०३–२५)

तेरहवां अध्याय।

हेनरी सप्तम्।

(१४८५–१५०९)



लंकास्टर तथा यार्क का मेल—हेनरी सप्तम सन् १४८५ ई० में राजा बना। उसके राजा बनने से गुलाबों के युद्ध के पश्चात् इङ्गलैण्ड में प्रथम बार सुख तथा शान्ति का प्रचार हुआ। यह युद्ध लङ्कास्टर तथा यॉर्क के विरोधी वंशों में हुआ था। हेनरी सप्तम स्वयं प्रथम वंश से था। उसने अपना विवाह विरोधी वंश की राजकुमारी एलिजबेथ से कर लिया था। इस विवाह के कारण सालों के पश्चात् उपरोक्त वंशों में मेल हुआ। पारस्परिक प्रेम को और अधिक दृढ़ बनाने के हेतु हेनरी ने लाल तथा श्वेत गुलाबों को सरकारी चपरास तथा झण्डे का चिह्न नियुक्त किया क्योंकि यह फूल क्रमशः लङ्कास्टर तथा यार्क वंशों के चिह्न थे।



ट्यूडर राजवंशीय चिन्ह

लेम्बर्ट सिमनल और परकिन वारबेक—यद्यपि दोनों विरोधी वंशों में मेल हो गया था तथापि यॉर्क वंशवाले हेनरी के राजा बनने से सन्तुष्ट न हुये। वे चाहते थे कि उसके स्थान पर यार्क वंश इङ्गलैण्ड में राज्य करने लगे। अतः उन्हों ने दो बार हेनरी के विरुद्ध विद्रोह किये। प्रथम बार उन्होंने एक नवयुवक को, जिसका नाम लेम्बर्ट सिमनल (Lam-

bert Simnel) था, अग्रसर किया और यह अधिकार प्रगट किया कि यह एडवर्ड चतुर्थ का अनुज अर्थात् यॉर्क वंश की राजकुमारी एलिज़बेथ का चाचा है। अतएव वह राज्य का अधिकारी है। हेनरी ने विद्रोहियों को पराजित किया। लेम्बर्ट के प्राण लेने के बदले उसने उसे अपना रसोइया बना लिया।

इसके थोड़े ही दिनों पश्चात् यॉर्क वंश की ओर से दूसरा विद्रोह हुआ। अब की बार स्काटलैण्डवालों ने भी विद्रोहियों की सहायता की। विद्रोहियों की इच्छा थी कि हेनरी गद्दी से उतार दिया जावे और एक साधारण मनुष्य, जिसका नाम पर्किन वारबेक (Perkin Warback) था और जिसे वे यार्क वंश का रिचर्ड ठहराते थे, राजा बनाया जावे। पर्किन वारबेक ने तीन बार सेना एकत्रित करने का प्रयत्न किया, परन्तु तीनों बार उसका उद्योग निष्फल सिद्ध हुआ। अन्त में हेनरी ने उसे पकड़वा कर लन्दन के सरकारी कारागृह में बन्दी कर लिया। पर्किन वारबेक ने वहा से एक अन्य बन्दी के साथ निकल भागने का उद्योग किया परन्तु वह पुनः बन्दी हुआ। इस बार हेनरी ने उसे प्राणदण्ड दिया।

हेनरी की स्वच्छन्दता—इन विद्रोहों के शान्त हो जाने के उपरान्त देश में कोई अन्य उपद्रव नहीं हुआ। हेनरी ने अवकाश पाकर स्वयं को शक्तिशाली बनाने के हेतु अनेकों आक्षेपकारक कार्य्य किये। उसने अमीरों तथा सामन्तों को आज्ञा दी कि वे युद्ध सामग्री अर्थात् गोला बारूद इत्यादि न रक्खें और न अपने सेवकों को युद्धशिक्षा देवें और न उन्हें पृथक् वर्दी ही पहिनावें। यदि उनके सेवकों के विरुद्ध कोई अभियोग चलता तो वे उनके पक्ष में पैरवी न कर सकते थे।

स्टार चेम्बर का न्यायालय—इन नियमों के भङ्ग करनेवालों को दण्ड देने के हेतु हेनरी ने एक विशेष न्यायालय स्थापित किया। जिस कमरे में इस न्यायालय की बैठक होती थी उसकी छत में ताराकार चित्र

बने हुये थे । अत॰ इस का नाम स्टार चेम्बर का न्यायालय (Court of Star Chamber) पड़ा । इस न्यायालय के स्थापित होने का मुख्य आशय यह था कि वह निर्धन मनुष्यों को धनाढ्यों के अत्याचार से बचावे परन्तु उसने अपना कर्त्तव्य शीघ्र भुला दिया और सत्यता, न्याय व निर्धनरक्षा करने के स्थान पर राजा का दास बन गया । राजा की आज्ञानुसार वह निर्धन तथा धनवान सब के साथ क्रूरता का व्योवहार करने लगा । विशेष करके इस न्यायालय के कारण धनाढ्य पुरुषों तथा सामन्तों का तो अन्त ही आ गया था ।

धन उपार्जन—उपरोक्त रीतियों से स्वयं को शक्तिशाली बनाने के अतिरिक्त हेनरी सप्तम की एक अन्य इच्छा थी । वह यह कि किसी न किसी भांति कुबेर कोष एकत्रित करे और उसे अपने शत्रुओं के परास्त करने में व्यय करे । लोभी तथा कञ्जूस होने के कारण वह धन का प्रेमी था । उसके मन्त्री इम्पसन (Empson), डडले (Dudley) और मॉर्टन (Morton) धन संग्रह में संलग्न थे । हेनरी ने उनकी सम्मति से यॉर्कवंशियों की जागीरें छीन लीं और इङ्गलैण्ड के निवासियों से बलात् धन उधार लेना आरम्भ किया । उसने कई अनुचित कर भी लगाये । मॉर्टन ने धन एकत्रित करने का एक अनोखा ढंग निकाला । धनाढ्य



हेनरी सप्तम ।

पुरुषों से कहता कि तुम्हारे पास आवश्यकता से अधिक धन है अत तुम्हारा कर्त्तव्य है कि इसका एक भाग राजा को दो । निर्धनों से कहता कि तुम्हारा व्यय आय से कम है । तुम कुछ न कुछ अवश्य बचाते होंगे । अत बचे हुये धन का एक भाग राजा को अर्पण करना तुम्हारा परम कर्त्तव्य है । इस रीति से मॉर्टिन निर्धन तथा धनवान सब से धन (Benevolences) लेता था । मॉर्टिन की इस अनोखी रीति को "मॉर्टिन का काटा" (Mortin's fork) कहते हैं ।

७ हेनरी ने जो धन एकत्रित किया उसका एक भाग उस ने इङ्गलैण्ड की जलसेना को सुदृढ तथा शक्तिशाली बनाने में व्यय किया । इसका फल यह हुआ कि भूमध्यसागर तथा बाल्टिक समुद्र मे अधिक व्यापार होने लगा । हेनरी ने एक नाविक को, जिसका नाम जॉन केबट (Cabot) था, नवीन ससार मे उपनिवेश बसाने को भेजा । इसने अटलाण्टिक महासागर को पार करके अमेरिका के उत्तरी पूर्वी तट का अनुसधान किया और न्यूफाउण्डलैण्ड के द्वीप में एक अग्रेजी उपनिवेश स्थापित किया ।

हेनरी का विदेशों से सम्बन्ध—हेनरी कुछ धन उपनिवेशों के बसाने में तो अवश्य व्यय कर रहा था परन्तु वह विदेशों से युद्ध करने में तनिक भी धन नष्ट न करना चाहता था । उसकी हार्दिक इच्छा थी कि वह प्रत्येक देश का मित्र बन कर रहे । इसका एक मुख्य कारण यह था कि उसे भय था कि कहीं यॉर्क वशवाले विदेशी राजाओं से मिल कर उसे राजसिहासन से उतारने का प्रयत्न न करें । अत उसने फ्रास तथा नेदरलैण्डस से सन्धि कर ली । यूरप महाद्वीप पर इस समय फ्रास और स्पेन में युद्ध हो रहा था । दोनों देश इङ्गलैण्ड को मित्र बना कर रणक्षेत्र में लाना चाहते थे । परन्तु हेनरी युद्ध में भाग न लेकर, दोनों देशों का मित्र बन कर रहना चाहता था । फ्रास से तो उसकी सन्धि हो ही चुकी थी । अब उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र आर्थर का विवाह स्पेन की

राजकुमारी कैथरिन (Catherine of Aragon) से कर दिया। इङ्गलैण्ड और स्काटलैण्ड की प्राचीन शत्रुता का अन्त करने के हेतु उसने अपनी पुत्री मारग्रेट का विवाह स्काटलैण्ड के राजा जेम्स चतुर्थ से कर दिया। ये दोनों विवाह उन चार राजवंशीय विवाहों में से हैं जिनका वर्णन हम पूर्व कर चुके हैं।

हेनरी सप्तम की मृत्यु, १५०६ ई०—सन् १५०९ ई० में हेनरी सप्तम की मृत्यु हुई। देश में सुख तथा शान्ति स्थापित थी। राजकोष भली प्रकार धन से पूरित था। परन्तु हेनरी के अनुचित कार्य्यों से प्रजा के प्राण सङ्कट में पड़ गये थे। हां, मृत राजा के पक्ष में इतना अवश्य कहा जा सकता है कि उसने इन अनुचित कार्य्यों से ट्यूडरकुल की नींव ऐसी दृढ़ बना दी थी कि उसके शत्रु उसे कभी सिंहासन से वञ्चित न कर सके।

अभ्यास।

(१) हेनरी सप्तम के दो मुख्य उद्देश कौन थे? इन उद्देशों का क्या प्रभाव पड़ा—[अ] हेनरी की घरेलू और विदेशी नीतों पर, [ब] प्रजा के सुख पर।

(२) उन राज्याधिकारियों के दावे बताओ जिन्होंने हेनरी के राज्यकाल में सिंहासन पाने का प्रयत्न किया। उनका अन्तिम परिणाम क्या हुआ?

(३) हेनरी ने सामन्तों तथा अमीरों की शक्ति को क्षीण करने के लिये क्या २ उपाय किये?

(४) "हेनरी की मृत्यु के समय ट्यूडरवंश की नींव भली प्रकार दृढ़ बन चुकी थी"। बताओ यह बात किस लिये आवश्यक थी? इसकी प्राप्ति के लिये हेनरी ने कौन २ से कार्य्य किये?

चौदहवां अध्याय।

हेनरी अष्टम।

(१५०९-१५४७)

चरित्र—हेनरी सप्तम की मृत्यु पर उसका लघु पुत्र हेनरी अष्टम सिंहासनारूढ़ हुआ*। इस समय उसकी आयु १८ वर्ष की थी। वह सुन्दर, बलवान तथा शक्तिशाली राजा था। जब उमङ्ग में आता तो वह प्रत्येक कार्य्य करने को उद्यत हो जाता। हेनरी विद्या तथा कला कौशल का बड़ा प्रेमी था और धार्मिक कार्य्यों में भी उत्साह पूर्वक भाग लेता था। आरम्भ में वह कुछ सीमा तक दयालु रहा, परन्तु कुछ समय पश्चात् वह क्रूर, स्वार्थी तथा कपटी हो गया।

हेनरी अष्टम अपने पिता की भांति धन प्रेमी था। परन्तु उसकी भांति धन व्यय करने में आगा पीछा न करता था। वह सजावट, शोभा-सामग्री तथा भोग विलास का बड़ा प्रेमी था और महाद्वीप के झगड़ों में भाग लेकर यश प्राप्त करना चाहता था। इन कारणों से उसने अपने पिता के समय के मन्त्री इम्पसन तथा डडले को वध करा दिया और सन् १५१३ ई० में उनके स्थान पर टामस वुल्जे (Thomas Wolsey) को अपना सम्मतिदाता तथा प्रधान न्यायाधीश नियुक्त किया।

(अ) वुल्जे की वार्ह्यनीति।

टामस वुल्जे के उद्देश-वुल्जे का पिता इप्सविच नगर में मास

* हेनरी के ज्येष्ठ पुत्र आर्थर को मरे सात वर्ष हो चुके थे।

बेचता था। वुल्जे बडा विद्वान्, निपुण, परिश्रमी तथा साहसी मन्त्री था। उसकी नीति फ्रांसीसी मन्त्रियों की नीति के समान यह थी कि अपने स्वामी को देश में शक्तिशाली तथा धनवान बनाये और यूरप के अन्य देशों में भी उसका आधिपत्य तथा प्रभुत्व स्थापित करे। इसके अतिरिक्त वह स्वय भी प्रभावशाली बनना तथा उच्चपद प्राप्त करना चाहता था। यह अंग्रेजी गिर्जा का कार्डिनल तथा हेनरी अष्टम का प्रधान न्यायाधीश तो था ही, अब वह पोप के पद को प्राप्त करने की चिन्ता में था।

वुल्जे के मन्त्री नियुक्त होने के पूर्व ही हेनरी अष्टम दो प्रसिद्ध युद्ध लड चुका था। इन में से प्रथम युद्ध फ्रान्स से हुआ। फ्रांस हेनरी सप्तम के समय से स्पेन से युद्ध कर रहा था। हेनरी अष्टम ने आरम्भ में स्पेन का पक्ष लिया। कारण यह था कि हेनरी ने अपने ज्येष्ठ भ्राता की मृत्यु के पश्चात् उसकी बेवा केथरिन ऑफ अरागन से विवाह कर लिया था। उसके कहने से हेनरी ने एक सेना फ्रांस भेजी जिसने स्पर्स के युद्ध (Battle of Spurs)* में फ्रांसीसी सेना पर विजय प्राप्त की।

फ्लोडन का रणक्षेत्र, १५१३ ई०—*अभी अंग्रेजी सेना फ्रान्स ही में थी कि फ्रांस के मित्र स्काटलैण्ड ने उत्तर की ओर से इङ्गलैण्ड पर* आक्रमण कर दिया। स्काटलैण्ड का सेनापति वहां का राजा जेम्स चतुर्थ था। उसका सामना करने को एक अंग्रेजी सेना अर्ल ऑफ सरे (Earl of Surrey) की अध्यक्षता में चली। ट्वीड नदी के समीप फ्लोडन के क्षेत्र (Floddon Field) में दोनों सेनाओं में घोर संग्राम हुआ। स्काटलैण्ड की सेना पराजित हुई। जेम्स स्वय रणक्षेत्र में मारा गया। इस प्रकार हेनरी की सेनाओं ने दो बार अन्य देशों पर विजय प्राप्त की।

* इस युद्ध का नाम ऐसा इस कारण पडा कि फ्रांसीसी सैनिकों ने रण से भागते समय घोडे भगाने में अपनी एडियों से जितना काम लिया उतना काम उन्हों ने रणक्षेत्र मे तलवारों से न लिया था।

7

वुल्जे की नवीन रीति—फ्लोडन के युद्ध के पश्चात् हेनरी ने अपनी सेना यूरप से इङ्गलेण्ड बुला ली। इसी वर्ष उसने टामस वुल्जे को अपना मन्त्री नियुक्त किया, जैसा पहले वर्णन हुआ है। वुल्जे ने एक नवीन रीति से काम लिया। वह यह नहीं चाहता था कि इङ्गलेण्ड स्पेन की सहायता करे। अतः उसने फ्रांस से सन्धि कर ली और हेनरी अष्टम की छोटी बहिन मेरी का विवाह फ्रास के राजा बारहवें लुई से कर दिया। इस बात का उसने तनिक भी विचार न किया कि लुई वृद्ध तथा मृत्यु का ग्रास हो रहा है और मेरी एक रूपवती युवती है। इसका परिणाम यह हुआ कि विवाह हुये दो वर्ष भी न हुये थे कि लुई की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र फ्रांसिस राजसिंहासन पर बैठा।

सन् १५२० का "स्वर्णवस्त्रीय क्षेत्र"—फ्रांसिस और स्पेन के चार्ल्स पञ्चम में प्राचीन शत्रुता थी। सन् १५१९ ई० में चार्ल्स जर्मनी का महाराजाधिराज निर्वाचित हुआ। इसका राज्य स्पेन, जर्मनी, हालैण्ड, बेल्जियम तथा इटली के कुछ भागों में विस्तृत था। वुल्जे डरा कि कहीं चार्ल्स समस्त यूरप को अपने अधिकार में न कर ले। अतः उसने यूरप की राष्ट्रीय शक्ति सतुलन (Balance of Power) के बनाये रखने के अभिप्राय से फ्रान्स के राजा फ्रांसिस से सन्धि कर ली। हेनरी फ्रास गया और फ्रांसिस से केले नगर के समीप भेंट की। दोनों राजा बहुमूल्य वस्त्र धारण किये हुये थे। भेंट का स्थान भी भली प्रकार सुसज्जित था। अत इतिहास में यह स्थान अपनी जाज्वल्यता के कारण 'स्वर्णवस्त्रीय क्षेत्र' (Field of the Cloth of Gold) के नाम से प्रसिद्ध है।

फ्रांस से सन्धि हुये अभी एक मास भी न हुआ था कि हेनरी ने फ्रांस से शत्रुता करके स्पेन के राजा चार्ल्स पञ्चम से लोभवश मित्रता कर ली। वुल्जे इस नीति के विरुद्ध था। परन्तु वह कर ही क्या सकता था। सन् १५२५ ई० में दैववश फ्रांसिस की बड़ी पराजय हुई। चार्ल्स उसे बन्दी

करके अपनी राजधानी मेड्रिड से गया । वुल्जे को सुअवसर प्राप्त हुआ । उसने पूर्व की भांति फ्रांसिस से सन्धि कर ली । इस घटना के दो वर्ष पश्चात्, जब चार्ल्स की सेनाओं ने रोम नगर में रक्त की धारायें प्रवाहित कीं, तब इङ्गलैण्ड और फ्रांस की मित्रता और भी अधिक दृढ़ होगई ।

वुल्जे की वाह्यनीति से इङ्गलैण्ड को विशेष लाभ न हुआ । वुल्जे ने हेनरी सप्तम का एकत्रित किया हुआ समस्त धन व्यर्थ नष्ट कर दिया । करों की बढ़ती के कारण प्रजा वुल्जे की शत्रु हो गई । सामन्त तथा अमीर तो उसके पूर्व ही से विरोधी थे । कथरिन के परित्याग के विषय में हेनरी अष्टम भी उसका शत्रु होगया । अतः उसका पतन शीघ्र से शीघ्र हुआ ।

(थ) कैथरिन का परित्याग और हेनरी तथा पोप की शत्रुता का प्रारंभ ।

हेनरी अष्टम तथा कैथरिन का विवाह— कैथरिन स्पेन के राजा फर्डीनण्ड की पुत्री थी । उसका विवाह इङ्गलैण्ड के राजा हेनरी सप्तम के ज्येष्ठ पुत्र अर्थात् राजकुमार आर्थर से हुआ था । जब आर्थर की मृत्यु हो गई तब हेनरी सप्तम ने स्पेन से मित्रता स्थिर रखने के लिये कैथरिन का विवाह अपने लघुपुत्र हेनरी अष्टम से करने का प्रयत्न किया ।



कैथरिन आफ अरागोन ।

परन्तु उस समय ऐसे विवाह धर्म के विरुद्ध माने जाते थे। अतः हेनरी ने पोप से आज्ञा मांगी। पोप ने प्रसन्नता पूर्वक किन्तु धर्म के प्रतिकूल आज्ञा देदी। आज्ञा मिलने पर हेनरी अष्टम ने कैथरिन से विवाह कर लिया।

त्याग के कारण—सन् १५२७ ई० तक हेनरी अष्टम और कैथरिन में प्रेम रहा। तत्पश्चात् हेनरी कैथरिन को घृणा की दृष्टि से देखने लगा। इसके अनेकों कारण है। कैथरिन स्पेन की राजकुमारी थी और चार्ल्स पञ्चम उसका भतीजा था। अतः वह हेनरी को सदैव यही पाठ पढाया करती थी कि चार्ल्स से शत्रुता कदापि न करना। परन्तु वुल्जे की नीति इसके प्रतिकूल थी। कैथरिन के कोई पुत्र न हुआ था। केवल एक दुर्बल पुत्री, जिसका नाम मेरी था, उस से उत्पन्न हुई थी। हेनरी को विश्वास था कि जब तक कैथरिन मेरी स्त्री रहेगी तब तक मेरे पुत्र उत्पन्न न होगा। न जाने मेरे पश्चात् राजसिंहासन किसको मिले। कैथरिन सुन्दर भी न थी। हेनरी एक अन्य स्त्री से प्रेम करने लगा था जिसका नाम ऐन बोलेन (Anne Boleyn) था। ऐन सुन्दर युवती थी। इन्हीं कारणों से हेनरी ने कैथरिन को परित्याग करना निश्चय किया था।

परन्तु इस कार्य्य में हेनरी को अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कैथरिन सदा की सच्चरित्र तथा पतिव्रता स्त्री थी। हेनरी सोचता था कि यदि परित्याग का झगड़ा मचाया जावेगा तो इङ्गलैण्ड की प्रजा अवश्य मेरे विरुद्ध हो जायेगी। कैथरिन का भतीजा चार्ल्स बड़ा बलवान तथा धनवान राजा था। हेनरी को भय था कि यदि मैं कैथरिन को छोड़ दूंगा तो सम्भव है कि चार्ल्स इङ्गलैण्ड पर आक्रमण करने का प्रयत्न करे। यही नहीं वरन् पोप भी इस समय चार्ल्स का बन्दी था। चार्ल्स की सेनायें रोम नगर को नष्ट भ्रष्ट कर रही थीं। पोप की आज्ञा

बिना परित्याग उचित तथा नियमानुसार न था । पोप कठिनता से आज्ञा दे सकता था क्योंकि वह स्वयं चार्ल्स का बन्दी था ।

परित्याग विषय का निर्णय—इन समस्त कठिनाइयों की चिन्ता न करके हेनरी ने पोप क्लेमेण्ट सप्तम (Clement VII) से आज्ञा मांगी और यह कारण उपस्थित किया कि मेरा और केथरिन का विवाह नियम के विरुद्ध है । अतः मैं इच्छानुसार केथरिन को त्याग सकता हूं । प्रथम तो पोप ने चार्ल्स के भय से कुछ उत्तर ही न दिया परन्तु कुछ समय बीतने पर उसने अपने नायब कम्पेजियों (Compeggio) को इङ्गलेण्ड के प्रधान न्यायाधीश वुल्जे के साथ परित्याग के प्रश्न के निर्णयार्थ हेनरी के पास भेजा । इङ्गलेण्ड में एक न्यायालय स्थापित हुआ जिसके वुल्जे और कम्पेजियो न्यायाधीश बने । हेनरी और केथरिन दोनों न्यायालय में उपस्थित हुये । कैथरिन अपनी पुत्री मेरी को भी साथ लाई । हेनरी से पूछा गया कि परित्याग के क्या कारण हैं ? उसने उत्तर दिया कि मेरा और केथरिन का विवाह नियमानुसार अनुचित है । यही परित्याग का मुख्य कारण है । हेनरी को यह बात स्वीकार करनी पड़ी कि केथरिन सर्वदा सदाचारिणी रही है । कैथरिन घुटनों के बल बैठ फूट २ कर रोने लगी और हेनरी से क्षमा की प्रार्थना की । उसने यह भी शपथ खाई कि मैं हेनरी को हृदय से प्रेम करती हू । परन्तु इतने पर भी हेनरी का कठोर-हृदय न पसीजा ।

न्याय होने में कई मास व्यतीत हो गये । हेनरी यह बात कब देख सकता था ? उसके हृदय सागर में ऐन बोलन का प्रेम रूपी जल उमड़ रहा था । उसे विश्वास था कि वुल्जे मेरे पक्ष में निर्णय करेगा । परन्तु जब ऐसा न हुआ और निर्णय होने में विलम्ब होने लगा तो हेनरी ने वुल्जे को इसका दोषी ठहराया और वह उस से बदला लेने का अवसर खोजने लगा ।

वुल्जे का पतन, १५२६ ई०—वुल्जे का पतन अति शीघ्र हुआ। हेनरी ने उसकी समस्त जागीरें छीन लीं और उसे पदच्युत करके बन्दीगृह में डाल दिया। बेचारा बड़ी कठिनाई से मुक्त हुआ। परन्तु



हेनरी अष्टम वुल्जे को निकाल रहा है।

कुछ ही समय पश्चात् उसका देहान्त हो गया। वुल्जे की गणना उन मन्त्रियों में है जिन्हों ने तन, मन धन से देश सेवा की है। वह परिश्रमी

निष्कपट तथा सच्चा राजभक्त था। इस में उसका तनिक भी दोष न था जो न्यायालय ने न्याय करने में इतना विलम्ब किया अथवा अन्त में न्याय हेनरी के प्रतिकूल किया। वुल्जे यह न जानता था कि राजाओं तथा महाराजाओं पर विश्वास करना मूर्खता है। उसके अध पतन से हेनरी को *परित्याग का अवसर तो अवश्य मिल गया* परन्तु उसके मन्त्री पद पर न रहने से हेनरी ने प्रजा पर अनेकों ऐसे अत्याचार किये जिन्हें वह उसकी उपस्थिति में न कर सका था।

त्याग और उसके सुन्दर परिणाम—वुल्जे के पदच्युत होने पर हेनरी ने दो नवीन सम्मतिदाता नियुक्त किये। इन में एक टामस क्रामवेल (Thomas Cromwell) और दूसरा टामस क्रेनमर (Thomas Cranmer) था। ये दोनों अपने स्वामी के साथ दिन में तारे गिनने को सदैव तत्पर रहते थे। क्रेनमर ने हेनरी को यह सम्मति दी कि परित्याग के विषय में पोप से आज्ञा लेने के स्थान पर यूरप के विश्व विद्यालयों से सम्मति प्राप्त कर ली जाय*। हेनरी ने ऐसा ही किया। परन्तु जब विश्व विद्यालयों के उत्तर आने में भी बड़ा विलम्ब हुआ तो क्रेनमर ने, जो स्वय गिर्जा में उच्च पद पर था, अभियोग का निर्णय कैथरिन के *प्रतिकूल* किया। हेनरी को *परित्याग* की आज्ञा प्राप्त हो गई। उसने प्रसन्नतापूर्वक कैथरिन को त्याग दिया और ऐन बोलेन से अपना विवाह कर लिया।

वुल्जे के पतन के अतिरिक्त कैथरिन के परित्याग का एक मुख्य परिणाम यह हुआ कि हेनरी भविष्य के लिये पोप का शत्रु हो गया। उसे इस बात की चिन्ता हुई कि किसी न किसी प्रकार पोप से बदला ले।

*इस समय विश्व विद्यालय धार्मिक विषयों में बड़े प्रभावशाली तथा अग्रसर थे।

अत उसने उसे नीचा दिखाने के लिये कई नियम बनाये जिनसे इङ्गलण्ड मे धर्मसुधार (Reformation) की नींव पडी ।

(स) धर्मसुधार और हेनरी अष्टम का अत्याचार ।

यूरप महाद्वीप में धर्मसुधार की नींव सब से प्रथम जर्मनी में पडी था । इस देश मे धार्मिक आन्दोलन लूथर और वहा के अन्य निवासियों का ओर से हुआ था ओर वहा के महाराजाधिराज ने उसे रोकने का भरसक प्रयत्न किया था । इङ्गलेण्ड में पूर्णतया इसके प्रतिकूल हुआ । इस देश मे सुधार की नींव वहा के राजा हेनरी अष्टम द्वारा पडी और प्रजा ने उसमें बहुत कम भाग लिया ।

सुधार की तैयारियां—जर्मनी की भाति इङ्गलण्ड में भी बहुत मे मनुष्य धर्मसुधार के पक्ष में थे । विकलिफ, इरेसमस (Erasmus) कोलिट (Colet) ओर मोर (More) इन के नेता हैं । वुल्जे स्वय इङ्गलैण्ड के गिर्जा मे कुछ आवश्यक सुधार करना चाहता था । नवीन विद्या तथा कलाकौशल के प्रचार से मनुष्यों के विचारों में बडा अन्तर पड गया था। परन्तु इन समस्त बातों के होते हुये भी इङ्गलैण्ड में धर्मसुधार की नींव कदापि न पड़ती यदि कैथरिन के परित्याग का बवण्डर न उठता । कारण यह है कि कैथरिन के त्याग के पहिले हेनरी अष्टम पोप के कट्टर अनुयायियों में से था । जब लूथर ने जर्मनी में पोप का विरोध किया तब हनरी ने पोप के पक्ष में एक पुस्तक प्रकाशित की । उसके पारितोषिक मे उसे रोम की ओर से "धर्म रक्षक" (Defender of the Faith) की उपाधि मिली। जब पोप ने कथरिन के त्याग की आज्ञा न दी तब हेनरी पोप का शत्रु हो गया । उसने ऐसे नियम बनाये जिनके कारण इङ्गलेण्ड में पोप का प्रभुत्व पूर्णतया क्षीण हो गया ।

गिर्जा के कोप पर आक्रमण—लालची होने के कारण हेनरी ने सब से प्रथम अग्रेजी गिर्जा के कोप पर आक्रमण किया । पादरियों को

अभी तक अनेकों कर मिलते थे । कुछ पादरी व्यापार तथा अन्य रीतियों से धन उपार्जन कर रहे थे । हेनरी ने आज्ञा दी कि भविष्य में पादरी व्यापार तथा कृषी में भाग न लें । जिन पादरियों को एक से अधिक जागीरें प्राप्त थीं उनके पास केवल एक जागीर छोड दी गई । शेष सब सरकार ने छीन ली ।

अपील का नियम, १५३३ ई०---हेनरी ने पोप के पतन के साधन भी शीघ्र उपस्थित किये । उसे भय था कि कहीं केथरिन परित्याग के विषय में पोप से अपील न करे और उस से सहायता न मांगे । अत हेनरी के कहने से पार्लियामेण्ट ने यह नियम (Act of Appeal) बना लिया कि भविष्य में कोई इङ्गलेण्डनिवासी धार्मिक विषय में पोप से अपील नहीं कर सकता है । इस के अतिरिक्त वे समस्त कर जो इङ्गलेण्ड से पोप को मिलते थे बन्द कर दिये गये । हेनरी ने यह भी घोषणा की कि भविष्य में पादरियों का निर्वाचन मैं स्वयं करूंगा ।

प्रधानता का नियम, १५३४ ई०----इन नियमों के बनने से पोप बहुत अप्रसन्न हुआ । उसने केथरिन के परित्याग को अनुचित ठहराया । इसके उत्तर में अंग्रेजी पार्लियामेण्ट ने हेनरी को "अंग्रेजी गिर्जा के प्रधान" की उपाधि देकर मनुष्यों से इस बात की शपथ ली कि वे पोप की आज्ञा का कदापि पालन न करेंगे और उसके स्थान पर राजा को धर्मपथ प्रदर्शक मानेंगे । इस नियम के बनने से पोप का शेष प्रभुत्व भी जाता रहा ।

मोर का वध---बहुत से मनुष्यों ने उपरोक्त शपथ न खाई । इन में टामस मोर मुख्य है । उसने अपने विचार युटोपिया (Utopia) नामक पुस्तक में प्रकट किये हैं । इस पुस्तक में एक ऐसे संसार का वृतान्त लिखा है जहां सुख, विलासिता और आनन्द सदैव विराजमान रहते हैं । न वहां कोई दुःख है, न किसी बात की चिन्ता । पाप

का रहीं चिह्न तक भी नहीं। वहाँ का राजा कृपालु, दयावान तथा प्रजा पालक है, इत्यादि २। जब मोर ने शपथ न खाई तो हेनरी ने आज्ञा दी कि उसे प्राणदण्ड दिया जावे। मोर बडा हँसोडा था। जब उससे शूली पर चढ़ने को कहा गया तो वह हँसी करने लगा। बोला "कृपा करके मुझे ऊपर पहुचा दीजिये। नीचे लाने का कष्ट आप को कदापि न करना पडेगा। मैं स्वय ही नीचे आजाऊँगा"। जब सर के अलग होने का समय निकट आया तो वह फिर बोला, "मुझे अपनी दाढ़ी उतार लेने दीजिये। इस बेचारी ने तो कोई अपराध नहीं किया है'। यह कहना था कि मोर का सर शरीर से अलग हो गया।

छोटे मठों का दमन--मोर की भांति कुछ अन्य पादरियों ने भी शपथ न खाई। हेनरी ने उन्हें भी प्राणदण्ड दिया। इनके मरने से हेनरी का उत्साह तथा साहस और भी बढ गया। उस ने क्रामवेल की सम्मति से यह आज्ञा दी कि जिन मठों की आय दो सौ पौण्ड प्रति वर्ष से कम है वे सब तोड दिये जावें और उनकी जागीरें राज्याधीन कर ली जावें। इस प्रकार हेनरी के हाथ बहुत सा धन लगा। इस में से कुछ जनता के हेतु व्यय हुआ। परन्तु अधिकाश हेनरी ने स्वयं दबा लिया।

दैवी यात्रा, १५३६ ई०—मठों के टूटने का एक फल यह हुआ कि इङ्गलैण्ड के उत्तरी प्रान्त हेनरी के विरुद्ध उठ खडे हुये। यहा नवीन साहित्य तथा कलाकौशल का प्रचार बहुत कम हुआ था। यहा के निवासी धार्मिक विषयों को बहुत कम समझते थे। अत वे हेनरी के धार्मिक सुधारों के विरुद्ध थे। वे सेना एकत्रित करके अपने नेता रावर्ट आस्क (Robert Aske) की अध्यक्षता में लन्दन नगर पर आक्रमण करने (Pilgrimage of Grace) को चले। उनके झण्डे पर महात्मा ईसा के पाच घाव* बने हुये थे। राजा ने उनके विरुद्ध एक सेना नारफ़ोक की

*यह घाव ईसा के शरीर पर उनके मरने के पूर्व उनके शत्रु द्वारा लगे थे।

अध्यक्षता में भेजो। विद्रोही बन्दी हुये और बहुतों को प्राणदण्ड मिला।

बड़े मठों का दमन—इस विद्रोह के शान्त हो जाने से हेनरी का साहस और अधिक बढ़ गया। अब वह अपने आगे किसी को न गिनता था। उसने आज्ञा दी कि बड़े मठ भी ढा दिये जावें। राजा ने उन में रहने वाले साधुओं पर अनेकों दोषारोपण किये। इस अनुचित कार्य्य से हेनरी का उद्देश केवल धन एकत्रित करने का था। हेनरी की आज्ञानुसार गिर्जाघरों की मूर्तियां भी तोड़ डाली गईं। ये मूर्तियां लकड़ी की बनी हुई थीं। अत बेरस की मूर्तियों के टूट जाने से लकड़ी का बड़ा ढेर एकत्रित हो गया। हेनरी ने इस लकड़ी को साधुओं के जलाने में व्यय किया। इस बात का उसने कुछ भी विचार न किया कि यह लकड़ी कैसी है और कहां से आई है।

इञ्जील का अनुवाद, १५३७ ई०—मठों के ढाये जाने में प्रजा की भी सम्मति थी। हेनरी धन के लोभ में अन्धा हो रहा था। प्रजा उसके ऐश्वर्य और बल के कारण उसका साथ दे रही थी। परन्तु जनता धार्मिक विषयों को बहुत कम समझती थी। सन् १५३७ ई० में हेनरी की आज्ञानुसार इञ्जील का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में हुआ। यही कार्य्य लूथर ने जर्मनी में किया था। इसका फल यह हुआ कि जो मनुष्य लैटिन भाषा नहीं जानते थे वे भी अब इच्छापूर्वक इञ्जील पढ़ने लगे। इसके पढ़ने से वे धार्मिक विषयों को भी भली प्रकार समझने लगे। इञ्जील का अंग्रेजी भाषा में आ जाना धर्म-सुधार का एक मुख्य स्तम्भ गिना जाता है।

कैथोलिक मत की छः धारायें, १५३९ ई०—इन सब बातों के होते हुये भी हेनरी धार्मिक परिवर्तन नहीं करना चाहता था। उसका विरोध पोप से था न कि रोमन केथोलिक धर्म से। इसी विचार से उसने पोप के स्थान पर स्वयं को अंग्रेजी गिर्जा का प्रधान बनाया था

और पोप के अधःपतन के अन्य साधन उपस्थित किये थे । परन्तु वह जर्मनों की भांति रोमन कैथोलिक धर्म के सिद्धान्तों को स्थगित करके प्रोटेस्टेण्ट धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार न करना चाहता था । उसने उन्हें बनाये रखने के अभिप्राय से छ धारायें (Statute of Six Articles) घोषित कीं जो कैथोलिक मत के छै स्तम्भ कहे जा सकते हैं । यह धारायें निम्न लिखित हैं —

(१) लार्डस सपर में मास मदिरा का ग्रहण करना ईसा के मांस तथा रक्त का ग्रहण करना है । (२) पादरियों को गुप्त रीति से अपने अपराध मान लेने चाहिये । (३) पादरी ब्रह्मचारी रहें । (४) व्रतों को रखना चाहिये । (५) ईश्वरोपासना तथा पूजा आवश्यक है । (६) पादरियों को परस्पर मिलकर धर्म पर विचार करना चाहिये ।

जो प्रोटेस्टेण्ट इन धाराओं को न मानते थे उन्हें कठोर दण्ड मिलता था और जो कैथोलिक हेनरी के स्थान पर पोप को धार्मिक नेता मानते थे वे भी दण्ड के भागी होते थे । इस प्रकार हेनरी, प्रोटेस्टेण्ट और कैथोलिक दोनों को दण्ड देता था । वह मध्यवर्ती मार्ग पर चल रहा था और इसी कारण उसे धार्मिक नीति में सफलता प्राप्त हुई । परन्तु हेनरी अष्टम के धार्मिक सुधार मे कई बुराइयाँ थीं । प्रथम, सुधार राजा की ओर से हुआ था । अतः राजाओं के बदलने के साथ ही साथ सुधार की प्रणाली भी बदलती गई । द्वितीय, हेनरी ने गिर्जा की शासन पद्धति में सुधार किया न कि गिर्जा के सिद्धान्तों में । तृतीय, उसने सुधार के बहाने मठों को मनमाना लूटा जिससे प्रतीत होता है कि हेनरी धन की चिन्ता करता था न कि धर्मसुधार की ।

क्रामवेल का पतन, १५४० ई०—सन् १५४० ई० में क्रामवेल का पतन हुआ । हेनरी का द्वितीय विवाह ऐन बोलेन के साथ और तृतीय जेन सीमोर (Jane Seymour) के साथ हुआ था । ऐन से एलिजबेथ और जेन से एडवर्ड षष्ट उत्पन्न हुआ । सन् १५३० ई०

में हेनरी ने अपना विवाह क्रामवेल की सम्मति से जर्मनी की एक राजकुमारी ऐन आफ क्लीव्ज (Anne of Cloves) से किया। क्रामवेल ने हेनरी को यह आशा दिलाई थी कि ऐन सुन्दर और कोमलाङ्गी युवती है। परन्तु हेनरी ने उसे क्रामवेल के कथन के बिलकुल प्रतिकूल पाया। ऐन भद्दी तथा कुरूपा सी निकली। अतः हेनरी ने क्रामवेल को प्राणदण्ड दिया और ऐन को परित्याग कर दिया।

ऐन के त्याग के पश्चात् हेनरी ने दो विवाह और किये। इन में से प्रथम विवाह कैथरिन हॉवर्ड (Catherine-Howard) और द्वितीय कैथरिन पार (Catherine Parr) के साथ हुआ। इस प्रकार हेनरी ने कुल छै विवाह किये। परन्तु इतने विवाह करने पर भी उसे वास्तविक आनन्द और सुख प्राप्त न हो सका।

हेनरी के अन्तिम दिवस—हेनरी ने अपने राज्यकाल के अन्त में दो युद्ध किये। इन में से प्रथम स्काटलैण्ड के राजा जेम्स पञ्चम से हुआ। अंग्रेज़ी सेना ने स्काटलैण्ड की सेना को सोलवे मास (Solway-Mas.) के स्थान पर शत्रु को पराजित किया। पराजय का समाचार सुनकर जेम्स की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के कुछ दिन पश्चात् उसकी पुत्री स्काटलैण्ड के राज्यसिंहासन पर बैठी। दूसरा युद्ध फ्रांस से हुआ। इसका फल यह हुआ कि हेनरी का समस्त राजकोष खाली हो गया। इस निर्धनता को दूर करने के लिये हेनरी ने बुरे सिक्के चलाये परन्तु कोष की कमी तब भी पूरी न हुई।

सन् १५४७ ई० में हेनरी का देहान्त हो गया। जनता उसके क्रूर व्यवहार से इतनी दुखी हो गई थी कि उसकी मृत्यु पर सम्पूर्ण प्रजा-वर्ग ने प्रसन्नता प्रकट की।

अभ्यास ।



(१) निम्न लिखित घटनाओं की सहायता से हेनरी अष्टम के चरित्र पर दस पंक्तियाँ लिखो —

[अ] ऐन बोलेन से विवाह, [ब] वुल्जे का पतन, [स] मठों का दमन और [द] छै धाराओं का प्रकाशित होना ।

(२) स्पष्ट रीति से समझाओ कि हेनरी अष्टम के शासनकाल में कैथरिन के त्याग से धार्मिक सुधार किस प्रकार हुआ ?

(३) वुल्जे की वाह्यनीति का उल्लेख करो । तुम इसकी और हेनरी सप्तम की वाह्यनीति की तुलना किस प्रकार करोगे ? यदि दोनों में कुछ अन्तर पाते हो, तो इसका क्या कारण है ?

(४) [अ] अंग्रेजी धर्मसुधार के क्या २ कारण थे ?

[ब] हेनरी ने पोप के विरुद्ध कौन २ से नियम बनाये ?

(५) निम्न लिखित तारीखों में जो प्रसिद्ध घटनायें हुईं उनका एक दूसरे से क्या सम्बन्ध है—

सन् १५३३ ई०, सन् १५३४ ई०, सन् १५३५ ई० ।

(६) निम्न लिखित पर संक्षेप में नोट लिखो—

[अ] देवी यात्रा, [ब] टामस क्रामवेल, [स] युटोपिया, [द] स्वर्ण वस्त्रीय क्षेत्र और [इ] प्रधानता का नियम ।



पन्द्रहवां अध्याय।

एडवर्ड षष्ठ।

(सन् १५४७–१५५३ ई०)



सामर्सेट का प्रबन्ध—हेनरी अष्टम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र एडवर्ड षष्ठ राजा बना। उसकी आयु इस समय केवल दस वर्ष की थी, अतः वह अभी बालक ही था और राज्य कार्य्य करने के योग्य न था। हेनरी अपनी मृत्यु के पूर्व ही एक संरक्षक सभा स्थापित कर गया था। उसने इस सभा में प्राचीन तथा नवीन धर्म के अनुयायियों की संख्या समान रक्खी थी। वह सोचता था कि यदि इस सभा में भिन्न २ मतों के अनुयायी रहेंगे तो इङ्गलैण्ड का धर्म ठीक वैसा ही बना रहेगा जैसा उसने छोड़ा था। परन्तु ऐसा न हो सका। यही नहीं वरन् एडवर्ड के मामा ने उसके राजा बनते ही सभा पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया और



एडवर्ड षष्ठ।

कह सुन, कर स्वयं को राज-संरक्षक (Lord Protector) बना

लिया। सभा ने उसे सामर्सेट के ड्यूक (Duke of Somerset) की उपाधि भी प्रदान की।

धार्मिक तथा समाजिक सुधार—सामर्सेट धार्मिक पुरुष था। वह जानता था कि इङ्गलेण्ड के निवासी लूथर के मत अर्थात् प्रोटेस्टेण्ट धर्म में अग्रसर होने को उद्यत है। अत उसने हेनरी अष्टम के धार्मिक सिद्धान्तों मे अनेकों सुधार किये जिनके कारण इङ्गलेण्ड का राजधर्म भी लगभग वैसा ही हो गया जैसा जर्मनी का नवीन मत था। सामर्सेट ने सन् १५४९ ई० में प्रथम प्रार्थना-पुस्तक प्रकाशित की। अंग्रेजी गिर्जा के सम्बन्ध में यह प्रथम पुस्तक है। कैथोलिक धर्म की वे छ धारायें, जो हेनरी अष्टम के समय में बनी थीं, हटा दी गईं। मास * की रीति भी बन्द होगई। सामर्सेट ने प्रोटेस्टेण्ट धर्म को इङ्गलेण्ड का राजधर्म निश्चित किया। अत कैथोलिक धर्म के जिन पादरियों ने मत नहीं बदला उनकी जागीरें छीन ली गईं। सामर्सेट का विचार था कि गिर्जाघरों में सजधज की आवश्यकता नहीं है। अत उसने उनके शीशे और अन्य चमक दमक की वस्तुयें बाहर फिकवा दीं। यही नहीं वरन् उसने उनकी मूर्तिया भी तुडवा डाली। इससे प्रतीत होता है कि सामर्सेट भी हेनरी की भांति धन का लोभी था। परन्तु इसके साथ२ उसमें हेनरी के प्रतिकूल सच्चा धार्मिक उत्साह भरा हुआ था।

मूर्तियों के टूटने और पादरियों की जागीरों के छिनने से देश में बड़ो

*मास ईसाई धर्म की एक रीति है। गिर्जाघर में पादरी की मेज पर दो कटोरे रक्खे जाते है। इन में से एक में रोटी और दूसरे में मदिरा होती है। रोटी महात्मा ईसा का मास और मदिरा उनका रक्त समझा जाता है। इन कटोरों पर प्रार्थना पढ़ कर पादरी इन दोनों वस्तुओं को मनुष्यों में बाट देता है। यह रीति केवल कैथोलिक धर्म में मनी जाती है, प्रोटेस्टेण्ट इसको नहीं मानते।

अशान्ति फैली। सामर्सेट की सामाजिक नीति से देश की अशान्ति और भी अधिक बढ़ गई। धन के लोभ में उसने आज्ञा दी कि मजदूर-समाजों की जागीरें छीन ली जायें। वास्तव में ऐसा ही हुआ। सामर्सेट के इस कार्य्य से इङ्गलैण्ड के बहुत से निवासी उसके शत्रु हो गये। उसने एक भूल और की। उसने मनुष्यों को भेड़ पालने के हेतु खेतों को चरागाहों में परिणत करने से न रोका। भेड़ पालने के लिये बहुत कम मनुष्यों की आवश्यकता होती है। अत चरागाहों के बन जाने से बहुत से कृषक तथा मजदूर बेकार हो गये।

इङ्गलैण्ड और स्काटलैण्ड में खटपट—धार्मिक और सामाजिक नीति की भांति सामर्सेट वाह्यनीति में भी असफल हुआ। उसकी इच्छा थी कि एडवर्ड का विवाह स्काटलैण्ड की रानी मेरी* के साथ हो जाय। परन्तु इसमें एक बात बाधा डाल रही थी। वह यह कि स्काटलैण्ड में भी अन्य देशों की भांति नवीन धर्म की नींव दृढ़ बन चुकी थी। परन्तु, जैसा कि हम कह चुके हैं, मेरी की माता मेरी ऑफ-गाइस पोप के पक्ष में थी। वह अपनी पुत्री को भी इस धर्म की शिक्षा दे रही थी। इसके प्रतिकूल एडवर्ड और सामर्सेट दोनों प्रोटेस्टेण्ट थे। जब सामर्सेट ने देखा कि मेरी ऑफ गाइस अपनी पुत्री का विवाह एडवर्ड के साथ करने को तैयार नहीं है तो उसने युद्ध सामग्री ठीक करने की आज्ञा दी। सन् १५४७ ई० में अंग्रेजी सेना आगे बढ़ी और पिंकी (Pinkie) के स्थान पर स्काटलैण्ड की सेना को पराजित कर दिया। इस युद्ध का यह परिणाम हुआ कि मेरी का विवाह फ्रांस के राजकुमार के साथ हो गया। यह देख कर सामर्सेट ने फ्रांस से युद्ध छेड़ दिया। परन्तु इस बार अंग्रेजी सेना स्वत पराजित हुई। बोलञ नगर, जो हेनरी अष्टम ने विजय किया था और जिसके लेने

* इस समय मेरी की आयु केवल पांच वर्ष की थी। अत सारा राजप्रबन्ध उसकी माता मेरी ऑफ गाइस के हाथों में था।

में बहुत धन उठा था, अंग्रेजों के अधिकार से निकल गया।

डेवनशायर का विद्रोह, १५४८ ई०—सामर्सेट की धार्मिक तथा सामाजिक नीति के कारण इङ्गलैण्ड मे दो विद्रोह हुये। प्रथम विद्रोह डेवनशायर में हुआ। यहा नये धर्म का बहुत कम प्रचार था। अतः यहा के बहुत से निवासी प्राचीन धर्मावलम्बी थे। सामर्सेट के धार्मिक परिवर्तनों से उन को बहुत दुःख हुआ। वे सब के सब उसके विद्रोही हो गये। परन्तु सामर्सेट ने उनका सामना बड़ी वीरता से किया। अंग्रेजी सेना ने विद्रोहियों को पराजित करके देश में सुख तथा शान्ति का प्रचार किया।

केट का विद्रोह—दूसरा विद्रोह नार्फोक के प्रान्त में हुआ। विद्रोहियों का नेता केट (Ket) नामक चमडे का व्यापारी था वह चरागाहों का विरोधी था। संरक्षक सभा ने एक कठोर हृदय नायक को विद्रोह रोकने को भेजा। यह हेनरी सप्तम के प्रसिद्ध मन्त्री डडले का पुत्र डडले अर्ल ऑफ वारबेक (Earl of Warbeck) था। उसने तुरन्त विद्रोहियों पर आक्रमण करके उन्हे परास्त कर लिया और देश में शान्ति स्थापित की।

सामर्सेट का पतन— केट तथा डेवनशायर के विद्रोहों से यह बात अच्छी प्रकार प्रगट हो गई कि सामर्सेट सर्वप्रिय शासक नहीं है। बहुत से मनुष्य उसकी सामाजिक तथा धार्मिक नीति के विरुद्ध थे। सामर्सेट वाह्यनीति मे भी सफल न हुआ था। अंग्रेजी सिक्का हेनरी अष्टम के समय से अभी तक ठीक न हुआ था। अत संरक्षक सभा ने सामर्सेट को हटाकर डडले को उसके स्थान पर राजसंरक्षक नियुक्त किया और उसे ड्यूक ऑफ नार्थम्बरलैण्ड (Duke of Northumberland) की उपाधि दी। डडले सामर्सेट के रक्त का प्यासा था। उसने उस पर बहुत से झूठे दोष आरोपित किये। अतएव संरक्षक सभा ने सामर्सेट को प्राणदण्ड दिया। यों तो सामर्सेट बहुत बदनाम था परन्तु जब उसको फांसी

हुई तो बहुत से मनुष्यों ने अपने रूमाल निकाल कर उसके रक्त में रँग लिये और वर्षों तक उन्हें उसकी स्मृत के लिये अपने पास रक्खे ।

नार्दम्बरलैन्ड की नीति—नार्दम्बरलैण्ड सामर्सेट की भांति धार्मिक पुरुष था। उसने भी सामर्सेट की भांति अनेकों धार्मिक तथा सामाजिक सुधार किये । उसने द्वितीय प्रार्थना पुस्तक प्रकाशित की और प्रोटेस्टेण्ट धर्म की ४२ धारायें निश्चित की । अब इङ्गलैण्ड का राजधर्म भी जर्मनी के नवीन-धर्म की भाँति निरा प्रोटेस्टेण्टिज्म हो गया । नार्दम्बरलैण्ड ने इस बात का प्रयत्न किया कि मनुष्य खेतों को काट कर चरागाहों में परिणत न करें । उसके कहने से पार्लियामेण्ट ने निधनों की सहायतार्थ प्रथम नियम (Poor Laws) बनाया । प्रत्येक ग्राम और नगर में निधनों तथा दुखियों की सहायतार्थ धन संग्रह होने लगा और उनकी आवश्यकताओं के दूर करने में व्यय होने लगा ।

डडले का जाल और एडवर्ड की मृत्यु, १५५३ ई०—इन सुधारों को पढ़कर यह न समझना चाहिये कि नार्दम्बरलैण्ड में स्वार्थ की मात्रा बिलकुल न्यून थी । सामर्सेट की भांति वह भी स्वार्थी तथा लोभी था । उसकी इच्छा थी कि एडवर्ड की मृत्यु के पश्चात् इङ्गलैण्ड का राज्य ट्यूडर वंश के स्थान पर मेरे वंश में से किसी को मिले । एडवर्ड का स्वास्थ्य ठीक न रहता था । वह बहुधा रोगी रहता और सप्ताहों तक शय्या से न उठता था । नार्दम्बरलैण्ड को इस बात की चिन्ता हुई कि एडवर्ड की मृत्यु के पश्चात मुझे कोई दो कौडी को भी न पूछेगा । अतः कोई उपाय ऐसा सोचना चाहिये जिससे इङ्गलैण्ड का राज्य मुझे अथवा मेरी सन्तान में से किसी को मिले । अतः उसने अपने पुत्र गिल्डफोर्ड डडले का विवाह एडवर्ड की भतीजी लेडी जेन ग्रे (Lady Jane Grey) से करा दिया । तत्पश्चात् उसने एडवर्ड को यह पाठ

पडाया कि उसके पश्चात् राज्यधिकारिणी उसकी ज्येष्ठ भगनी मेरी* है। परन्तु यह पोप की कट्टर अनुयायिनी है। अत वह राज्य सिंहासन से वञ्चित रक्खी जाये और उसके स्थान पर लेडी जेन ग्रे उत्तराधिकारिणी ठहराई जाय क्यों कि वह प्रोटेस्टेण्ट मत को मानती है। एडवर्ड अभी तक बालक था। वह डडले का वास्तविक अभिप्राय न समझ सका। यह धार्मिक विषयों में कट्टर था। अतः उसने डडले की सम्मति स्वीकार कर ली और अपने वसीयतनामे में यह बात लिख दी कि मेरे मरने के पश्चात् इङ्गलैण्ड का राज्य मेरी अथवा एलिजबेथ के स्थान पर लेडी जेन ग्रे को मिले। इसके कुछ समय उपरान्त एडवर्ड की मृत्यु तपेदिक के रोग में हो गई।

लेडी जेन ग्रे का १३ दिन का राज्य—नार्दम्बरलैण्ड सोचता था कि प्रजा नवीन धर्मावलम्बिनी है। अत मेरी की सहायता न करके जेन लेडी ग्रे का साथ देगी। परन्तु ऐसा न हुआ। एडवर्ड की मृत्यु पर मेरी नार्दम्बरलैण्ड के भय से लन्दन भाग गई। नार्दम्बरलैण्ट ने अपने पुत्र को उसे पकडने के लिये भेजा। परन्तु वह मेरी का कुछ भी न कर सका। प्रजा और सेनायें मेरी की पक्ष में हो चुकी थीं। अत मेरी को रानी बनने में अधिक कठिनाई न हुई। नार्दम्बरलैण्ड का कुछ वश न चला। मेरी लेडी जेन ग्रे को लन्दन के कारागृह में बन्दी कर लिया। वह बेचारी केवल १३ दिन राज्य कर सकी। नार्दम्बरलैण्ड भी बन्दी हुआ और कुछ दिनों पश्चात् मेरी ने उसे प्राणदण्ड दिया। मरते समय उसने कहा, "अरे बाबा, मैं कभी नवीनधर्मावलम्बी न था। मैं अभी तक पोप का अनुयायी हू। मुझे क्षमा करो"। परन्तु मेरी ने उसे क्षमा न किया और उसे जान से मरवा दिया।

*एलिजबेथ आयु में मेरी से कम होने के कारण उसकी उपस्थिति में रानी बनने का स्वप्न तक न देख सकती थी।

अभ्यास।

(१) राजा बनते समय एडवर्ड की आयु कितनी थी? उसके बालक होने के कारण राजप्रबन्ध में कौन २ से दोष उत्पन्न हो गये थे? भारतवर्ष के इतिहास में तुमने पढ़ा होगा कि मुगल वंश का एक राजा भी सिंहासनारूढ़ होते समय बहुत छोटा था। उसका क्या नाम है? उसके शासन में वे दोष क्यों न थे जो हेनरी अष्टम के पुत्र के शासन में थे?

(२) उन कारणों को स्पष्ट रीति से समझाओ जिन से [अ] डेवनशायर और [ब] केंट के विद्रोह हुये।

(३) नार्दम्बरलैण्ड की तुलना सामर्सेट से करो। दोनों में से तुम किस को अच्छा समझते हो, और क्यों?

(४) उन धार्मिक तथा सामाजिक सुधारों का वर्णन करो जो एडवर्ड षष्ठ के शासनकाल में हुये। इन सुधारों द्वारा हेनरी अष्टम के समय के दोष किस प्रकार दूर हुये?

(५) लेडी जेन ग्रे ने केवल १३ दिन तक राज्य किया। क्या किसी अन्य रानी अथवा राजा को बता सकते हो जिसने लगभग इतने ही समय तक राज किया हो?

सोलहवां अध्याय।

महारानी मेरी।

(सन् १५५३–१५५८ई०)

—:(०)—

शासन के लक्षण मेरी उस अभागिनी कैथरिन की पुत्री थी जिसे हेनरी अष्टम के शासनकाल में इतनी लज्जा उठानी पड़ी थी। मेरी को अपनी माता के साथ किये हुये दुर्व्यवहार भली भांति स्मरण थे। उसे यह भी ज्ञात था कि इङ्गलैण्ड के कुछ निवासी पोप का अधिपत्य फिर स्वीकार करने को तत्पर हैं। उसकी माता स्पेन की राजकुमारी थी। स्पेन पोप का सहायक और लूथर का परम शत्रु था। अत मेरी के हृदय में कैथोलिक मत के अनुयायियों के लिये बहुत स्थान था। जब एडवर्ड राज करता था तब मेरी के प्राण सदैव सङ्कट में रहते थे। यही नहीं वरन् एडवर्ड और इसके पूर्व हेनरी अष्टम ने इस बात का भी प्रयत्न किया था कि मेरी रानी न बनने पावे। इन समस्त बातों का परिणाम बुरा हुआ। मेरी हृदय से पोप तथा स्पेन का गान गाने लगी और अत्यन्त शीघ्र इङ्गलैण्ड की शत्रु बन गई।



मेरी ट्यूडर

मेरी और फिलिप द्वितीय का विवाह—इस समय मेरी की आयु ३७ वर्ष की थी। वह स्पेन के राजकुमार फिलिप द्वितीय से विवाह करना चाहती थी परन्तु इङ्गलेण्ड निवासी इसके विरुद्ध थे। वे चाहते थे कि मेरी अपना विवाह इङ्गलैण्ड के किसी राजकुमार से करले जिससे इङ्गलैण्ड का राज्य स्पेन निवासियों के हाथों में न चला जावे। परन्तु मेरी ने उनके कहने की तनिक भी चिन्ता न की और पोप के दूत पोल (Pole) के कथनानुसार अपना विवाह फिलिप द्वितीय से कर लिया। फिलिप सम्राट चार्लस पञ्चम का पुत्र था। जिन चार राजवंशीय विवाहों का उल्लेख हमने बारहवें पाठ में किया है उनमें से वह सब से प्रसिद्ध विवाह है। कारण यह है कि स्पेन इस समय बड़ा शक्तिशाली तथा धनाढ्य देश था। वह कई स्थानों पर युद्ध मे विजय प्राप्त कर रहा था। अतः वह इङ्गलैण्ड पर भी अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न कर सकता था। यह भी अनुमान था कि जब कभी स्पेन और फ्रान्स में युद्ध होगा तो इङ्गलैण्ड को स्पेन का पक्ष लेना पड़ेगा। यद्यपि इन समस्त बातों के साधन सोच लिये गये थे तथापि स्पेन के लिये इस समय कोई बात अनुचित तथा नियम विरुद्ध न थी क्योंकि यूरप महाद्वीप पर इस समय "जिसकी लाठी उसकी भैंस" की कहावत अक्षरशः सिद्ध हो रही थी।

वाट का विद्रोह, १५५४ ई०—मेरी अपने विवाह के कारण बड़ी अप्रसिद्ध हो गई। केण्ट और इङ्गलेण्ड के अन्य पूर्वी प्रान्तों में विद्रोह फैलना आरम्भ हो गया। विद्रोहियों के नेता ड्यूक ऑफ सफोक और सर टामस वाट थे। ड्यूक ऑफ सफोक लेडी जेन [redacted] का पिता था और वाट केण्ट प्रान्त का एक नवयुवक था। इन लोगों का प्रयत्न था कि मेरी राज सिंहासन से उतार दी जाये और उसके स्थान पर एलिजबेथ सिंहासनारूढ़ हो, विद्रोही चाहते थे कि एलिजबेथ अपना विवाह एक अंग्रेजी धनाढ्य कोर्टने नामी से करले। परन्तु कोर्टने ने स्वयं अपने पैर में

कुल्हाडी मार ली अर्थात् उसने सारा भेद प्रकट कर दिया। फिर क्या था विद्रोहियों के बन्दी किये जाने की आज्ञा हुई। केण्ट के अतिरिक्त सब स्थानों में विद्रोह शान्त हो गया। वाट ने केण्ट में दस सहस्र सेना एकत्रित करके इङ्गलैण्ड पर धावा बोल दिया। लन्दन निवासियों ने नगर के पुल पर बड़ी वीरता से विद्रोहियों का सामना किया और उन पर विजय प्राप्त की। मेरी ने बड़ी क्रूरता से विद्रोहियों को दण्ड दिया। वाट, ड्यूक ऑफ सफोक तथा अन्य ८० नवयुवकों के शीश उतार लिये गये। लेडी जेन ग्रे भी अपराधिनी ठहराई गई। उसको भी केवल १७ वर्ष की आयु में प्राणों से हाथ धोने पड़े। यही नहीं वरन् उसके पति गिल्डफोर्ड डडले को भी प्राणदण्ड मिला। एलिजबेथ स्वय, जिसके पक्ष में यह सब उपद्रव उठा था, बन्दी कर ली गई।

मेरी का धार्मिक उत्साह और राष्ट्रीय बलिदान—वाट का विद्रोह शान्त होने के पश्चात् मेरी को अन्य कार्यों में भाग लेने का अवकाश मिला। वह अपनी माता के समान पोप की पक्षपातिनी थी। रानी बनते ही उसने नवीन धर्म के रोकने का प्रयत्न किया। कैथोलिक मत पुनः इङ्गलैण्ड का राजधर्म निश्चित हुआ। सामर्सेट की प्रकाशित की हुई नवीन प्रार्थना पुस्तक को प्रयोग में लाने की मनाही कर दी गई। मेरी ने उन समस्त नियमों को, जो नवीन धर्म के पक्ष में बने थे, स्थगित कर दिया और पोपानुयायियों के साथ सद्व्यवहार आरम्भ किया। लूथर के अनुयायियों पर फिर अत्याचार होने लगा। मास की रीति भी प्रारम्भ हो गई। पोप का प्राचीन आधिपत्य तथा प्रभुत्व पुनः स्थापित हो गया। मेरी ने उसको इस विषय पर एक पत्र लिखा कि जो राज-नियम हेनरी अष्टम तथा एडवर्ड षष्ठ ने बनाये हैं वे उनकी मन्द बुद्धि के प्रमाण हैं। भविष्य में ऐसे नियम कदापि न बनेंगे। आप विश्वास रक्खें और अंग्रेजों को क्षमा प्रदान करके उनकी गणना अपने अनुयायियों में करें।

मेरी की हार्दिक इच्छा केवल यही न थी कि प्राचीन धर्म पुनः इङ्गलेण्ड में स्थापित हो जावे किन्तु वह यह भी चाहती थी कि जहा तक सम्भव हो लूथर के अनुयायियों की सख्या न्यून हो जावे। अतः पोल की सम्मति से उनके ऊपर निर्दयता तथा क्रूरता का व्यवहार होने लगा। इतनी बात अवश्य उनके पक्ष में थी कि उनकी जागीरें उन्हीं के अधिकार में बनी रहीं यद्यपि मेरी ने उनके छीनने का भरसक उपाय किया। मेरी का अनुमान था कि बहुत से मनुष्य पुनः पोप के अनुयायी हो जावेंगे और नवीन धर्म को सदा के लिये त्याग देंगे। परन्तु ऐसा न हुआ। जिन नवीन धर्मावलम्बियों ने मेरी की आज्ञा उलघन की वे जीवित अग्नि में प्रज्वलित कर दिये गये। इनमें से प्रथम रोलेण्ड टेलर (Rowland Taylor) हैं। यह सफोक के गिर्जाघर में काम करता था। उसने सन्तान का मोह त्याग कर प्रसन्नता पूर्वक धर्म पर बलिदान होना स्वीकार किया। इसके पश्चात् हेनरी अष्टम के धर्मपथ प्रदर्शक क्रैनमर, लेटीमर और रिडले के अभियोगों की जाच एक साथ प्रारम्भ हुई। लेटीमर और रिडले ऑक्सफोर्ड नगर में जलाये गये। जो उत्तेजनापूर्ण शब्द लेटीमर के मुख से निकले वे आज तक ससार को स्मरण हैं। वह अपने सहचर से पुकार कर कहने लगा, "मास्टर रिडले, साहस तथा वीरता से काम लेना। आज हम ईश कृपा से ऐसी ज्योति* प्रज्वलित करेंगे जो कभी भी ठण्डी न होगी"। क्रैनमर एक प्रसिद्ध आर्चबिशप था। मेरी को विश्वास था कि वह अवश्य पोप को अपना धर्मगुरु मान लेगा। परन्तु ऐसा न हुआ। प्रथम तो क्रैनमर ने मेरी की बात स्वीकार कर ली परन्तु पीछे से उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ। अतः जब उसके जलाने को अग्नि जलाई गई तो यह कह कर कि इसी निकम्मे हाथ ने क्षमा का विनयपत्र लिखा था, उसने सीधे हाथ को ज्वाला में भस्म कर दिया और फिर प्रसन्नतापूर्वक स्वतः भी भस्म हो गया। इस प्रकार मेरी ने

---

* इस ज्योति का आशय प्रोटेस्टेण्ट मत है।

२७७ मनुष्यों को प्राचीन धर्म स्वीकार न करने के कारण प्राणदण्ड दिये।

धर्म बलिदानों का सुन्दर परिणाम—मेरी धार्मिक उत्साह में अन्धी हो रही थी। परन्तु जो रक्त उसने बहाया वह व्यर्थ सिद्ध हुआ। उसको विश्वास था कि नवीन धर्मावलम्बी भयभीत हो कर पोप के अनुयायी हो जावेंगे। परन्तु परिणाम इसके बिल्कुल प्रतिकूल हुआ। मेरी की कठोरता ने जनता को यह भली प्रकार सूचित कर दिया कि एक प्राचीन धर्मावलम्बी राजा अपनी प्रजा पर कितनी निर्दयता तथा कठोरता का व्यवहार कर सकता है। जो मनुष्य अभी तक दुविधा में थे वे भी प्रसन्नता पूर्वक प्रोटेस्टेण्ट बन गये। प्राय ऐसा होता था कि मनुष्य प्रलोभन के कारण अर्थात् मठों की जागीरें प्राप्त करने के लिये कैथोलिक बन जाते थे। परन्तु लगभग तीनसौ मनुष्यों के जीवनाहुति देने से यह बात सर्वथा स्पष्ट हो गई कि नवीन धर्मावलम्बियों की नसों में सच्चा धार्मिक उत्साह उमड रहा है। उन्हें धन दौलत की तनिक भी चिन्ता नहीं। अवसर आने पर वे धर्माग्नि पर जीवनाहुति देने को उद्यत हो जावेंगे। लेटिमर के कथनानुसार मेरी के शासनकाल में नवीनधर्म की अग्नि ऐसे वेग से भडकी कि आज तक ठण्डी नहीं हुई, और न कभी होगी।

मेरी की भूल—इतने धर्मबलिदान होने पर भी मेरी की धार्मिक नीति के विरोध में कोई विद्रोह नहीं हुआ जैसा कि एडवर्ड षष्ट के समय में हुआ था। इसका मुख्य कारण यह है कि जनता सामर्सेट तथा नार्दम्बरलैण्ड के धार्मिक परिवर्तनों से प्रसन्न न थी। धार्मिक शत्रुओं को जीवित दाह करने में और नाना प्रकार के अन्य दण्ड देने में मेरी की भूल न थी। प्रोटेस्टेण्ट मतावलम्बियों की जागीरें छीनना भी उसके लिये उचित था। ये दोनों काम समय के अनुकूल थे। हां, मेरी ने एक बड़ी भूल की कि उसने एक साथ प्रोटेस्टेण्ट धर्म को नष्ट करने का प्रयत्न किया। यदि ऐसा न करके वह केवल हेनरी की धार्मिक

नीति ग्रहण करती तो उसे अवश्य सफलता प्राप्त होती। जो अत्याचार उसने किये थे वे सब इस आशा से किये थे कि यदि इङ्गलैण्ड-निवासी मेरा विद्रोह करेंगे तो मेरा पति फिलिप द्वितीय अपनी सेनायें भेज कर मेरी सहायता करेगा।

केले का हाथ से निकल जाना, १५५८ई०—इन समस्त बातों के होते हुये भी मेरी अपनी धार्मिक नीति के कारण बहुत अप्रसिद्ध हो गई। मरते समय उसे एक और लज्जा उठानी पड़ी अर्थात् फ्रांस वालों ने केले नगर छीन लिया। केले युद्ध तथा व्यापार दोनों के लिये लाभदायक था। इसके हाथ से निकल जाने से मेरी को बड़ा दुःख हुआ। वह रोग ग्रसित हो गई। मरते समय यह शब्द उसके मुख से निकले—"जब मैं मर जाऊं तो मेरी चादर उठा कर देखना। शब्द केले और फिलिप मेरी छाती पर लिखे मिलेंगे"।

अभ्यास।

(१) हेनरी अष्टम, सामर्सेट और मेरी ट्यूडर के धार्मिक विचारों की व्याख्या करो और बताओ कि किन २ रीतियों से इन्होंने अपने विचारों के अनुकूल इङ्गलैण्ड के धर्म को बदलने का प्रयत्न किया ?

(२) मेरी ट्यूडर ने इङ्गलैण्ड में केथोलिक मत को पुनः जीवित करने के अभिप्राय से कौन कौन से काम किये ?

(३) मेरी ट्यूडर और फिलिप के विवाह का क्या बुरा परिणाम हुआ ? इस बुरे परिणाम से इङ्गलैण्ड को कौन सी हानि उठानी पड़ी ?

(४) इनका वर्णन मक्षेप में करो—[अ] क्रेनमर, [व] केले का हाथ से निकल जाना, [म] वाट का विद्रोह, [ट] कैथोलिक मत की उन्नति ।

(५) मेरी के चरित्र और शिक्षा से उसकी धार्मिक नीति जानने की कोशिश करो ?

(६) "मेरी टयूडर के धार्मिक परिवर्तनों के कारण कभी कोई विद्रोह नहीं हुआ" । ऐसा क्यों ? क्या इस से यह अनुमान करना चाहिये कि जो कुछ वह कर रही थी उस में प्रजा की सम्मति थी ?



सत्रहवां अध्याय।

महारानी एलिज़बेथ।

(सन् १५५८–१६०३ ई०)

मेरी की मृत्यु के पश्चात् उसकी भगनी एलिजबेथ रानी बनी। कई वर्षों से एलिजबेथ कारागृह की यातनायें भोग रही थी। जनता ने उसे कारागृह से निकाल कर राजसिंहासन पर बिठलाया। वे पूर्व ही से उसके पक्ष में थे। वे जानते थे कि एलिजबेथ दयालु तथा सदाचारिणी राजकुमारी है।

चरित्र—एलिजबेथ हेनरी अष्टम और एन बोलेन की पुत्री थी। वह ट्यूडरवंश की सब से प्रसिद्ध शासनकर्ता है। इङ्गलैण्ड के महत्ता की नीव उसी के समय से पडी थी। एलिजबेथ अपनी माता के समान अभिमानिमी तथा विलासप्रिय तो अवश्य थी परन्तु उस में बहुत से पुरुषों के गुण थे। वह वीराङ्गना, बुद्धिमती तथा उदार-हृदय स्त्री थी। भय से कभी मुख न मोडती और अपने पितामह हेनरी सप्तम के समान सोच विचार कर व्यय करती थी। जहा तक सम्भव होता प्रत्येक बात में मध्यवर्ती मार्ग ग्रहण करती परन्तु यदि देखती कि देशमर्य्यादा का प्रश्न है तो कठिन से कठिन कार्य्य करने से भी न हिचकती थी। एलिजबेथ में धार्मिक उद्वेग लेश मात्र को न था। वह समस्त धर्मों को समान समझती थी। जिस समय वह रानी बनी इङ्गलैण्ड के सिर पर बहुत सी आपत्तियाँ थीं। उसने अपनी विद्वत्ता से सारी आपत्तियों का सामना किया और अन्त में

उन पर विजय प्राप्त की। उसके शासनकाल में इङ्गलेण्ड ने कई प्रकार से उन्नति की।



महारानी एलिज़बेथ।

(अ) धार्मिक प्रबन्ध ।

प्यूरिटन धर्म की उत्पत्ति—सब से अधिक उन्नति धर्म विभाग में हुई । एलिजबेथ के समय में इङ्गलेण्ड के समस्त निवासी पोप अथवा लूथर के अनुयायी नहीं बनना चाहते थे । कुछ मनुष्यों की सम्मति थी कि प्राचीन धर्म नवीन धर्म से अच्छा है । कुछ नवीन धर्म को प्राचीन धर्म से उत्तम मानते थे । कुछ चाहते थे कि इङ्गलेण्ड का राजधर्म फिर वही रूप धारण कर ले जो वह एडवर्ड षष्ट के समय में धारण किये था । इन दलों के अतिरिक्त एलिजबेथ के शासनकाल में एक नवीन दल का जन्म हुआ जो प्यूरिटन दल कहलाता है ।

प्यूरिटनगण लूथर के अन्य अनुयायियों की भांति यह चाहते थे कि इङ्गलैण्ड में प्रोटेस्टेण्ट धर्म ठीक वही रूप धारण कर ले जो वह जर्मनी में धारण किये हुये था । पोप से कोई सम्बन्ध न रहे । इङ्गलैण्ड की गिर्जा स्वतन्त्र तथा प्रतिष्ठित बन जावे । उनकी यह भी हार्दिक इच्छा थी कि प्राचीन धर्म के अनुयायियों के साथ क्रूरता का व्यवहार हो । न उनको इङ्गलेण्ड में रहने की आज्ञा दी जावे और न उन से कोई सम्बन्ध ही रक्खा जावे । प्यूरिटनदल का यह मुख्य सिद्धान्त था कि सांसारिक वस्तुओं से जहाँ तक हो सके मनुष्य को मुक्त रहना चाहिये । जो सुख तथा आनन्द हम चारों ओर देखते हैं वह सब शैतान का फैलाया हुआ है । मनुष्य का कर्त्तव्य है कि उस से बच कर चले और सर्वदा ईश्वर का स्मरण करता रहे । प्यूरिटन पवित्र जीवन व्यतीत करते थे और भोजन तथा वस्त्र में स्वत अनेकों कष्ट सहन करते थे । एलिजबेथ के समय में यह लोग बहुत निर्बल थे । १७वीं शताब्दि में वे बड़े प्रबल हुये और सामाजिक परिवर्तनों के कारण बने ।

एलिजबेथ की धार्मिक नीति—एलिजबेथ अपनी प्रजा को

था। अतः उसकी पुत्री एलिजबेथ नियमानुसार इङ्गलेण्ड की रानी नहीं बन सकती। इसके प्रतिकूल मैं हेनरी अष्टम की बहिन मार्गरेट की नातिन हूँ। अत इङ्गलैण्ड के सिंहासन पर मेरा अधिकार एलिजबेथ के अधिकार से अधिक प्रबल है।

डार्नले से विवाह——मेरी का सहायक कोई भी न था। परन्तु वह बडी सुन्दरी और नवयौवना थी। अत' वह पुन. विवाह कर सकती थी। मेरी ने ऐसा ही किया। उसका एक चचेरा भाई डार्नले नामक इङ्गलैण्ड में रहता था। मेरी ने उसे तुरन्त वहाँ से बुला कर उसके साथ विवाह कर लिया। डार्नले कुस्वभावी, अत्याचारी तथा घमण्डी तो अवश्य था परन्तु वह ट्यूडरवश से था। अत. उस के साथ विवाह कर लेने से मेरी का अधिकार इङ्गलैण्ड के सिंहासन पर और अधिक प्रबल हो गया। डार्नले को विश्वास था कि यदि मेरी मेरे साथ विवाह करेगी तो मुझे कभी न कभी राज्य करने का सुअवसर अवश्य प्राप्त होगा। परन्तु उसकी आशाओं पर पानी पड गया। मेरी ने उसे राजनैतिक कार्य्यों मे भाग लेने का अवसर न दिया। इस कारण मेरी के विरोधी डार्नले से मिल कर उसके प्राण लेने का प्रयत्न करने लगे। मेरी अपने मन्त्री रिजियो से, जो इटैली देश का निवासी था, प्रेम करती थी। डार्नले सोचता था कि मेरी ने मुझे केवल रिजियो ही के कहने से राजनैतिक कार्य्यों में भाग लेने से वञ्चित रक्खा है। अत डार्नले और मेरी के विरोधियों ने रिजियो के वध करने की ठहराई। एक दिन सायङ्काल के समय डार्नले अपने सहायकों को लेकर मेरी के कमरे में घुस गया और चील की भाति रिजियो पर टूट पडा। रिजियो भयभीत होकर मेरी से चिमट गया। परन्तु डार्नले और उसके साथी उसे बाहर खींच लाये और उसका काम तमाम कर दिया।

डार्नले का वध १५६७ ई०—मेरी ने रिजियो के वध का बडा शोक किय परन्तु उसने अपनी अप्रसन्नता जनता पर प्रकट न होने दी

क्योंकि वह डार्नले से मिल कर इङ्गलैण्ड का सिंहासन पाने का प्रयत्न कर रही थी। वह इङ्गलैण्ड के एक धनाढ्य पुरुष बाथवेल नामक को भी प्रेमदृष्टि से देखती थी। बाथवेल ने मेरी को यह सम्मति दी कि डार्नले दुराचारी और सुखाभिलाषी मनुष्य है अतः उसके द्वारा आप अपनी इच्छा पूर्ण नहीं कर सकती। यदि आज्ञा हो तो डार्नले को संसार से विदा कर दिया जाय। मेरी ने बाथवेल की सम्मति स्वीकार कर ली और डार्नले के वध की आज्ञा दे दी। इसके कुछ दिवस पश्चात् डार्नले चेचक के रोग से ग्रस्त हुआ। एक दिन मेरी उसे देखने को एडिनबुरु गई। क्षेम कुशल पूछने के पश्चात् उसने कहा कि यदि आप नगर के बाहर रहें तो शीघ्र अच्छे हो जावें। डार्नले ने मेरी की सम्मति स्वीकार करली। वह एक घर किराये पर लेकर नगर के बाहर रहने लगा। एक दिन बाथवेल ने उस के घर के नीचे बारूद रख दी और एक नौकर को उस में आग लगाने को नियुक्त कर दिया। रात के समय मेरी फिर डार्नले का समाचार लेने गई और उसको प्रत्येक भांति से सान्त्वना दी। बेचारा डार्नले इस भेद को न जानता था कि मेरी उसके प्रति विश्वासघात कर रही है और कुछ ही समय में सकी वधिक बनने वाली है। इस सम्मिलन के पश्चात् मेरी अपने मित्र बाथवेल के साथ नाटक देखने चली गई और वहाँ से आधी रात बीत जाने के उपरान्त लौट कर आई। डार्नले के वध के समस्त साधन प्रस्तुत थे। बाथवेल स्वयं घर के चारों ओर परिक्रमा कर रहा था। ठीक दो बजे बारूद में अग्नि लगी। अग्नि का लगना था कि समस्त घर एक साथ जलने लगा और बेचारा डार्नले उसके भीतर जल कर भस्म हो गया।

डार्नले की मृत्यु के कुछ ही दिवस पश्चात मेरी ने अपना विवाह बाथवेल से कर लिया। परन्तु बाथवेल मेरी को हृदय से प्रेम न करता था। इसका एक मुख्य कारण यह है कि मेरी के एक पुत्र डार्नले से

इङ्गलैण्ड की रानी नहीं है। वह इङ्गलैण्ड की धार्मिक शत्रु है। अतः प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि उसकी आज्ञा उलघन करे और स्काटलैण्ड की रानी मेरी को इङ्गलैण्ड की रानी बनाने का प्रयत्न करे। परन्तु इसका कुछ भी फल न हुआ।

रिडोल्फी का षड्यन्त्र, १५७१ ई०—जब पोप के आज्ञापत्र का कुछ भी फल न हुआ तो स्पेन के राजा और नारफोक ने मिलकर एलिजबेथ के वध करने के अभिप्राय से एक षड्यन्त्र रचने को निश्चय किया। इस षड्यन्त्र में मेरी भी सम्मिलित थी। फिलिप और मेरी के बीच पत्र व्यवहार इटैली के एक धनाढ्य साहूकार रिडोल्फी नामक द्वारा हो रहा था। अतः यह षड्यन्त्र रिडोल्फी का षड्यन्त्र कहलाता है। एलिज बेथ को अपने मन्त्री सेसिल द्वारा इस षड्यन्त्र का भेद मिल गया नारफोक और उसके साथियों को प्राणों से हाथ धोने पड़े। कुछ समय के लिये एलिजबेथ को विद्रोहियों से छुटकारा मिला।

बार थोलोमियो का वध तथा हालैंड के प्रोटेस्टेण्ट—घरेलू विद्रोह से अवकाश मिलने पर एलिजबेथ को महाद्वीप की ओर ध्यान आकर्षित करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस समय फ्रांस का राजा चार्ल्स नवम फ्रांस के प्रोटेस्टेण्ट से, जो ह्यूजोनोज (Huguenots) कहलाते थे, युद्ध कर रहा था। ह्यूजोनोज ने एलिजबेथ से सहायता माँगी। यद्यपि एलिज बेथ नवीन धर्मावलम्बनी थी तथापि वह नवीन धर्म की सहायता में जहा तक सम्भव होता युद्ध न करना चाहती थी। अत उसने ह्यूजोनोज की सहायता न की। इसका फल यह हुआ कि चार्ल्स नवम ने २४ अगस्त* सन् १५७२ की रात्रि को ह्यूसोनोज को सहस्रों की संख्या में वध कर डाला।

* २४ अगस्त को इसाई धर्म के प्रसिद्ध ऋषि बारथोलोमियों के नाम पर जयन्ती मनाई जाती है। अत यह वध उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है।

एलिजबेथ ने इस पर भी ह्यूजोनोज को सहायता न भेजी। ईश्वर को धन्यवाद है जो अन्त में ह्यूजोनोज ही की विजय हुई और फ्रांस के राजा को उन से सन्धि करनी पड़ी। इसी प्रकार एलिजबेथ ने नीदरलेण्ड्स के प्रोटेस्टेण्ट को, जो विलियम ऑफ़ आरेञ्ज की अध्यक्षता में फिलिप द्वितीय से युद्ध कर रहे थे, कुछ काल तक सहायता न भेजी।

थ्राकमार्टन का षड्यन्त्र, १५८४ ई०—इन धार्मिक युद्धों में एलिजबेथ के भली भांति भाग न लेने का एक मुख्य कारण यह था कि रिडोल्फी के षडयन्त्र के समय से उसे पोपानुयायियों की ओर से प्राणों का खटका लगा रहता था। उनका भय अनुचित न था। सन् १५८४ ई० में उसे एक नवीन षडयन्त्र का भेद मिला। इस में फ्रांस और स्पेन के राजे भी सम्मिलित थे। विद्रोहियों में यह बात निश्चित हुई कि यूरप के समस्त कैथोलिक देश थोड़ी बहुत सेना इङ्गलेण्ड पर आक्रमण करने को भेजें। जब सारी सेनायें एकत्रित हो जावें तो इङ्गलेण्ड के प्राचीन धर्मावलम्बी थ्राकमार्टन (Throckmorton) नामक अमीर की अध्यक्षता में एलिजबेथ के विरुद्ध विद्रोह करें और उसे मार कर मेरी को रानी बनावें। परन्तु विद्रोहियों की एक न चली। एलिजबेथ के मन्त्रियों, सेसिल तथा वालसिंघम को विद्रोहियों का उद्योग ज्ञात हो गया। उन्होंने उन्हें बन्दी कर लिया और थ्राकमार्टन का सर उतरवा लिया।

थ्राकमार्टन के षडयन्त्र ने यह बात भली भांति सिद्ध कर दी कि स्पेन और फ्रांस दोनों इङ्गलेण्ड के धार्मिक शत्रु हैं। स्पेन को नीचा दिखाने के अभिप्राय से एलिजबेथ ने एक अंग्रेजी सेना अपने मित्र अर्ल ऑफ़ लीस्टर (Earl of Leicester) की अध्यक्षता में इस देश के शत्रु अर्थात् हालेण्ड के प्रोटेस्टेण्टों की सहायतार्थ भेजी। परन्तु सेना से कुछ भी न बन पड़ा, सब की सब युद्ध में नष्ट हो गई। यही नहीं, वरन् एक प्रसिद्ध सैनिक अफसर सर फिलिप सिडनी भी युद्ध में खेत रहा।

सन् १५८४ ई० में पार्लियामेण्ट ने यह नियम बना दिया कि जो लोग एलिजबेथ के प्राण लेने को षडयन्त्र रचेंगे और वे मनुष्य जिनकी ओर से



मेरी को मृत्युपत्र सुनाया जा रहा है ।

कोई षड़यन्त्र रचा जायगा नियमानुसार अपराधी ठहराये जायेंगे और दण्ड के भागी होंगे। कहने को तो इस नियम के अनुसार सब विद्रोही दण्ड पा सकते थे परन्तु वास्तव में यह नियम स्काटलैण्ड की रानी मेरी के विरुद्ध बना था। अभी तक जितने षड़यन्त्र हुये थे उनमें विद्रोहियों को तो अवश्य दण्ड मिला था, परन्तु मेरी, जिसके पक्ष में यह षड़यन्त्र रचे गये थे, अभी तक बची हुई थी। भविष्य में ऐसा नहीं हो सकता था।

बैबिङ्गटन का षड़यन्त्र, १५८६ ई०—जैसा कि अनुमान था, नवीन नियम एलिज़बेथ के लिये अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ। दो ही वर्ष के भीतर उसके प्राण लेने को एक षड़यन्त्र रचा गया। अबकी बार विद्रोहियों का नेता एक अंग्रेज़ी लार्ड बैबिङ्गटन (Babington) था। इस षड़यन्त्र में पोप के भेजे हुए पुजारी भी सम्मिलित थे। बहुत से मेरी के हस्तलिखित पत्र एलिज़बेथ के मन्त्री वार्लसिंघम के हाथों में पड़े। पार्लियामेण्ट में उसके ऊपर अभियोग चलाने का प्रस्ताव उपस्थित हुआ। परन्तु मेरी ने प्रत्युत्तर में कहा कि मैं रानी हूँ। मेरा अभियोग अन्य देश (इङ्गलैण्ड) में नहीं हो सकता। पार्लियामेण्ट ने उसकी एक न सुनी। वह नवीन नियमानुसार अपराधिनी ठहराई गई और फोरथुंगे के स्थान पर पार्लियामेण्ट ने उसे फांसी दी। मेरी के वध से एलिज़बेथ की शक्ति बहुत बढ़ गई। पोप, फिलिप द्वितीय और महाद्वीप के अन्य कैथोलिक धर्मावलम्बियों की आशाओं पर पानी पड़ गया। उन्हें इस बात का विश्वास हो गया कि वे षड़यन्त्रों द्वारा एलिज़बेथ तथा अन्य प्रोटेस्टेण्ट को पराजित नहीं कर सकते। अतः फिलिप द्वितीय ने एक शक्तिशाली सेना भेज कर एलिज़बेथ को परास्त करने का प्रयत्न किया।

(२) अजेय आर्मेडा की पराजय और कैथोलिक मत का अधःपतन।

आर्मेडा के आक्रमण के कारण—धार्मिक विरोध के अतिरिक्त

फिलिप द्वितीय और एलिजबेथ की शत्रुता के और भी कई कारण थे। स्पन इङ्गलैण्ड का प्राचीन शत्रु था। मेरी ट्यूडर और फिलिप द्वितीय के विवाह से उनका पारस्परिक वैमनस्य क्षीण हो गया था परन्तु एलिजबेथ के रानी बनने से दोनों देशों में फिर विरोध आरम्भ हुआ। फिलिप एलिजबेथ से विवाह करने का इच्छुक था। एलिजबेथ उसे और महाद्वीप के अन्य राजाओं को, जो उसे विवाहना चाहते थे, धैर्य्य तो अवश्य दिये रहती थी परन्तु सबों को मित्र बनाये रखने के कारण किसी को भी स्पष्ट उत्तर न देती थी। अन्त में फिलिप को वास्तविक भेद ज्ञात हो गया और वह एलिजबेथ की ओर से निराश हो गया।

जब इङ्गलैण्ड और स्पेन के मित्र बन कर रहने की कोई आशा न रही तो दोनों ने एक दूसरे को हानि पहुँचाने के लिये अनेकों उपाय किये। एलिजबेथ ने एक सेना अर्ल आफ लीस्टर की अध्यक्षता में फिलिप के शत्रुओं की सहायतार्थ हालैण्ड भेजी। अंग्रेजी नाविक पूर्व ही से स्पेन वासियों को कष्ट दे रहे थे। इङ्गलैण्ड के सामुद्रिक कुत्ते उनके जहाजों को लूट रहे थे। हाकिन्स और उसके दल के अन्य डाकुओं ने दासों का व्यापार भी स्पेनवालों से छीन लिया था। इन सब बातों के उत्तर में फिलिप द्वितीय ने रिडोल्फी, थ्रागमार्टन तथा बैबिङ्गटन जैसे षडयन्त्रों में भाग लेकर एलिजबेथ के प्राण लेने और मेरी को रानी बनाने के उद्योग किये। परन्तु जब पार्लियामेण्ट ने मेरी को प्राणदण्ड दिया तो फिलिप की सारी आशायें नष्ट हो गईं। अब उसने सैन्यबल द्वारा इङ्गलैण्ड को नीचा दिखाने की ठानी।

फिलिप की दाढ़ी में अग्नि, १५८७ ई०—फिलिप ने एक शक्तिशाली आर्मेडा अर्थात् जलसेना तैयार कराने की आज्ञा दी। चारों ओर से चतुर नाविक बुलाये गये। सेना के लिये भोजन सामिग्री बाहुल्यता पूर्वक एकत्रित की गई। परन्तु सेना के प्रस्थान के पूर्व ही उसके

ऊपर एक आपत्ति आई । फ्रांसिस ड्रेक, जो एक अनुभवी जलडाकू था, कुछ सेना लेकर केडिज पहुंचा और स्पेन के जहाजों के बीच घुस कर उन में आग लगा दी । ३७ जहाज नष्ट हो गये । भोजन सामग्री भी बड़े



आर्मेडा के आक्रमण का मार्ग ।

परिणाम में नष्ट हुई । फिलिप द्वितीय को इतनी भारी हानि पहुंची कि उसकी सेना एक वर्ष तक गमन न कर सकी । ड्रेक इङ्गलैण्ड पहुंच कर डींग मारने लगा कि मैं स्पेन के राजा की दाढ़ी जला आया हूं । वास्तव में उसका गौरवान्वित होना उचित था ।

आर्मेडा का प्रस्थान, १५८८ ई०—फिलिप ने पुनः एक बड़ा शक्तिशाली बेड़ा तैयार कराया । उसे पूर्ण विश्वास था कि अंग्रेज इस बेड़े को परास्त नहीं कर सकते । अतः वह उसे "अजेय आर्मेडा" (Invincible Armada) कह कर पुकारता था । यह बेड़ा ड्यूक ऑफ़ मेडिना सिडोनिया (Medina Sidonia) के सेनापतित्व में था जो

स्वय युद्धविद्या तथा कला में प्रवीण न था। उसके नाविक भी अनुभवी न थे। इसके अतिरिक्त उसके जहाजों पर स्थल पर लडने वाले सैनिकों की सख्या अधिक थी जो जल युद्ध करना जानते ही न थे। एलिजवेथ ने फिलिप की तैयारियों की तनिक भी चिन्ता न की। कहने को वह स्त्री थी परन्तु सिंहों का हृदय रखती थी। उसने अपनी सेना का अवलोकन करते समय उत्तेजनापूर्ण वाक्यों में एक भाषण दिया जिसे सुन कर सैनिकों का उत्साह द्विगुण हो गया*। प्रत्येक व्यक्ति ने स्वदेश पर जीवन बलिदान करने का दृढ सकल्प कर लिया। जो अंग्रेजी जहाज तैयार हुये वे छोटे तो अवश्य थे परन्तु बडे २ अनुभवी नाविकों तथा तोपों द्वारा पूर्णतया सुसज्जित थे। प्रधान जलसेनापति लॉर्ड हॉवर्ड (Lord Howard) की अध्यक्षता ड्रेक, हाकिन्स, फ्रोविशर जैसे चतुर तथा अनुभवी जलकुत्ते तैयार हुये।

अंग्रेजी नहर में प्रवेश—२८ जुलाई को आर्मेडा दृष्टिगोचर हुआ। ऊँची २ पर्वतश्रेणियों पर आग जला कर समस्त प्रान्तों को उसके आक्रमण का समाचार पहुँचाया गया। अंग्रेजी नाविक इस समय चौगान खेल रहे थे। ड्रेक खेल बन्द न करना चाहता था। वह कहने लगा "अजी खेले भी जाइये। अभी आर्मेडा दूर है। खेल भी समाप्त हो सकता है और आर्मेडा भी पराजित हो सकता है"। आर्मेडा ने अंग्रेजी नहर में प्रवेश किया और पूर्व की ओर बढने लगा। छोटे २ अंग्रेजी जहाज बन्दरगाहों से निकल २ कर शत्रु के जहाजों का सामना करने और उनके ऊपर गोलियाँ बरसाने लगे। ज्योंही शत्रु के जहाज उनके पकड़ने को उद्यत होते त्योंही वे आँखों के ओझल होजाते। आर्मेडा का एक जहाज जल गया और तीन चार बन्दी हुये। शेष ने बडी कठिनता से केले बन्दरगाह में शरण ली।

* ऐसा ही भाषण बावर ने रानासाँगा से युद्ध करने के पूर्व दिया था जिसे सुन कर मुगलों का साहस अधिक बढ गया था।

उत्तरीसागर में प्रवेश—कई दिनों तक आर्मेडा केले बन्दरगाह म इस आशा से ठहरा रहा कि फिलिप के सहायक नीदरलैण्ड्स से सहायता भेजें । स्पेन के सैनिकों को यह ज्ञान भी न था कि इन सहायकों में से मुख्य सहायक पामा की सेना नीदरलैण्ड्स के बन्दरगाहों में बन्दी है और शत्रु उसे निकलने नहीं देते । ड्रेक तथा अन्य अंग्रेजी नाविकों ने आर्मेडा के कई जहाजों को नष्ट कर दिया । शेष केले मे चल कर आगे बढ़े । परन्तु आँधी इतनी वेग मे आई कि समस्त बेडा जर्मनी के उत्तरी तट पर जा पहुचा । अब मेडिना सिडोनिया को स्पेन लौट आने का विचार हुआ । परन्तु वह अंग्रेजी नहर से तो लौट नहीं सकता था क्योंकि वहाँ एलिजबेथ की ओर से पर्याप्त प्रबन्ध था । अत उसने स्काटलैण्ड के उत्तर से होकर लौटना निश्चय किया ।

आर्मेडा का नष्ट होना—जैसे ही आर्मेडा उत्तर की ओर बढा वायु बड़े वेग से चलने लगी अत बहुत से जहाज आँधी में नष्ट हुये । शेष स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड के उत्तर पश्चिम से हो कर स्पेन लौट आये । फिलिप द्वितीय को बडा शोक हुआ । परन्तु अपने नाविकों को उत्साहित रखने के लिये उनसे कहने लगा कि मैंने तुमको मनुष्यों से लड़ने को भेजा था न कि आँधी से ।

आर्मेडा के पराजित होने से केवल स्पेन ही नहीं वरन् समस्त यूरप प्रभावित हुआ । आर्मेडा के युद्ध को हम एक अन्य रूप में भी देख सकते हैं अर्थात् हम इङ्गलैण्ड और स्पेन के महासमर को प्रोटेस्टेण्ट और कैथोलिक धर्मों का संग्राम समझ सकते हैं । इस में प्रोटेस्टेण्ट धर्म की विजय और कैथोलिक धर्म की पराजय हुई । कैथोलिक धर्म की शक्ति बराबर घटती गई यहाँ तक कि जर्मनी के तीसवर्षीय युद्ध (१६१८–१६४८) के पश्चात् उसका बल सर्वेव के लिये क्षीण हो गया ।

एडवर्ड और मेरी—एडवर्ड षष्ठ और मेरी के शासन में आयरलेण्ड में बहुत कम परिवर्तन हुये । नवीन धर्म सम्बन्धी जो २ नियम एडवर्ड के सम्मतिदाताओं ने इङ्गलैण्ड में बनाये आयरलेण्डवासियों ने लगभग उन सब को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया । इसके पश्चात् मेरी के शासनकाल में इङ्गलैण्ड की भांति आयरलेण्ड में भी कैथोलिक धर्म का प्रचार बड़ी प्रबलता से हुआ । एलिजबेथ के रानी बनते ही प्रोटेस्टेण्ट धर्म का प्रचार पुनः प्रारम्भ होगया ।

एलिजबेथ का शासन, डेसमण्ड का विद्रोह, १५७६-८८ ई० एलिजबेथ के समय में आयरलेण्ड में कई विद्रोह हुये । इन के दो मुख्य कारण थे । प्रथम यह कि आयरलैण्ड के निवासी रोमन कैथोलिक धर्म को स्थापित रखना चाहते थे । एलिजबेथ इसके विरुद्ध थी । द्वितीय यह कि एलिजबेथ ने सारी भूमि जागीरों में बाँटकर इङ्गलैण्ड से आये हुये मनुष्यों को देदी थी । इन विद्रोहों में से दो बहुत प्रसिद्ध हैं । प्रथम विद्रोह मस्टर के प्रान्त में हुआ । विद्रोहियों का सर्दार डेसमण्ड था । कुछ सेना विद्रोहियों की सहायता के लिये स्पेन तथा इटैली से भी आई, परन्तु एलिजबेथ की सेना ने उसे सरलता से परास्त कर लिया । सालों पश्चात् देश में शान्ति स्थापित हुई ।

टायरन का विद्रोह, १५६५-१६०३ ई०—द्वितीय विद्रोह टायरन की अध्यक्षता में आयरलैण्ड के उत्तरी भाग में हुआ । बहुत से देशी वंश इस में सम्मिलित थे । कुछ सेना विद्रोहियों की सहायतार्थ पोप और स्पेननरेश की ओर से आई । देश में विद्रोहियों का बड़ा प्राबल्य था । ऐसा प्रतीत होता था कि टायरन समस्त देश को विजय कर लेगा । एलिजबेथ ने विद्रोह शान्त करने के लिये अंग्रेजी सैनिक इमेक्स नामी को भेजा परन्तु वह विद्रोहियों का सामना न करके इङ्गलैण्ड लौट आया ।

बिना कुछ न करना चाहते थे। परन्तु इसके साथ साथ वे उसे बलवान होने तथा उनका विरोध करने का अवसर कभी न देते थे। अत जो नियम पार्लियामेण्ट में बनते थे वे प्रजा की इच्छा प्रकट करने की अपेक्षा राजा की इच्छा प्रकट करते थे। ट्यूडरवंश के शासकों की इस नीति से राजा तथा प्रजा सभी प्रसन्न थे। ज्यों ही स्टुअर्टकुल के राजाओं ने इस नीति का पालन करना त्यागा वैसे ही उन में और पार्लियामेण्ट में विरोध उत्पन्न होने लगा।

राज सभा—ट्यूडर राजा अपनी सहायता के लिये चालीस सदस्यों की एक राजसभा रखते थे। सेक्सन राजसभा की भांति इस सभा में भी केवल बुद्धिमान तथा चतुर पुरुष बैठते थे। इसी सभा द्वारा ट्यूडर राजा प्रजा पर नाना प्रकार के अत्याचार करते थे। पार्लियामेण्ट के बहुत से अधिकार इस सभा को प्राप्त थे वह कर लगाती थी, राजा की घोषणाओं को प्रकाशित करती थी, राजविद्रोहियों को कारागार का दण्ड देती थी और निमक, कोयला तथा चमड़े जैसी व्यापारिक वस्तुओं के ठेके राजमित्रों को प्रदान करती थी। राजसभा को स्टार चेम्बर, हाई कमीशन जैसे न्यायालयों से बड़ी सहायता मिलती थी।

पार्लियामेन्ट की रचनाशैली तथा बैठक—राजसभा के प्रभावशाली होने का एक मुख्य कारण यह था कि उस समय की पार्लियामेण्ट की रचनाशैली ठीक न थी। हाउस ऑफ लार्डस् पूर्णतया शक्तिहीन हो गया था। बहुत से अमीर तथा सामन्त गुलाबों के युद्ध में मर चुके थे। शेष को हेनरी सप्तम ने अनेकों रीतियों से बलहीन कर दिया था। चार्ल्स प्रथम (१६२५–१६४९) के समय तक हाउस ऑफ लार्डस बराबर बलहीन बना रहा। हाउस ऑफ कामन्स इतना शक्तिहीन न था। उसके सदस्यों में से विशेष का चुनाव राजकर्मचारी स्वयं करते थे। अत उस में राजा के कथनानुसार नियम सहज ही में बन जाते थे। सदस्य

उन्नीसवां अध्याय।

ट्यूडर राजा और उनकी पार्लियामेण्ट।

लङ्कास्टर वंश के शासनकाल में पार्लियामेण्ट ने बड़ी उन्नति की थी परन्तु यॉर्कवंश के आते ही उसकी शक्ति क्षीण होने लगी। अतः हेनरी सप्तम के सिंहासनारूढ होते समय पार्लियामेण्ट शक्तिहीन और राजा शक्तिमान था आवश्यकता भी ठीक इसी बात की थी क्योंकि इस समय यूरप में जातीयता के भाव प्रबल हो रहे थे। अंग्रेजी राष्ट्र के अधिकारों को विदेशी राष्ट्रों से सुरक्षित रखने के हेतु बलवान राजा की अत्यन्त आवश्यकता थी।

ट्यूडर राजाओं का अत्याचार—देश में शान्ति स्थापित रखने के हेतु भी राजा के बलवान होने की आवश्यकता थी। शतवर्षीय तथा गुलाबों के युद्ध समाप्त होने पर देश में बड़ी अशान्ति फैली। मनुष्यों की हार्दिक इच्छा थी कि किसी भांति युद्ध स्थगित हो कर पुनः देश में व्यापार तथा कलाकौशल का प्रचार हो। अत यॉर्कवंश को छोड़ कर शान्तिप्रिय हेनरी के राजा बनने और अनेकों अत्याचार करने का किसी ने भी विरोध न किया। लोगों ने पार्लियामेण्ट को निमन्त्रित करने की आवश्यकता भी बहुत कम समझी। सामन्त तथा अमीर शक्तिहीन हो जाने के कारण राजा का विरोध न कर पाते थे। प्रजा घोर निद्रा में मग्न थी। वह अपने राजा पर विश्वास करती थी और राज्यकार्य में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करना चाहती थी। इन कारणों से ट्यूडर राजा पार्लियामेण्ट को बहुत कम बुलाते थे और उसकी अनुपस्थिति में वे प्रजा पर सहज ही में अन्याय तथा अत्याचार करते थे। दिखाने को वे पार्लियामेण्ट की आज्ञा के

बिना कुछ न करना चाहते थे । परन्तु इसके साथ साथ वे उसे उत्थान होने तथा उनका विरोध करने का अवसर कभी न देते थे । अत जो नियम पार्लियामेण्ट में बनते थे वे प्रजा की इच्छा प्रकट करने की अपेक्षा राजा की इच्छा प्रकट करते थे । ट्यूडरवंश के शासकों की इस नीति से राजा तथा प्रजा सभी प्रसन्न थे । ज्यों ही स्टुअर्टकुल के राजाओं ने इस नीति का पालन करना त्यागा वैसे ही उन में और पार्लियामेण्ट में विरोध उत्पन्न होने लगा ।

राज सभा—ट्यूडर राजा अपनी सहायता के लिये चालीस सदस्यों की एक राजसभा रखते थे । सेक्सन राजसभा की भांति इस सभा में भी केवल बुद्धिमान तथा चतुर पुरुष बैठते थे । इसी सभा द्वारा ट्यूडर राजा प्रजा पर नाना प्रकार के अत्याचार करते थे । पार्लियामेण्ट के बहुत से अधिकार इस सभा को प्राप्त थे वह कर लगाती थी, राजा की घोषणाओं को प्रकाशित करती थी, राजविद्रोहियों को कारागार का दण्ड देती थी और निमक, कोयला तथा चमड़े जैसी व्यापारिक वस्तुओं के ठेके राजमित्रों को प्रदान करती थी। राजसभा को स्टार चेम्बर, हाई कमीशन जैसे न्यायालयों से बड़ी सहायता मिलती थी ।

पार्लियामेन्ट की रचनाशैली तथा बैठक—राजसभा के प्रभावशाली होनेका एक मुख्य कारण यह था कि उस समय की पार्लियामेण्ट की रचनाशैली ठीक न थी। हाउस ऑफ लार्डस् पूर्णतया शक्तिहीन हो गया था । बहुत से अमीर तथा सामन्त गुलाबों के युद्ध में मर चुके थे। शेष को हेनरी सप्तम ने अनेकों रीतियों से बलहीन कर दिया था । चार्ल्स प्रथम (१६२५-१६४९) के समय तक हाउस ऑफ लार्डस बराबर बलहीन बना रहा। हाउस ऑफ कामन्स इतना शक्तिहीन न था। उसके सदस्यों में से विशेष का चुनाव राजकर्मचारी स्वय करते थे। अत उस में राजा के कथनानुसार नियम सहज ही में बन जाते थे। सदस्य

राजकार्यों में चित्त भी न लगाते थे। बहुत से बैठक समाप्त होने के पूर्व ही अपने ग्रामों तथा नगरों को चले जाते थे। पार्लियामेण्ट की बैठक के लिये भी कोई समय नियुक्त न था। जब राजा की इच्छा होती उसे बुला लेता था। बहुधा वर्षों पर्यन्त उसकी बैठक न होती थी। हेनरी सप्तम के अन्तिम १३ वर्षों में पार्लियामेण्ट की केवल एक बैठक हुई। इसी प्रकार हेनरी अष्टम के समय में सन् १५१५ से १५२९ तक पार्लियामेण्ट केवल एक बार बुलाई गई। एडवर्ड षष्ठ तथा मेरी के शासनकाल में उसकी बैठक लगभग प्रति वर्ष होती रही। परन्तु एलिजबेथ के ४५ वर्ष के शासनकाल में उसकी केवल पाँच बैठकें हुईं।

पार्लियामेण्ट के अधिकार—पार्लियामेण्ट के बलहीन होने से यह परिणाम न निकालना चाहिये कि राजा उसके समस्त अधिकारों को दबाये हुये था। इसके प्रतिकूल कुछ अधिकार ऐसे थे जिन पर ट्यूडर राजा हस्तक्षेप न कर सकते थे। पार्लियामेण्ट के सदस्य स्वतन्त्रता पूर्वक राजा के प्रति अपने विचार प्रकट कर सकते थे। जब हेनरी अष्टम ने स्ट्रोड (Strode) नामक सदस्य को राजा की नीति में दोष निकालने के कारण पकड लिया तो पार्लियामेण्ट ने यह नियम बना दिया कि उस के सदस्य स्वतन्त्रतापूर्वक राजनीति का खण्डन कर सकते हैं। जब तक पार्लियामेण्ट की बैठक होती तब तक उसके सदस्य किसी दोष में पकड़े न जा सकते थे। जब सन् १६०३ ई० में राजकर्मचारियों ने शर्ले (Shirley) नामक सदस्य को निजी ऋण न देने के कारण बन्दी कर लिया तो पार्लियामेण्ट ने विरोध करके उसे शीघ्र ही मुक्त करा लिया। राजा के व्यय हेतु धन भी पार्लियामेण्ट ही स्वीकार करती थी। परन्तु ट्यूडर राजाओं के धनवान होने के कारण हाउस ऑफ कामन्स के इस अधिकार के कारण राजा के बल तथा स्वतन्त्रता में कोई बाधा न पड़ने पाती थी।

राजा और पार्लियामेण्ट का मेल—एलिजबेथ के शासनकाल के अन्तिम वर्षों के सिवाय राजा और पार्लियामेण्ट में सदैव मेल बना रहा। हेनरी सप्तम और उसके मन्त्रियों इम्पसन और डडले ने, नवावों की समस्त शक्ति क्षीण कर दी और प्रजा से मनमाना धन उघाया। परन्तु पार्लियामेण्ट ने उसका विरोध न किया। हेनरी अष्टम की धार्मिक तथा विवाह सम्बन्धी नीति में भी पार्लियामेण्ट ने बराबर साथ दिया। एडवर्ड षष्ठ तथा मेरी के शासनकालों में भी पार्लियामेण्ट पूर्व की भांति शक्तिहीन बनी रही। एलिजबेथ के शासन के अन्तिम दिवस को छोड़ कर पार्लियामेण्ट सर्वदा उसकी इच्छानुकूल नियम बनाती रही। ठेकों के विषय में उसकी और एलिजबेथ की नोक झोंक हो गई।

समय का परिवर्तन: राजा तथा पार्लियामेण्ट की नोक झोंक—एलिजबेथ पार्लियामेण्ट के सदस्यों को किंचित मात्र भी स्वतन्त्रता न देना चाहती थी। पार्लियामेण्ट आरम्भ में उसकी धार्मिक तथा विवाह सम्बन्धी नीति के विरोध में थी। परन्तु उसके वृद्धा तथा स्त्री होने के कारण वह उससे कुछ भी न बोलती थी। महारानी एलिजबेथ भी बहुधा पार्लियामेण्ट की सम्मति तथा आज्ञा शिरोधार्य्य कर लेती थी। सन् १६०१ ई० में उसे ठेकों के विषय में हार माननी पड़ी। उसके हार मानने से यह बात स्पष्ट होती है कि समय का शनैः शनैः परिवर्तन हो रहा था। एक तो प्राचीन काल से पार्लियामेण्ट के बलहीन होने का नाद सुनाई पड़ता था। दूसरे ट्यूडरकुल में एलिजबेथ के सब से बलवान तथा प्रभावशाली शासक होने के चर्चे सुनाई दे रहे थे। अतः सन् १६०१ ई० की घटना की विशेषता और भी अधिक बढ़ जाता है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो एलिजबेथ के अन्तिम तीन वर्षों और जेम्स प्रथम के शासन के प्रारम्भिक सालों में कोई अन्तर नहीं दिखाई देगा। एलिजबेथ की मृत्यु पर पार्लियामेण्ट का उत्साह तथा साहस और भी प्रबल हो गया

और वह राजा का विरोध प्रकट रूप में करने लगी ।

पार्लियामेन्ट के शक्तिहीन होने का परिणाम--ट्यूडरकाल में पार्लियामेण्ट के शक्तिहीन होने के कई परिणाम हुये । प्रजा सदा घोर निद्रा में अचेत रही और राजा समस्त राजकार्य्य अपनी इच्छानुकूल करता रहा । प्रजा के अचेत होने के कारण अंग्रेजी व्यापार उतनी उन्नति न कर सका जितनी उन्नति उसने १७ वीं शताब्दि में की । हां जातीयता के भाव अवश्य प्रबल रहे जिस से अन्यदेश इङ्गलैण्ड को हानि न पहुँचा सके । ट्यूडर राजा बाह्यनीति में सर्वदा सफल हुये परन्तु घरेलू नीति द्वारा उन्होंने प्रजा पर मनमाने अत्याचार किये ।



अभ्यास ।

(१) ट्यूडर शासनकाल में पार्लियामेण्ट की क्या दशा थी ?

(२) ट्यूडर राजाओं की स्वच्छन्दता के कारण वर्णन करो । एलिजबेथ को ठेकों के विषय में पार्लियामेण्ट की आज्ञा के आगे किस प्रकार शीश झुकाना पड़ा, इस महान् घटना का महत्त्व वर्णन करो ?

(३) एलिजबेथ के शासनकाल के अन्तिम वर्षों और हेनरी सप्तम के शासनकाल की तुलना करो । पार्लियामेण्ट की शक्ति में तुम्हें कितना अन्तर मिलता है ? इस अन्तर द्वारा तुम स्टुअर्ट राजाओं और उनकी पार्लियामेण्ट के विषय में क्या कल्पना करते हो ?

बीसवां अध्याय ।

व्यापार तथा कलाकौशल की उन्नति ।

सेक्सन तथा नार्मन जातियों के समय में इङ्गलैण्ड ने कृषि में अत्यन्त उन्नति की थी। कृषी खुले हुये खेतों पर होती थी। सहस्रों मनुष्य खेतों पर काम करते थे। किसी का भी काम की कमी न थी। ट्यूडरकाल में मनुष्यों ने कृषी से ध्यान हटा कर भेडों के पालने में लगाया। भेडों के पालने के लिये उन्होंने अपने खेतों के चारों ओर चारदिवारी उठाली और ऊन के व्यापार की उन्नति करने लगे।

ऊन का व्यापार—ऊन का व्यापार एडवर्ड तृतीय के समय से उन्नति कर रहा था। इस राजा के पहिले जितना ऊन इङ्गलेण्ड में पैदा होता था उसके तीन चौथाई से भी अधिक यूरप के अन्य देशों और मुख्य कर नेदरलैण्डस् चला जाता था। एडवर्ड तृतीय ने चतुर जुलाहे नेदरलेण्डस् से बुलाये। उन्होंने अंग्रेजों को ऊनी वस्त्र बनाना सिखाया। एलिजबेथ के समय तक ऊन का व्यापार उन्नति करता रहा। कृपक खेतों के चारों ओर चारदीवारी बना कर भेडें पालते रहे। कृपकों को ऊन के व्यापार में मालामाल होते देख जमींदार उनसे खेत छीन स्वयं जोतने लगे। अत कृपकगण व्यवसायरहित होने के कारण भूखों मरने लगे।

सर्वव्यापी विपत्ति—कृपकों के साथ मजदूरों के लिये भी काल आया। पाच सौ भेडों की रक्षा दो चरवाहे तथा कुछ शिकारी कुत्ते कर लेते हैं। अत खेतों के स्थान पर चरागाहों के बन जाने से सहस्रों मजदूर बेकार हो गये। हेनरी सप्तम के शासनकाल में अधिकतर अमीरों तथा

सामन्तों ने अपने सेवकों को निकाल दिया था। ये भी मजदूरों की भांति मारे मारे फिर रहे थे। हेनरी अष्टम के मठों और सामर्सेट के मजदूर सभाओं के नष्ट कर देने से बेकार मनुष्यों की संख्या और भी अधिक हो गई थी। जब मजदूरों से सहन न हो सका तो उन्हों ने केट की अध्यक्षता में नारफोक के प्रान्त में विद्रोह किया जैसा कि पूर्व वर्णन हो चुका है। इस विद्रोह से यह बात स्पष्ट हो गई कि यदि खेतों के स्थान पर चरागाहों की संख्या बढेगी तो देश में शान्ति कभी भी स्थापित न होगी।

एलिज़बेथ का दुःख निवारण—ये दोष एलिज़बेथ के समय में दूर हुये। एलिजबेथ ने सन् १५८३ ई० में अपने मन्त्री राबर्ट सेसिल की सम्मति से कृषकों तथा मजदूरगण की दशा सुधारने को एक नियम बनाया। इसके अनुसार प्रत्येक प्रात में मजदूरों का वेतन निश्चित करने के लिये सर्कारी कर्मचारी नियुक्त हुये। यह बात भी निश्चित हो गई कि व्यर्थ फिरनेवाले बालक किसी निपुण कारीगर की अध्यक्षता मे रह कर कार्य्य सम्पादन सीखें और बडे होने पर स्वय अलग होकर काम करें। सन् १६०१ ई० में एलिजबेथ ने एडवर्ड षष्ठ की भांति निर्धनों की सहायतार्थ एक नियम बनाया। इसके द्वारा प्रत्येक जमीदार से, जो मकान किराये उठाये था, कर लिया जाने लगा। इस कर द्वारा जो धन आता वह निर्धनों की सहायतार्थ व्यय होने लगा। इस धन का उचित प्रवन्ध करने के लिये एलिजबेथ ने कर्मचारी नियुक्त किये।

कोयला और लोहा—कृषी तथा ऊन के व्यापार के अतिरिक्त टयूडरकाल में कोयले और लोहे के व्यापारों ने भी उन्नति की। इसके पूर्व मनुष्य लकडी के कोयले का प्रयोग करते थे। टयूडरकाल में वे पत्थर के कोयले का प्रयोग करने लगे। लोहा भी अधिकाधिक निकाला

जाने लगा । परन्तु आश्चर्य है कि मनुष्य लोहा तपाने में अभी तक लकड़ी का कोयला जलाते थे । स्टुअर्टवंश के समय में लोहे के तपाने में पत्थर का कोयला उठने लगा ।

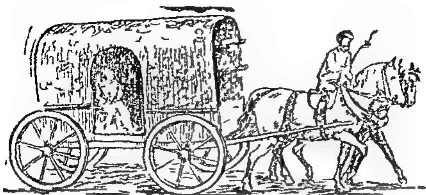
व्यापार का विस्तार—व्यापार का विस्तार भी पहले से अधिक हो गया । सन् १४८५ के पूर्व इङ्गलैण्ड के निवासी अन्य देशों से बहुत कम व्यापार करते थे । प्राय उनका व्यापार फ्रान्स तथा नेदरलैण्डस् से होता था । इसके दो मुख्य कारण थे । प्रथम यह कि उस समय तक इङ्गलैण्ड के पास अच्छे जहाज न थे । द्वितीय यह कि उस समय तक संसार के बहुत से भागों का अनुसन्धान न हुआ था । ट्यूडरवंश के समय में जब अमेरिका की खोज हुई और भारतवर्ष पहुंचने का नवीन मार्ग ज्ञात हुआ तब व्यापार ने अत्यन्त उन्नति की । हेनरी सप्तम ने व्यापार की उन्नति हेतु फ्रांस तथा नेदरलैण्डस् से सन्धि कर ली और बाल्टिक तथा रूमसागर के देशों के साथ व्यापार का मार्ग खोला । उसके समय में सामुद्रिक सेना की भी उन्नति हुई । जान केवट ने न्यूफाउण्डलैण्ड का द्वीप ढूंढ निकाला । अंग्रेजी मल्लाह इस द्वीप को मछली पकड़ने के लिये जाने लगे ।

हेनरी अष्टम अपनी वाह्यनीति और धार्मिकनीति, एडवर्ड षष्ठ अपनी बाल्यावस्था और मेरी अपने धार्मिक उत्साह के कारण व्यापार की उन्नति न कर सके । तत्पश्चात् रानी एलिज़बेथ ने व्यापार को उन्नतिशिखर पर चढ़ाया । इसके नाविकों ने समस्त संसार का भ्रमण किया । "समुद्री कुत्ते" हर प्रकार से व्यापार की उन्नति कर रहे थे और एलिज़बेथ शान्ति पूर्वक उनकी सहायता कर रही थी । जब बार्थोलोमियो के हत्याकाण्ड के कारण ह्यूजोनोज इङ्गलैण्ड में आकर बसे और नेदरलैण्डस् निवासियों ने फिलिप द्वितीय के दुर्व्यवहार तथा अत्याचार से दुःखित होकर इङ्गलैण्ड में निवास करना स्वीकार किया तो उनके व्यापार तथा कलाकौशल

में नवीन जीवन का सञ्चार हुआ। ये जातियाँ व्यापार तथा कलाकौशल में अत्यन्त निपुण थीं। उन्होंने अंग्रेजों को अनेकों नवीन वस्तुओं का बनाना सिखाया। इनमें रेशम, कागज तथा काँच की वस्तुयें मुख्य थीं।

टर्की और ईस्ट इण्डिया कम्पनियाँ—एलिजबेथ ने व्यापार को उन्नति देने के लिये दो व्यापारिक कम्पनियाँ खोलीं। इन में से एक 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' थी जिसका वर्णन हम पूर्व कर चुके हैं और जिसके कृत्यों का हमें भली प्रकार ज्ञान है। दूसरी कम्पनी 'टर्की कम्पनी' थी जो अंग्रेजी व्यापार को रूमसागर में उन्नति देने के अभिप्राय से ईस्ट इण्डिया कम्पनी की नींव पड़ने के १९ वर्ष पूर्व स्थापित हो चुकी थी। इसका कर्तव्य भारतवर्ष से आई हुई वस्तुओं को रूमसागर में मोल लेना और इङ्गलैण्ड पहुचाना था। अतः जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी स्थापित हुई तो टर्की कम्पनी के डायरेक्टर्स ने इस बात का बड़ा प्रयत्न किया कि नवीन संस्था उन्नति न कर सके। परन्तु परिणाम इसके प्रतिकूल हुआ, अर्थात टर्की कम्पनी तो कुछ समय तक व्यापार करके बन्द हो गई परन्तु उसके शत्रु ने भारतवर्ष में इस निपुणता से कार्य्य किया कि उसके कारण आज समस्त भारतवर्ष अंग्रेजों के अधिकार में है।

सड़कें और सफ़र—व्यापार के साथ २ सड़कें भी उन्नति कर रहीं थी। टेम्ज नदी के मार्ग से बहुत व्यापार होता था। अतः पक्की सड़कें बहुत कम थीं। सड़कों में गड्ढों का होना और उन पर गर्मी ऊँची धूल उड़ना साधारण बात थी। गाडी तथा टमटम बहुत कम संख्या में थीं। गाडी चलानेवाले को घोड़े की पीठ पर बैठना पड़ता था। मनुष्य अधिकतर घोड़ों पर यात्रा करते थे। स्त्रियाँ घोड़े पर पुरुषों के पीछे बैठती थीं। एलिजबेथ ने अपने लिये एक ऐसी गाडी बनवाई थी जिसका चलना स्वयं लन्दन की सड़कों पर कठिन था अन्य नगरों का तो कहना ही क्या था।



सोलहवीं शताब्दि की गाड़ी ।

अभ्यास ।

(१) ट्यूडरकाल में व्यापार तथा कलाकौशल ने कितनी उन्नति की ?

(२) एलिज़बेथ के शासनकाल में व्यापार ने कितनी उन्नति की ? सड़कों के ठीक न होने का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(३) ट्यूडरकाल में व्यापार का विस्तार कितना था ? इसके पूर्व इतना विस्तार क्यों न था ?



इक्कीसवां अध्याय।

सोलहवी शताब्दि का सामाजिक जीवन।

—— ०.——

हेनरी सप्तम के राजा बनने से इङ्गलेण्ड में बहुत काल पश्चात् शान्ति स्थापित हुई। घरेलू युद्ध (१६४२–१६४५) के समय तक शान्ति बराबर स्थापित रही। आर्मेडा के आक्रमण ने अवश्य मनुष्यों को भयभीत किया परन्तु वह भी थोडे ही समय के लिये। ट्यूडरवंश के प्रथम चार शासकों के देश प्रबन्ध तथा चरागाहों के बनने से प्रजा को बडा कष्ट हुआ। परन्तु एलिजबेथ की नीति द्वारा सारा कष्ट दूर हो गया। जनता प्रसन्न दिखाई देने लगी और जैसे २ समय व्यतीत होता गया वैसे २ उसका जीवन सुधरता गया, तथा उसकी प्रसन्नता बढती गई।

भवनों की सजावट—मनुष्यों के जीवन सुधरने का एक प्रमाण उनके भवनों की सजावट तथा सुन्दरता है। उनका जीवन नार्मन जाति के समय के जीवन से कई बातो में भिन्न था। धनाढ्य पुरुष अब पूर्व की भाति भद्दे, मोटी दीवारों तथा छोटी २ खिडकियों वाले भवनों में न रहते थे। अब वे सुन्दर तथा विशाल भवनो में निवास करते थे जिनकी खिडकियां बडी और दीवारें पहिले से कम चौडी होती थी। देश में शांति थी। बन्दूकों के सामने दृढ गढ भी व्यर्थ थे। अत. दृढ तथा सुरक्षित भवनों के स्थान पर निर्बल, परन्तु सुन्दर गृहों का निर्माण हुआ। खिडकियों में शीशे का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। धुआँ निकलने के लिये छिद्रों के स्थान में चिमनियां बनी। दीवारों पर परदे, झालर

तथा चित्र दिखाई पडने लगे। परन्तु निर्धनों के गृहों में उतनी उन्नति नहीं हुई जितनी धनवानों के गृहों में हुई। ईंट तथा पत्थर के स्थान पर उनके भवन अभी तक मिट्टी ही के बनते थे। कुछ मनुष्य लकड़ी तथा फूस के घर बनाते थे। इनके भीतर पर्दे तथा चित्रें बिल्कुल न होती थीं। धनी तथा निर्धन दोनों के गृहों में भूमि पर कई तहें सूखी घास तथा फूस की लगी रहती थीं जो वर्षों पर्यन्त बदली जाती थीं। यही कारण है जो उस समय भांति २ के रोग फैलते थे जिनकी चिकित्सा निर्धनों के लिये कठिन होती थी।



ट्यूडर काल के वस्त्र।

लकड़ी के डण्डों के स्थान पर कपड़े तथा परों के तकियों का प्रयोग होने लगा, परन्तु निर्धन मजदूरों के पास अभी तक डण्डों ही के तकिये थे।

भोजन तथा वस्त्र—भवनों के साथ २ भोजन सामग्री में भी परिवर्तन हुआ । परन्तु भवनों की भांति निर्धनों के भोजन तथा वस्त्रों में भी बहुत कम परिवर्तन हुआ । वाटिकाओं में गोभी, करमकल्ला, शलजम कद्दू इत्यादि उत्पन्न होने लगे । आलू की खेती भी प्रारम्भ हुई । रोटियां गेहूं तथा बेझर की बनती थीं । जौ की मदिरा पूर्व की अपेक्षा अच्छी बनने लगी । मनुष्यों को अभी तक काँटों से भोजन करना न आता था । धनाढ्यों के भवनों में शीशे तथा कासे के पात्र थे । धनी मनुष्यों के वस्त्र पहिले से सुन्दर तथा सुखदाई होते थे । हेनरी अष्टम तथा एलिज़बेथ दोनों बहुमूल्य वस्त्र पहनते थे । इनकी देखादेखी धनिकों तथा निर्धन मनुष्यों ने भी सुन्दर वस्त्र धारण करना आरम्भ कर दिया था ।

रोग और चिकित्सक—निर्धनों के भोजन तथा भवन सुन्दर न होने से बहुधा भांति २ के रोग फैलते थे । इन में अनेकों प्रकार के ज्वर तथा ताऊन मुख्य हैं । इन रोगों की चिकित्सा के लिये चतुर वैद्य तथा चिकित्सक कहीं भी न थे । मनुष्यों का विश्वास था कि रोग जादू से उत्पन्न होते हैं । वे कहते थे कि जादूगर किसी मनुष्य की मोम की मूर्ति बना लेते हैं और उस मोम को वे प्रति दिन गरम करके न्यून करते रहते हैं । जब मोम की मूर्ति नष्ट हो जाती है तब वह मनुष्य भी मृत्यु को प्राप्त हो जाता है जिस की मूर्ति बनाई गई थी । जब जादूगर मूर्ति में आलपीन अथवा सुई चुभाता है तो मनुष्य के शरीर में पीड़ा होने लगती है । समस्त रोगों की एक चिकित्सा माँस को चीड़ कर बुरा रक्त बाहर निकाल देना थी । घावों पर प्रायः तारकोल मल दिया जाता था । यदि घाव इतने पर भी अच्छा न होता तो उसके लिये जादू के कूप का जल मँगाया जाता था । प्रायः छिपकली का रक्त रोगियों के रक्त में मिला दिया जाता था । जूड़ी के रोगियों को तुरन्त मरे बैल की खाल पहिना दी जाती थी । इस प्रकार की चिकित्सायें जनता की मूर्खता के प्रमाण हैं ।

खेल तमाशे, 'प्रसन्न इङ्गलैण्ड'—रोगों तथा वैद्यों का वृत्तान्त पढ़ कर हम को यह परिणाम न निकालना चाहिये कि ट्यूडरकाल में व्यायाम बहुत कम होते थे क्योंकि इतिहास इसके बिलकुल प्रतिकूल बताता है नार्मन के समय के टूरनामेण्ट तथा अन्य खेल अभी तक होते थे। अन्तर केवल इतना था कि बन्दूकों के बन जाने से ये सब फीके पड़ गये थे। बैलों, मुर्गों तथा रीछों के युद्ध पहले की भांति अभीतक होते थे। फुटबाल, टनिस आदि अंग्रेजी खेल भी आरम्भ हुये। मुख्य २ त्योहारों के दिन नगर के समस्त मनुष्य खेलों तथा कौतुकों में भाग लेते थे। ऐसे सुअवसरों पर बड़े २ धनाढ्य अपने अधीनस्थ कृषकों तथा मित्रों का निमन्त्रण करते थे। प्रायः एलिज़बेथ स्वयं धनाढ्यों के गृहों में जाकर भोजन करती थी। उसके शासनकाल में खेल कूद, नाच-रङ्ग तथा कौतुक इतने अधिक हो गये थे कि उसके समय को इतिहास में 'प्रसन्न इङ्गलैण्ड' (Merry England) के नाम से पुकारते हैं।

साहित्य तथा प्रसिद्ध कवि—ट्यूडरकाल में मनुष्यों को नाटक देखने का बड़ा चाव था। एलिज़बेथ स्वयम् नाटक देखने की बड़ी प्रेमिनी थी। ट्यूडर काल में कई प्रसिद्ध लेखक हुये हैं जिन्हों ने बहुमूल्य पुस्तकें लिख कर नाम पाया है। हेनरी अष्टम का मन्त्री सर टामस मोर बड़ा विद्वान् पुरुष था। उसकी प्रसिद्ध पुस्तक यूटोपिया का वर्णन पूर्व हो चुका है। कैनमा तथा सर वाल्टर रैले प्रसिद्ध लेखक हुये हैं। रैले ने जेम्स प्रथम के समय में संसार का इतिहास लिखा। इसका विस्तार वर्णन आगे होगा। एलिज़बेथ के समय में कविता बड़ी उन्नति पर थी। इस समय का सबसे प्रसिद्ध कवि विलियम शेक्सपियर (William Shakespeare) है जिसके समान संसार में अन्य कवि नहीं हुआ है। शेक्सपियर नाटकों के लिये बहुत प्रसिद्ध है। उसने अपनी पुस्तकों में नवीन विचारों को इस प्रकार से प्रकट किया है कि उनके पढ़ने से हृदय

गदगद हो जाता है। शेक्सपियर के पश्चात् स्पेन्सर (Spen er) प्रसिद्ध कवि हुआ है। उसकी प्रसिद्ध पुस्तक फेरी क्वीन (Faery Queene) है। इसके पश्चात् बेकन (Bacon) तथा मार्लो (Morlowe) की गणना है। बेकन लेख लिखने और मार्लो उच्च विचारों के कारण प्रसिद्ध है। सर फिलिप सिडनी (Sir Philip Sidney तथा हुकर (Hooker) इस समय के अन्य प्रसिद्ध कवि हैं।



विलियम शेक्सपियर।

अभ्यास।

(१) टयूडरकाल में मनुष्य किस प्रकार जीवन व्यतीत करते थे?

(२) एलिजबेथ के समय का इङ्गलैण्ड "प्रसन्न इङ्गलैण्ड" क्यों कहलाता है?

(३) सोलहवीं शताब्दी के वैद्य कैसे थे?

(४) कहते हैं कि अंग्रेजी साहित्य सोलहवीं शताब्दि के अन्तिम वर्षों में उच्च शिखर पर पहुँचा। इस बात को तुम किस प्रकार से सिद्ध करोगे?

तृतीय खण्ड

स्टुअर्टवंश

सन् १६०३—१६८८ ई०

राष्ट्रीयजाग्रति तथा धर्मविभाग

बाईसवां अध्याय ।

स्टुअर्टकाल के विशिष्ट लक्षण ।

—o—

ट्यूडरकुल के समान स्टुअर्टकुलभी इङ्गलेण्ड के इतिहास में कई बातों के लिये प्रसिद्ध है । स्टुअर्टकुल के राजाओं का वृतान्त वर्णन करने के पूर्व इन बातों का अंकित करना आवश्यक प्रतीत होता है जिस से विद्यार्थी उनको ध्यान में रख कर स्टुअर्टकुल का इतिहास भली भांति अध्यन कर सकें ।

राज अत्याचार तथा दुराचरण—प्रथम बात जिसके लिये स्टुअर्ट राजाओं का शासन प्रसिद्ध है राज अत्याचार तथा दुराचरण हैं । ट्यूडरकुल के राजा भी अपने अत्याचार तथा अन्याय के कारण निन्दित हैं । परन्तु हमने इनका जीवनचरित्र पढते समय देखा था कि प्रजा ने कभी इनके प्रति मतभेद प्रकट नहीं किया । वरन् यों कहना चाहिये कि राजा के कार्य्यों में किसी सीमा तक प्रजा की सहानुभूति भी थी । स्टुअर्ट राजाओं के शासनकाल में इसके प्रतिकूल हुआ । राजाओं के प्रति सहानुभूति प्रकट न करके प्रजा उत्साह पूर्वक उनका सामना करने लगी । इसका क्या कारण है ? कारण केवल यह है कि ट्यूडर राजा स्वय प्रसिद्ध और धनी थे । वे ऐसे समय पर देश में आये जब शांति की विशेष आवश्यकता थी । एक कारण यह भी है कि ट्यूडर राजाओं के समय में इङ्गलैण्ड को सामुद्रिक आक्रमणों का भय सदा लगा रहता था जिसके कारण जनता को इस बात की लेश मात्र भी चिन्ता न थी कि देश में क्या हो रहा है और राजा उनके साथ कैसा व्यवहार कर रहा है। जब स्टुअर्टवंश का

शासनकाल आया तो अंग्रेजी राष्ट्र को सामुद्रिक युद्धों का भय किञ्चत मात्र भी न रहा। आर्मेडा के परास्त होने से स्पेन के दांत खट्टे हो गये थे और अन्य देशों पर भी इङ्गलैण्ड का प्रभुत्व स्थापित हो गया था। इसके अतिरिक्त यूरप महाद्वीप के अन्य देश घरेलू झगडों में सलग्न थे जिसके कारण वे दूसरे देशों पर आक्रमण करने का विचार तक न कर सकते थे। स्टुअर्टवंश के राजा स्वय भी योग्य न थे। अत प्रजा इन से अप्रसन्न रहती थी।

पार्लियामेंट की शक्ति—एक ओर स्टुअर्ट राजा अत्याचार कर रहे थे दूसरी ओर प्रजा भी अब पूर्व की भांति निर्बल न थी। स्वतन्त्रता के विचार प्रबल हो रहे थे। पार्लियामेण्ट यह बात भली भांति समझने लगी थी कि राजा के अत्याचारों को रोकना ही अच्छा है। अत उसने इस बात का बहुत प्रयत्न किया कि स्टुवर्टवंश का पहिला राजा उसकी इच्छानुसार कार्य्य करे और उन अनुचित अधिकारों को त्याग दे जिन्हें वह ग्रहण किये था। परन्तु उसने पार्लियामेण्ट के कहने की लेश मात्र चिन्ता न की और वह प्रजा पर आद्योपान्त अत्याचार करता रहा। द्वितीय राजा को भी उचित मार्ग पर लाने का पार्लियामेण्ट ने अत्यन्त उद्योग किया परन्तु उसने उसकी एक न सुनी। ज्यों २ समय व्यतीत होता गया पार्लियामेण्ट और राजा में मत भेद बढता गया यहां तक कि राजा एक सेना एकत्रित करके पार्लियामेण्ट से युद्ध करने को आगे बढ़ा। प्रजा उसके रक्त की प्यासी थी अतएव घरेलू युद्ध के अन्त होने पर प्रजा ने उसे ३० जनवरी सन् १६४९ ई० को संसार से विदा कर दिया। एक राजा को पार्लियामेण्ट ने इस प्रकार समाप्त किया। इस राजा का पुत्र पार्लियामेण्ट के भय से वर्षों यूरप में मारा २ फिरता रहा। चौथे राजा को पार्लियामेण्ट ने बलात् देशनिकाला दे दिया और एक विदेशी राजकुमार को उसके स्थान पर राजा बनाया। इन बातों के पढने से

प्रतीत होता है कि वही पार्लियामेण्ट जो ट्यूडर राजाओं के शासनकाल में कान तक न हिलाती थी अब इतनी बलवान और साहसी हो गई थी कि कठिन से कठिन काम उसके लिये सरल था। धीरे धीरे इङ्गलैण्ड के इतिहास में एक नवीन युग आता है जिसमें पार्लियामेण्ट राजा के आधीन नहीं रहती वरन् वह स्वयं राजा पर अधिकार प्राप्त करके उसे एक ओर हटा देती है और राज्य की बागडोर अपने हाथों में ले लेती है।

राजनैतिक तथा धार्मिक दल—तीसरी बात जिसके लिये स्टुअर्टवंश का राज्यकाल प्रसिद्ध है राजनैतिक तथा धार्मिक दलों की उत्पत्ति है। ट्यूडर राजाओं के समय में राजनैतिक दलों की चर्चा कभी नहीं हुई। कारण यह है कि उस समय धार्मिक विचार प्रचन्ड रूप धारण किये हुये थे। घरेलू युद्ध के प्रारम्भ होने के कुछ समय पूर्व दो बड़े राजनैतिक दल बने। इनमें से एक राजा और दूसरा प्रजा का पक्ष करता था। ज्यों २ समय बीतता गया राजनैतिक दलों की संख्या बढ़ती गई यहाँ तक कि वर्तमान समय में इङ्गलैण्ड में कई ऐसे दल हैं। जिस प्रकार राजनैतिक दलों की संख्या बढ़ रही थी उसी प्रकार धार्मिक दल भी उन्नति कर रहे थे। सन् १६८८ ई० तक इनका प्राबल्य अत्यन्त अधिक रहा। इसके पश्चात पार्लियामेण्ट ने धार्मिक स्वतन्त्रता की नींव डाली।

बाह्यनीति—स्टुअर्ट राजाओं की बाह्यनीति ट्यूडर राजाओं की बाह्यनीति से बिलकुल भिन्न थी। ट्यूडरवंश के राजा अन्यदेशों से मित्रता अथवा शत्रुता करते समय यह सोच लेते थे कि इङ्गलैण्ड का भला किस में है परन्तु स्टुअर्टवंश के राजा ऐसा न करते थे। पहिले राजा ने पार्लियामेण्ट की इच्छा के प्रतिकूल स्पेन से सम्बन्ध जोड़ लिया। दूसरा राजा भी स्पेन से मित्रता बनाये रखना चाहता था, परन्तु जब पार्लियामेण्ट ने बहुत विरोध किया तो उसने उसके विरुद्ध युद्ध ठाना। तीसरे और चौथे राजा फ्रांस के राजा चौदहवें लुई को ईश्वर से अधिक

मानते थे और जो कुछ आज्ञा देता उसे वे पालन करते थे। अन्तिम दो शासकों ने अवश्य लुई से शत्रुता रक्खी। परन्तु उन्हों ने भी अधिकांश पार्लियामेण्ट की इच्छा के विरुद्ध यूरुप के लडाई झगडों में भाग लिया। इस से प्रकट होता है कि इङ्गलैण्ड की वाह्यनीति अब वह नहीं थी जो टयूडर राजाओं के समय में थी क्योंकि, प्रथम तो स्टुअर्ट राजा टयूडर राजाओं की अपेक्षा बिना कारण ही वाहरी झगडों में भाग लेने को उद्यत रहते थे। दूसरे वे बहुधा पार्लियामेण्ट की इच्छा के प्रतिकूल कार्य्य करते और इङ्गलैण्ड के हित का लेशमात्र ध्यान न रखते।

अंग्रेज़ी साम्राज्य का प्रारम्भ—इतिहास प्रेमियों को उपरोक्त बातों के अतिरिक्त स्टुअर्टवंश का इतिहास पढते समय एक और बात की जानकारी होगी। वह बात नवीन उपनिवेशों का बसना है। टयूडर राजाओं के शासनकाल में अंग्रेजी नाविक लूट मार करते थे अथवा भारत वर्ष पहुचने को नवीन मार्ग खोजने की चिन्ता में रहते थे। केवल गिलबर्ट, रेले और दो एक अन्य नाविक ऐसे थे जो विदेशों में बस्तियाँ बसाने का प्रयत्न कर रहे थे। स्टुअर्टवंश के शासनकाल मे इसके प्रतिकूल हुआ अर्थात् अंग्रेजी नाविकों को और व्यापारी कम्पनियों ने इस बात का प्रयत्न किया कि दूर २ देशों से व्यापार करने के अतिरिक्त जहाँ कहीं सम्भव हो अङ्गरेजी प्रदेश स्थापित करें। उत्तरी अमेरिका के पूर्वी किनारे इस प्रकार के १३ प्रदेश बने। अफ्रीका तथा भारतवर्ष में भी अङ्गरेजी व्यापारियों ने कई बस्तियाँ तथा गोदाम स्थापित किये। इनके द्वारा इन देशों में अङ्गरेजी राज्य की नीव पडी।

अभ्यास।

(१) स्टुअर्टवंश का शासन किन २ बातों के लिये प्रसिद्ध है?

(२) टयूडर राजा प्रजा पर मनमाना अत्याचार करते थे। फिर स्टुअर्ट राजाओं को उसके आगे क्यों नीचा देखना पड़ा?

स्टुअर्टवंश।
जेम्स प्रथम।
(१६०३–१६२५)

- हेनरी (मृत्यु १६१२)
- चार्ल्स प्रथम = फ्रांस की हनरिटा
  १६२५–४९
  - चार्ल्स द्वितीय
    १६६०–८५
  - जेम्स द्वितीय = एने हाइड व मेरी मोडेना
    १६८५–८८
    - जेम्स
      बड़ा प्रिटेण्डर
      (मृत्यु १७६५)
      - चार्ल्स एडवर्ड
        छोटा प्रिटेण्डर
        (मृत्यु सन् १७८८)
    - एने = डेनमार्क का जार्ज
      (१७०२–१४)
    - मेरी = विलियम तृतीय
      १६८९–९४ १६८९–१७०२
  - मेरी = विलियम द्वि०
- एलिजबेथ = फ्रेड्रिक एलेक्टर पेलेटायन
  - मारिस
  - रुपर्ट
  - सोफिया = हनोवर का आर्नेस्ट
    - जार्ज प्रथम
      १७१४–२७

तेईसवां अध्याय।



जेम्स प्रथम।

(१६०३–१६२५ ई०)



एलिजबेथ की मृत्यु पर स्काटलेण्ड की रानी मेरी का पुत्र जेम्स* इङ्गलैण्ड का राजा बना। जेम्स स्काटलैण्ड पर भी राज्य करता था। उस देश में वह जेम्स षष्ठ के नाम से प्रसिद्ध था। इङ्गलैण्ड में अभी तक जेम्स नाम का कोई राजा नहीं हुआ था। इसलिये इङ्गलैण्ड के इतिहास में यह जेम्स प्रथम के नाम से प्रसिद्ध है। स्काटलैण्ड की मेरी उस देश के स्टुअर्टवंश से थी। अत वह वंश जिसकी नीव जेम्स प्रथम ने इङ्गलैण्ड में डाली स्टुअर्टवंश के नाम



जेम्स प्रथम।

*स्काटलैण्ड का राजा जेम्स षष्ठ हेनरी अष्टम की सब से बड़ी बहिन मारग्रेट का परपोता था। इस लिये यह इङ्गलैण्ड के राज्य सिंहासन का अधिकारी था।

से प्रसिद्ध है । उसके इङ्गलैण्ड का राज्यपद स्वीकार करने का यह फल हुआ कि इङ्गलैण्ड और स्काटलैण्ड की प्राचीन शत्रुता मित्रता में परिणत हो गई । इस में सन्देह नहीं कि दोनों देशों की पार्लियामेण्ट लगभग एक शताब्दि तक और पृथक् रहीं, परन्तु फिर भी हम कह सकते हैं कि इतिहासप्रेमियों को सन् १६०३ के पश्चात स्काटलैण्ड की प्राचीन शत्रुता का प्रमाण कठिनता से मिलेगा ।

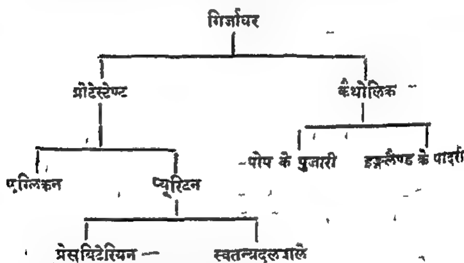
'विद्वान-मूर्ख'—जेम्स अपनी माता की भांति सुन्दर न था, परन्तु वह शिक्षित था * । राजा होने के बदले यदि वह किसी विद्यालय में अध्यापक होता तो उत्तम था । वह विश्वासनीय, हास्यप्रिय, डरपोक और निरुद्यमी था । उसकी सङ्गति भी अच्छी न थी । उसके चारों ओर अयोग्य राजकर्मचारियों का जमघट रहता था । जेम्स वार्तालाप करने का ऐसा प्रेमी था कि अपना अमूल्य समय मित्रों के साथ किस्से,कहानी सुनने सुनाने में नष्ट कर देता था । मसूबे गाठने में जेम्स सब से श्रेष्ठ था, परन्तु वह मसूबों को कार्य्यरूप में परिणत करना लेशमात्र न जानता था । बुरे और भले में भेद रखना उसे आता ही न था । यह जेम्स में सब से बडा दोष था ।

सन् १६०३ ई० में इङ्गलैण्ड में एक ऐसे राजा की आवश्यकता थी जो धार्मिकदलों में समानता रखता, पार्लियामेण्ट तथा जाति के कथनानुकूल चलता और स्पेन से शत्रुता बनाये रख कर इङ्गलैण्ड को कैथोलिकों के आक्रमणों से सुरक्षित रखता । परन्तु बडे खेद की बात है कि जेम्स इन तीनों बातों में से एक बात भी न समझता था । यदि वह बुद्धि से काम करता तो जनता स्टुअर्टकुल की शुभचिन्तक तथा सहायक बनी रहती

* जेम्स ने कई पुस्तकें लिखी हैं । परन्तु इन में से अधिकतर अनावश्यक विषयों पर हैं । जैसे उसकी लिखी हुई एक पुस्तक में तम्बाकू खाने के लाभ तथा हान का वर्णन है ।

और इस वश मे युद्ध करने का उसे ध्यान तक न होता। परन्तु अंग्रेजी राजपद की जड दृढ करने के स्थान पर जेम्स ने राजा बनते ही ऐसे काम करना प्रारम्भ कर दिये जिनके कारण प्रजा स्टुअर्टवंश को प्रारम्भ ही मे शत्रु समझने लगी। यदि उन भिन्न भिन्न विशेषताओं के कारण, जिनका वर्णन हुआ है, फ्रांस का प्रसिद्ध मंत्री कार्डीनल रूयूरी जेम्स को 'विद्वान् मूर्ख' कह कर पुकारता था तो इस में आश्चर्य ही क्या है।

(अ) जेम्स और धार्मिकदलों का मतभेद।



कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट—सब से प्रथम जेम्स प्रथम और धार्मिकदलों के बीच विरोध आरम्भ हुआ। जिस समय वह राजा बना इङ्गलैण्ड में कई धार्मिकदल थे जिन में से प्रत्येक दल अपने लिये स्वतन्त्रता माँग रहा था। इन दलों में से दो मुख्य दल कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट के थे। कैथोलिक पोप के अनुयायी थे और इङ्गलैण्ड में क्या वरन् समस्त यूरप में वर्षों से चले आते थे। प्रोटेस्टेण्ट उस नवीन धर्म के अनुयायी थे जो जर्मनी में मार्टिन लूथर ने प्रचलित किया था और जिसकी नींव इङ्गलैण्ड में हेनरी अष्टम ने डाली थी। जेम्स प्रथम के शासनकाल में

कैथोलिक दल दो भागों में बटा हुआ था। प्रथम भाग में वे पुजारी थे जो एलिजबेथ के समय में उसके प्राण लेनें को पोप की ओर से आये थे। राज के भय से यह पुजारी दिन के समय छिपे रहते थे और केवल रात के समय बाहर निकलते थे। दूसरे भाग में इङ्गलैण्ड के निजी कैथोलिक सम्मिलित थे। इन्हों ने पोप और फिलिप द्वितीय के कहने से उन षड्यन्त्रों में भाग लिया था जो एलिजबेथ के विरुद्ध रचे गये थे। परन्तु जेम्स के राजा बनते समय तक वे थोड़े बहुत अंग्रेजी राजा के पक्ष में हो गये थे।

एंग्लिकन और प्यूरिटन—एलिजबेथ के समय में प्रोटेस्टेण्ट धर्म दो भागों में विभक्त हो गया था। पहिले भाग के मनुष्य एंग्लिकन और दूसरे के प्यूरिटन कहलाये। एंग्लिकन अंग्रेजी गिर्जा को मानते थे जिस को एलिजबेथ ने स्थापित किया था। इस गिर्जा का प्रबन्ध विशप लोग करते थे जिन्हें केण्टरबरी का आर्चबिशप और राजा मिल कर नियुक्त करते थे। प्यूरिटन भी एंग्लिकन चर्च को मानते थे परन्तु वे इस से सन्तुष्ट न थे। कारण यह था कि वे प्रोटेस्टेण्ट धर्म में बहुत आगे बढ़ना चाहते थे जैसा कि पहिले वर्णन हो चुका है।

प्रेसबिटेरियन और स्वतन्त्रदलवाले—प्यूरिटन मत को बने बहुत दिन नहीं हुये थे कि वह दो बलवान संस्थाओं में विभक्त हो गया। प्रथम संस्था के लोग प्रेसबिटेरियन (Presbyterians) और दूसरी के स्वतन्त्रदलवाले (Independents) कहलाये। प्रेसबिटेरियन का देश स्काटलैण्ड था। इनके गिर्जा का प्रबन्ध विशप नहीं करते थे। उसका सारा प्रबन्ध एल्डर (Elders) के हाथों में था जो एक सभा (Synod) बना कर उसका प्रबंध उचित रीति से करते थे। इसके विरुद्ध स्वतन्त्रदलवालों का विश्वास था कि प्रत्येक मनुष्य को प्रकृति की ओर से धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त है। अन्य प्रोटेस्टेण्ट संस्थाओं के समान यह

दल भी पोप का शत्रु था। इसका कहना था कि केथोलिक धर्म के अतिरिक्त जिस मत का मनुष्य चाहे अनुयायी बन सकता है।

जेम्स के धार्मिक विचार—यदि स्टुअर्टवंश के समय में उपरोक्त धार्मिक दल इङ्गलैण्ड में थे तो कोई हानि न थी। दोष केवल इतना था कि प्रत्येक दल धार्मिक उत्साह से भरा हुआ था और मरने मारने को उद्यत था। इन दलों की मनोकांक्षा केवल यही न थी कि वे स्वतन्त्रता पूर्वक अपने धर्मों को उच्च बनावें, परन्तु वे यह भी चाहते थे कि जेम्स उनके प्रति दया और उनके शत्रुओं के प्रति कठोरता और निर्दयता का व्यवहार करे। विशेषतः कैथोलिकों को पूर्ण आशा थी कि जेम्स पोप की कट्टर अनुयायिनी मेरी स्टुअर्ट का पुत्र होने के कारण उनको ऐसे धार्मिक अधिकार देगा जो केवल उनके धर्म को ही उच्च शिखर पर न पहुँचावेंगे वरन् जिनकी सहायता से वे अपने धर्मगुरु पोप के प्राचीन आधिपत्य तथा प्रभुत्व को इङ्गलैण्ड में पुनः स्थापित करने का प्रयत्न कर सकेंगे। जेम्स एलिज़बेथ की भांति अंग्रेजी गिर्जा का अनुयायी न था। वह केलविन (Calvin)* को अपना धर्मगुरु मानता था। यों तो वह समस्त धार्मिक दलों से समान व्यवहार करता था, परन्तु उसके हृदय में न जाने क्यों यह विचार सदैव बना रहता कि यह सब दल राजनैतिक कार्यों में भाग लेकर उसे सिंहासन से उतारने का प्रयत्न कर रहे हैं। विशेष कर वह कैथोलिक से बहुत जलता था।

ब्राई और मेन के षड़यन्त्र, १६०३ ई०—कैथोलिकगण स्वयं भले पुरुष न थे। कई बार वे एलिज़बेथ को वध करने का प्रयत्न कर चुके थे। परन्तु उनका यत्न निष्फल हुआ था। अब वे जेम्स से बहुत कुछ

---

* जर्मनी में लूथर, फ्रांस में केलविन और स्वीटज़रलैण्ड में ज़िंगली (Zwingli) प्रोटेस्टेण्ट मत के तीन मुख्य दलों की नींव डालने वाले थे।

आशा रखते थे। परन्तु जेम्स प्रत्येक धर्म के साथ समभाव रखता था। न वह किसी धर्म का मित्र था न किसी का शत्रु। जब कैथोलिक की आशायें पूर्ण न हो सकी तो उन्हों ने जेम्स की हत्या करने का दृढ़ विचार कर लिया। उन्हों ने इस उद्देश्य से एक षडयन्त्र (Bye Plot) रचा। अकस्मात् इसकी सूचना न जाने किस प्रकार जेम्स को मिल गई। उसने विद्रोहियों को पकड़वा कर पर्य्याप्त दण्ड दिया। इस प्रकार बाई षडयन्त्र का अन्त हुआ। इस के कुछ ही काल पश्चात् कैथोलिक ने जेम्स के प्राण लेने को एक और षडयन्त्र रचा जो मेन का षडयन्त्र (Main Plot) कहलाता है। कुछ इतिहासलेखक इसको कोबहम का षडयन्त्र (Cobham's Plot) कह कर पुकारते हैं क्यों कि इसमें एक अंग्रेजी अमीर कोबहम भी सम्मिलित था। विद्रोहियों की सम्मित थी कि जेम्स को पदच्युत करके उसकी चचेरी बहिन अरावेला स्टुअर्ट (Lady Arabella Stuart) को इङ्गलैण्ड की रानी बनावें। इस षडयन्त्र की सूचना सेसिल को मिल गई जो एलिज़ेबेथ और जेम्स के श्रेष्ठ मन्त्रियों में था। विद्रोहियों को दण्ड मिला और अरावेला स्टुअर्ट कारा गृह में डाल दी गई। उस बेचारी को शेष जीवन बन्दीगृह ही में काटना पड़ा।

रेले के जीवन का शोचनीय अन्त, १६१८ ई०—मेन के षडयन्त्र में सर वाल्टर रेले की भी सम्मित थी। अन्य विद्रोहियों के समान जेम्स ने रेले को भी कारागृह का दण्ड दिया। रेले ने कारागृह का समय संसार का इतिहास लिखने और नाना प्रकार की औषधियां बनाने में व्यतीत किया। सन् १६१६ ई० में उसने जेम्स को यह प्रलोभन दिया कि दक्षिणी अमेरिका में ओरीनोको नदी की घाटी में एक सोने की खान है। यदि आप मुझे छोड़ दें तो मैं जहाज लेकर दक्षिणी अमेरिका जाऊँ और आपके लिये बहुत सा सोना लाऊँ। जेम्स ने रेले पर विश्वास करके उसे मुक्त कर दिया। रेले ने प्रसन्नतापूर्वक दक्षिणी अमेरिका की

ओर प्रस्थान किया। ओरीनीको नदी की घाटी में पहुँच कर रेले ने देखा कि वह स्थान जहाँ सोने की खान है समुद्र से बहुत दूर है और मार्ग में स्पेन का बसाया हुआ एक गाव है। इस समय जेम्स अपने पुत्र चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी से निश्चय कर रहा था। अतः उसने रेले को सावधान कर दिया था कि स्पेन से कभी युद्ध न करना। परन्तु खेद की बात है कि रेले युद्ध न रोक सका। अंग्रेजी नाविकों ने स्पेन के गाँव में आग लगा दी। परन्तु खान तक पहुँचना बहुत कठिन था। अतः रेले को वहाँ से निष्फल लौटना पड़ा। मार्ग में उसे सामुद्रिक डकैती का ध्यान आया परन्तु उसके साथी इस के विरुद्ध थे। अतः उसने अपना विचार त्याग दिया। अन्त में रेले कुछ समय तक इधर उधर घूम कर खाली हाथ इङ्गलैण्ड लौट आया। जब जेम्स को रेले की असफलता की सूचना मिली तो उसने प्राचीन अपराध के कारण उसका बध करा दिया। केवल रेले ही को जान से हाथ न धोना पड़ा वरन् उसका पुत्र भी स्पेन वासियों से युद्ध करता हुआ मारा गया था। जेम्स ने रेले का बध केवल स्पेन के दूत गोण्डोमर (Gondomer) के कहने से किया था। यदि उसके स्थान पर एलिजबेथ शासन करती होती तो रेले को बध करने के स्थान पर उसे बहुत कुछ पुरस्कार देती।

जेम्स और प्यूरिटन—कैथोलिकजनों के समान प्यूरिटनों को भी जेम्स से बड़ी २ आशायें थीं। परन्तु वे उसके प्राण न लेना चाहते थे। वे यह भी न चाहते थे कि अपने लिये एंग्लिकन गिर्जा के बाहर गिर्जा स्थापित करें। उनकी हार्दिक इच्छा केवल इतनी थी कि इङ्गलैण्ड की गिर्जा में जो कुरीतियां प्रचलित हैं वे सब किसी प्रकार दूर हो जावें। जैसे, प्यूरिटन मत के पुजारी जामा पहिनने के विरुद्ध थे। वे यह भी चाहते थे कि विवाह के समय कन्या को अँगूठी न पहिनाई जाय और न नामकरण के समय बालकों के मस्तक पर क्रास का निशान

बनाया जाय क्योंकि उनकी अनुमति में यह रीतियाँ कैथोलिक मत से सम्बन्ध रखती थी। अतः वे उनको स्थगित करना चाहते थे।

हैम्पटन कोर्ट की सभा व उसके परिणाम, १६०४ ई०—जब प्यूरिटन ने जेम्स प्रथम को बहुत दबाया तो उसे विवश हो एक सभा करनी पड़ी। इसका बैठक हैम्पटन भवन (Hampton Court) में हुई। इस सभा में एंग्लिकन गिर्जा के पुजारी और प्यूरिटन दोनों ने भाग लिया। जेम्स ने स्वयं सभापति का आसन ग्रहण किया। प्यूरिटन ने अपनी इच्छाओं को एक आवेदनपत्र में प्रकट किया जो मिलनरी पिटीशन (Millonary Petition) के नाम से प्रसिद्ध है। इसका ऐसा नाम इस कारण पड़ा कि प्यूरिटन ने इस बात का प्रयत्न किया था कि इस पर एक सहस्त्र मनुष्यों के हस्ताक्षर हो जावें। परन्तु ऐसा न हो सका। यही नहीं वरन् जितने हस्ताक्षर हुये उन में से अधिकांश हस्ताक्षर जाली थे। प्यूरिटन को इस बात का पूर्ण विश्वास था कि हैम्पटन कोर्ट की सभा का परिणाम अच्छा होगा। परन्तु उनकी आशाओं पर पानी पड़ गया। एक दिन किसी ने सभा में यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि इङ्गलैण्ड की गिर्जा का प्रबन्ध भी स्काटलैण्ड की प्रेसबिटेरियन गिर्जा के ढँग पर कर दिया जाय। इस बात का सुनना था कि जेम्स की आँखें क्रोध से लाल हो गईं। वह गरज कर बोला कि स्काटलैण्ड की प्रेसबिटेरियन गिर्जा राजा के साथ वही सम्बन्ध रखती है जो शैतान ईश्वर के साथ रखता है। जेम्स के कहने का यह तात्पर्य था कि जिस दिन इङ्गलैण्ड में प्रेसबिटेरियन गिर्जा स्थापित होगी उसी दिन अंग्रेजी राजपद का भी अन्त हो जावेगा। इसके पश्चात् सभा भङ्ग हो गई और प्यूरिटन अपना सा मुंह लिये रह गये।

हैम्पटन कोर्ट की सभा ने जेम्स को प्यूरिटनों का शत्रु बना दिया। उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि जब तक अंग्रेजी गिर्जा स्थापित है तब तक

राजा को हानि नहीं हो सकती और जिस दिन इस गिर्जा का अन्त होगा उसी दिन राजपद का भी अन्त हो जावेगा। जेम्स के व्यवहार से सब प्यूरिटन उसके शत्रु बन गये। इङ्गलेण्ड के निवासी अधिकतर प्यूरिटन मत के अनुयायी थे। अतः राजा के दुर्व्यवहार के कारण अंग्रेजी राष्ट्र का बहुत बडा भाग उसके विरुद्ध हो गया। इस सभा से एक विशेष लाभ यह हुआ कि जेम्स की आज्ञा से इञ्जील का अनुवाद पुनः नये सिरे से हुआ। इस अनुवाद में वे समस्त अशुद्धियाँ न रक्खी गईं जो पहिले अनुवादों में आ गई थीं। नवीन अनुवाद जो वर्षों के परिश्रम के पश्चात् तैयार हुआ वही अनुवाद है जिसका प्रयोग इङ्गलैण्ड की गिर्जा में आजकल होता है।

बारूद का षड्यन्त्र, १६०५ ई०—हैम्पटन कोर्ट की सभा के लगभग एक वर्ष पश्चात् जेम्स को एक नये षडयन्त्र का सामना करना पड़ा। यह षडयन्त्र रोम के पुजारियों की ओर से हुआ था। विद्रोहियों का नेता राबर्ट केट्स्बी (Robert Catesby) था। एक प्रसिद्ध सैनिक, जिसका नाम गाई फाक्स (Guy Fawkes) था, नेदरलैण्ड्स् से इस लिये बुलाया गया कि इङ्गलैण्ड में आकर षडयन्त्र का प्रबन्ध इस ढंग से करे कि किसी को कानोंकान पता न लगे। विद्रोही चाहते थे कि जेम्स को उसके पुत्रों, हेनरी तथा चार्ल्स के सहित मार डालें और उसके स्थान पर उसकी पुत्री, एलिज़बेथ को रोमन कैथोलिक धर्म की शिक्षा देकर इङ्गलैण्ड की रानी बनावें। इस इच्छा को पूर्ण करने के लिये बहुत उपाय किये गये। अन्त में यह बात निश्चित हुई कि 'हाउस ऑफ लॉर्ड्स' के कमरे के नीचे बारूद रख कर आग लगा दी जाय जिसमें जेम्स, उसके पुत्र और सब लार्ड एक साथ जल कर भस्म हो जाँय *।

* कहते हैं कि जिस स्थान पर षडयन्त्र रचा गया था उसके निकट अंग्रेजी महाकवि शेक्सपियर का भवन था। परन्तु इस षडयन्त्र से उसे तनिक भी हानि न पहुंची।

अत विद्रोहियों ने 'हाउस ऑफ लॉर्डस' से मिला हुआ एक घर किराये पर ले लिया और उस भीति में सुरङ्ग खोदना आरम्भ किया जो इस घर को 'हाउस ऑफ लॉर्डस से अलग करती थी। दीवार नौ फुट चौड़ी थी। विद्रोहियों ने खोदने का कार्य्य इस के पूर्व कभी नहीं किया था। अत: बहुत समय योंही नष्ट हो गया। इसी बीच में विद्रोहियों को सूचना मिली कि 'हाउस ऑफ लॉर्डस' के कमरे के नीचे कोयले की एक कोठरी है जो एक वृद्धा स्त्री के अधिकार में है। विद्रोहियों ने इस कोठरी को किराये पर ले लिया और उसमें गोला बारूद रख कर गाई फाक्स को इस कार्य्य के हेतु नियुक्त किया कि सङ्केत पाते ही बारूद में आग लगा दे। इसके पूर्व विद्रोहियों को धन की आवश्यकता हुई थी और उन्होंने धन प्राप्त करने के अभिप्राय से षडयन्त्र का भेद कुछ धनाढ्यों को बता दिया था। इन में से एक धनाढ्य का साला 'हाउस ऑफ लॉर्डस' का सभासद था। उसने उसे पत्र द्वारा सारा हाल बता दिया। इस प्रकार भेद खुल गया। पुलिस को विद्रोहियों के पकड़ने की आज्ञा मिली। अनेकों विद्रोही पुलिस से लड़ते हुये मारे गये। इनमें से एक केट्स्बी भी था। शेष को जेम्स ने प्राणदण्ड दिया।

बारूद के षडयन्त्र के दो विशेष परिणाम हुये। प्रथम, जेम्स ने कैथोलिक के विरुद्ध अनेकों कठिन नियम बनाये जिनके कारण उनका जीवन दुर्लभ हो गया। द्वितीय, वह पोप के पुजारियों और इङ्गलेण्ड के कैथोलिक के बीच भेद भाव रखने और इन कैथोलिकों का विशेष ध्यान रखने लगा।

(ब) जेम्स प्रथम और उसकी पार्लियामेन्ट।

राजा और पर्लियामेन्ट में विरोध के कारण-जेम्स प्रथम की धार्मिक नीति के कारण प्यूरिटन और कैथोलिक दोनों उसके विरुद्ध हो गये थे। पार्लियामेण्ट से भी उसकी अति शीघ्र बिगड़ गई। जेम्स

के समय में राजा और पार्लियामेण्ट के अधिकार उस प्रकार निश्चित न थे जिस प्रकार आधुनिक काल में है। सन् १६०१ ई० की घटना से पार्लियामेण्ट अपने आप को स्वतन्त्र मानने लगी थी। हेनरी चतुर्थ के समय से ही राजा अपनी स्वतन्त्रता तथा बल का राग अलापते थे। फल यह हुआ कि जेम्स और उसकी पार्लियामेण्ट में बहुत कम बनती थी। इस मतभेद के कई कारण थे।

स्वतन्त्र विचार—जेम्स के शासनकाल में क्या वरन् सारे स्टुअर्ट कुल के समय में बृटिश टापू बाह्यभयों से मुक्त रहे। जब तक मनुष्य का घर आपत्ति में रहता है वह आन्तरिक कार्य्यों की ओर ध्यान नहीं देता। यही दशा बृटिश टापुओं के निवासियों की भी थी। ट्यूडरकुल के समय में देश में कई भय उपस्थित थे। अतएव प्रजा देशी कार्य्यों में बहुत कम भाग लेती थी। जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम के समय में देश पर कोई वाह्य आपत्ति न थी। अतः प्रजा वाह्यनीति और धर्मनीति में भली प्रकार भाग लेने लगी थी। यही नहीं वरन् वे समस्त बातें, जो ट्यूडर राजाओं का सम्मान रक्खे थीं, अब धीरे २ लोप हो रही थीं। जेम्स प्रथम के राजा बनते समय जनता में स्वतन्त्रता के विचार प्रबल हो रहे थे। प्यूरिटनदल उससे युद्ध करने तक को तैयार था। परन्तु युद्ध करने के पहिले वह दूरदर्शिता तथा चतुरता से काम लेना चाहता था।

राजा का "दैवी अधिकार"—जेम्स को इस बात की किञ्चित चिन्ता न थी कि प्रजा किस ओर जा रही है तथा उसका प्रजा के प्रति क्या धर्म है। वह अपने रङ्ग में रँगा हुआ था उसने राजपद के एक नवीन अङ्ग पर जोर दिया जिसका सविस्तर वर्णन उसने एक पुस्तक (Law of Monarchy) में किया है उसके सहायक दार्शनिकों में से फिल्मर (Filmer) और हाब्स (Hobbes) ने भी इसके ऊपर प्रकाश डाला है। उनके कथन का सारांश यह है कि राजा को प्रजा ने नहीं बनाया क्यों कि वह पृथ्वी

राजा ईश्वर का नायब है। उसका पद और महत्व ईश्वरीय पद तथा महत्व से कम नहीं है। प्रजा का कर्तव्य है कि राजा की आज्ञा का उसी प्रकार पालन करे जिस प्रकार वह ईश्वर की आज्ञा पालन करती है। यदि राजा दुष्ट है अथवा प्रजा पर अत्याचार करता है तो उसको चाहिये कि वह राजा के विरुद्ध ईश्वर से प्रार्थना करे। परन्तु राजा को राजपद से हटाने का अधिकार प्रजा को कदापि प्राप्त नहीं है। प्रजा की ओर से फिल्मर और हाब्स का उत्तर प्रसिद्ध अंग्रेजी दार्शनिक लाक (Locke) नामक ने दिया है। उसका कथन है कि राजा का सम्मान प्रजा पर निर्भर है। यदि राजा नियम विरुद्ध चलेगा अथवा प्रजा का भला न चाहेगा अथवा और कोई अन्य अनुचित कार्य्य करेगा तो प्रजा तुरन्त उसे दण्ड देगी और राजपदच्युत कर देगी। राजा को जिस प्रजा ने नियुक्त किया है। वही प्रजा उसे हटा भी सकती है और उसके स्थान में दूसरा राजा नियत कर सकती है।

२. **जेम्स के अनुचित अधिकार**—जेम्स अपने आप को ईश्वर का कार्य्यकर्ता ही न मानता था वरन् वह यह भी कहता था कि राजा को ईश्वर की ओर से एक विशेष अधिकार (Prerogative) प्राप्त है जिसके सम्मुख देश के नियम तुच्छ हैं। यदि राजा चाहे तो वह इन नियमों को भङ्ग कर सकता है और उनके स्थान पर अपने विशेष ईश्वरदत्त अधिकार से काम ले सकता है। इसके प्रतिकूल पार्लियामेण्ट कहती थी कि उपरोक्त अधिकार जेम्स का रचा हुआ ढोंग है। अतः राज्यनियमों के सामने तृणवत् भी नहीं है। इस अधिकार के अतिरिक्त जेम्स ने कई अन्य अनुचित अधिकार भी ग्रहण कर लिये थे। इनमें से मुख्य ७ हेनरी सप्तम की भांति प्रजा से बलात् ऋण (Benevolences) उगाहना, घोषणाओं द्वारा प्रजा को बिना अपराध बन्दी करना और युद्ध की अनुपस्थिति में युद्ध सम्बन्धी नियमों से काम लेना थे। पार्लियामेण्ट इस

प्रकार के समस्त अनुचित अधिकारों के छीनने की चिन्ता में थी।

टनेज और पौंडेज—जेम्स प्रजा पर पार्लियामेण्ट की इच्छा के प्रतिकूल कर भी लगा रहा था। दो व्यापारिक करों पर, जो टनेज (Tunnage) और पौण्डेज (Poundage)* कहलाते थे, वह विशेष जोर दे रहा था। वह कहता था कि बन्दरगाह राजसम्पत्ति हैं। अतः राजा उन वस्तुओं पर जो विदेश से आती हैं मनमाने कर लगा सकता है। इसके प्रतिकूल पार्लियामेण्ट राजा को टनेज और पौण्डेज उसके जीवन भर को स्वीकार कर देती थी और उससे यह प्रतिज्ञा करा लेती थी कि वह इन करों के अतिरिक्त देश में आने वाली वस्तुओं पर अन्य कर नहीं लगावेगा। जेम्स ने इन दो करों के अतिरिक्त आन्तरिक पदार्थों पर अन्य कर लगाना बन्द न किया। यही नहीं वरन् सन् १६०८ ई० में उसने एक पुस्तक (Book of Rates) प्रकाशित की जिस में उसने लगभग समस्त व्यापारिक वस्तुओं पर कर लगाने की दर निश्चित की।

धार्मिक विरोध तथा वाह्यनीति—देश सम्बन्धी विचारों के अतिरिक्त जेम्स के धार्मिक विचार भी पार्लियामेण्ट के विचारों से भिन्न थे। पार्लियामेण्ट के सभासद् अधिकांश प्यूरिटन थे। उनकी इच्छा थी कि जेम्स उन पर कृपाभाव रक्खे और रोमन कैथोलिक के साथ, जिन्होंने राजा के प्राण लेने का तीन बार उद्योग किया था, कठोरता का भाव रक्खे। इसके विरुद्ध, जैसा कि लिख आये हैं, जेम्स प्रत्येक धर्म को स्वतन्त्र रखना चाहता था और किसी धार्मिक दल पर विशेष कृपा न करना चाहता था। वाह्यनीति में भी जेम्स-पार्लियामेण्ट के विरुद्ध कार्य कर रहा था। वह स्पेन के पक्ष में था। पार्लियामेण्ट स्पेन की शत्रु थी। अतः दोनों में बहुत कम पटती थी।

* इनका यह नाम इस कारण पड़े कि प्रति टन मदिरा तथा प्रति पौण्ड अन्य व्यापारिक वस्तुओं पर बाहर से आते समय कर लगते थे।

जेम्स के मित्र—इन बातों के होते हुये भी यदि जेम्स बुद्धिमता से काम लेता तो पार्लियामेण्ट इतनी शीघ्र उस से कदापि शत्रुता न कर लेती, परन्तु वह शान्तिपूर्वक बैठना जानता ही न था। उसका स्वभाव था कि वह पार्लियामेण्ट को सदा छेड़ता ही रहता था। यही नहीं, वरन् वह भले बुरे का अन्तर न जानने के कारण अयोग्य पुरुषों को अपना मित्र बनाता था। इनमें जार्ज विलियर्स (George Villiers) सब से अधिक विख्यात है। जेम्स उस से इतना प्रसन्न था कि वह उसे सब प्रकार के पद तथा आदर देने को सदा तत्पर रहता और उसे मन्त्रियों से भी अधिक चाहता था। जेम्स ने स्काटलैण्ड से आये हुये सम्बन्धियों और परिचितों को धन तथा जागीरों से मालामाल कर दिया था। पार्लियामेण्ट इन सारी बातों के विरोध में थी। सन् १६१२ ई० तक जेम्स के ये अयोग्य साथी दबे रहे क्योंकि इस वर्ष तक राबर्टसेसिल जिसे 'अर्ल ऑफ सालज़बरी (Earl of Salisbury) की उपाधि प्रदानित हुई थी और जेम्स का ज्येष्ठ पुत्र हेनरी जीवित थे। जब तक ये दोनों जीवित रहे जेम्स को कूप में गिरने से रोकते रहे। जब उनकी मृत्यु हो गई तो विलियर्स आदि जेम्स को अनुचित मार्ग पर लाने में सफल हुये।

प्रथम पार्लियामेन्ट, १६०४–१० ई०-जेम्स ने प्रथम पार्लियामेण्ट सन् १६०४ ई० में निमन्त्रित की। इसके सदस्य अधिकांश मध्यम श्रेणी के मनुष्य तथा नवयुवक वकील थे, जो नियमों को भली भांति जानते थे और राजा के अनुचित अधिकारों को भली प्रकार समझते थे। जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम दोनों के शासन में मध्यम श्रेणी के मनुष्य बड़ी संख्या में प्रजा की ओर से निर्वाचित होकर पार्लियामेण्ट में आते रहे और राजा के अत्याचारों को रोकने का प्रयत्न करते रहे। पार्लियामेण्ट ने उन अनुचित करों का विरोध किया जिन्हें जेम्स प्रजा की इच्छा के प्रतिकूल उगाह रहा था। इन्हीं दिनों में जेम्स ने बेट (Bate)

नामक व्यापारी को कर न देने के अपराध में बन्दी कर लिया था। पार्लियामेण्ट ने अपनी अप्रसन्नता प्रकट करके बेट को छुड़ाना चाहा परन्तु उसका बस न चला क्योंकि न्यायालयों ने उसके प्रतिकूल निश्चय किया अर्थात् उनकी भी यही सम्मति थी कि राजा बन्दरगाहों का स्वामी होने के कारण जो कर चाहे अन्दर आने वाली वस्तुओं पर लगा सकता है *। जेम्स को इस समय धन की विशेष आवश्यकता थी। उसने पार्लियामेण्ट से धन की स्वीकृति के लिये प्रार्थना की। पार्लियामेण्ट को अत्यन्त उत्तम अवसर मिला। उसने जेम्स से यह प्रतिज्ञा (The Great Contract) करानी चाही कि वह भविष्य में पार्लियामेण्ट की इच्छा के प्रतिकूल कोई कर न लगायेगा और उन समस्त अनुचित करों को भी बन्द कर देगा जिन्हें वह उगाह रहा है, परन्तु जेम्स ने यह बात स्वीकार न की। जब पार्लियामेण्ट ने राजा के मित्रों में दोष निकालना आरम्भ किया तो जेम्स ने पार्लियामेण्ट भङ्ग कर दी।

वांझ पार्लियामेन्ट, १६१४ ई०—इसके चार वर्ष पश्चात् तक जेम्स ने बिना पार्लियामेण्ट के राज्य किया और अनुचित कर लगा कर ओर सरकारी भूमि और उपाधियां बेच कर काम चलाया। सन् १६१४ ई० में उसने फिर पार्लियामेण्ट बुलाई। यह केवल दो मास तक रही। यह इतिहास में 'वांझ पार्लियामेण्ट' (Addled Parliament) के नाम से प्रसिद्ध हे क्योंकि न उसने कोई नियम ही बनाया और न कोई अन्य आवश्यक कार्य्य ही करके दिखाया।

तीसरी पार्लियामेन्ट, १६२१ ई०—सन् १६२१ में जेम्स ने

* न्यायाधीश अधिकतर राजा के पक्षपाती थे। जिन चार न्यायाधीशों ने बेट के अभियोग की जाच की उनकी सम्मति थी कि बन्दरगाह दरवाजे हैं जो राजसम्पत्ति हैं। उन्हें राजा जिस किसी के लिये चाहे खोल और बन्द कर सकता है।

तीसरी पार्लियामेण्ट बुलाई। इसने दो अति आवश्यक नियम बनाये। प्रथम यह कि पार्लियामेण्ट राजा के प्रिय मित्रों तथा मन्त्रियों पर अभियोग लगा सकती है और उनको न्यायालयों द्वारा वही दण्ड दिला सकती है जो एक साधारण व्यक्ति को मिलेगा। द्वितीय यह कि प्रजा को इस बात का अधिकार है कि वह राजा के विरुद्ध स्पष्ट विचार प्रकट करे। जेम्स अन्तिम नियम से अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। उसने हाउस ऑफ कॉमन्स के रजिस्टर को मँगा कर उस पृष्ठ को फाड़ डाला जिस पर यह नियम लिखा था। इसके पश्चात् जेम्स ने पार्लियामेण्ट को भङ्ग होने की आज्ञा दे दी।

चौथी पार्लियामेण्ट, १६२४ ई०—जेम्स की अन्तिम पार्लियामेण्ट की बैठक सन् १६२४ ई० में हुई। इस पार्लियामेण्ट ने कोई विशेष नियम नहीं बनाया, परन्तु इसके और जेम्स के बीच खूब पटी। पार्लियामेण्ट ने राजा को तीन लाख पौण्ड व्यय के लिये स्वीकार किये। उसने उन ठेकों को भी अनुचित ठहराया जो राजा अपने मित्रों को दे दिया करता था। २० मई सन् १६२४ ई० को जेम्स ने पार्लियामेण्ट भङ्ग कर दी।

अंग्रेजी राष्ट्र को राजा का विरोध करते बीस वर्ष से भी अधिक हो गये थे। इस बीच में राजशक्ति को क्षीण करने के लिये बहुत कम नियम बन सके थे, परन्तु पार्लियामेण्ट ने अपने अधिकारों की रक्षा भली भाँति कर ली थी। अब प्रजा में जाग्रति थी और उस निद्रा का नाम तक न रहा था जो उस पर ट्यूडरकाल में छाई हुई थी। अतः उसे आशा थी कि भविष्य में वह राजा का विरोध और भी अधिक साहस से करेगी।

(स) जेम्स की वाह्यनीति।

सन् १६०३ ई० में जब जेम्स राजा बना, इङ्गलैण्ड वाह्य भयों से निश्चिन्त था। आरमेडा की हार ने स्पेन को बहुत भारी धक्का पहुँचाया

था अत इङ्गलैण्ड उस की ओर से निर्भय था । स्काटलैण्ड और इङ्गलैण्ड मे सन्धि थी। यह कहना भी अनुचित न होगा कि जेम्स के राज्य में दोनो सम्मिलित होकर एक बने हुये थे । जेम्स के सन्मुख दूसरा उत्तराधिकारी भी न था जिसकी सहायता से यूरप के अन्य बली राजा जेम्स के विरुद्ध अस्त्र उठाते ।

एलिज़बेथ और फ्रेडरिक का विवाह, १६१३ ई० — जेम्स हेनरी सप्तम के समान शान्तिप्रिय राजा था । उसे विश्वास था कि इङ्गलैण्ड का भला इसी में है कि यूरप के लड़ाई झगडे शान्त रहें और वह स्वय किसी को कुछ कहने का अवसर न दे । उसके कहने से सन् १६०८ ई० में स्पेन तथा फ्रास ने ऐण्टवर्प नगर मे इङ्गलेण्ड के साथ १२ वर्ष के लिये यह प्रतिज्ञापत्र लिखा कि हम तीनों मिल कर यूरप मे शान्ति स्थापित रखने का प्रयत्न करेंगे। इसके पाच वर्ष पश्चात् जेम्स ने अपनी पुत्री एलिज़बेथ का विवाह पेलेटायन (Palatinate) के राजा फ्रेडरिक (Fredrick) के साथ कर दिया। फ्रेडरिक उन सात राजाओं में से था जो जर्मनी के महाराजाधिराज को चुनते थे। इसी प्रकार जेम्स अपने ज्येष्ठ पुत्र हेनरी का विवाह स्पेन की राजकुमारी से निश्चित कर रहा था। वह सोचता था कि यदि यूरप का सब से बलवान कैथोलिक देश सब से बलवान प्रोटेस्टेण्ट देश से विवाह द्वारा मिल जावेगा तो यूरप में सदैव शान्ति विराजमान रहेगी। जो कुछ जेम्स सोचता था ठीक था, परन्तु उसने इस बात पर तनिक भी ध्यान न दिया था कि जनता हेनरी और स्पेन की राजकुमारी में विवाह होने के प्रतिकूल थी । स्पेन के राजा फिलिप तृतीय ने जेम्स की बात स्वीकार न की । हेनरी स्वय इस विवाह के प्रतिकूल था* । सन् १६१२ ई० में उसकी और मंत्री साल्जबरी की मृत्यु हो गई ।

* हेनरी का कथन था कि दो भिन्न मत मेरी शय्या पर शयन नहीं कर सकते हैं।

चार्ल्स के विवाह का प्रबन्ध, १६१४-१७ ई०-अब जेम्स को यह विचार हुआ कि मैं अपने दूसरे पुत्र चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी से कर दूँ। अत: उसने स्पेन के राजा को इस विषय पर पत्र लिखा। स्पेन का राजा पोप का सहायक था। अत उसने जेम्स के पत्र का यह उत्तर दिया कि यदि इङ्गलैण्ड का राजा रोमन कैथोलिकों को पूर्ण स्वतन्त्रता दे देवे तो उसकी प्रार्थना स्वीकार की जा सकती है, अन्यथा नहीं। अंग्रेजी पार्लियामेण्ट के सभासद् अधिकतर प्यूरिटन मत के अनुयायी थे। वे स्पेन के राजा की प्रतिज्ञा कम मानने वाले थे। जेम्स को हार कर चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी से स्थगित कर देना पड़ा। जेम्स के प्रयत्न से इङ्गलैण्ड को कोई लाभ न हुआ। इसके विरुद्ध प्रसिद्ध अंग्रेजी नाविक सर वाल्टर रेले को उसके कारण अवश्य जान से हाथ धोना पड़ा।

तीसवर्षीय युद्ध, १६१८-४८ ई०—जिस वर्ष रेले को प्राण-दण्ड मिला उसी वर्ष जर्मनी में एक महान् युद्ध प्रारम्भ हुआ। यह युद्ध जर्मनी के प्रोटेस्टेण्ट और कैथोलिक के बीच हुआ। कैथोलिकों का नेता जर्मनी का महाराजाधिराज और प्रोटेस्टेण्टों का नेता पेलेटायन का राजा और जेम्स प्रथम का जामातृ फ्रेडरिक था। बोहीमिया के निवासियों ने फ्रेडरिक को अपना राजा निर्वाचित किया। जर्मनी का महाराजाधिराज स्वय इस देश का राजा बनना चाहता था अत उसने फ्रेडरिक से युद्ध आरम्भ कर दिया सन् १६२० ई० में फ्रेडरिक कई स्थानों में पराजित हुआ। महाराजाधिराज की सेनाओं ने उसे बोहीमिया से निकाल दिया। इतिहासलेखक फ्रेडरिक को 'शीत ऋतु का राजा' (Winter King) कह कर पुकारते हैं क्योंकि वह बोहीमिया में एक शीतकाल से अधिक राज्य न कर सका। फ्रेडरिक को केवल बोहीमिया ही से हाथ न धोना पड़ा वरन् शत्रुओं ने उसकी निजी सम्पत्ति पेलेटाइन भी छीन

री। इन शत्रुओं मे स्पेन का राजा फिलिप चतुर्थ मुख्य शत्रु था जो फिलिप तृतीय की मृत्यु के पश्चात् सिंहासनारूढ हुआ था।

जेम्स का युद्ध रोकने का प्रयत्न—इङ्गलैण्डवासी फ्रेडरिक की सहायतार्थ सेना भेजना चाहते थे परन्तु जेम्स के सामने उनकी एक न चलती थी। जेम्स कायर था और युद्ध से डरता था। एक बात यह भी है कि वह तीसवर्षीय युद्ध की वास्तविकता न समझ सका था। पार्लियामेण्ट धन स्वीकार करने को उद्यत थी। सैनिकों की भी कमी न थी। तिस पर भी जेम्स जर्मनी को सेना भेजने को उद्यत न हुआ। वह सोचता था कि यदि विना युद्ध किये ही तीसवर्षीय युद्ध समाप्त हो जावे तो अच्छा है। अत जेम्स ने यूरप के भिन्न २ देशों को दूत भेजे कि उनके राजाओं से कह सुनकर युद्ध रोकने का प्रयत्न करें। डिग्बी (Digby) नामक दूत स्पेन तथा जर्मनी में मारा २ फिरा किया, परन्तु किसी ने उसकी एक न सुनी। जेम्स का यत्न निष्फल प्रमाणित हुआ और युद्ध का अन्त न हुआ। तब उसे यह विचार हुआ कि यदि चार्ल्स का विवाह जैसा कि उसने पहिले सोचा था स्पेन की राजकुमारी से पक्का हो जावे तो स्पेन का राजा अवश्य युद्ध बन्द कर देगा और जर्मनी के महाराजाधिराज को भी सन्धि का मार्ग सुझा देगा। अत उसने दूसरी बार स्पेन से विवाह सम्बन्धी पत्र व्यवहार प्रारम्भ किया।

टाम और स्मिथ की यात्रा, १६२३ ई०—चार्ल्स यह सुन कर बडा प्रसन्न हुआ। उसके मित्रों में जार्ज विलियर्स, जिसे ड्यूक आफ बकिंघम (Duke of Buckingham) की उपाधि मिली थी, सब से श्रेष्ठ था। बकिंघम सुन्दर, परिश्रमी, परन्तु कुजात मन्त्रियो में से हुआ है। वह चतुर प्रबन्धकर्ता तो अवश्य था, परन्तु चतुर राजनीतिज्ञ न था। वह भोगविलास का भी प्रेमी था और क्षण २ भर में नीति बदलता रहता था। बकिंघम ने चार्ल्स को यह सम्मति दी कि यदि विवाह होने

के पूर्व वह एक बार स्पेन हो आवे तो फिलिप चतुर्थ उससे अत्यन्त प्रसन्न होगा। चार्ल्स ने अपने मित्र की यह सम्मति स्वीकार कर ली। उसने बकिंघम से भी साथ चलने को कहा। अतः दोनों ने कृत्रिम दाढ़ी लगा ली और भेष बदल कर महाद्वीप होकर स्पेन चले। यही नहीं उन्होंने अपने नाम भी बदल लिये। एक ने अपना नाम टाम और दूसरे ने स्मिथ रख लिया और भीगी बिल्ली के समान मेड्रिड नगर में पहुँचे। फिलिप उनको देख कर अत्यन्त रुष्ट हुआ। प्रकट में उसने उनका बड़ा आदर किया परन्तु हृदय में वह उन्हें मूर्ख समझता था। एक दिन बकिंघम ने सुना कि राजकुमारी राजउपवन में भ्रमण कर रही है। फिर क्या था, वह और चार्ल्स दीवारें फाँद कर उपवन में पहुँचे। वे सोचते थे कि उन्हें राजकुमारी से वार्तालाप करने का अवसर प्राप्त होगा। परन्तु परिणाम इसके बिलकुल प्रतिकूल हुआ। जैसे ही राजकुमारी ने चार्ल्स का मुख देखा वह विलोप हो गई और चिल्लाती हुई उपवन के बाहर निकल गई। चार्ल्स और बकिंघम असफल होकर उपवन से लौट आये। फिलिप चतुर्थ ने इस घटना की सूचना पाकर बकिंघम से कहा कि मैं अपनी भगनी का विवाह चार्ल्स से इस प्रतिज्ञा पर करने को तत्पर हूँ कि इङ्गलैण्ड का राजा उस देश के रोमन कैथोलिक निवासियों को पूर्ण स्वतन्त्रता देदे। राजकुमारी स्वयं प्रोटेस्टेण्ट राजकुमार से विवाह करने के विरुद्ध थी। चार्ल्स प्रोटेस्टेण्ट था अतः उसके साथ राजकुमारी का विवाह कठिन था। अन्त में चार्ल्स और बकिंघम निराश हो कर इङ्गलैण्ड लौट आये। इङ्गलैण्डवासी उनकी असफलता पर अत्यन्त प्रसन्न हुये। सभों ने आनन्द मनाये। भला इन आमोद प्रमोद का क्या कारण था? केवल यही कि इङ्गलैण्डवासी और पार्लियामेण्ट स्पेन से युद्ध करना चाहते थे और वे स्पेन की राजकुमारी और चार्ल्स के विवाह के प्रतिकूल थे।

मेन्सफेल्ड का जर्मनी जाना, १६२४ ई०—जर्मनी में फ्रेड-

रिक की दशा बहुत शोचनीय थी। अब पार्लियामेण्ट से सहन न हो सका इधर बकिंघम और चार्ल्स भी स्पेन के शत्रु हो गये थे। सब ने मिल कर जेम्स से आग्रह किया कि अंग्रेजी सेना फ्रेडरिक की ओर से लड़ने को जर्मनी भेजे। जेम्स की समझ में यह बात आ गई कि बिना तलवार से काम लिये न तो यूरप में शान्ति ही स्थापित हो सकती है और न पेलेटायन ही फ्रेडरिक को वापस मिल सकता है। अतः वह फ्रेडरिक के लिये सहायता भेजने को उद्यत हो गया। एक सेना जर्मनी के लिये शीघ्र तैयार हुई। उसका सेनापति मेन्सफेल्ड (Mansfeld) उसे लेकर जर्मनी को चला। परन्तु यह सेना अत्यन्त स्वल्प थी। दूसरे न इसके पास पहिनने को वस्त्र थे और न खाने को भोजन सामग्री। बहुत से सैनिक युद्ध करना तक न जानते थे। अभी मेन्सफेल्ड इच्छित स्थान तक पहुच भी न पाया था कि अंग्रेजी सरकार ने उसे दूसरी ओर भेज दिया।

वर्जीनिया का उपनिवेश, १६०७ ई०—जेम्स के शासन काल में इङ्गलेण्ड को बाह्य राज्य में बिल्कुल सफलता प्राप्त न हुई। हाँ अंग्रेजी नाविकों ने उत्तरी अमेरिका के पूर्वी किनारे पर दो बस्तियां सफलतापूर्वक बसाईं। यह वर्जीनिया और "नवीन इङ्गलैण्ड" (New England) की बस्तियां थीं। वर्जीनिया के बसाने का प्रयत्न एलिजबेथ के समय में भी किया गया था, परन्तु कुछ कारणवश, जिसका स्पष्ट वर्णन पूर्व हो चुका है, अंग्रेजी मल्लाहों का प्रयत्न सफल न हो सका था। सन् १६०७ ई० में कुछ अङ्गरेजी मल्लाह पुनः उत्तरी अमेरिका गये और वर्जीनिया को नये सिरे से बसाया। इस बार इसने अच्छी उन्नति की। कुछ दिनों पश्चात् इसके चारों ओर और उपनिवेश भी बस गये।

पिलग्रिम फ़ादर्स, १६२० ई०—वर्जीनिया के बसने के १३ वर्ष पश्चात् अङ्गरेजों ने अमेरिका की पूर्वी किनारे पर एक और नई बस्ती बसाई। इसके बसानेवाले प्यूरिटन थे जो जेम्स के अत्याचारों

से दुखित होकर बड़ी संख्या में इङ्गलैण्ड छोड़ कर हालैण्ड चले गये थे और वहीं रहने लगे थे। यहाँ उन्हें पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त था। कुछ समय पश्चात उन्हें अमेरिका में एक नवीन उपनिवेश बसाने का विचार हुआ। सन् १६२० ई० में से कुछ इङ्गलैण्ड लौट आये और जम्स से प्रार्थना की कि यदि आप आज्ञा दें तो हम अमेरिका चले जावें और वहीं बस जावें। जेम्स ने उनकी बात स्वीकार कर ली। लगभग



पिलग्रिम फादर्स इङ्गलैण्ड से विदा हो रहे हैं।

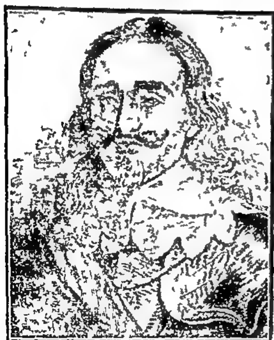
१०० प्यूरिटन एक जहाज में बैठ कर जिसका नाम मेफ्लावर (May flower) था, अमेरिका को चले। यही वीर प्यूरिटन, जो अपना धर्म स्थापित रखने के लिये अटलाण्टिक महासागर को पार कर के उत्तरी अमेरिका पहुचे, पिलग्रिम फादर्स (Pilgrim Fathers) के नाम से

चौबीसवां अध्याय

चार्ल्स प्रथम

(१६२५–१६४९)

चार्ल्स का चरित्र—चार्ल्स प्रथम जेम्स से प्रत्येक बात में अच्छा था। वह उस से अधिक सुन्दर और शिक्षित था। वह अंग्रेजी गिर्जा के कट्टर अनुयायियों में से था। उसके चरित्र में सब से बड़ा दोष यह था कि वह घटनाओं की वास्तविकता लेशमात्र न समझ पाता था। फिर इसमें आश्चर्य ही क्या है जो चार्ल्स आन्तरिक तथा वाह्य नीतियों में असफल हुआ। उसकी हार्दिक इच्छा थी कि प्रजा से अच्छा व्यवहार करे। परन्तु उसका संग अच्छा न था। उसके दर्बारी उसे सदा अपने वश में रखते थे जिसके कारण चार्ल्स अपनी इच्छानुसार कोई कार्य्य न कर पाता



चार्ल्स प्रथम।

था । जेम्स के समान वह भी प्रजा को पशुतुल्य समझता था* और अपने आप को ईश्वर का अंश मानता था । वह आलसी और हठी भी था । जनता उस पर बहुत कम विश्वास करती थी । कारण कि वह प्रतिज्ञा करने को सदैव अग्रसर रहता परन्तु वह प्रतिज्ञाओं को पूरा करना जानता ही न था । धूर्तों ने उसका अन्त कर दिया । चार्ल्स अपने पिता की तरह भांति २ के मन्सूबे बाँधा करता था, परन्तु मन्सूबों को कार्यरूप परिणत करने की योग्यता उस में तनिक भी न थी ।

(अ) बाह्यनीति । (Foreign Policy)

चार्ल्स और तीसवर्षीय युद्ध—यूरपीय महाद्वीप के झगडे अभी तक शान्त नहीं हुये थे । जर्मनी में तीसवर्षीय युद्ध ज्यों का त्यों चल रहा था । फ्रेडरिक की बराबर पराजय होरही थी । जेम्स की भेजी हुई सेना जर्मनी तक पहुँच भी न पाई थी । जेम्स का पुत्र और बकिंघम दूसरी सेना जर्मनी न भेजना चाहते थे । उन्हों ने प्रोटेस्टेण्टों की सहायतार्थ केवल चौबीस सहस्र पौण्ड भेजे । इस से अधिक उन्हों ने फ्रेडरिक की सहायता अन्य रीति से न की ।

केडिज पर आक्रमण—चार्ल्स और बकिंघम के जर्मनी सेना न भेजने का एक विशेष कारण यह था कि वे जेम्स प्रथम की भांति यह सोचते थे कि स्पेन पर आक्रमण करने से इस देश का राजा पेलेटायन फ्रेडरिक को लौटा देगा और तीसवर्षीय युद्ध के रोकने का भरसक उपाय करेगा । अत उन्हों ने अंग्रेजी सेना स्पेन के प्रसिद्ध बन्दरगाह केडिज

*चार्ल्स के विषय में अंग्रेजी इतिहासलेखक गार्डनर लिखता है कि वह मनुष्यों को दो भागों में बाँटे हुये था । प्रथम भेंडें, जिनका पालन पोषण आवश्यक था । द्वितीय बकरियाँ, जिनका मरना ही अच्छा था ।

पर आक्रमण करने को भेजी । केडिज पहुँच कर सेना को सूचना मिली कि शत्रुसेना कुछ दूर पड़ी है । अंग्रेजी सैनिक आँख बन्द किये उसी कल्पित सेना की खोज में लगे । किसी ने इस बात की लेश मात्र चिन्ता न की कि उनके पास भोजन सामग्री है या नहीं । जब बहुत दूर निकल गये तब सावधान हुये । इधर उधर ढूढने पर एक ग्राम में पर्य्याप्त मदिरा प्राप्त हुई । सब ने मन भरके मदिरा पी और मदमत्त हो कर वहीं सो रहे । यह उनका सौभाग्य था कि शत्रु उनकी घात में न थे । यदि वे घात में होते तो समस्त अङ्गरेजी सेनाका अन्त हो गया होता । अन्त में सेना केडिज लौट आई । उसने नगर पर धावा किया, परन्तु वह उसे विजय न कर सकी । विवश हो उसे इङ्गलैण्ड लौट आना पड़ा* । केडिज की सेना के निष्फल लौटने से इङ्गलैण्ड का बड़ा अनादर हुआ । यदि चार्ल्स बकिंघम की बातों में न आजाता तो उसे यह अपयश कभी न भोगना पड़ता ।

रूही टापू पर आक्रमण, १६२७ ई०—जब केडिज की सेना से कुछ न बन पड़ा तो बकिंघम ने फ्रांस के प्रसिद्ध मन्त्री रिशल्यू (Richelieu) को प्रोटेस्टेण्टो की ओर से तीसवर्षीय युद्ध में भाग लेने को लिखा । परन्तु रिशल्यू ने कुछ उत्तर न दिया । अत बकिंघम उस से बैर करने लगा । चार्ल्स और हेनरिटा के विवाह के अवसर पर फ्रांस के राजा और रिशल्यू ने जेम्स और चार्ल्स से यह प्रतिज्ञा कराली थी कि वे इङ्गलैण्ड के रोमन कैथोलिकों पर दया रक्खेंगे और आपत्ति पड़ने पर फ्रांस को भी सहायता देने से विमुख न होंगे । फ्रांस में इस समय

*एक अंग्रेजी गीत इस सेना की हार का वर्णन इस प्रकार से करता है—

There was a fleet that went to Spain,
When it got there, it came back again

तेरहवें लुई और प्रोटेस्टेण्ट के बीच जो ह्यूजोनोज कहलाते हैं, युद्ध छिड़ा हुआ था। लुई ने चार्ल्स को सहायता के लिये लिखा, परन्तु चार्ल्स लाचार था। वह और इङ्गलैण्ड की पार्लियामेण्ट प्रोटेस्टेण्ट के विरुद्ध सेना भेजने को उद्यत न थे। समय बिताने के लिये उन्होंने जान बूझ कर अङ्गरेजी सेना में विद्रोह करा दिया जिसके कारण लुई को सहायता माँगने का अवसर न मिला। लुई की सेनायें रिशलू के आधिपत्य में ह्यूजोनोज का केन्द्र ला रोशिली (La Rochelle) का घेरा डाले पड़ी थीं। चार्ल्स ने लुई तथा रिशलू से युद्ध करने को एक सेना जलमार्ग से ला रोशिली भेजी। इसका नेता बकिंघम था। उस ने र्‌ही (Rhe) टापू के एक गढ़ के चारों ओर घेरा डाल दिया, परन्तु अङ्गरेजी सेना निर्बल होने के कारण गढ़ को न ले सकी। बकिंघम को लाचार होकर इङ्गलैण्ड लौट आना पड़ा। अङ्गरेजी सर्कार के फ्रांस से शत्रुता करने का केवल यह फल हुआ कि कुछ समय तक इङ्गलैण्ड और फ्रांस में से कोई जर्मनी के प्रोटेस्टेण्ट के लिये कुछ न कर सका।

बकिंघम का वध. १६२८ ई०—अंग्रेजी पार्लियामेण्ट यह बात भली प्रकार जान गई थी कि र्‌ही टापू में अंग्रेजी सेना की पराजय केवल बकिंघम की अयोग्यता के कारण हुई है। उसने एक बार फिर पार्लियामेण्ट से धन स्वीकृत करा के एक अंग्रेजी सेना र्‌ही टापू के लिये तैयार की। इस बार भी वह बकिंघम के आधिपत्य में थी। बकिंघम पोर्टस्मथ के बन्दरगाह तक पहुँच गया था। वहाँ वह एक दिन अपने कमरे में बैठा भोजन कर रहा था। ज्योंही भोजन करके बाहर निकला त्योंही एक मनुष्य ने जो उसकी घात में था, एक चाकू उसकी गर्दन में भोंक दिया* चाकू का लगना था कि बकिंघम कांपता हुआ पृथ्वी पर

* बकिंघम के वधिक का नाम जान फेल्टन ('John Felton) था। बकिंघम ने उसे सेना से निकाल दिया था अतः फेल्टन उसके रक्त का तृषित था।

पर आक्रमण करने को भेजी। केडिज पहुँच कर सेना को सूचना मिली कि शत्रुसेना कुछ दूर पड़ी है। अंग्रेजी सैनिक आंख बन्द किये उस कल्पित सेना की खोज में लगे। किसी ने इस बात की लेश मात्र चिन्ता न की कि उनके पास भोजन सामग्री है या नहीं। जब बहुत दूर निकल गये तब सावधान हुये। इधर उधर ढूंढने पर एक ग्राम में पर्य्याप्त मदिरा प्राप्त हुई। सब ने मन भरके मदिरा पी और मदमत्त हो कर वहीं सो रहे। यह उनका सौभाग्य था कि शत्रु उनकी घात में न थे। यदि वे घात में होते तो समस्त अङ्गरेजी सेना का अन्त हो गया होता। अन्त में सेना केडिज लौट आई। उसने नगर पर धावा किया, परन्तु वह उसे विजय न कर सकी। विवश हो उसे इङ्गलैण्ड लौट आना पड़ा*। केडिज की सेना के निष्फल लौटने से इङ्गलैण्ड का बड़ा अनादर हुआ। यदि चार्ल्स बकिंघम की बातों में न आजाता तो उसे यह अपयश कभी न भोगना पड़ता।

रूही टापू पर आक्रमण, १६२७ ई०—जब केडिज की सेना से कुछ न बन पड़ा तो बकिंघम ने फ्रान्स के प्रसिद्ध मन्त्री रिशलू (Richelieu) को प्रोटेस्टेण्टों की ओर से तीसवर्षीय युद्ध में भाग लेने को लिखा। परन्तु रिशलू ने कुछ उत्तर न दिया। अतः बकिंघम उस से बैर करने लगा। चार्ल्स और हेनरिटा के विवाह के अवसर पर फ्रांस के राजा और रिशलू ने जेम्स और चार्ल्स से यह प्रतिज्ञा कराली थी कि वे इङ्गलैण्ड के रोमन कैथोलिकों पर दया रक्खेंगे और आपत्ति पड़ने पर फ्रांस को भी सहायता देने से विमुख न होंगे। फ्रांस में इस समय

---

*एक अंग्रेजी गीत इस सेना की हार का वर्णन इस प्रकार से करता है —

There was a fleet that went to Spain,
When it got there, it came back again

तेरहवें लुई और प्रोटस्टेण्ट के बीच जो ह्यूजोनोज कहलाते हैं, युद्ध छिड़ा हुआ था। लुई ने चार्ल्स को सहायता के लिये लिखा, परन्तु चार्ल्स लाचार था। वह और इङ्गलेण्ड की पार्लियामेण्ट प्रोटेस्टेण्ट के विरुद्ध सेना भेजने को उद्यत न थे। समय बिताने के लिये उन्होंने जान बूझ कर अङ्गरेजी सेना में विद्रोह करा दिया जिसके कारण लुई को सहायता माँगने का अवसर न मिला। लुई की सेनायें रिशलू के आधिपत्य में ह्यूजोनोज का केन्द्र ला रोशिली (La Rochelle) का घेरा डाले पड़ी थीं। चार्ल्स ने लुई तथा रिशलू से युद्ध करने को एक सेना जलमार्ग से ला रोशिली भेजी। इसका नेता बकिंघम था। उस ने रूही (Rhe) टापू के एक गढ़ के चारों ओर घेरा डाल दिया, परन्तु अङ्गरेजी सेना निर्बल होने के कारण गढ को न ले सकी। बकिंघम को लाचार होकर इङ्गलेण्ड लौट आना पड़ा। अङ्गरेजी सर्कार के फ्रांस से शत्रुता करने का केवल यह फल हुआ कि कुछ समय तक इङ्गलैण्ड और फ्रांस में से कोई जर्मनी के प्रोटस्टेण्ट के लिये कुछ न कर सका।

बकिंघम का वध. १६२८ ई०—अंग्रेजी पार्लियामेण्ट यह बात भली प्रकार जान गई थी कि रूही टापू में अंग्रेजी सेना की पराजय केवल बकिंघम की अयोग्यता के कारण हुई है। उसने एक बार फिर पार्लियामेण्ट से धन स्वीकृत करा के एक अंग्रेजी सेना रूही टापू के लिये तैयार की। इस बार भी वह बकिंघम के आधिपत्य में थी। बकिंघम पोर्टस्मथ के बन्दरगाह तक पहुँच गया था। वहाँ वह एक दिन अपने कमरे में बैठा भोजन कर रहा था। ज्योंही भोजन करके बाहर निकला त्योंही एक मनुष्य ने जो उसकी घात में था, एक चाकू उसकी गर्दन में भोंक दिया* चाकू का लगना था कि बकिंघम कांपता हुआ पृथ्वी पर

* बकिंघम के वधिक का नाम जान फेल्टन (John Felton) था। बकिंघम ने उसे सेना से निकाल दिया था अतः फेल्टन उसके रक्त का तृषित था।

गिर पड़ा। तत्काल उसके प्राण निकल गये। बकिंघम की गणना उन नीच मन्त्रियों में है जो स्वदेश के नाम को दूषित करते हैं। यदि बकिंघम चार्ल्स का सम्मतिदाता न होता तो अंग्रेजी राजा को उन विपत्तियों का सामना न करना पड़ता जो उसके शासन के प्रारम्भ में आईं।

चार्ल्स की अस्फूर्ति, १६२८-४६—बकिंघम के अन्त के साथ २ चार्ल्स की वाह्यनीति का भी अन्त आ जाता है। सन् १६२८ ई० के पश्चात् चार्ल्स ने यूरप के झगड़ों में भाग लेना बन्द कर दिया। इसका विशेष कारण यह था कि अब चार्ल्स तथा उसकी पार्लियामेण्ट में विरोध प्रारम्भ होगया था जिसके कारण राजा को विदेशी बातों की देखभाल का अवकाश न मिलता था।

(ब) चार्ल्स की प्रथम तीन पार्लियामेण्ट (१६२५-२६)

चार्ल्स और पार्लियामेन्ट के बीच विग्रह के कारण—जेम्स प्रथम के समान चार्ल्स भी स्वयं को ईश्वर का अंश मानता था और इङ्गलेण्ड की प्रजा को तुच्छ समझता था। वह उसके ऊपर प्रत्येक प्रकार का अत्याचार करता था जिस के कारण पार्लियामेण्ट उस से अत्यन्त क्रुद्ध रहती थी। चार्ल्स रोमन कैथोलिकों पर विशेष कृपा करता था। उसका मन्त्री भी अच्छा न था। पार्लियामेण्ट उसकी वाह्यनीति से सहानुभूति न रखती थी। चार्ल्स अनर्थक कार्यों में धन नष्ट कर देता था जिसके कारण प्रजा को अनेकों असह्य कर देने पड़ते थे। बहुधा वह पार्लियामेण्ट की आज्ञा के बिना हेनरी सप्तम और जेम्स प्रथम की भांति लोगों से बलात् ऋण (Benevolences) उगाह लेता था और जो देना स्वीकार न करता उस पर स्टार चेम्बर जैसे न्यायालयों द्वारा अत्याचार करता था। न्यायाधीश पहले की भांति राजा की आज्ञा मानने को तैयार थे और सदा उसके साथ हाँ में हाँ मिलाते रहते थे। प्रायः ऐसा होता

कि चार्ल्स बिना अपराध मनुष्यों को कारागृह में भेज देता था और उनके अभियोग के निर्णय की वर्षों तक बारी न आती थी। कभी२ ऐसे मनुष्यों का सारा जीवन निर्णय की प्रतीक्षा में कारागृह ही में बीतता था। जब कोई ग्राम अथवा नगर एका करके राजा का विरोध करता, तो चार्ल्स युद्ध सम्बन्धी नियम (Martial Law) से काम लेता था। जब धन की कमी होती तो वह लोगों को सैनिकों के रहन सहन तथा भोजन का प्रबन्ध करने को विवश करता था।

प्रथम दो पार्लियामेन्ट, १६२५ व २६ ई०—अंग्रेजी राष्ट्र इन बुराइयों को दूर करने का उपाय सोच रही थी। अत जब सन् १६२५ ई० में प्रथम पार्लियामेण्ट की बैठक हुई तो उसके सदस्यों ने इनके दूर करने का प्रयत्न किया। पार्लियामेण्ट ने धन स्वीकार करने से कोरा जवाब दे दिया और टनेज तथा पौण्डेज भी केवल एक वर्ष के लिये स्वीकार किये। तत्पश्चात् एक सदस्य ने राजा के मित्रों पर अभियोग लगाने की सम्मति दी। यह सुनकर चार्ल्स बहुत बिगड़ा और उसने पार्लियामेण्ट भङ्ग कर दी। सन् १६२६ ई० में दूसरी पार्लियामेण्ट का बैठक हुई। इसका सब से प्रसिद्ध सदस्य जान इलियट था। इस समय तक वह सेना, जो बकिंघम की अध्यक्षता में ह्यूजोनाज की सहायता के लिये ला रोशिल्ल गई थी, इङ्गलैण्ड लौट आई थी। पार्लियामेण्ट ने बकिंघम को इस सेना की पराजय का कारण निश्चित किया और उस पर सर्कारी धन निजी कार्य्यों में व्यय करने और अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों को धन तथा उपाधियां प्रदान करने का अपराध लगाया। सर जॉन इलियट ने, जिसके हृदय में यौवनावस्था का उत्साह भरा था, बकिंघम पर अभियोग चलाने का प्रस्ताव उपस्थित किया*। परन्तु चार्ल्स

*इलियट ने सदस्यों का ध्यान बकिंघम की वेशभूषा की ओर आकर्षित करके कहा, "सदस्यो, जरा इस अमीर के जवाहिरों पर दृष्टि

ने अपने मित्र के प्राण बचाने को पालियामेण्ट भङ्ग करदी। सभासद अपना सा मुंह लिये घर लौट गये ।

तीसरी पार्लियामेन्ट, १६२८ ई०—सन् १६२८ ई० में नव चार्ल्स को विदेशी झगड़ों के लिये धन की आवश्यकता हुई तो उसने विवश हो तीसरी बार पार्लियामेण्ट बुलाई । इसके सदस्य अबकी बार सब प्रकार से तैयार हो कर आये थे । इन में सब से श्रेष्ठ इलियट के अतिरिक्त वेण्टवर्थ (Wentworth), पिम (Pym) और हैम्पडन



पिम ।

टाले । इसके सरकारी धन हरण करने का इससे अधिक और क्या प्रमाण हो सकता है ।"

(Hampden) थे। ये सब के सब युवा, साहसी, उत्साही और युद्ध
य थे। प्रजा ने इनको चार्ल्स के अत्याचारों के रोकने के लिये भेजा था।

पिटीशन आफ् राइट, १६२८ ई०—पार्लियामेण्ट की बैठक
कुछ दिवस पूर्व चार्ल्स ने पाँच मनुष्यों को ऋण न देने के अपराध
बन्दी कर लिया था। प्रजा के हर प्रकार से यत्न करने पर भी राजा
उन्हें न छोड़ा। हाउस आफ कॉमन्स के सदस्यों को बहुत बुरा लगा।
न्होंने साहस करके राजा के विरुद्ध एक प्रसिद्ध नियम बनाया जो
पिटीशन ऑफ राइट' (Petition of Right) के नाम से प्रसिद्ध है।
स से निम्नलिखित चार बातें निश्चित हुईं —

(१) राजा पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के बिना न कर लगायेगा और
धन ही उधार लेगा। (२) राजा अकारण किसी मनुष्य को बन्दीगृह न
जेगा और जो अभियुक्त होंगे उनके अभियोग की जाँच तुरन्त होगी।
(३) युद्ध की अनुपस्थिति में राजा युद्ध सम्बन्धी नियमों से काम न
गा। (४) राजा इस बात का प्रजा पर दबाव न डालेगा कि वह सेना
अपने घर रक्खे और उसके रहने और भोजन का प्रबन्ध करे।

पिटीशन ऑफ राइट इङ्गलैण्ड के इतिहास में एक उच्च स्थान पाये
हुये है। यदि उसे सन् १२१५ ई० के महान् चार्टर के बराबर स्थान
दिया जाय तो अनुचित न होगा। यह पहली विजय थी जो प्रजा ने
शताब्दियों पश्चात् राजा पर प्राप्त की। इस नियम के बनने के कुछ
समय उपरान्त पार्लियामेण्ट और राजा में फिर खटक गई। पार्लियामेण्ट
ने राजा पर यह अभियोग लगाया कि वह 'पिटीशन ऑफ राइट' के
अनुसार काम नहीं करता। चार्ल्स ने पार्लियामेण्ट के भङ्ग होने की आज्ञा
दी, परन्तु ऐसा होने के पूर्व दो सभासदों ने मिल कर प्रधान को पकड़
लिया और उससे बैठने का आग्रह किया *। फिर क्या था बचे हुये

*जब तक प्रधान उपस्थित रहता है पार्लियामेण्ट भङ्ग नहीं समझी जाती।

सभासदों ने कमरे के दरवाजे बन्द करके चार्ल्स और उसके साथियों क
विरुद्ध तीन नियम और बनाये। इन नियमों को बना कर पार्लियामेण्ट
सन् १६२९ ई० में स्वयं भङ्ग हो गई। तत्पश्चात् चार्ल्स ने ग्यारह वर्ष
पर्य्यन्त बिना पार्लियामेण्ट के राज्य किया। ये ग्यारह वर्ष इङ्गलैण्ड क
इतिहास में 'एकादशवर्षीय अनीति राज्य' (Eleven Years' Tyrann),
के नाम से प्रसिद्ध हैं। सन् १६२९ ई० में राजा और पार्लियामेण्ट के पार
स्परिक विरोध का पहिला दृश्य समाप्त हो कर दूसरा प्रारम्भ होता है।

(स) एकादशवर्षीय अनीति राज्य (१६२९–४०)

चार्ल्स के सम्मतिदाता–वेण्टवर्थ, १६२८–४० ई०—
इन ग्यारह वर्षों में चार्ल्स के दो मुख्य सम्मतिदाता थे। प्रथम वेण्टव
और द्वितीय, लॉड (Laud)। वेण्टवर्थ यार्क प्रान्त का निवासी था
पार्लियामेण्ट का सदस्य बनने पर प्रथम वह राजा की ओर था। इस
पश्चात् वह प्रजा के भेजे हुये सदस्यों से आ मिला, और पिटीशन ऑ
राइट जैसे नियम चार्ल्स के विरुद्ध बनवाये। बकिंघम के वध के उपरा
उसने पुनः रँग बदला और वह राजा के साथियों से जा मिला। कार
यह था कि वेण्टवर्थ धनी, लोभी, स्वार्थी और उपाधियों का भूखा था
चार्ल्स ने उसे उच्च पद प्रदान करके उत्तरी प्रान्तों का गवर्नर नियुक्त कि
और कुछ समय बीतने पर उसे आयरलैण्ड का शासक बना दिया। स
१६३९ ई० में, जब घरेलू युद्ध आरम्भ होनेवाला था, चार्ल्स ने वेण्टव
को आयरलेण्ड से बुला कर अर्ल ऑफ स्ट्रेफर्ड (Earl of Strafford
की उपाधि प्रदान की। वेण्टवर्थ सदैव अपने स्वामी को प्रजा
अत्याचार करने और ट्यूडर राजाओं के प्रभुत्व तथा शक्ति के लौटाने क
सम्मति देता था।

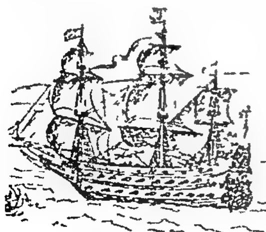
लॉड और अंग्रेज़ी गिर्जा—लॉड वेण्टवर्थ का परम मि
और अंग्रेजी गिर्जा का आर्चबिशप था। चार्ल्स उस पर बहुत विश्वा

करता था। वेण्टवर्थ के समान लाड भी प्रभावशाली, अभिलाषी और अत्याचारी शासक था। अंग्रेजी गिर्जा का सब से बड़ा अधिकारी होने पर भी वह प्यूरिटनों की अपेक्षा पोप के अनुयायियों के साथ कृपा भाव रखता था। अत यह तनिक भी आश्चर्य की बात न थी कि उसके दुर्व्यवहार के कारण सन् १६२८ ई० और सन् १६४० ई० के बीच २० सहस्र प्यूरिटन 'पिलग्रिम फादर्स' की भांति इङ्गलेण्ड छोड़ कर अमेरिका चले गये और वहीं रहने लगे।

राजा का अत्याचार—वेण्टवर्थ और लाड की सम्मति से चार्ल्स ने जान इलियट और उन दो सभ्यों पर जुरमाना किया जिन्होंने हाउस ऑफ कामन्स की पिछली बैठक में प्रधान को पकड़ लिया था। इलियट ने जुरमाना न देकर कोरा जवाब दे दिया। अत चार्ल्स ने उसे बन्दीगृह का दण्ड दिया। सन् १६३२ ई० में बन्दीगृह ही में तपेदिक की बीमारी से इलियट की मृत्यु हो गई। उसके पुत्र ने इस बात का भरसक प्रयत्न किया कि अपने पिता के शव को कारागृह के बाहर लाकर दफनाये। परन्तु राजा ने ऐसा करने की आज्ञा न दी और ताना मार कर कहा—"जान-इलियट को उसी गिर्जा में दफन हो लेने दो जिसमें वह मृत्यु को प्राप्त हुआ है"। इसके उपरान्त चार्ल्स ने प्रजा पर मनमाना अत्याचार किया और पिटीशन आफ राइट को बिलकुल भुला दिया। ग्यारह वर्ष तक पार्लियामेण्ट की एक भी बैठक न हुई। अत राजा के अत्याचारों का विरोध करने का साहस किसी में भी न था। समाचारपत्र राजा के प्रतिकूल कोई बात न लिख सकते थे। गिर्जाघरों में मनुष्य उसकी प्रशंसा के सिवा कुछ न सुनते थे। चार्ल्स प्रजा से मनमाने कर उगाह रहा था। जब धन की विशेष आवश्यकता होती तो उपाधि तथा ठेके बाट कर अथवा भांति २ के कर लगा कर वह अपनी आय बढ़ा लिया करता था। जो देना स्वीकार न करता उसे स्टार चेम्बर तथा अन्य न्यायालयों द्वारा दण्ड मिलता

था । न्यायाधीशों को शासन का काम भी मिला हुआ था । अत लोगों के प्राण और भी सङ्कट में थे । लॉर्ड हाई कमीशन के न्यायालय द्वारा धार्मिक नीति को कठिन बनाये हुये था । वेण्टवर्थ आयरलैण्ड में अत्याचार कर रहा था । प्रजा की सुननेवाला ईश्वर को छोड़ कर कोई भी न था ।

जहाज़ी कर, १६३४–३६ ई०—सन् १६३४ ई० में चार्ल्स ने सरकारी वकील नॉय (Noy) की सम्मति से बन्दरगाहों के निवासियों से यह प्रार्थना की कि अङ्गरेजी जलसेना दुर्बल हो गई है। अत तुम कुछ जहाज उसे दृढ़ बनाने को दो । दूसरे वर्ष यही प्रार्थना प्रान्तों और तीसरे वर्ष समस्त नगरों से की गई । जितने बड़े जहाज चार्ल्स माग रहा था उतने बड़े जहाज किसी के पास भी न थे । अत॰ उसने जहाजों के स्थान पर जहाजी कर (Ship Money) मागना प्रारम्भ कर दिया । प्रजा को इसके देने में दो आपत्तियाँ थीं । प्रथम यह कि नवीन कर नियम के प्रतिकूल और अनावश्यक था । द्वितीय यह कि अङ्गरेजी बेड़े को दृढ़ बनाने के स्थान पर राजा इस धन को स्वयं हड़प कर जावेगा । प्रथम आपत्ति बिलकुल अनुचित थी क्योंकि ऐसा कर अञ्जन तथा ट्यूडरवंशों के समय में कई बार लग चुका था । अत चार्ल्स उसे नियम विरुद्ध न उगाहना चाहता था । सन् १६३४ ई० तक तीसवर्षीय युद्ध समाप्त न हुआ था और महाद्वीप की सारी शक्तियाँ बलवान् तथा शक्तिशाली बनी हुई थीं । अङ्गरेजी नहर में डाकुओं के दल के दल


सत्रहवी शताब्दि का एक जहाज ।

फिरते थे। अतः इङ्गलैण्ड की रक्षा के लिये शक्तिशाली जलसेना की बड़ी आवश्यकता थी। प्रजा की दूसरी आपत्ति अवश्य ठीक थी। पार्लियामेण्ट से चार्ल्स को बिल्कुल धन न मिल रहा था, और वह प्रजा पर अनुचित कर तथा जुरमाने लगा कर जीवन व्यतीत कर रहा था, अतः उसके लिये जहाजी कर को निजी कामों में व्यय करना कठिन काम न था। और सच मुच हुआ भी ऐसा ही। क्लेरेण्डन नामक राजइतिहासलेखक स्वयं इस बात को स्वीकार करता है कि चार्ल्स जहाजी कर को अंग्रेजी बेड़े के हेतु व्यय न करके कई बार स्वयं हड़प कर गया।

अत्याचार की पराकाष्ठा, १६३७ ई०—थोड़े दिनों तक प्रजा *जहाजी कर तथा चार्ल्स के लगाये हुये अन्य कर देती रही।* इसके पश्चात् जनता का साहस धीरे २ बढ़ने लगा और वह राजा के विरुद्ध मैदान में आने लगी। जून सन् १६३७ ई० में एक अद्भुत-घटना दृष्टिगोचर हुई। तीन मनुष्यों पर चार्ल्स ने लॉड की धार्मिक नीति में दोष निकालने के अपराध में पांच सहस्र पौण्ड प्रति पुरुष जुर्माना किया। उसने यह भी आज्ञा घोषित की कि इनके कान काट कर जन्म भर इन्हें कारागार में रक्खा जावे। तीनों पुरुषों ने चुपचाप जुर्माना दे दिया, परन्तु जब उनके कान काटने का समय आया तो लन्दननिवासी उनका तमाशा देखने को इकट्ठा हुये। अपराधियों में से एक मनुष्य प्रिन (Prynne) नामक वकील था। उसका एक कान पहिले ही कट चुका था। जब उसका दूसरा कान काटा गया तो लोगों की आंखों से अश्रुपात होने लगा। चारों ओर से सहानुभूति की ध्वनि उठने लगी। इसी वर्ष चार्ल्स ने जॉन लिल्बर्न (John Lilburne) को, जो स्वतन्त्रता के पक्ष में युद्ध कर रहा था, बिना अपराध कठोर दण्ड दिया। जनता समझ गई कि अब राजअत्याचार अपनी पराकाष्ठा तक पहुंच गया है, अतः उसका रोकना अति आवश्यक है।

हेम्पडन का न्याय—इस घटना के पाँच महीने पश्चात् एक और घटना ऐसी हुई जिससे प्रजा को और अधिक चेतावनी मिली। चार्ल्स ने हेम्पडन (Hampden) नामक व्यापारी से, जो बकिंघम प्रान्त का निवासी था, जहाजी कर उगाहने की आज्ञा दी। दो बार उसने प्रसन्नता पूर्वक पूरा कर दे दिया, परन्तु जब उस से तीसरी बार कर माँगा गया तो उसने स्पष्ट उत्तर दे दिया कि मैं कर नहीं दूँगा। चार्ल्स ने उसके ऊपर अभियोग लगाया। उसका अभियोग १२ न्यायाधीशों के सन्मुख उपस्थित हुआ। सात न्यायाधीशों ने यह न्याय किया कि जहाजी कर का उगाहना नियमानुकूल तथा आवश्यक है*। हेम्पडन मुकद्दमा हार गया। प्रजा को यह सुन कर बड़ा दुःख हुआ। जनता को यह प्रकट हो गया कि राजा की अनीति का अधिक सहन करना मूर्खता है। भलाई इसी में है कि सब लोग उसकी अनीति की प्रतिद्वन्द्विता वीरता के साथ करें।

स्काटलैंड की शत्रुता, १६३८ ई०—इसी बीच स्काटलैण्ड वासी भी चार्ल्स के विरोधी हो गये थे। उनकी अशान्तता के कई कारण थे। चार्ल्स ने अपना विवाह एक प्राचीन धर्मावलम्बिनी राजकुमारी हेनरिटा मेरिया से किया था। अतः स्काटलैण्डवासी जो नये मत के अनुयायी थे उससे अप्रसन्न थे। राजा बनने पर चार्ल्स ने इन से जागीरें छीनने का प्रयत्न किया, परन्तु वह सफल न हो सका। इनके विरोधी होने का एक कारण यह भी था कि चार्ल्स ने लाड के कहने से एक प्रार्थनापुस्तक स्काटलैण्ड भेजी और प्रत्येक मनुष्य के लिये उसका पढ़ना आवश्यक कर दिया। नवीन प्रार्थनापुस्तक स्काटलैण्ड की प्रार्थना पुस्तक से भिन्नता और प्राचीन धर्म की प्रार्थनापुस्तक से समानता रखती

*बर्कले नामक न्यायाधीश ने तो अपने न्याय में यहां तक लिखा कि राजा नियम है, नियम राजा कभी नहीं बन सकता है?

थी। अत जनता उसके पढने और सुनने के विरुद्ध थी, परन्तु चार्ल्स ने उनके विरोध की लेशमात्र चिन्ता न की। एक बार ऐसा हुआ कि जब नवीन प्रार्थनापुस्तक एडिनबुरु के गिर्जाघर में पढ़ा जा रही थी तो एक स्त्री ने स्टूल उठा कर पादरी के सिर पर मारा। कुछ मनुष्यों का विश्वास है कि स्टूल फेंकनेवाला पुरुष था जो स्त्री के भेष में इसी तात्पर्य से गिर्जाघर में उपस्थित हुआ था। चार्ल्स ने स्टूल फेंकनेवाले के पकड़ने की आज्ञा दी। इस पर, जब स्काटलैन्डवासी चार्ल्स के विरुद्ध सन्नद्ध हो गये, तो चार्ल्स ने प्रार्थनापुस्तक की जाच पड़ताल के लिये ग्लासगो नगर में एक सभा बिठलाई। इस सभा ने यह मत दिया कि नवीन प्रार्थनापुस्तक जो इङ्गलैण्ड से आई है, स्काटलेण्ड के योग्य नहीं है। स्काटलैण्डवासियों ने उन पादरियों को इङ्गलैण्ड लौट जाने की आज्ञा दी जिन्हें हाल में चार्ल्स और लॉड ने स्काटलैण्ड में नियुक्त किया था।

प्रथम बिशप युद्ध, १६३९ ई०—चार्ल्स स्काटलैण्डवासियों का व्यवहार देख कर बहुत रुष्ट हुआ। उसने अंग्रेजी सेनाओं के तैयार होने की आज्ञा दी। वह उन्हे साथ लेकर स्काटलैण्डवासियों से युद्ध करने को उत्तर की ओर गया। जो युद्ध हुआ उसे प्रथम 'बिशप युद्ध' (First Bishops' War) कहते हैं क्योंकि यह पादरियों के पक्ष में लड़ा गया था। युद्ध में केवल एक प्यादा मरा। कारण यह है कि युद्ध देर तक न हुआ था। जब चार्ल्स ने धन समाप्त होते देखा तो उसने शत्रु से सन्धि कर ली और वह इङ्गलैण्ड लौट गया।

(द) क्षणिक और दीर्घ पार्लियामेन्ट (१६४० -४२)।

क्षणिक पार्लियामेन्ट, १६४० ई०—इङ्गलैण्ड पहुच कर चार्ल्स धन एकत्रित करने का प्रयत्न करने लगा। इस विषय में सम्मति लेने के लिये उसने वेण्टवर्थ को आयरलैण्ड से बुला लिया और उसे 'अर्ल

आफ स्ट्रेफर्ड' की उपाधि दी । स्ट्रेफर्ड के कथनानुसार चार्ल्स ने पार्लियामेण्ट को निमन्त्रित किया । इस पार्लियामेण्ट की स्थिति केवल तीन सप्ताह तक रही । अत यह इङ्गलैण्ड के इतिहास में 'क्षणिक पार्लियामेण्ट' (Short Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है । चार्ल्स ने उस मे धन की प्रार्थना की । सभासदों ने साफ उत्तर दे दिया कि जब तक आप अपने रंग ढंग ठीक न करेंगे तब तक हम धन स्वीकार न करेंगे, परन्तु चार्ल्स ऐसा करने को उद्यत न हुआ । इसके अतिरिक्त पार्लियामेण्ट स्काटलैण्ड से युद्ध करने के विरुद्ध भी थी । अत चार्ल्स ने उसे भङ्ग कर दिया ।

दूसरा विशप युद्ध, १६४० ई०—इतने में उत्तर की ओर से स्काटलैण्डवासियों के दूसरे आक्रमण की सूचना मिली । अंग्रेजी सेना शत्रु से युद्ध करने को गई, परन्तु शीघ्र ही हार कर इङ्गलैण्ड लौट आई । चार्ल्स ने विवश होकर शत्रु से सन्धि कर ली । अब की बार सन्धि की एक मुख्य प्रतिज्ञा यह रक्खी गई कि इङ्गलैण्ड के उत्तरी प्रान्तों पर स्काटलैण्डवासियों का अधिकार उस समय तक रहेगा जिस समय तक चार्ल्स युद्ध का समस्त व्यय न दे दे ।

दीर्घ पार्लियामेण्ट की बैठक, नवम्बर १६४० ई०—चार्ल्स के पास बिल्कुल धन न था । स्काटलैण्डवासी बराबर धन माँग रहे थे । अत चार्ल्स को विवश होकर पार्लियामेण्ट पुन, बुलानी पड़ी । इस पार्लियामेण्ट की बैठक लगभग तेरह वर्ष तक रही । इतने दिनों तक और कोई पार्लियामेण्ट इङ्गलैण्ड में कभी नहीं रही, अत इसको दीर्घ पार्लियामेण्ट (Long Parliament) के नाम से पुकारते हैं । सन् १६२८ ई० की पार्लियामेण्ट की भांति इस पार्लियामेण्ट के सदस्य भी अधिकांश नव युवक, उत्साही तथा शिक्षित थे । इन में वकीलों और मध्यम श्रेणी के मनुष्यों की भी कमी न थी । पिम, हेम्पडन, हाइड, फाकलैण्ड (Falkland) और क्राम्वेल (Cromwell) इन के नेता थे । प्रजा ने सदस्यों

को राजा की क्रूरता रोकने और देश में स्वतन्त्रता की नींव डालने को भेजा था। दीर्घ पार्लियामेण्ट इस उद्देश में बहुत बड़ी सीमा तक सफल हुई।



आलीवर क्राम्वेल।

स्ट्रैफर्ड तथा लॉड का अन्त—पहला प्रजाहित का कार्य दीर्घ पार्लियामेण्ट ने यह किया कि उसने चार्ल्स के मित्र तथा सम्मतिदाताओं पर भिन्न २ अपराध लगा कर अभियोग चलाये। चार्ल्स के बहुधा मित्र तथा सम्मतिदाता जान बचा कर महाद्वीप को चले गये, परन्तु स्ट्रैफर्ड और लाड ऐसा न कर सके। इन दोनो पर अभियोग चले और दोनों के दोनों बन्दी कर लिये गये। स्ट्रैफर्ड को सन् १६४१ ई० में फांसी हुई। चार्ल्स ने उसके बचने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वह सफल न हो सका। स्ट्रैफर्ड ने भी मरते समय वही शब्द उच्चारण किये जो लगभग सौ वर्ष पूर्व वुल्जे ने उच्चारण किये थे। वह बोला—"राजाओं पर कभी विश्वास न करना चाहिये क्यों कि इनकी मित्रता स्थायी नहीं होती"। लॉड की बारी स्ट्रैफर्ड के मरने के चार वर्ष पश्चात् आई। सन् १६४५ ई० में दीर्घ पार्लियामेण्ट ने उसका शीश भी उतरवा लिया। पार्लियामेण्ट ने महारानी हेनरिटा मेरिया को भी अपने पति को कुसम्मति देने के अपराध में दण्ड देने का प्रयत्न किया, परन्तु वह इस में सफल न हुई*।

राजनैतिक सुधार—इसके पश्चात् दीर्घ पार्लियामेण्ट ने स्काटलेण्डवासियों को धन देकर इङ्गलेण्ड से लौटा दिया और अपनी बैठक बनाये रखने के हेतु यह नियम बना दिया कि वर्तमान पार्लियामेण्ट राजा की आज्ञा से भङ्ग नहीं होगी और उसकी बैठक जब तक वह चाहेगी स्थिर रहेगी। हाई कमीशन तथा स्टार चेम्बर जैसे न्यायालय बन्द कर दिये गये। जिन मनुष्यों को इन न्यायालयों ने वर्षों से बिना अपराध बन्दी कर रक्खा था उन सब को स्वतन्त्रता प्रदान हुई। जब यह मनुष्य मुक्त होकर अपने घर लौट कर गये तो समस्त राष्ट्र से प्रसन्नता की ध्वनि उठी। पिम और हेम्पडन ने प्रयत्न करके जहाजी कर और अनु

* मेरियट नामी इतिहासलेखक तो मेरिया को चार्ल्स की फांसी तक की उत्तरदायिनी ठहराता है।

चित जुर्माने स्थगित करा दिये और राजा को टनेज तथा पौण्डेज भी केवल दो ही वर्ष के लिये स्वीकार किये। राजा को आज्ञा हुई कि वह उपाधियों तथा पदों को लोगों में बांट कर धन एकत्रित न करे और प्रजा को ऋण देने के लिये भी विवश न करे। इन सुधारों के कारण स्टुअर्टवंश का अनाचार तथा अत्याचार कुछ काल के लिये विदा हो गये। तलवार से काम लेने के सिवा चार्ल्स के लिये राष्ट्र से बदला लेने का अब कोई अन्य उपाय न था।

यों तो दीर्घ पार्लियामेण्ट ने बहुत कुछ कर दिखाया था, परन्तु धर्म के विषय में उसने अभी तक कुछ भी निश्चय न किया था। स्ट्रेफर्ड तथा लॉड को दण्ड अवश्य मिला था, परन्तु इसका कुछ भी प्रबन्ध न हुआ था कि राजा भविष्य में अपने सम्मतिदाताओं को पार्लियामेण्ट की इच्छा के अनुकूल नियत करेगा अथवा नहीं। यह बात भी अभी तक निश्चित न हुई थी कि सेना का प्रबन्ध राजा करेगा अथवा पार्लियामेण्ट*। इस कमी का बुरा परिणाम आयरलेण्ड के विद्रोह के समय प्रतीत हुआ।

आयरलैण्ड का विद्रोह तथा दलबन्दी, १६४१ ई०— अङ्गरेजी सरकार ने आयरलेण्डनिवासियों की जागीरें छीन कर अङ्गरेजों तथा स्काटलैण्डनिवासियों को सौंप दी थीं और उन पर अन्य रीतियों से भी अत्याचार किया था। स्ट्रेफर्ड के इङ्गलेण्ड लौट आने से आयरलैण्ड निवासियों का साहस बहुत बढ़ गया। उन्होंने सन् १६४१ ई० में विद्रोह करके बहुत से अंग्रेज वध कर दिये। एक अङ्गरेजी सेना आयरलैण्ड के लिये तैयार हुई, परन्तु यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि इस सेना का सेनापति राजा नियत करेगा अथवा पार्लियामेण्ट। पार्लियामेण्ट के

*इङ्गलैण्ड में इस समय तक स्थायी सेनायें न रक्खी जाती थीं। कुछ देशवासियों को युद्धविद्या सिखा कर घर लौट जाने की आज्ञा दे दी जाती थी और युद्ध के समय उन्हें बुला लिया जाता था।

कतिपय सदस्यों को यह भय था कि यदि सेनापति को राजा नियत करेगा तो कदाचित् ऐसा न हो कि आयरलैण्ड के विद्रोह को शान्त करके वह पार्लियामेण्ट पर छापा मार दे और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता को दैव के लिये विदा कर दे। परन्तु फाकलैण्ट तथा हाइड की यह सम्मति थी कि सेनापति को चार्ल्स ही नियत करे। अंग्रेजी गिर्जा के बडे २ पादरियों का भी यही मत था। इस मतभेद के कारण पार्लियामेण्ट में दो दल बन गये। एक दल राजा के पक्षपातियों का बना। फाकलेण्ड तथा हाइड इस दल के नेता थे। दूसरा दल राष्ट्रीय शूरवीरों का था जो राजा के विरोधी थे और पिम तथा हेम्पडन के आधिपत्य में उसे नीचा दिखाने का प्रयत्न कर रहे थे। उस समय से यह दल आज तक उपस्थित हैं और समय २ पर भिन्न २ नामों से पुकारे जाते रहे हैं।

ग्राण्ड रिमान्सट्रेन्स, १६४१ ई०—राष्ट्रीयदल ने अपनी शक्ति को कम होते देख बडी बुद्धिमत्ता तथा चतुराई से काम लिया। राजा के पक्षपाती पार्लियामेण्ट में अवश्य शक्तिमान् हो रहे थे, परन्तु जनता का उत्साह अभी तक कम न हुआ था क्योंकि अंङ्गरेजी राष्ट्र चार्ल्स को उचित मार्ग पर लाने का उपाय अभी तक कर रही थी। अतः राष्ट्रीय एकता बढाने के अभिप्राय से पिम तथा हेम्पडन ने एक सूची (Grand Remonstrance) राजा के ऐसे कामों की तैयार की जो उसने प्रजा के प्रतिकूल किये थे। इसके अन्तर्गत वे बातें भी लिखी गई जो देश की स्वतन्त्रता के स्थापित रखने के लिये आवश्यक दिखाई पडती थीं। इनमें मुख्य दो बातें ये थी कि भविष्य में राजा पार्लियामेण्ट की इच्छा के विरुद्ध मन्त्री और सम्मतिदाताओं को न रक्खेगा और अङ्गरेजी गिर्जा के सुधार के लिये पार्लियामेण्ट पादरियों की एक सभा नियत करेगी जिसको भङ्ग करने का अधिकार राजा को प्राप्त न होगा। इन बातों पर बड़ा वादाविवाद हुआ यहा तक कि रात्रि के बारह बज गये, परन्तु पार्लियामेण्ट

का वठक ज्यों की त्यों होती रही। प्रात ४ बजे 'ग्राण्ड रिमान्सट्रेन्स' केवल ग्यारह वोटों से पास हो गया। कहते हैं कि सभासदों ने जोश में आकर अपनी तलवारें निकाल ली थीं। ऐसा प्रतीत होता था कि मानों समस्त पार्लियामेण्ट मदमत्त हो रही है *। ग्राण्ड रिमान्सट्रेन्स के पास हो जाने से यह बात पूर्णतया सिद्ध हो गई कि राष्ट्रीयदल की शक्ति अभी कम नहीं हुई है जैसा कि पिम तथा हेम्पडन को भय था।

"चिड़ियां उड़ गई हैं"—दीर्घ पार्लियामेण्ट के बल को देख कर चार्ल्स बहुत विकल होरहा था। राजा का वह घमण्ड जिस पर ट्यूडर राजाओं को गर्व था नाश को प्राप्त हो चुका था। राष्ट्रीय शक्ति प्रति दिन बढ़ रही थी, परन्तु चार्ल्स इस बात का दृढ विचार कर चुका था कि वह दीर्घ पार्लियामेण्ट से बदला अवश्य लेगा। विशेषत वह यह चाहता था कि उन सभासदों को अवश्य नीचा दिखावे, जिन्होंने ग्राण्ड रिमान्स ट्रेन्स के पास कराने का प्रयत्न किया था। इन में हेम्पडन, पिम और अन्य तीन सदस्य मुख्य थे। एक दिन अवसर पाकर चार्ल्स उन्हें पकड़ने को चार सौ हथियारबन्द सैनिकों को लेकर दीर्घ पार्लियामेण्ट पर चढ दौड़ा, परन्तु इसके पार्लियामेण्ट पहुँचने के पूर्व ही सभासदों को उसके आने की सूचना मिल चुकी थी। हेम्पडन, पिम इत्यादि जान बचा कर लन्दन में छिप रहे थे। सिपाहियों को बाहर खड़ा करके चार्ल्स पार्लिया मेण्ट के कमरे में घुस गया। चारों ओर देखा, परन्तु हेम्पडन, पिम, इत्यादि का कहीं पता न चला। वह तुरन्त पार्लियामेण्ट की चाल समझ गया और तङ्ग होकर बोला, "प्रतीत होता है कि चिड़ियाँ उड़ गई हैं"। दूसरे दिन चार्ल्स इन पाँच सभासदों की खोज में लन्दन गया परन्तु वहाँ भी उनका पता न चला।

* क्रामवेल ने पार्लियामेण्ट से घर लौटते समय फाकलेण्ड से कहा, "यदि 'ग्राण्ड रिमान्सट्रेन्स' पास न होता तो मैं इङ्गलेण्ड छोड कर चला जाता और कभी मुख न दिखाता।

युद्ध की तैयारियां, अगस्त १६४२ ई०—चार्ल्स लन्दन से उत्तर की ओर चला गया । कामनों, लार्डों और लन्दन के बडे २ व्यापारियों तथा रईसों ने एका करके चार्ल्स से युद्ध करने की तैयारियाँ आरम्भ कर दीं । अगस्त सन् १६४२ ई० में चार्ल्स ने अपना झण्डा नाटिंघम (Nottingham) के स्थान पर गाडा । अक्टूबर सन् १६४२ ई० में घरेलू युद्ध का प्रथम युद्ध हुआ ।

(२) घरेलू युद्ध (१६४२–४५) ।

कवेलियर और राउन्डहेड—घरेलू युद्ध केवल राजा और पार्लियामेण्ट में ही नहीं हुआ वरन् समस्त इङ्गलैण्ड में दो विरोधी दल बन गये थे । एक दल चार्ल्स की ओर से लडने को प्रस्तुत था और दूसरा दल पार्लियामेण्ट अथवा देश की ओर से युद्ध करने को तैयार था । राजा के दल में बडे २ अमीर सामन्त, तथा गिर्जा के कर्मचारी सम्मिलित थे । ये अपने साथ अपने आधीन कृषकों को भी युद्ध करने को लाये थे । इसके प्रतिकूल पार्लियामेण्ट का दल अधिकतः धनी व्यापारियों तथा स्वतन्त्र कृषकों से मिल कर बना था । नगरों तथा उपनगरों के निवासियों ने भी

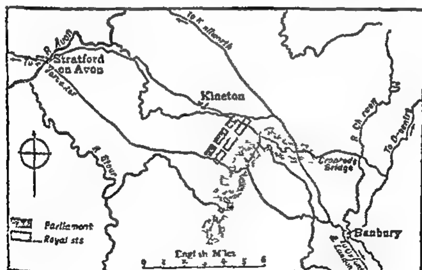


घरेलू युद्ध ।

पार्लियामेण्ट का पक्ष लिया । ये प्यूरिटन मत के अनुयायी थे और इङ्गलैण्ड की गिर्जा में परिवर्तन करना चाहते थे । चार्ल्स की सेना में युद्ध सामग्री अति उत्तम थी और सवार भी पर्याप्त संख्या में थे । इसके

विरुद्ध पार्लियामेण्ट के दल में पदचर सेना बहुत अधिक संख्या में थी और अङ्गरेजी बेडा भी उसी ओर था । घरेलू युद्ध के समय से पार्लियामेण्ट के दलवाले राउण्डहेड (Roundheads) के नाम से पुकारे जाने लगे क्योंकि ये लोग सिर के बाल मुँडवाये रहते थे और उनका सिर गेंद की भांति गोल दिखाई पडता था । इसके प्रतिकूल चार्ल्स के दल वाले कवेलियर (Cavaliers) कहलाने लगे क्योंकि ये लोग सवार थे जो लम्बे २ केश रखते थे और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखते थे ।

सन् १६४२ का संग्राम, एजहिल का युद्ध—चार्ल्स कवेलियरों को लिये नाटिंघम में पडा हुआ था । अतः पार्लियामेण्ट ने अवसर पाकर लन्दन जैसे धनी नगर पर अधिकार प्राप्त कर लिया और उसके



एजहिल का रणक्षेत्र ।

चारों ओर सेना बिठला दी जिससे चार्ल्स और उसके साथी नगर पर अधिकार न करने पावें । चार्ल्स इस बात को भली भांति समझता था कि

यदि लन्दन के धनी व्यापारी पार्लियामेण्ट का साथ देंगे तो उसकी एक न चलेगी। अतः युद्ध के प्रारम्भ में उसने लन्दन पर अधिकार करने का बहुत प्रयत्न किया। इस विचार से वह सेना लेकर मध्यस्थ प्रान्तों से होकर लन्दन की ओर बढ़ा। अभी मार्ग ही में था कि पार्लियामेण्ट की सेना के नायक एसेक्स (Essex) ने उस पर छापा मारा। एजहिल के स्थान पर विरोधी सेनाओं में संग्राम हुआ। चार्ल्स के सेनानायक रूपर्ट (Rupert) नामक ने वीरता का प्रमाण दिया, परन्तु वह एसेक्स का कुछ न बिगाड़ सका। युद्ध में दोनों दलों की समान हानि तथा लाभ हुआ जिस समय एजहिल का युद्ध समाप्त हुआ चार्ल्स की सेनायें पार्लियामेण्ट की सेनाओं की अपेक्षा लन्दन के बहुत समीप थीं। इतिहासलेखक इस बात में सहमत हैं कि यदि चार्ल्स इस समय लन्दन नगर पर आक्रमण कर देता और उसको अधिकार में कर लेता, तो सम्भव था कि अन्त में उसी की विजय होती। परन्तु चार्ल्स ने इस उत्तम अवसर को हाथ से खो दिया। वह लन्दन के बदले ऑक्सफोर्ड की ओर बढ़ा और उसे अपने अधिकार में कर लिया। दो वर्ष तक वह इस नगर को अपनी सेनाओं का केन्द्र बनाये रहा।

सन् १६४३ ई० का संग्राम, न्यूबरी का युद्ध—ऑक्सफोर्ड पहुँच कर चार्ल्स का अपनी भूल ज्ञात हुई और वह लन्दन विजय करने का प्रयत्न करने लगा। उसकी सेनाओं ने उत्तर पश्चिम और दक्षिण पश्चिम की ओर से लन्दन पर धावा करने का प्रयत्न किया। परन्तु वह सफल न हुई। अन्य स्थानों में अवश्य राजा की सेनाओं की विजय हुई। इसके पश्चात् छे मास तक उनकी बराबर पराजय होती रही। जब चार्ल्स लन्दन पर आक्रमण न कर सका तो उसने लाचार होकर ग्लूस्टर के चारों ओर, जो सेवर्न नदी के मुहाने पर स्थित है, घेरा डाल दिया, परन्तु यहां भी उसको निराश होना पड़ा। पार्लियामेण्ट के सेनानायक

एसेक्स ने ग्लस्टरनिवासियों को सफलता पूर्वक सहायता पहुंचाई। चार्ल्स देखता ही रह गया। इसके पश्चात् जब एसेक्स लन्दन को लौट रहा था चार्ल्स न्यूबरी (Newbury) के स्थान पर मार्ग रोक कर बैठ गया और अत्यन्त वीरता पूर्वक उसका सामना किया। वह सोचता था कि एसेक्स के पास सेना बहुत कम सख्या में है, अत अत में उसे हार माननी पडेगी। परन्तु ईश्वर की इच्छा इसके प्रतिकूल थी। अर्थात् न्यूबरी के युद्ध में दोनों दल बराबर रहे राजा की सेना ने भाग कर आक्सफोर्ड में पुन शरण ली।



इगलैंड सन १६४४ ई० के अन्त में जिन भागों में लकीरें खिची है वे पार्लियामेंट के अधिकार में थे।

पार्लियामेन्ट तथा स्काटलैन्ड की संधि—न्यूबरी के युद्ध के पश्चात् चार्ल्स और पार्लियामेण्ट दोनों को स्काटलैण्ड के साथ मित्रता करने की चिन्ता हुई। दोनों के दल बलहीन हो गये थे। यह बात भी प्रकट हो गई थी कि यदि दोनों दल अकेले लडते रहेंगे तो किसी एक के विजयी होने में वर्षों लग जावेंगे। स्काटलैण्डवासी पहिले ही से चार्ल्स के शत्रु थे। अत उन्होंने पार्लियामेण्ट से सन्धि (Solemn League and Covenant) कर ली। सन्धिपत्र में एक मुख्य प्रतिज्ञा यह रक्खी गई कि पार्लियामेण्ट इङ्गलेण्ड में एग्लिकन गिर्जा के स्थान पर प्रेसबिटेरियन गिर्जा स्थापित करेगी। २० सहस्र सैनिक पार्लियामेण्ट की सहायतार्थ स्काटलेण्ड से इङ्गलेण्ड आये और चार्ल्स के विरुद्ध युद्ध में सम्मिलित हुये।

जब चार्ल्स प्रथम ने देखा कि स्काटलेण्डवासी पार्लियामेण्ट की सहा-

यता करने को उद्यत है तो उसने अपने दल को बलिष्ट करने के लिये एक सेना आयरलैण्ड से मगाई, परन्तु यह सेना निकम्मे और अनभिज्ञ सैनिकों से बनी थी। इनके प्राचीन धर्मावलम्बी होने के कारण इङ्गलैण्ड के सैनिक इनसे घृणा करते थे और इनसे मिल कर युद्ध न करना चाहते थे। सन् १६४३ ई० मे पार्लियामेण्ट की सहायता के लिये पूर्वी प्रान्तों ने एक सभा (Eastern Association) स्थापित की जिसका उद्देश पार्लियामेण्ट के लिये सेना एकत्रित करना था। इस सभा की सेना का नायक वह पुरुष था जो भविष्य में यश तथा सम्मान प्राप्त करने वाला था और जिसकी वीरता तथा सैनिककला समस्त संसार में प्रसिद्ध होने वाली थी। यह पुरुष पार्लियामेण्ट का सभासद आलिवर क्राम्वेल नामक था।

आलिवर क्राम्वेल—आलिवर क्राम्वेल हण्टिङ्गटनशायर (Huntingdonshire) के एक धनाढ्य का पुत्र था। हेनरी अष्टम का प्रसिद्ध मन्त्री टामस क्राम्वेल उसके पूर्वजो मे से था। सन् १६२८ ई० में क्राम्वेल प्रथम वार पार्लियामेण्ट का सभासद बना और चार्ल्स के विरुद्ध पिटीशन आफ राइट पास कराया। ग्राण्ड रिमान्सट्रेन्स के पास कराने का भी उसने बड़ा उद्योग किया था। एजहिल के युद्ध में क्राम्वेल ने पार्लियामेण्ट की ओर से भाग लिया। इसमें उसने यह बात भली प्रकार देख ली थी कि पार्लियामेण्ट के पदचर सैनिक चार्ल्स के घुड़सवारों के सन्मुख कोई स्थिति नहीं रखते। अत क्राम्वेल ने सदा घुड़सवारो की संख्या बढ़ाने का उद्योग किया और अपनी सेना में यथासम्भव प्यूरिटनो को रक्खा। क्राम्वेल अपने सैनिको से बड़े परिश्रम से काम लेता था और उनके वेतन तथा सुख का सर्वदा ध्यान रखता था। जो सैनिक नियम का ठीक पालन न करते थे उन्हें कड़ा दण्ड मिलता था। निरधनों का क्राम्वेल को सदा ध्यान रहता था। यही कारण है कि वह युद्ध के समय उनके खेत तथा

रों को नष्ट न होने देता था। क्राम्वेल युद्धविद्या में दक्ष था। यदि रूपर्ट घुड़सवारों को युद्ध करने का सुगम मार्ग बता सकता था तो क्राम्वेल अपने घुड़सवारों से समयानुकूल काम लेना भली भांति जानता था। शत्रु पर एक पंक्ति में आक्रमण करना, बारूद देख कर व्यय करना, घूम कर शत्रु की पिछाड़ी दबा लेना और भागते समय उसका भरपूर शक्ति से पीछा करना, ये सब बातें क्राम्वेल को भली प्रकार आती थीं। प्रत्येक बात का उचित प्रबन्ध करके वह युद्ध का परिणाम ईश्वर के हाथों में छोड़ देता था और उसकी कृपा से कभी निराश न होता था।

सन् १६४४ ई० का संग्राम, मार्स्टनमूर का युद्ध—मार्स्टनमूर के स्थान पर क्राम्वेल और रूपर्ट का सामना हुआ। पार्लियामेण्ट की कुल सेना २६ सहस्र और राजा की कुल सेना १७ सहस्र थी। पार्लियामेण्ट की ओर से युद्ध करने को एक सेना स्काटलेण्ड से भी आई थी।

इतने अधिक सैनिक घरेलू युद्ध के किसी अन्य संग्राम में सम्मिलित नहीं हुये। युद्ध सायङ्काल के ७ बजे आरम्भ हुआ और थोड़ा बहुत सारी रात होता रहा। प्रातःकाल तक क्राम्वेल ने शत्रुओं को बड़ी संख्या में वध कर डाला था। रूपर्ट से जब और कुछ करते न बना तो वह भाग खड़ा हुआ। और शत्रु की गोलियों का लक्ष्य बना। इसी वर्ष पार्लियामेण्ट और चार्ल्स की सेनाओं का सामना पुनः न्यूबरी के स्थान पर हुआ। परन्तु न्यूबरी के प्रथम युद्ध की भांति इस युद्ध में भी दोनों दलों के लाभ हानि समान हुये।



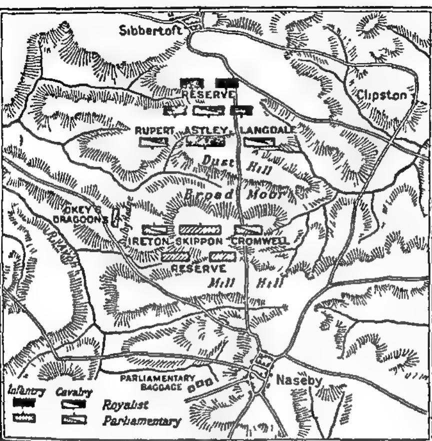
इंग्लैंड सन १६४४ ई० के अन्त में जिन भागों में लकीरें खिंची हैं वे पार्लियामेंट के अधिकार में थे।

सेल्फ़ डिनायंग आर्डीनेन्स—न्यूबरी के दूसरे युद्ध में पालिया मेण्ट के विजयी न होने का एक मुख्य कारण यह था कि उसकी सेना के एक नायक मैनचेस्टर नामक ने उसमें बड़ी कायरता दिखाई थी। क्रॉम्वेल इस बात से बहुत लज्जित हुआ और मैनचेस्टर पर अभियोग लगाने का प्रयत्न करने लगा। पालियामेण्ट को यह बात भी ज्ञात हो गई थी कि एक शक्तिशाली सेना के बिना काम न चलेगा। अतः एक ऐसी दृढ़ सेना की आवश्यकता प्रतीत हुई जिसके सैनिकों में मेल हो और जो धर्म तथा अपने नेता की आज्ञा का पालन करते हों। पार्लियामेण्ट ने सेना सुधार के लिये दो काम किये। प्रथम उसने यह नियम (Self-Denying Ordinance) बना दिया कि भविष्य में पार्लियामेण्ट का कोई सदस्य सैनिक पद नहीं पा सकता है और जो सदस्य वर्तमान समय में कोई पद पाये हुये हैं उन्हें भी पद त्यागना होगा। इस नियम के बनते ही मैनचेस्टर और प्राचीन ढँग के अन्य कर्मचारियों को सेना से अलग होना पड़ा। परन्तु ऑलिवर क्रॉम्वेल इस नियम से वञ्चित रक्खा गया क्योंकि उसके बिना पार्लियामेण्ट का काम चलना कठिन था। एक योग्य पुरुष फ़ेअरफ़ेक्स (Fairfax) नामक सेनापति बना और क्रॉम्वेल घुड़सवारों का नायक बनाया गया।

न्यूमाडल अर्थात् क्राम्वेल के "बज्रवीर"—दूसरी बात पालियामेण्ट ने सेना सुधार के लिये यह की कि उसने क्रॉम्वेल को एक नवीन सेना बनाने की आज्ञा दी। क्रॉम्वेल ने एक सेना वीर तथा युद्धप्रिय सैनिकों की तय्यार की जो प्यूरिटन मत के कट्टर अनुयायी थे और स्वदेश पर प्राण निछावर करने को उद्यत थे। सैनिक नियमों तथा वेतन का उचित प्रबन्ध हुआ। इस सेना के सैनिक ऐसे वीर तथा बलवान थे कि इतिहास में इन्हें "बज्रवीर" (Ironsides) के नाम से पुकारते हैं *।

* सब से प्रथम मार्स्टनमूर के युद्ध के अन्त में, जब न्यूमॉडल सेना

सन् १६४५ ई० का संग्राम, नेजबी का युद्ध-क्राम्वेल के वत्र वीरों ने अपनी वीरता का परिचय नेजबी (Naseby) के युद्ध में दिया।



नेजबी का रणक्षेत्र।

नेजबी का स्थान एजहिल से थोड़ी दूर पर उत्तर पूर्व दिशा में है घरेलू युद्ध में यह संग्राम अत्यन्त उत्कट रखता है। इसमें चार्ल्स की इतनी बड़ी पराजय हुई कि इसके पश्चात् वह पार्लियामेण्ट का अकेले सामना न कर

का जन्म भी न हुआ था, रूपर्ट ने क्रॉम्वेल के सैनिकों को इस नाम से सम्बोधित किया था।

सका। राजसेना रूपर्ट की आधीनता में थी, परन्तु क्रॉम्वेल के सम्मुख रूपर्ट कुछ भी न था। नियमानुकूल रूपर्ट क्रॉम्वेल की सेना के एक भाग का पीछा करता हुआ बहुत दूर निकल गया। इधर क्रॉम्वेल के बज्रवीरों ने काम तमाम कर दिखाया और राजसेना पर विजय प्राप्त कर ली। इस युद्ध में चार्ल्स के पदचर बन्दूकधारी बडी सख्या में नष्ट हुये। सवारों का भी आधा भाग नष्ट हो गया। सक्षेपतः नेजबी के युद्ध में, जैसा कि राजइतिहासलेखक लिखते हैं, राजा और राजपद दोनों का अन्त हो गया।

चार्ल्स के भाग्य नक्षत्र का अस्त होना—स्काटलैण्ड में कवेलियरों का सर्दार मन्ट्रोस (Montrose) पराजित हो चुका था। पश्चिमी प्रान्तों में भी कवेलियरों की हार हुई थी। चार्ल्स समझ गया कि अब कुशल नहीं है और मेरा भाग्य नक्षत्र सदैव के लिये अस्त हो गया है। वह चारों ओर सहायता खोजने लगा कि कहीं उन्नति का मार्ग दीख पडे और कदाचित् मेरा भाग्य नक्षत्र फिर उदय हो जावे। उसके सौभाग्य से स्काटलैण्डवासियों ने उसकी सहायता की। स्काटलैण्डवासी चार्ल्स की धार्मिक नीति के विरोधी थे, परन्तु वे उसके निजी शत्रु न थे। जब उन्होंने देखा कि चार्ल्स इङ्गलैण्ड में पूर्ण पराजय पा चुका है और देश से बाहर होने की चिन्ता में है तो उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक स्टुअर्ट राजा को सहायता देने की ठान ली। इसका एक मुख्य कारण यह था कि दीर्घ पार्लियामेण्ट ने अभी तक सोलिम लीग ऐण्ड कव नेण्ट के अनुसार इङ्गलैण्ड में प्रेसबिटेरियन गिर्जा स्थापित न की थी। अब स्काटलैण्डवासी सोचते थे कि शत्रु का लक्ष्य बने होने के कारण चार्ल्स उनको धार्मिक स्वतन्त्रता अवश्य देगा और अवसर मिलने पर इङ्गलैण्ड में भी प्रेसबिटेरियन गिर्जा स्थापित करेगा। अतः स्काटलैण्ड की सेना ने नेजबी के युद्ध के अन्त में चार्ल्स को अपनी शरण में ले लिया।

(ल) चार्ल्स की फाँसी (१६४६–१६४८)।

स्वतन्त्र दल—चार्ल्स का स्वार्थ निकल गया था। अत उसने स्काटलैण्डवासियों की आशाओं के पूर्ण होने का अवसर न दिया और उसने इङ्गलैण्ड में प्रेसबिटेरियन गिर्जा स्थापित करने से कोरा जवाब दे दिया। स्काटलैण्डवासियों ने ४ लाख पौण्ड लेकर उसे दीर्घ पार्लियामेण्ट को सौंप दिया और अपनी सेनायें इङ्गलैण्ड से फेर लीं। कुछ समय से दीर्घ पार्लियामेण्ट अपने अधिकारों का अनुचित प्रयोग करने लगी थी। वह एग्लिकन गिर्जा के अनुयायियों तथा कवेलियर को भांति २ से कष्ट दे रही थी। उसने न्यूमॉडल को पदच्युत करके घर जाने की आज्ञा देनी चाही और इस बात की लेश मात्र भी चिन्ता न की कि न्यूमॉडल ही के कारण उसने राजा पर प्रभुत्व प्राप्त किया है। यह बात क्रॉम्वेल को बहुत बुरी लगी। इन्हीं दिनों न्यूमॉडल सेना में कुछ स्वतन्त्र विचार के सैनिक (Independents) उठ खड़े हुये थे जो कहते थे कि कैथोलिक मत को छोड़ कर जिस मत का चाहे मनुष्य अनुयायी बन सकता है। धीरे २ इस दल के राजसम्बन्धी विचार भी बदले और वह राजा प्रजा, धनी निर्धनी के अन्तर को दूर करने का प्रयत्न करने लगा। यही कारण है जो यह दल लेविलर (Levellers) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह दल चाहता था कि चार्ल्स को अपने अधिकार में कर ले और दीर्घ पार्लियामेण्ट के सदस्यों को दण्ड देकर स्वतन्त्र राज्य स्थापित करे, परन्तु क्रॉम्वेल तथा उसके जामातृ आयरटन (Ireton) इस प्रयत्न में थे कि किसी प्रकार से रक्तपात बिना सेना तथा पार्लियामेण्ट में सन्धि होजाय *

क्राम्वेल और आयरटन ने चार्ल्स को अपने वश में करने की इच्छा उसे बहुत लालच दिया, परन्तु उसने एक न सुनी। वह पार्लिया-

* क्राम्वेल का कथन था कि जो कुछ हमें रक्त बहाये बिना मिले वह उस से दसगुना अधिक है जो रक्त की नदियां बहा कर मिले।

मेण्ट से तंग आकर स्काटलैण्डवासियों के मत से वाइट टापू में भाग गया जो अंग्रेजी नहर में स्थित है। उसके भाग जाने का एक अच्छा परिणाम यह हुआ कि पार्लियामेण्ट तथा सेना में मेल होगया और दोनों मिल कर राजा को परास्त करने का प्रयत्न करने लगे। वाइट टापू का अफसर पार्लियामेण्ट का सेवक था। उसने अपनी स्वामिभक्ति को स्थापित रक्खा और पार्लियामेण्ट की इच्छानुसार चार्ल्स को बंदी कर लिया, परन्तु चार्ल्स ने स्काटलैण्डवासियों से पत्र व्यवहार आरम्भ कर दिया और उनके साथ इस प्रतिज्ञा पर सन्धि करली कि यदि स्काटलैण्डवासी चार्ल्स की सहायता करके दीर्घ पार्लियामेण्ट पर विजय प्राप्त करा देंगे तो वह इङ्गलैण्ड में प्रेसबिटेरियन गिरजा स्थापित करेगा।

द्वितीय घरेलू युद्ध, १६४८-४६ ई०— सन् १६४८ ई० में स्काटलैण्ड की सेना ने ड्यूक आफ़ हेमिल्टन (Duke of Hamilton) के आधिपत्य में इङ्गलैण्ड में प्रवेश किया और आगे बढ़ती ही चली गई यहाँ तक कि वह प्रेस्टन (Preston) के स्थान पर पहुंच गई जो इङ्गलैण्ड के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। स्काटलैण्ड की सेना में न पर्य्याप्त अस्त्र शस्त्र ही थे और न भोजन सामग्री ही पर्य्याप्त थी, अतः क्राम्वेल ने सहज ही में उस पर विजय प्राप्त करली। इसके पश्चात् क्राम्वेल स्काटलैण्ड गया और पार्लियामेण्ट के दल को वहां विजय प्राप्त कराई। वेल्स तथा दक्षिणी पश्चिमी प्रान्तों के विद्रोह, जो चार्ल्स के पक्ष में हो रहे थे, क्षण में रोक दिये गये।

"प्राइड्स पर्ज"* १६४८ ई०—क्रॉम्वेल और उसकी सेना को आशा थी कि पार्लियामेण्ट उनकी कृतज्ञ होगी। परन्तु जब वे स्काटलैण्ड से इङ्गलैण्ड लौट कर आये तो उन्होंने मामला और ही देखा। कामन्स तथा लार्ड्स दोनों चार्ल्स से सन्धि करने का प्रयत्न कर रहे थे

* पर्ज शब्द का अर्थ है 'निकाल कर बाहर फेंक देना'।

और न्यूमॉडल को पदच्युत होने की आज्ञा देने वाले थे। अत स्वतन्त्र दल ने राजा तथा पार्लियामेण्ट दोनों को नष्ट भ्रष्ट करने की ठान ली। एक दिन एक नायक ने, जिसका नाम,'प्राइड' (Pride) था, पार्लियामेण्ट के द्वार पर खड़े होकर १२३ सभासदों को, जो न्यूमॉडल के प्रतिद्वन्द्वी थे, अन्दर जाने से रोक दिया*। फिर क्या था शेष पार्लियामेण्ट ने जो इतिहास में रम्प (Rump †) पार्लियामेण्ट के नाम से प्रसिद्ध है चार्ल्स पर अभियोग लगाने का प्रस्ताव उपस्थित किया। प्रस्ताव शीघ्र पास हो गया।

चार्ल्स का वध, १६४९ ई०—पहली जनवरी सन् १६४९ ई० को चार्ल्स का अभियोग निश्चित करने को एक न्यायालय बिठलाया गया। चार्ल्स कहता था कि मेरा पद पार्लियामेण्ट के पद से कहीं बढ़ कर है। अत वह मुझ पर अभियोग नहीं लगा सकती और न कोई न्यायालय मेरे अभियोग का न्याय कर सकता है। इस के उत्तर मे पार्लियामेण्ट कहती थी कि देशवासी यदि चाहे तो राजा को दण्ड दे सकते हैं क्योंकि राजा देश का सेवक है और प्रजा की सहायता पर निर्भर है। चार्ल्स पर यह दोषारोपण किया गया कि उसने प्रथम घरेलू युद्ध के समय देश के विरुद्ध शस्त्र ग्रहण करके अकारण देशवासियों की हत्या की है। अत वह प्राणदण्ड का अधिकारी है न्यायालय ने चार्ल्स के प्रतिकूल न्याय किया और चार्ल्स को मृत्युदण्ड दिया। अत उसे ३० जनवरी को सायंकाल

*विद्वान् इस बात से सहमत नहीं हैं कि प्राइड के इस कार्य में क्राम्वेल की सम्मति कहा तक थी। वास्तविक बात यह जान पड़ती है कि प्रारम्भ में क्राम्वेल इसके प्रतिकूल था परन्तु बाद को उसने अपनी सम्मति दे दी थी।

† रम्प शब्द का अर्थ अंग्रेजी भाषा मे है "बचा हुआ भाग"। अत शेष पार्लियामेण्ट के बचे हुये भाग को इस नाम से पुकारते हैं।

४ बजे चार्ल्स को राजमहल के सामने फाँसी हुई* । इस प्रकार उस चार्ल्स प्रथम का अन्त हुआ जिसने अपना समस्त जीवन पार्लियामेण्ट से युद्ध करने में व्यतीत कर दिया था। चार्ल्स की फाँसी के विषय में इतना अवश्य स्मरण रखना चाहिये कि उसके अभियोग की ठीक जाँच नहीं हुई और पार्लियामेण्ट ने उसे साधारण सैनिक समझ कर युद्ध सम्बन्धी नियमों के अनुसार दण्ड दिया। परन्तु यह बात भी सत्य है कि यदि घरेलू युद्ध के अन्त में चार्ल्स की विजय होती तो वह भी अपने शत्रुओं के शीश उसी भाँति उतार लेता जिस भाँति उन्हों ने उसका शीश उतार लिया था।

वध के परिणाम—चार्ल्स के मरते ही राजस्वतन्त्रता तथा सम्मान का भी अन्त हो गया। प्रथम दो स्टुअर्ट राजाओं ने पार्लियामेण्ट को नीचा दिखाने का प्रयत्न किया था, परन्तु इस कार्य्य में सफल होने की जगह उन्हें स्वय नीचा देखना पड़ा। अब यह बात भली प्रकार सिद्ध हो गई कि राजऐश्वर्य्य तथा उन्नति जिस पर चार्ल्स प्रथम को इतना गर्व था राष्ट्रीय अधिकारों के आगे तुच्छ हैं, परन्तु इस से यह परिणाम न निकालना चाहिये कि चार्ल्स के वध से जनता को कोई विशेष लाभ

* कहते हैं कि अर्द्ध रात्रि व्यतीत होने पर क्राम्वेल स्वय चार्ल्स के शव को देखने गया और उसका मृत शरीर देख कर शोक-प्रकट करने लगा। यह कहानी उस व्यक्ति से मालूम हुई है जो चार्ल्स के शव की रक्षा पर नियुक्त था। उसका कथन है कि आगन्तुक का शरीर कपड़े से ढका हुआ था। परन्तु उसकी बोली से ऐसा प्रतीत होता था कि वह क्राम्वेल है। यदि यह घटना सत्य है तो इससे यह परिणाम निकालना चाहिये कि क्राम्वेल चार्ल्स के प्राण लिये जाने के विरोध में था और उसने केवल सेना के कहने से इस भयङ्कर कार्य्य की सम्मति दी थी, परन्तु इस घटना में वास्तविकता किंचितमात्र भी नहीं देख पड़ती।

ा। उसकी मृत्यु से स्वतन्त्रता तथा समानता के सिद्धान्तों ने विजय
ाय पाई परन्तु इन सिद्धान्तों के कार्य्य रूप में परिणत होने में अभी
भग चालीस वर्ष की देरी थी। कुछ समय के लिये इङ्गलैण्ड का राज्य
मनुष्यों को मिला जिन्हों ने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता को तिलाञ्जली देकर
ार्टरुल के अनाचार तथा अत्याचार के स्थान पर एक नवीन अनाचार
ा अत्याचार फैलाया।



अभ्यास।

(१) प्रथम दो स्टुअर्ट राजाओं और पार्लियामेण्ट के बीच झगडा
ने के कारण स्पष्ट रीति से वर्णन करो।

(२) राजा के "दैवी अधिकार" से क्या समझते हो? जेम्स प्रथम
था चार्ल्स प्रथम ने इस सिद्धान्त का किस प्रकार अनुकरण किया?
र्ल्स ने इस कार्य्य में कौन सी ऐसी भूल की जिस के कारण उस के
र राष्ट्र के बीच इतना विरोध हुआ?

(३) चार्ल्स प्रथम तथा पार्लियामेण्ट में युद्ध होने के क्या कारण हैं?
स युद्ध की सब से प्रसिद्ध लड़ाइयाँ और उनके परिणाम बताओ।

(४) पिटीशन ऑफ राइट कब और किस अवस्था में पास हुआ
? इस नियम द्वारा कौन २ बातें निश्चित हुईं? राजा ने इन बातों के
ुसार कहाँ तक कार्य्य किया?

(५) दीर्घ पार्लियामेण्ट की रचनाशैली वर्णन करो। प्रजा ने अपने
दस्यों को किस उद्देश की प्राप्ति के लिये भेजा था? दीर्घ पार्लियामेण्ट
स उद्देश के प्राप्त करने में कहाँ तक सफल हुई?

(६) क्राम्वेल के चरित्र के सैनिक गुण बताओ। क्राम्वेल की सम्मति कहाँ तक थी—[अ] प्राइड के कार्य्य मे, [ब] चार्ल्स प्रथम के वध में ?

(७) निम्न लिखित में से किसी तीन पर सक्षेप में नोट लिखो '— [अ] जहाजी कर, [ब] न्यूमॉडल, [स] बॉँम्र पार्लियामेण्ट, [द] पिम, [र] सेल्फ डिनायग आर्डीनेन्स, [ल] नेजबी का युद्ध ।

(८) सन् १६०३ और १६४९ ई० के बीच के समय का ध्यान करो और सोचो कि धीरे २ प्रजा किस प्रकार शक्तिशाली और राजा शक्तिहीन होते जाते थे। प्रजा की उन्नति में सन् १६२८ ई० को तुम कौन स्थान देते हो और क्यों ?



पच्चीसवां अध्याय



प्रजातंत्र राज्य और क्राम्वेल (१६४६–१६६०)।

प्रजातंत्र राज्य का प्रारम्भ—चार्ल्स की मृत्यु पर, अंग्रेजी राष्ट्र तथा पार्लियामेण्ट के शक्तिशाली होने के बदले अङ्गरेजी सेना तथा क्रान्तिकारियों की विजय हुई, जैसा कि युद्ध के अन्त में बहुधा देखने में आता है। सभाध्यक्षों ने अपने विरोधियों को पार्लियामेण्ट से निकाल कर उसे निर्बल तो पहले ही कर दिया था, अब उन्होंने 'हाउस ऑफ लॉर्डस' को तोड़कर उसे बिल्कुल ही शक्तिहीन बना दिया। इसके पश्चात् उन्होंने इङ्गलैण्ड के एक स्वतन्त्र देश (Republic) होने की घोषणा करके, प्रजातन्त्र राज्य (Commonwealth) की नींव डाली। देश का प्रबन्ध बारह सदस्यों की एक 'राजसभा' (Council of State) को सौंप दिया गया। इन में तीन चौथाई सदस्य पार्लियामेण्ट के मेम्बर थे। इन मेम्बरों में से एक क्राम्वेल भी था।

(अ) रम्प पार्लियामेण्ट तथा क्राम्वेल की उन्नति।

नवीन अत्याचार—प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना होते ही, राजसभा को नाना प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इङ्गलैण्ड में स्वयं उसके कई शत्रु थे। राजा के सहयोगी, पदच्युत लार्ड, प्रेसबिटेरियन सम्प्रदाय, तथा शासन और समाज कार्यक्षेत्रों में बराबरी माँगनेवाले, सभी नई सरकार के विरुद्ध थे। आयरलैण्ड और स्काटलैण्ड में भी

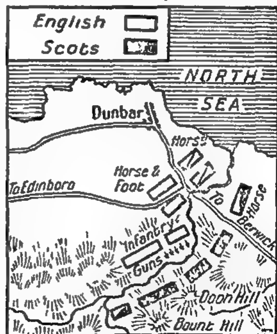
प्रजातन्त्र राज्य के शत्रु उपस्थित थे। अंग्रेजी बेड़ा निर्बल हो गया था जिसके कारण हालैण्ड ने कई देशों में अंग्रेजी व्यापारियों को व्यापार से वञ्चित कर दिया था। अंग्रेजी सेना में स्वयं एक ऐसा दल उठ खड़ा हुआ जो हर प्रकार से मानुषिक राज्य के विरुद्ध था और संसार में ईसा मसीह तथा अन्य देवताओं का राज्य स्थापित करना चाहता था। क्रॉम्वेल तथा राजसभा के अन्य सदस्य यह दशा देख कर कुछ भयभीत से हो गये और उन्हों ने वही कार्य्य किये जिनके रोकने के लिये घरेलू युद्ध किया गया था। उन्होंने शत्रुदल के समाचारपत्रों के प्रचार तथा उसकी राजनैतिक सभाओं को एकदम रोक दिया और जॉन लिल्बर्न (Lilburne) को, जो स्वतन्त्रता का बहुत बड़ा प्रतिपादक था, बड़ा कड़ा दण्ड दिया। जो कुछ धार्मिक स्वतन्त्रता अभी तक थी वह बिल्कुल जाती रही। कवेलियरों की जागीरें छिनने लगीं और धनी निर्धनी सब पर जुर्माने आदि होने लगे। न्यायालय भी राजसभा के अनुकूल कार्य्य करने लगे, परन्तु पञ्चों (Jury) की प्रथा में कोई भेद नहीं पड़ा। कई प्रकार की कलाकौशल की इतिश्री कर दी गई। जो लोग चार्ल्स प्रथम के चित्र एकत्रित करते थे उन्हें दण्ड मिलता था। थियेटर, नाच रंग और तमाशे सब एकदम नियमों द्वारा बन्द कर दिये गये। मनुष्यों के आचार को श्रेष्ठ बनाने की चेष्टा राज नियमों की सहायता के आधार पर की जाने लगी। इन बातों से यह बात पूर्णतया सिद्ध है कि जितना देश का रुधिर घरेलू-युद्ध के अवसर पर बहा था वह सब निष्फल गया।

आयरलैंड और स्काटलैंड के विद्रोह, १६५० ई०—राजसभा ने देश के आन्तरिक्त प्रबन्ध की देख भाल के पश्चात् अपना ध्यान आयरलेण्ड तथा स्काटलैण्ड की ओर आकर्षित किया। ये दोनों देश चार्ल्स प्रथम को राजा बनाने की चेष्टा में विद्रोह कर रहे थे। आयरलेण्ड में विद्रोहियों का सरदार आरमण्ड (Ormond) था। अङ्गरेजी 'राजसभा' ने

क्राम्वेल को आयरलैण्ड भेजा । क्राम्वेल ने आयरलैण्ड पहुँच कर विद्रोहियों को बड़े कठोर दण्ड दिये और ड्रोहेडा (Drogheda) नाम के बन्दरगाह के निवासियों को बड़ी संख्या में वध करा दिया । इसके पश्चात् वह स्काटलैण्ड के विद्रोह को दबाने के लिये इङ्गलैण्ड लौट आया। स्काटलैण्ड के निवासियों ने राजकुमार चार्ल्स को यूरप महाद्वीप से बुला कर राजा बना लिया था, परन्तु क्राम्वेल और अंग्रेजी जहाजों के पूर्वीय किनारे पर आते ही उनके छक्के छूट गये।

डनबार और वुस्टर के युद्ध, १६५० व १६५१ ई०–

विद्रोहियों ने बड़ी कठिनाई से एक सेना एकत्रित करके डनबार (Dunbar) प्रायद्वीप पर क्राम्वेल का सामना किया। क्राम्वेल की सेना में भोजन सामग्री तथा शस्त्र कम थे। फिर भी उसने स्काटलैण्ड की सेना को परास्त कर लिया। डनबार के युद्ध के पश्चात् क्राम्वेल एडिनबरा जीतने की इच्छा से पश्चिम की ओर बढ़ा। इसी बीच में राजकुमार चार्ल्स ने अवसर पाकर इङ्गलैण्ड पर आक्रमण कर दिया और वुस्टर (Worcester) तक पहुँच गया, जो सेवर्न नदी के किनारे पर बसा हुआ है, और लन्दन पर धावा करने



डनबार का युद्ध।

का उपाय सोचने लगा। यह देख कर क्रॉम्वेल तुरन्त स्काटलण्ड से इङ्गलैण्ड लौट आया और चार्ल्स की सेना पर आक्रमण किया। चार पाँच घण्टे तक दोनों में घमासान युद्ध हुआ। अन्त में क्राम्वेल की विजय हुई। चार्ल्स प्राण बचाकर महाद्वीप को चला गया। वुस्टर का युद्ध इतिहास में कई बातों के लिये प्रसिद्ध है। प्रथम इस युद्ध से कुछ समय के लिये स्टुअर्टकुल के भाग्य का निर्णय हो गया। द्वितीय, इसने स्काटलेण्ड की स्वतन्त्रता का अन्त कर दिया। रम्प पालियामेण्ट ने माङ्क (Monck) की अध्यक्षता में एक सेना स्काटलैण्ड भेजी जिसने समस्त देश पर अधिकार करके देश का शासन अपने हाथों में ले लिया। तृतीय वुस्टर के युद्ध ने क्राम्वेल की प्रतिष्ठा द्विगुण कर दी। अभी तक वह एक साधारण सेनानायक था। इस युद्ध के पश्चात् लोग उसे राजा बनाने की चेष्टा करने लगे।

दीर्घ पार्लियामेन्ट का अन्त—क्राम्वेल की खूब बन आई। इधर तो कोई राज्याधिकारी इङ्गलैण्ड में ऐसा न था जिसे राजा बनाने का विचार लोगों को उत्पन्न होता। उधर रम्प पार्लियामेण्ट क्राम्वेल का साथ देने को तैयार थी। राजसभा के प्रबन्ध से लोग दुखी हो गये थे। हालैण्ड से पुनः युद्ध प्रारम्भ हो गया था जिसके कारण क्राम्वेल जैसे सेनानायक को कोई रुष्ट न करना चाहता था। क्राम्वेल के प्रभाव को बढ़ते देख रम्प पार्लियामेण्ट ने, जब उसके भङ्ग होने का समय निकट आया, यह नियम बना दिया कि भावी पार्लियामेन्ट में वर्तमान पार्लियामेण्ट के सब सभासद अवश्य बैठेंगे और नये सभासदों में से जिनको वे चाहेंगे निकाल देंगे। कुछ समय से सैनिक क्राम्वेल को अपना पद बढ़ाने की सम्मति दे रहे थे, परन्तु क्राम्वेल ऐसा करने से डरता था। जब सेना ने बहुत जोर दिया तो वह एक दिन काले कपड़े पहन कर सैनिकों को साथ लिये पार्लियामेण्ट में आ डटा। थोड़ी देर तक भाषण

करने के पश्चात् उसने सभापति को बन्दी कर लिया और सभासदों को निकाल कर द्वार पर ताला डाल दिया। किसी विदूषक को जो दिल्लगी सूझी तो दूसरे दिन प्रात काल एक कागज के टुकडे को जिस पर यह लिखा



क्राम्वेल दीर्घ पार्लियामेण्ट को भङ्ग कर रहा है।

था, पार्लियामेण्ट के द्वार पर लटका दिया :—"मकान किराये के लिये, परन्तु वर्तमान समय में आवश्यक वस्तुओं से हीन"।

बडी पार्लियामेण्ट ने कई आवश्यक सुधार किये थे जिन से अङ्गरजी शासनप्रणाली ने उस रूप का धारण करना आरम्भ किया जो वह

आधुनिक काल में धारण किये हुए हैं। परन्तु उसके भङ्ग होने का किसी को भी दुःख न हुआ। कारण यह था कि वह १२ साल से स्थापित थी। अतः जनता उसके शासन से तङ्ग आ गई थी। परन्तु इस से यह आशय न ग्रहण करना चाहिये कि जो कुछ दोष क्राम्वेल ने उसके सदस्यों पर आरोपित किये थे वे सब ठीक थे। पार्लियामेण्ट के भङ्ग होने के कुछ ही सप्ताह पहिले, फ्रांस सरकार का एक दूत इङ्गलैण्ड आया था। जब वह स्वदेश लौट कर गया तो उस ने अंग्रेजी पार्लियामेण्ट के सदस्यों की बहुत प्रशंसा की। रम्प पार्लियामेण्ट को भङ्ग करके क्रॉम्वेल ने अपने ही पैर में कुल्हाड़ी मार ली। उस के भङ्ग हो जाने से क्रॉम्वेल के सहयोगियों की संख्या और शक्ति कम होने लगी। सन् १६५३ ई० से प्रजातन्त्र राज्य के विरुद्ध एक लहर उठी, जो स्टुअर्टवंश को पुनः सिंहासन पर बिठाये बिना शान्त नहीं हुई।

(घ) क्रॉम्वेल का शासन (१६५३–५८)।

बेरबोन्स की पार्लियामेण्ट १६५३ ई०—दीर्घ पार्लियामेण्ट के भङ्ग होने पर सेनाध्यक्षों ने एक नवीन पार्लियामेण्ट बिठलाई जो इतिहास में बेरबोन्स (Barebones) * की पार्लियामेण्ट के नाम से प्रसिद्ध है। हाउस ऑफ लार्डस् पुनर्जीवित न हुआ था। हाउस आफ कामन्स के सदस्य भी प्रजा द्वारा निर्वाचित न हुये थे। उनका चुनाव अधिकृत सेनाध्यक्षों तथा प्यूरिटन धर्मावलम्बियों ने किया था। अंग्रेजी सेना यह समझने लगी कि हजरत ईसा और देवताओं का राज्य स्थापित होने ही वाला है, परन्तु ६ महीने के भीतर बेरबोन्स की पार्लियामेण्ट स्वयं ही भङ्ग हो गई क्योंकि वह देश का ठीक प्रबन्ध करने की योग्यता न रखती थी।

* इस नाम के पड़ने का कारण यह था कि इस के सदस्यों में एक बेरबोन्स नामक चमड़े का व्यापारी था।

महानरक्षक क्राम्वेल—क्राम्वेल को बेरबोन्स की पार्लियामेण्ट के भङ्ग होने पर बड़ा आश्चर्य हुआ। सेना के अफसर जान गये कि जब तक देश का शासन किसी शक्तिशाली मनुष्य के हाथों में नहीं दिया जावेगा शासन प्रणाली सदैव बदलती ही रहेगी। अत उन्होंने क्राम्वेल से 'महारक्षक' (Lord Protector) बनने की प्रार्थना की। क्राम्वेल ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। उसकी सहायतार्थ एक पार्लियामेण्ट चुनी गई और एक राजसभा (Council of State) की स्थापना भी की गई। कहने को क्राम्वेल राजा न बना था, परन्तु उसके अधिकार राजा के अधिकारों से किसी प्रकार कम न थे। वह स्वेच्छानुसार पार्लियामेण्ट को निमन्त्रित तथा विदा कर सकता था, उसके बनाये हुये नियमों को रद्द कर सकता था और स्वयं नये नियम भी बना सकता था। नवीन शासन पद्धति इन्स्ट्रूमेण्ट ऑफ गवर्नमेण्ट (Instrument of Government) के नाम से पुकारा जाता है।

देशी प्रबन्ध—क्राम्वेल ने सुप्रसिद्ध अंग्रेजी कवि मिल्टन (Milton) को अपना मन्त्री नियुक्त किया। मिल्टन धार्मिक स्वतन्त्रता का पक्षपाती था। वृद्ध तथा चक्षुहीन होने पर भी उसने अपने देश की सेवा तन मन से की। एक विद्वान् उसकी प्रशंसा में यह लिखता है कि बहुत से मनुष्य महाद्वीप से केवल मिल्टन तथा क्राम्वेल को देखने के लिये इङ्गलैण्ड जाते थे। इतने विद्वान् मन्त्री के रखने पर भी क्राम्वेल ने अपने अधिकारों का सदुपयोग नहीं किया। यही कारण है कि कई बार मनुष्यों ने उसकी हत्या करने के लिये षड्यन्त्र रचे। क्राम्वेल नियमों की तनिक भी चिन्ता न करता था। उसने शासन के सुविधार्थ इङ्गलैण्ड और वेल्स को ११ प्रान्तों में विभाजित कर दिया था और हर प्रान्त के प्रबन्ध के लिये एक सेनाध्यक्ष (Major General) नियुक्त कर दिया था। इन सेनाध्यक्षों को कई ऐसे अधिकार मिले हुये थे जिन की दुरुपयोगिता से वे प्रजा पर स्वेच्छानुसार

अत्याचार करने लगे । क्राम्वेल भी जेम्स और चार्ल्स प्रथम की भांति नियमों के विरुद्ध कर इत्यादि लगाने लगा । जो देने से आगापीछा करता उसे न्यायालयों द्वारा कड़ा दण्ड मिलता था क्योंकि न्यायाधीश प्रथम दो स्टुअर्ट राजाओं के शासन की तरह सरकारी आज्ञा के दास-बने हुये थे । कवेलियर तथा सरकार के अन्य द्रोहियों की तो मृत्यु ही आ गई थी। उनकी आय का दसवाँ भाग सरकार ले लेती थी । क्राम्वेल ने उन के विरुद्ध कई नियम बनाये । विरोधी समाचार-पत्रों का प्रकाशन, थियेटर, खेल, तमाशे आदि सभी बन्द हो गये । फल यह हुआ कि लन्दन जैसे नगर में केवल एक अर्ध सप्ताहिक पत्र निकलता था । धार्मिक विषय में अवश्य मनुष्यों को स्वतन्त्रता प्राप्त थी और कैथोलिक को छोड़ कर सब सम्प्रदायवाले सुखपूर्वक तथा आनन्दमय जीवन व्यतीत कर रहे थे, परन्तु यहाँ भी क्रॉम्वेल की कठोरता का दृष्टान्त मिलता है । उसने दो सम्मतियाँ ऐसी नियत कर दी थीं जिनका काम केवल योग्य पादरियों को नौकर रखना और अयोग्य को निकालना था । जो पादरी निकाल दिये जाते थे उन्हें कोई भी शरण नहीं दे सकता था । इन बातों से यह भली भाँति स्पष्ट है कि कहने मात्र को इङ्गलैण्ड में स्वतन्त्र राज्य स्थापित था, परन्तु लोगों को उस में और प्रथम दो स्टुअर्ट राजाओं के शासन में कोई भेद दृष्टिगोचर न होता था ।

क्राम्वेल की विदेशी नीति— यदि क्रॉम्वेल आन्तरिक शासन में सफल न हो सका तो क्या, बाह्यनीति में उसने सराहनीय सफलता प्राप्त की । क्रॉम्वेल की विदेशी नीति के तीन मुख्य उद्देश थे—(१) वह स्टुअर्टवंशजों के पुनः राजा बनने के विरोध में था। अतः वह उन देशों से युद्ध करने को उद्यत था, जो चार्ल्स की सहायता कर रहे थे । (२) वह प्रोटेस्टेण्ट मत को तन मन और धन से उच्च करने का प्रयत्न कर रहा था। अतः वह प्रोटेस्टेण्ट देशों की सहायता करने को सदा तत्पर रहता था ।

(३) वह इङ्गलेण्ड के व्यापार को उन्नति देना चाहता था। अत वह उन देशों से युद्ध करने को उद्यत था जो अंग्रेजी व्यापार को उन्नति न करने देते थे।

हालैण्ड का प्रथम युद्ध, १६५२–१६५४ ई०—ऐसे देशों में सब से बढ चढ कर हालैण्ड था। अग्रज और डच व्यापारियों का सामना पूर्वीय इण्डीज तथा भारतवर्ष में बडे जोरों के साथ हो रहा था। १६२३ ई० में डच व्यापारियों ने कई अङ्गरेजी व्यापारियों को ऐम्बोइना के द्वीप में वध कर दिया, परन्तु जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम ने उसका बदला नहीं लिया। अत डच व्यापारी अङ्गरेजों को बराबर कष्ट देते रहे। अङ्गरेजी पार्लियामेण्ट ने तङ्ग आकर सन् १६५१ ई० में प्रथम जल व्यापार सम्बन्धी नियम (Navigation Law) बना दिया जिससे यह बात निश्चित हुई कि भविष्य में जो व्यापारिक वस्तुयें इङ्गलेण्ड में आवेंगी वे या तो अङ्गरेजी जहाजों पर आवेंगी या उन देशों के जहाजों में आवेंगी जिन में वह वस्तुयें बनी है। इस नियम के बनने से हालैण्ड को बडी हानि हुई क्योंकि बहुत से ऐसे व्यापारिक देश थे जिनके पास अच्छे जहाज नहीं थे, अत हालैण्ड के जहाज उनकी बनाई हुई वस्तुयें इङ्गलेण्ड में लाते थे और बहुत लाभ उठाते थे। व्यापार की हानि होने पर भी हालैण्ड वालों ने शेखी मारना न छोडा। इङ्गलैण्डवालों को बहुत बुरा लगा क्योंकि उनका जहाजी बेडा एलिजबेथ के समय से अत्यन्त शक्तिशाली था। वे भी यह दावा करने लगे कि जब तक डच व्यापारी अङ्गरेजी नहर से जाते समय अपना झण्डा नीचा करके अङ्गरेजी झण्डे का आदर नहीं करेंगे तब तक हम उन्हें अङ्गरेजी नहर से न निकलने देंगे। हालैण्ड के नाविक अङ्गरेजी झण्डे का आदर करना अपनी अवहेलना समझते थे। जब आपस में बैर भाव बहुत बढा तो १६५२ ई० में अङ्गरेजी पार्लियामेण्ट ने हालैण्ड से युद्ध करने की घोषणा की। दो वर्ष तक अङ्गरेजी जलसेनानायक ब्लेक (Blake)

अन्याचार करने लगे। क्राम्वेल भी जेम्स और चार्ल्स प्रथम की भांति नियमों के विरुद्ध कर इत्यादि लगाने लगा। जो देने से आगापीछा करता उसे न्यायालयों द्वारा कडा दण्ड मिलता था क्योंकि न्यायाधीश प्रथम दो स्टुअर्ट राजाओं के शासन की तरह सरकारी आज्ञा के दास बने हुये थे। कवेलियर तथा सरकार के अन्य द्रोहियों की तो मृत्यु ही आ गई थी। उनकी आय का दसवाँ भाग सरकार ले लेती थी। क्राम्वेल ने उन के विरुद्ध कई नियम बनाये। विरोधी समाचार-पत्रों का प्रकाशन, थियेटर, खेल, तमाशे आदि सभी बन्द हो गये। फल यह हुआ कि लन्दन जैसे नगर में केवल एक अर्ध सप्ताहिक पत्र निकलता था। धार्मिक विषय में अवश्य मनुष्यों को स्वतन्त्रता प्राप्त थी और कैथोलिक को छोड कर सब सम्प्रदायवाले सुखपूर्वक तथा आनन्दमय जीवन व्यतीत कर रहे थे, परन्तु यहाँ भी क्रॉम्वेल की कठोरता का दृष्टान्त मिलता है। उसने दो सम्मतियाँ ऐसी नियत कर दी थीं जिनका काम केवल योग्य पादरियों को नौकर रखना और अयोग्य को निकालना था। जो पादरी निकाल दिये जाते थे उन्हें कोई भी शरण नहीं दे सकता था। इन बातों से यह भली भाँति स्पष्ट है कि कहने मात्र को इङ्गलैण्ड में स्वतन्त्र राज्य स्थापित था, परन्तु लोगों को उस में और प्रथम दो स्टुअर्ट राजाओं के शासन में कोई भेद दृष्टिगोचर न होता था।

क्राम्वेल की विदेशी नीति— यदि क्रॉम्वेल आन्तरिक शासन में सफल न हो सका तो क्या, वाह्यनीति में उसने सराहनीय सफलता प्राप्त की। क्रॉम्वेल की विदेशी नीति के तीन मुख्य उद्देश थे—(१) वह स्टुअर्टवंशजों के पुन राजा बनने के विरोध में था। अत वह उन देशों से युद्ध करने को उद्यत था जो चार्ल्स की सहायता कर रहे थे। (२) वह प्रोटेस्टेण्ट मत को तन मन और धन से उच्च करने का प्रयत्न कर रहा था। अत' वह प्रोटेस्टेण्ट देशों की सहायता करने को सदा तत्पर रहता था।

(२) वह इङ्गलैण्ड के व्यापार को उन्नति देना चाहता था। अतः वह उन देशों मे युद्ध करने को उद्यत था जो अंग्रेजी व्यापार को उन्नति न करने देते थे।

हालैण्ड का प्रथम युद्ध, १६५२–१६५४ ई०—ऐसे देशों में सब से बढ चढ कर हालेण्ड था। अंग्रेज और डच व्यापारियों का सामना पूर्वीय इण्डीज तथा भारतवर्ष में बडे जोरों के साथ हो रहा था। १६२३ ई० में डच व्यापारियों ने कई अङ्गरेजी व्यापारियों को ऐम्बोइना के द्वीप में वध कर दिया, परन्तु जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम ने उसका बदला नहीं लिया। अत डच व्यापारी अङ्गरेजों को बराबर कष्ट देते रहे। अङ्गरेजी पार्लियामेण्ट ने तङ्ग आकर सन् १६५१ ई० में प्रथम जल-व्यापार सम्बन्धी नियम (Navigation Law) बना दिया जिससे यह बात निश्चित हुई कि भविष्य में जो व्यापारिक वस्तुयें इङ्गलैण्ड में आवेंगी वे या तो अङ्गरेजी जहाजों पर आवेंगी या उन देशों के जहाजों में आवेंगी जिन में यह वस्तुयें बनी हैं। इस नियम के बनने से हालेण्ड को बडी हानि हुई क्योंकि बहुत से ऐसे व्यापारिक देश थे जिनके पास अच्छे जहाज नहीं थे, अत हालैण्ड के जहाज उनकी बनाई हुई वस्तुयें इङ्गलेण्ड में लाते थे और बहुत लाभ उठाते थे। व्यापार की हानि होने पर भी हालैण्ड वालों ने शेखी मारना न छोडा। इङ्गलेण्डवालों को बहुत बुरा लगा क्योंकि उनका जहाजी बेडा एलिजबेथ के समय से अत्यन्त शक्तिशाली था। वे भी यह दावा करने लगे कि जब तक डच व्यापारी अङ्गरेजी नहर मे जाते समय अपना झण्डा नीचा करके अङ्गरेजी झण्डे का आदर नहीं करेंगे तब तक हम उन्हें अङ्गरेजी नहर से न निकलने देंगे। हालैण्ड के नाविक अङ्गरेजी झण्डे का आदर करना अपनी अवहेलना समझते थे। जब आपस में वैर भाव बहुत बढा तो १६५२ ई० में अङ्गरेजी पार्लियामेण्ट ने हालैण्ड से युद्ध करने की घोषणा की। दो वर्ष तक अङ्गरेजी जलसेनानायक ब्लेक (Blake)

हालेण्ड के जलसेनानायक ट्रोम्प (Tromp) से उत्तरी समुद्र और अंग्रेजी नहर में युद्ध करता रहा । कभी अंग्रेजों और कभी डच लोगों की जीत होती थी । १६५४ ई० में क्रॉम्वेल ने युद्ध बन्द कर के हालैण्ड से सन्धि कर ली । हालैण्ड यूरप के प्रोटेस्टेण्ट देशों का नेता था । अतः उस से युद्ध करना महानरक्षक के सिद्धान्तों के विरुद्ध था । दूसरे क्रॉम्वेल और मिल्टन दोनों युद्ध से घृणा करते थे । अत. सन्धि और भी शीघ्रता के साथ हो गई । हालैण्डनिवासियों को ऐम्बोइना के वध के अपराध में कुछ धन देना पड़ा और अङ्गरेजी झण्डे का आदर भी करना पड़ा ।

प्रोटेस्टेण्ट देशों की एकता—इसी प्रकार क्रॉम्वेल ने डेनमार्क, स्वीडेन, पुर्तगाल आदि प्रोटेस्टेण्ट देशों से भी सन्धि कर ली । उसका मुख्य तात्पर्य, विलियम तृतीय की भांति, यूरप के समस्त प्रोटेस्टेण्ट देशों को मिला कर एक दृढ़ संघ बनाना और कैथोलिक देशों को बलात् प्रोटेस्टेण्ट बनाना था । इस उद्देश में वह बड़ी सीमा तक सफल हुआ । यहाँ पर हम क्रॉम्वेल की तुलना प्राचीन अर्बों से कर सकते हैं जो एक हाथ में तलवार और दूसरे में कुरान लेकर इसलामधर्म फैलाने को निकलते थे । गार्डनर नामक अङ्गरेजी इतिहासलेखक का यह मत है कि यदि क्रॉम्वेल बीस वर्ष और जीवित रहता तो उसके धार्मिक उत्साह के कारण समस्त यूरप उसके विरुद्ध हो जाता ।

वोदायज का वध, १६५५ ई०—क्रॉम्वेल ने अपनी तलवार के बल से १६५५ में एक प्रशंसनीय कार्य किया । इस वर्ष सेवाय के ड्यूक ने, जो फ्रांस के राजा के आधीन था, वहाँ के रहनेवाले प्रोटेस्टेण्ट को जिन्हें वोदायज (Vaudois) कहते थे, बड़ी संख्या में वध कर दिया । क्रॉम्वेल का हृदय इस समाचार के पाते ही क्रोधाग्नि से ज्वलित हो उठा । मिल्टन ने वोदायज की ओर से अपनी आवाज उठाई । क्रॉम्वेल ने फ्रांस के मन्त्री मेजेरिन (Mazarin) को लिखा । उसने वध

रुकवा दिया और सेवाय के ड्यूक को दण्ड दिया । इस से क्राम्वेल की ख्याति का डङ्का समस्त यूरप में बजने लगा ।

स्पेन से युद्ध, १६५५–५७ ई०–वौदायज के वध के उपरान्त क्राम्वेल ने स्पेन से शत्रुता करली । सन् १६५४ ई० में हालैण्ड से मित्रता हो जाने से अंग्रेजी जहाज बेकार हो गये थे । अतः महानरक्षक ने उन्हें स्पेन के पश्चिमीय द्वीपों पर धावा करने की आज्ञा दी । अंग्रेज बड़ी बुरी दशा में पश्चिमी द्वीपों में पहुँचे और पेचिश के रोग में ग्रसित होकर इङ्गलण्ड लौट आये । स्पेन के सारे द्वीपों को जीतना अत्यन्त कठिन था । अंग्रेजी सेना से जमेका द्वीप जीतने के सिवा और कुछ भी न बन पड़ा । इसके पश्चात् १६५७ ई० में क्राम्वेल ने मेज़ेरिन की सम्मति से स्पेन से नियमित युद्ध आरम्भ कर दिया । एक अंग्रेजी सेना स्पेन गई और कई मास तक उसके बन्दरगाहों में मारकाट करती रही । दूसरी सेना ने स्पेन के प्रसिद्ध नगर डकर्क (Dunkirk) को जीत लिया जो नेदरलैण्ड्स में स्थित है । स्पेन के युद्ध में इङ्गलैण्ड को एक दो नगरों अथवा द्वीपों की प्राप्ति के अतिरिक्त और कोई लाभ न हुआ । हां, इस युद्ध के कारण समुद्री बेड़ा अवश्य शक्तिवान हो गया जिसकी सहायता से ब्लेक और अन्य अंग्रेजी नाविकों ने अंग्रेजी नहर और रूमसागर के डाकुओं को छिन्न भिन्न कर के अंग्रेजी व्यापार की उन्नति की ।

क्राम्वेल की मृत्यु, १६५८ ई०—बाह्य शासन में सफल होने से क्राम्वेल की ख्याति बहुत बढ़ गई । लोग उस अत्याचार तथा अन्याय को भूलने लगे जो उसने हाल में इङ्गलैण्ड के निवासियों पर किया था । ज्यों २ समय व्यतीत होता जाता था, क्राम्वेल अपनी कठोरता को कम करता जाता था । १६५७ ई० में पार्लियामेन्ट ने उस से राजा बनने और हाउस आफ लॉर्डस् के बुलाने की प्रार्थना (Humble Petition and Advice) की । क्राम्वेल ने हाउस आफ लार्डस् को बुलाना तो स्वीकार

कर लिया, परन्तु राजा बनना स्वीकार न किया। वह जानता था कि यदि मैं राजपद ग्रहण करूँगा तो प्रजा और सेना मेरे विरुद्ध हो जावेगी। क्रॉम्वेल की शक्ति राजा की शक्ति से कम न थी। फिर राजा का पद पाने से उसे कुछ विशेष लाभ न हो सकता था। ३ सितम्बर १६५८ ई० को क्रॉम्वेल की मृत्यु हो गई।

इतिहास में क्रॉम्वेल का स्थान—ऑलिवर क्रॉम्वेल की गणना हम चार्ल्स पञ्चम, चौदहवें लुई अथवा नेपोलियन के साथ नहीं कर सकते क्योंकि उस में इन महान् पुरुषों के गुण विद्यमान न थे। हाँ उसे विलियम तृतीय और वाशिंगटन के साथ अवश्य स्थान दे सकते हैं क्योंकि उसने आकर इन वीरों के समान देश को लड़ाई झगड़ों से मुक्त कर के शान्ति का प्रचार किया। ऑलिवर ने बहुत सी त्रुटियाँ की थीं और कई अनुचित रीतियों से अपना स्वार्थ सिद्ध करने की चेष्टा की थी। उसकी आन्तरिक-शासनप्रणाली से सारे देश में अशान्ति फैल गई थी। उसकी बाह्य शासनप्रणाली से व्यापार को बहुत हानि पहुँची थी और कोष खाली हो गया था। इन कारणों से ऑलिवर स्टुअर्टवंश को इङ्गलैण्ड में पुनः राज्य करने से न रोक सका, परन्तु १७वीं शताब्दि में समुद्री शक्ति को बढ़ानेवाला, धार्मिक स्वतन्त्रता का मार्ग दिखानेवाला और समस्त संसार में इङ्गलैण्ड को विख्यात करने वाला विलियम तृतीय के पश्चात क्राम्वेल ही था।

(स) स्टुअर्टवंश का परावर्तन (१६५८–१६६० ई०)।

रिचर्ड क्रमॅवेल—क्राम्वेल की मृत्यु पर उसका ज्येष्ठ पुत्र रिचर्ड क्राम्वेल महानरक्षक बना। जनता रिचर्ड को उतना न चाहती थी जितना वह उसके पिता को चाहती थी। न रिचर्ड अपने पिता की भाँति प्यूरिटन मत का कट्टर अनुयायी ही था और न अच्छा सेनापति ही था, अतः अंग्रेजी सेना उसके विरोध में थी। बहुत से मनुष्य प्रजातन्त्रराज्य,

क्रॉम्वेल और उसके पुत्र के शासन से उकता गये थे, अत वे स्टुअर्ट वंश के परावर्तन का प्रयत्न कर रहे थे ।

माङ्क की करतूत—यह अवस्था देख कर अङ्गरेजी सेनानायक मॉङ्क, जिसने वुस्टर के युद्ध के पश्चात् स्काटलैण्ड में शान्ति स्थापित की थी, सेना लेकर इङ्गलैण्ड आया और सीधा लन्दन का मार्ग लिया । वहाँ पहुँच कर उसने अपनी सेना की सहायता से पार्लियामेण्ट भङ्ग कर दी और एक और पार्लियामेण्ट बुलाई जिसके सभासद सेना के अधिकार से बाहर थे और जो स्वतन्त्रतापूर्वक अपने विचारों को प्रकट कर सकते थे । नवीन पार्लियामेण्ट ने राजकुमार चार्ल्स को यूरप से बुलाने का प्रस्ताव पास किया । अत चार्ल्स के पास एक प्रार्थनापत्र भेजा गया । इस में लिखा था कि इङ्गलेण्डवासियों की अभिलाषा है कि आप इङ्गलैण्ड आयें और चार्ल्स द्वितीय बन कर राज्य करें ।

ब्रेडा की घोषणा—जिस समय चार्ल्स के पास मॉङ्क और अंग्रेजी पार्लियामेण्ट का प्रार्थनापत्र पहुँचा वह हालैण्ड में ब्रेडा नामक नगर में दुःख के दिन व्यतीत कर रहा था । मॉङ्क के कहने से उसने वहाँ से यह घोषणा की कि इङ्गलैण्ड लौट कर मैं अपने शत्रुओं का अपराध क्षमा कर दूंगा । देश में सब प्रकार से धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित करने का प्रयत्न करूँगा और सैनिकों का वेतन शीघ्र ही दे दूंगा । इङ्गलैण्ड की प्रजा चार्ल्स के इस प्रकार के विचारों से बहुत प्रसन्न हुई । अत जब वह २९ मई सन् १६६० ई० को इङ्गलैण्ड लौटा तो सबों ने आनन्द प्रमोद मनाये ।



अभ्यास ।



(१) ओलिवर क्राम्वेल के चरित्र तथा जीवन का वर्णन संक्षेप रीति से करो। क्या कारण है जो वह स्थायी शासन स्थापित न कर सका ?

(२) क्राम्वेल की विदेशी नीति के मुख्य सिद्धान्त कौन २ थे ? उसने इन सिद्धान्तों का किस सीमा तक अनुकरण किया ?

या

"जो नाम क्राम्वेल ने घर पर पाया वह उस नाम के सामने तुच्छ था जो उसने बाहर पाया"। इस कथन की व्याख्या करो और उदाहरण देकर समझाओ।

(३) उन भिन्न २ शासनप्रणालियों का वर्णन करो जो चार्ल्स प्रथम की मृत्यु तथा चार्ल्स द्वितीय के परावर्तन के बीच में बनीं। ये प्रणालियाँ अधिक समय तक क्यों न ठहरीं।

(४) उन कुरीतियों को होशियारी के साथ समझाओ जो प्रजातन्त्र राज्य, और क्राम्वेल तथा उसके पुत्र के शासनों में निकाली जा सकती हैं। इनकी तुलना उन कुरीतियों से करो जो जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम के शासनों में थीं। यदि तुम दोनों को समान पाते हो तो इसका क्या कारण है जो लोग क्राम्वेल को जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम से अच्छा समझते हैं ?

(५) चार्ल्स द्वितीय का परावर्तन किस प्रकार से हुआ ? मांङ्क ने इस में कितना भाग लिया ?

(६) घरेलू युद्ध के समाप्त होते समय सैनिक शक्ति बहुत बढ़ गई थी। अत बारह वर्ष तक इङ्गलेण्ड के इतिहास में बडी गडबडी फैली रही। क्या तुम भारतवर्ष अथवा किसी अन्य देश के इतिहास से ऐसा ही एक उदाहरण दे सकते हो?

(७) [अ] आलिवर को इतिहास में तुम कौन सा स्थान देते हो? [ब] इस में क्या भेद था जो उसने राजा बनना स्वीकार न किया?

(८) निम्न लिखित पर नोट लिखो —

[अ] रम्प पार्लियामेण्ट, [ब] मिल्टन, [स] हालैण्ड से युद्ध, [द] रिचर्ड क्राम्वेल, [र] प्रथम जहाजी नियम, [ल] माङ्क, [य] चार्ल्स द्वितीय का परावर्तन, [ल] बेरबोंस की पार्लियामेण्ट।

(९) पृष्ठ २४२ का चित्र देखो। जो मनुष्य खडे हैं उनमें क्राम्वेल को पहिचानो। उसके मुख की ओर देखने से प्रतीत होता है कि वह क्रोध कर रहा है ऐसा क्यों?



छब्बीसवां अध्याय।



चार्ल्स द्वितीय, (१६६०—१६८५)।



/ चार्ल्स द्वितीय का चरित्र और उसका समय—चार्ल्स द्वितीय को १४ वर्ष यूरप में बिताने पड़े थे। इस बीच में उसे बहुत कष्ट सहने पड़े। अतः उसने इस बात का दृढ़ विचार कर लिया था कि मैं भविष्य में कभी इङ्गलैण्ड के बाहर न जाऊँगा। यूरप में उसने शतशः



चार्ल्स द्वितीय।

दुराचरण सीख लिये थे। अतः इङ्गलैण्ड लौट कर उस ने दुराचरण और दुर्व्यवहार का आदर्श राष्ट्र के सम्मुख उपस्थित किया। उसकी सभा में मद्यपान बड़े आवेग से होता था। वहां कुटिल स्त्रियाँ भी इकट्ठी रहती थीं जिनके कारण चार्ल्स के आचरण पर बहुत बुरी कालिमा लगती है। इन स्त्रियों में कासिल्मेन (Castle maine) का वैभव सब से श्रेष्ठ है। इस समय के कवि तथा उपन्यासलेखक चार्ल्स के दुष्ट आचरण मित्रों के जीवन पर बड़े चाव

से समालोचना करते हैं । क्रॉम्वेल के राज्य में इङ्गलैण्ड के सब थियेटर बन्द कर दिये गये थे और वे सुप्त तथा मनोविनोद के मार्ग भी रोक दिये गये थे जो धर्म और राजनीति दोनों की दृष्टि से उचित कहे जा सकते हैं। चार्ल्स द्वितीय के लौटने पर अनीति और अनाचार ने इतना जोर पकड़ा कि लोग नङ्गी वेश्याओं का नाच स्टेज पर मन लगा कर देखने लगे तथा अन्य रीतियों से अपनी निर्लज्जता का प्रमाण देने लगे । इन समस्त बातों का एक मुख्य प्रभाव यह पड़ा कि मनुष्यों ने प्यूरिटन जीवन पूर्णतया भुला दिया, परन्तु इङ्गलैण्ड के सौभाग्य से देहातवालों और नगरों की निर्धन जनता पर इन बातों का प्रभाव बहुत कम पड़ा ।

चार्ल्स इन सारे कुकर्मों से अलिप्त न था । वह स्वयं दुराचरण तथा निर्लज्जता का सबसे बुरा उदाहरण था । वह आलसी, स्वार्थपरायण तथा धूर्त भी था । व्यायाम तथा खेल कूद का वह बड़ा प्रेमी था । चार्ल्स अंग्रेजी गिर्जा का अनुयायी था और कथोलिकों पर सदा कृपादृष्टि रखता था, परन्तु प्यूरिटनों के साथ वह बड़ी क्रूरता का व्यवहार करता था। उसमें एक बड़ा दोष यह था कि वह जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम की भांति पार्लियामेण्ट के आधिपत्य में रह कर राज्य न करना चाहता था । परन्तु यह एक अच्छाई की बात थी कि जब पार्लियामेण्ट उससे अनुरोध करती तो वह उसका कहना मान लेता था । यही कारण है जो उस के और पार्लियामेण्ट के बीच अधिक झगड़ा न हुआ । चार्ल्स द्वितीय अपने पिता की भांति धन के लिये पार्लियामेण्ट के सन्मुख हाथ न फैलाना चाहता था । उसकी यह भी इच्छा थी कि मैं अपनी सहायता के लिये एक शक्तिशाली सेना सर्वैव तैयार रक्खूं । समय का परिवर्तन हो रहा था । राजा के महत्व तथा आधिपत्य क्षीण हो चुके थे । उस के महत्व तथा शक्ति के सूर्य का पुन उदय होना असम्भव दिखाई देता था । अत प्रारम्भ में चार्ल्स को विवश पार्लियामेण्ट का आधिपत्य स्वीकार करना पड़ा और उसी के बनाये हुए मार्ग पर चलना पड़ा ।

(अ) आन्तरिक दशा-पार्लियामेन्ट का प्रभुत्व (१६६०—८०)



राजनैतिक प्रबन्ध—बीस वर्ष तक चार्ल्स पार्लियामेण्ट का कुछ न बिगाड़ सका, परन्तु वह उसे नीचा दिखाने की चेष्टा बराबर करता रहा। ब्रेडा की घोषणा के अनुसार उसने सेना का वेतन दे दिया और पार्लियामेण्ट के कहने से सारी सेना को निकाल दिया। केवल दो तीन दस्ते आवश्यकता के लिये रहने दिये। कवेलियर की जागीरें, जो प्रजातन्त्र राज्य के शासन में छीन ली गई थीं, फिर लौटा दी गईं। राजा के दल ने इतना जोर पकड़ा कि मनुष्यों ने क्राम्वेल और आयरटन के शव को खोद कर फाँसी पर लटका दिया। पार्लियामेण्ट ने चार्ल्स के लिये कोई विशेष धन नियत नहीं किया, अत उसे प्रति वर्ष पार्लियामेण्ट में आना पड़ता था और धन की स्वीकृत लेनी पड़ती थी। यह पार्लियामेण्ट की नितान्त भूल थी क्योंकि धन की कमी के कारण राजा को सर्वदा फ्रांस के राजा चौदहवें लुई के सामने हाथ फैलाना पड़ता था। स्टार चेम्बर जैसे न्यायालय पुनर्जीवित न हो सके क्योंकि पार्लियामेण्ट की शक्ति बहुत बढ़ गई थी। लोग निश्चिन्तता के साथ राजा की शासनप्रणाली में त्रुटिया निकालते थे और उनका कोई कुछ न कर पाता था*।

धार्मिक प्रबन्ध, क्लेरेन्डन नियमावली, १६६१—चार्ल्स के धार्मिक प्रबन्ध के कारण प्यूरिटन को बड़े दुःख सहने पड़े। चार्ल्स और सारे कवेलियर अंग्रेजी गिर्जा के अनुयायी थे। क्राम्वेल और

---

*एक फ्रांसीसी दूत ने इस समय घर जाकर अंग्रेजी शासनप्रणाली का वर्णन इन शब्दों में किया-'कहने को इगलैण्ड में राजा शासन करता है परन्तु वहा राजपन की बातें बहुत कम पाई जाती हैं'।

प्यूरिटन उनके शत्रु रह चुके हैं। अत चार्ल्स की प्रथम पार्लियामेण्ट (Cavalier Parliament) ने, जिसमें कवेलियर की सख्या बहुत अधिक थी, प्यूरिटन के विरुद्ध निम्नलिखित चार नियम बनाये जो सब मिल कर चार्ल्स के मन्त्री हाइड* अर्ल आफ क्लेरेण्डन (Earl of Clarendon) के नाम पर क्लेरेण्डन नियमावली (Clarendon Code) कहलाते हैं। यह नियम निम्न लिखित हैं —

(१) कारपोरेशन एक्ट (Corporation Act) जिसके अनुसार प्रत्येक मनुष्य को यह शपथ खानी पड़ती थी कि वह राजा के विरुद्ध कभी शस्त्र ग्रहण न करेगा और सदा अग्रेजी गिर्जा का अनुयायी बना रहेगा। जो कोई शपथ खाना स्वीकार न करता वह म्यूनिसिपेलिटी का सभासद न बन सकता था।

(२ एक्ट आफ यूनीफार्मिटी (Act of Uniformity) जिसके अनुसार प्रत्येक पादरी को अङ्गरेजी प्रार्थनापुस्तक पर चलने की शपथ खानी पड़ती थी। दो सहस्र पादरियों ने शपथ खाना स्वीकार न किया। अत चार्ल्स ने उनकी जागीरें छीनकर उन्हें निकाल दिया।

(३) फाइव माइल एक्ट Five Mile Act) जिसके अनुसार उन पादरियों को नगर के पाच मील आने की आज्ञा न मिलती थी जो दूसरे नियम को मानने से मुह मोडते थे।

(४) कन्वेण्टिकल एक्ट (Conventicle Act) जिसके अनुसार अङ्गरेजी गिर्जा के अनुयायियों की सभाओं को छोड़ कर शेष धर्मों की सभायें अनुचित ठहराई गईं।

---

* हाइड वही मनुष्य था जो प्राण्ड रिमान्सट्रेन्स के पास होते समय फाकलैण्ड, के साथ राजदल मे जा मिला था। हाइड एक विख्यात इतिहासलेखक भी था। इसने उस समय का इतिहास बड़े चाव से लिखा है।

क्लेरेण्डन की नियमावली के कई बुरे प्रभाव पड़े। उसके कारण प्यूरिटन मत का तो काल ही आ गया था। प्यूरिटन अङ्गरेजी गिर्जा के विरोधी हो गये और डिसेण्टर्स (Dissentors) के नाम से पुकारे जाने लगे। इस नियमावली ने अंग्रेजी व्यापार, साहित्य तथा कलाकौशल को बड़ी हानि पहुचाई। प्यूरिटनदल के शक्तिहीन हो जाने से पार्लियामेण्ट पर्यों से दुर्व्यवहार करने लगी। परन्तु इन नियमों से दो मुख्य लाभ भी हुये। प्रथम, इनके कारण अंग्रेजी उपनिवेशों ने बड़ी उन्नति की। द्वितीय, गिर्जा में फूट पड़ जाने से धार्मिक स्वतन्त्रता बनी रही और विज्ञान तथा भौतिक ज्ञान ने बड़ी उन्नति की।

क्लेरेण्डन का अधःपतन, १६६७ ई०—सन् १६६७ ई० तक क्लेरेण्डन चार्ल्स का सम्मतिदाता तथा मन्त्री बना रहा। इसके पश्चात् उसका पतन हो गया। क्लेरेण्डन चतुर तथा योग्य नीतिज्ञ था। उसकी हार्दिक इच्छा थी कि राजा और पार्लियामेण्ट में मतभेद न हो, परन्तु वह इस में सफल न हुआ और वह उस ख्याति को प्राप्त न कर सका जिसका वह अधिकारी था। इसके कई कारण हैं। उसके समय में इङ्गलैण्ड पर दो विशेष आपत्तियाँ आईं। प्रथम, घोर महामारी (Great Plague) जिसने सन् १६६५ ई० में लन्दन तथा अन्य नगरों में सहस्रों घर उजाड़ दिये। द्वितीय, प्रचण्ड अग्नि (Great Fire) जो तीन दिन तक बराबर जलती रही और लन्दन के दोतियाई भाग को जला कर राख कर दिया। इसके एक वर्ष पश्चात् हालैण्डवासियों ने इङ्गलैण्ड पर आक्रमण किया जिसके कारण क्लेरेण्डन की बड़ी बदनामी हुई। यही क्लेरेण्डन के पदच्युत होने के कारण हैं।

केबल मन्त्रिमंडल, १६६७—७३ ई०—क्लेरेण्डन को निकाल कर चार्ल्स ने पाँच मंत्री नियुक्त किये जिनके नामों के पहिले

अक्षर मिलकर शब्द 'केबल (Cabal) * बनाते हैं। अत यह मन्त्रिमण्डल 'केबल मन्त्रिमण्डल' कहलाता है। ये मन्त्री क्लिफर्ड (Clifford), आरलिङ्गटन (Arlington), बकिंघम (Buckingham), आशले (Ashley) और लॉडरडेल (Lauderdale) थे। प्रथम दो मन्त्री केथोलिक थे और अन्तिम तीन अंग्रेजी गिर्जा को मानते थे। चार्ल्स इन पाँचों को अपने वश में रखता और उनसे जो चाहता करा लेता था। इनके शक्तिहीन होने के कारण सन् १६७२ ई० में चार्ल्स ने एक अनुचित कार्य्य किया।

धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा, १६७२ ई०— चार्ल्स और फ्रॉस के राजा चौदहवें लुई में बड़ी मित्रता थी। अंग्रेजी राजा फ्रॉसीसी राजा से मनमाना धन ले रहा था। उसके कहने से उसने कैथोलिकों को धार्मिक स्वतन्त्रता देने की ठान ली। अत उसने सन् १६७२ ई० में यह घोषणा (Declaration of Indulgence) की कि जो नियम पोप के अनुयायी तथा डिसेण्टर के विरुद्ध अभी तक बने हैं उन का भविष्य में अनुकरण न किया जावेगा। कैथोलिक के अतिरिक्त प्यूरिटन ने इस नियम से बड़ा लाभ उठाया, परन्तु प्यूरिटन कैथोलिकों को स्वतन्त्रता दिये जाने के प्रतिकूल थे। अत चार्ल्स की घोषणा से उन्हें अधिक प्रसन्नता न हुई। उन्होंने और अंग्रेजी गिर्जा के अनुयायियों ने चार्ल्स का विरोध बड़े आवेगपूर्ण किया।

टेस्ट एक्ट, १६७३ ई०— अङ्गरेजी पार्लियामेण्ट ने भी चार्ल्स का विरोध किया। उसने पूर्व लिखित घोषणा को रद्द करके यह नियम (Test Act) बना दिया कि जो लोग अङ्गरेजी गिर्जा के सिद्धान्तों को न मानेंगे अर्थात् सब डिसेण्टर और केथोलिकगण पद और जागीरें न पावेंगे। इस नियम का यह फल हुआ कि क्लिफर्ड तथा आरलिङ्गटन को जो रोमन

---

* यह शब्द यहूदी भाषा के शब्द 'केबाला' (Cabala) से निकला है जिसका अर्थ है 'ज्योतिष तथा अद्भुत बातों का ज्ञान'।

कैथोलिक थे। मन्त्रिपद त्याग देना पड़ा, राजकुमार जेम्स भी कैथोलिक होने के कारण जलसेनापतित्व से हटा दिया गया। चार्ल्स ने बचे हुये मन्त्रियों को भी निकाल दिया। इस प्रकार केबल मन्त्रिमण्डल का अन्त हो गया।

डैन्बी का मन्त्रित्व, १६७३–७८ ई०—टैस्ट एक्ट के बनने से चार्ल्स ने यह शिक्षा प्राप्त की कि अंग्रेजी पार्लियामेण्ट कैथोलिक को स्वतन्त्रता देने के लिये कभी अग्रसर न होगी। परन्तु वह पार्लियामेण्ट को अभी तक तुच्छ समझता था। चार्ल्स ने जो नवीन मन्त्री नियुक्त किया, वह राजा और पार्लियामेण्ट के बीच सन्धि कराना चाहता था। यह पुरुष सर टामस आस्बोर्न अर्ल ऑफ डैन्बी (Earl of Danby) था। डैन्बी यार्क प्रान्त का निवासी था। वह अंग्रेजी गिर्जा का कट्टर अनुयायी और डिसेण्टर तथा कैथोलिक दोनों का परम शत्रु था।

पोपिश षड्यंत्र, १६७८ ई०—१६७८ में डैन्बी को एक भयङ्कर घटना का सामना करना पड़ा। १६७२ ई० से कैथोलिक के विरुद्ध देश में एक लहर उठ रही थी। १६७८ ई० में टाइटस ओट्स (Titus Oates) नामक एक मनुष्य ने यह प्रसिद्ध कर दिया कि पोप के अनुयायी वर्तमान काल में चार्ल्स के विरुद्ध एक षडयन्त्र रच रहे हैं और उसके लघु भ्राता जेम्स, ड्यूक ऑफ यॉर्क को राजा बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। सब ने ओट्स की कहानी सत्य जानी। लोग कैथोलिक के भय से शस्त्र लेकर निकलने लगे। कुछ दिनों पश्चात् जिस मेजिस्ट्रेट ने ओट्स के बयान लिये थे, उसका शव एक झाड़ी में पड़ा मिला। लोगों ने इस से तुरन्त यह परिणाम निकाल लिया कि यह करतूत पोप के अनुयायियों की है। वास्तव में पोपिश षडयन्त्र की कहीं स्थिति न थी। परन्तु जब ओट्स के कहने से डैन्बी ने ड्यूक आफ यार्क के सेक्रेटरी कोलमेन (Coleman) के घर की खोज की तो कुछ ऐसे कागज हाथ लगे जिन से उनके स्वामी

तथा चौदहवें लुई के बीच एक नये षड्यन्त्र का पता चला। इन दोनों में इङ्गलैण्ड के कैथोलिक को स्वतन्त्र करने तथा प्रोटेस्टेण्ट देशों को पराजित करने के विषय में पत्र व्योवहार हुआ था। वही पत्र कोल्मेन के कागजों में पकड़े गये। इस से पहले भी ड्यूक आफ यार्क के कमरे में एक दिन रात्रि के समय पोप के भेजे हुये पुजारियों (Jesuits) तथा इङ्गलैण्ड के कैथोलिकों के बीच इस विषय पर सम्मेलन हो चुका था। अत डैन्बी और पार्लियामेण्ट दोनों जेम्स के विरुद्ध हो गये।

डैन्बी का पतन, मंत्रियों की जिम्मेदारी, १६७८ ई०— इस के पहले कि डैन्बी ड्यूक आफ यार्क के विरुद्ध कुछ करे पार्लियामेण्ट ने उस पर अभियोग चलाने की व्यवस्था दी। डैन्बी ने चार्ल्स के कहने से लुई के साथ एक सन्धिपत्र लिखा था जिस में फ्रास के राजा ने चार्ल्स को धन भेजने का प्रण किया था। अत पार्लियामेण्ट डैन्बी से अप्रसन्न थी। डैन्बी ने चार्ल्स से कह सुन कर कवेलियर पार्लियामेण्ट को भङ्ग कर दिया जिसकी स्थिति १८ वर्ष से बराबर बनी हुई थी। इसके निकाले जाने से अंग्रेजी शासन का यह नियम बन गया कि मन्त्री पार्लियामेण्ट के आधीन रहेंगे और अपनी कूटनीति के उत्तरदाई होंगे। इस प्रकार वह बात प्राप्त हो गई जो बकिंघम, स्ट्रेफर्ड और लॉड की हत्या करने पर भी प्राप्त न हो सकी थी।

ह्विग और टोरी— कवेलियर पार्लियामेण्ट के भङ्ग होने के पश्चात् चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में तीन पार्लियामेण्टें और बैठीं। इन तीनों में प्रजापक्षवालों अर्थात् ह्विग (Whigs) * का बड़ा जोर रहा

* ह्विग शब्द स्काटलैण्ड वालों की भाषा का है। इसका अर्थ इस भाषा में "खट्टा दूध" है। आरम्भ में पश्चिमीय स्काटलैण्ड के विद्रोहियों को लोग इस नाम से पुकारते थे। इसी प्रकार टोरी शब्द आयर-

और राजदल अर्थात् टोरी (Tories) बहुत कम संख्या में निर्वाचित होकर आये। प्रजादल का नेता चार्ल्स का निकाला हुआ मन्त्री आश्ले था जिसे अर्ल ऑफ शेफ्ट्सबरी (Shaftesbury) की उपाधि मिली थी। शेफ्ट्सबरी वीर तथा योग्य पुरुष था। उसने शीघ्र मध्यम श्रेणी के मनुष्यों को इकट्ठा करके एक शक्तिशाली दल बना लिया और पार्लियामेण्ट में चार्ल्स के मित्रों का सामना करने लगा। पार्लियामेण्ट में ह्विग की संख्या अधिक थी, अत शेफ्ट्सबरी का और भी अधिक जोर था।

एक्सक्ल्यूज़न बिल १६७६--८१ ई०—१६७९ ई० में शेफ्ट्सबरी ने राजा की शक्ति कम करने के लिये यह-नियम (Habeas Corpus Act) बनवादिया कि जिन लोगों को राजा बन्दी करेगा उनके अभियोगों का न्याय तुरन्त होगा। स्टुअर्ट राजा जॉन इलियट जैसे निर्दोष मनुष्यों को कारागृह मे डाल रखते थे और उनके अभियोग का निर्णय वर्षों तक न हो पाता था। परन्तु भविष्य में ऐसा न हो सकता था। इसके पश्चात शेफ्ट्सबरी ने जेम्स ड्यूक ऑफ यॉर्क के विरुद्ध एक नियम बनाने का प्रयत्न किया। राजपद पाने पर चार्ल्स ने अपना विवाह पुर्तगाल की राजकुमारी कैथिरन आफ ब्रेगेन्जा (Catherine of Braganza) के साथ करलिया था, परन्तु अभी तक उसके कोई पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ था, पार्लियामेण्ट को चिन्ता उत्पन्न हुई कि

रैण्ड की भाषा का है। इसका अर्थ हे 'डाकू' और 'लुटेरा'। आरम्भ में प्रजादलवाले अपने शत्रुओ को इस नाम से पुकारते थे। इसका यह अर्थ था कि वे आयरलेण्ड के डाकुओं की भाति कुकर्मी और दुराचारी हैं। इसी प्रकार चार्ल्स के दलवाले प्रजादलवालों को 'ह्विग' कहकर पुकारते थे। इसका यह आशय था कि वे स्काटलैण्ड के विद्रोहियों की भाति चार्ल्स की जान लेना चाहते हैं। परन्तु कुछ समय पश्चात् लोग इन नामों को आदरभाव से देखने लगे।

कहीं चार्ल्स की मृत्यु पर कैथोलिक मत का अनुयायी जेम्स राजा न बने। कोलमेन के पत्रों ने देश को उसका शत्रु पहिले ही बना दिया था। अब शेफ्ट्सबरी ने यह बिल (Exclusion Bill) पार्लियामेण्ट के सामने रक्खा कि चार्ल्स की मृत्यु पर जेम्स के स्थान पर ड्यूक आफ मॉनमथ (Duke of Monmouth, जिसे वह चार्ल्स का पुत्र बताता था, राजा बनाया जावे। मॉनमथ प्रोटेस्टेण्ट धर्म को मानता था और सुन्दर भी था। दो वर्ष तक बराबर इस बिल पर वादविवाद होता रहा और तीन ह्विग पार्लियामेण्टों ने उस पर विचार किया, परन्तु तीनों ने उस को अस्वीकृत किया। ह्विग नेताओं में एकता न थी। अंग्रेजी राष्ट्र युद्ध के विरुद्ध था, अत उसने एक्सक्लूजन बिल पास करने की अधिक चेष्टा न की। मानमथ स्वय भला पुरुष न था। यदि शेफ्ट्सबरी उसके स्थान पर किसी अन्य योग्य पुरुष को राजा बनाने का प्रयत्न करता तो सम्भव था वह अपने उद्देश में सफल होता। मार्च १६८१ ई० में चार्ल्स ने अन्तिम ह्विग पार्लियामेण्ट भङ्ग करदी।

(व) आन्तरिक दशा--चार्ल्स का प्रभुत्व (१६८१--८५)।

ह्विगदल की पराजय—ह्विग पार्लियामेण्ट को भङ्ग करके चार्ल्स द्वितीय ने प्रजा पर मनमाना अत्याचार किया। लुई बराबर उसे धन भेज रहा था। अत ५ वर्ष तक चार्ल्स ने पार्लियामेण्ट न बुलाई और मन्त्रियों के बिना राज्य किया। उसके अत्याचार तथा अन्याय का बाधक कोई न था। चार्ल्स ने ह्विगदल के नेताओं को दण्ड दिया। शेफ्ट्सबरी और मॉनमथ दोनों देश से निर्वासित कर दिये गये। रसल और सिडनी को, जो इन नेताओं के पश्चात् ह्विगदल के मुख्य सदस्य थे, प्राणदण्ड मिला। इस दल के समाचारपत्र बन्द कर दिये गये और इसके सदस्यों से सभा करने तक का अधिकार छीन लिया गया। कहावत है कि मर्ता क्या न करता। जब ह्विगदलवालों से और कुछ न बन पड़ा तो उन्हों ने चार्ल्स और

जेम्स दोनों को वध करने के अभिप्राय से एक षडयन्त्र (Ryehouse Plot) रचा, परन्तु चार्ल्स को उसकी सूचना मिल गई। उसने विद्रोहियों को कड़ा दण्ड दिया, अत कुछ काल के लिये ह्विगदल दब गया और टोरीदल उन्नति करने लगा, परन्तु आठ ही वर्ष के भीतर ह्विगदल का सितारा इतने प्रकाश के साथ उदय हुआ कि वह वर्षों तक अस्त न हुआ।

चार्ल्स का दुर्व्यवहार—ह्विगदल को पराजित कर के चार्ल्स ने प्रजा के साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया। उसने डिसेंटर्स पर जितना अत्याचार किया उतना आर्चबिशप-लॉड ने भी प्यूरिटन पर न किया था। पोप के अनुयायियों के साथ अच्छा व्यवहार होने लगा। चार्ल्स ने कई नगरों के चार्टर छीन लिये और कई के चार्टर इस प्रकार बदल दिये कि उनकी राजसभाओं का चुनाव प्रजा की ओर से होने के बदले सरकारी कर्मचारियों की ओर से होने लगा। ये कर्मचारी राजा की ओर से नियत होते थे, अत नगरों की राजसभायें उसकी सभी प्रकार से दासी हो गईं। ऐसा अनुचित कार्य अभी तक किसी अङ्गरेजी राजा ने न किया था परन्तु चार्ल्स के भाई ने, राजा बनने पर, स्वेच्छाचारिता में अपने भाई को भी मात कर दिया।

(स) विदेशी घटनायें—चार्ल्स की वाह्यनीति।

कैथरिन आफ़ ब्रेगेन्ज़ा से विवाह, १६६१ ई०—चार्ल्स द्वितीय पार्लियामेण्ट के आधिपत्य में न रहना चाहता था। अत वह उस से धन बहुत कम माँगता था। अधिकांश उसका कार्य्य लुई के भेजे हुये धन से चलता था। लुई हालैण्ड जीतना चाहता था और फ्रांसीसी सीमा को राइन नदी तक पहुचाना चाहता था। इङ्गलैण्ड हालैण्ड का प्राचीन शत्रु था, अत चार्ल्स और लुई की मित्रता और भी दृढ़ बनी हुई थी। उसने अपनी बहिन का विवाह एक फ्रांसीसी राजकुमार से कर दिया और लुई के कहने से अपना विवाह पुर्तगाल की राजकुमारी कैथरिन ऑफ

ग्रोन्ज़ा (Catherine of Braganza) के साथ कर दिया। पुर्तगाल के राजा ने जहेज में चार्ल्स को बम्बई तथा टञ्जीर दिये। टञ्जीर को चार्ल्स ने स्वयं अपने पास रक्खा और बम्बई को १० पौण्ड प्रति वर्ष पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी को उठा दिया। इस विवाह से इङ्गलेण्ड को एक मुख्य लाभ यह हुआ कि इङ्गलेण्ड और पुर्तगाल मित्र हो गये। इस मित्रता के कारण नेपोलियन के समय में अंग्रेजी सेना ने पुर्तगाल में होकर नेपोलियन की सेनाओं से स्पेन में सुगमता से युद्ध किया।

डंकर्क की बिक्री—सन् १६६२ ई० में चार्ल्स ने डकर्क नगर, जो क्रॉम्वेल ने स्पेन से जीता था, लुई के हाथ बेच दिया। इस से अङ्गरेजी व्यापार को बड़ी हानि उठानी पड़ी क्योंकि डन्कर्क व्यापार के लिये बड़ा उपयोगी था। विद्वानों का मत है कि क्लेरेण्डन ने लुई से घूस लेकर चार्ल्स को इस नगर के बेचने की सम्मति दी थी।

हालैण्ड का द्वितीय युद्ध, १६६५–६७ ई०—डकर्क के बेचे जाने के ३ वर्ष पश्चात् चार्ल्स द्वितीय ने लुई के कहने से हालैण्ड से युद्ध आरम्भ कर दिया। हालैण्डवाले प्रथम युद्ध को अभी नहीं भूले थे। डच व्यापारी अंग्रेजी इस्ट इण्डिया कम्पनी और अफ्रीकन कम्पनियों को बहुत हानि पहुँचा रहे थे और हिन्दुस्तानी राजाओं को अंग्रेजों के विरुद्ध बहका रहे थे। दोनों देशों के नाविक दक्षिणी अमेरिका में गाइना विजय करने का प्रयत्न कर रहे थे। लुई चाहता था कि हालैण्ड इङ्गलेण्ड से युद्ध करने से निर्बल हो जाय जिस से उसे हालेण्ड विजय करने में सुभीता हो। यही अङ्गरेजों और डच के दूसरे युद्ध के कारण थे। दो वर्ष तक अंग्रेजी जल सेनानायक ड्यूक ऑफ यॉर्क शत्रु से युद्ध करता रहा। अन्त में डच जहाज टेम्स नदी के मार्ग से मेडवे (Medway) तक चले आये और लन्दन पर गोले बरसा कर लौट गये। अङ्गरेजी सरकार को बड़ी लज्जा उठाना पड़ी। ऐसी लज्जा उसे बहुत कम अवसरों पर उठानी पड़ी है।

इधर दो सिहों में युद्ध हो रहा था उधर एक चतुर तथा स्वार्थी लोमड़ी अपना स्वार्थ सिद्ध करने का प्रयत्न कर रही थी। हालैण्ड और इङ्गलैण्ड को युद्ध में लीन देख कर लुई ने नेदरलेण्डस् पर आक्रमण कर दिया। हालैण्ड को विवश होकर चार्ल्स से सन्धि की प्रार्थना करनी पड़ी। दोनों देशों में ब्रेडा नगर में सन्धि हो गई। इङ्गलेण्ड को पूर्वीय द्वीपों को छोड़ देना पड़ा। इसके बदले में उसे उत्तरीय अमेरिका के पूर्वीय किनारे पर तीन उपनिवेश मिले जिनको मिलाकर न्यूयार्क का प्रान्त बना दिया गया।

हालैन्ड, इङ्गलैन्ड और स्वीडेन की सन्धि, १६६८ ई०–लुई की चाल देख कर यूरप के समस्त देश चौकन्ने होगये। इधर तो वह हालैण्ड से मित्रता की गाँठ बाँधे हुये था उधर वह पश्चिमी नेदरलैण्डस् पर आक्रमण कर रहा था जिससे उस देश को जीत कर हालैण्ड पर हाथ साफ करे। यह दशा देख कर युद्ध शक्ति को समान रखने की इच्छा से इङ्गलेण्ड, हालैण्ड तथा स्वीडेन ने जिन्हें लुई से विशेष भय था, यह बात ठहराई कि हम तीनों मिल कर लुई के अत्याचारों का भरसक अन्त करेंगे और उसको राइन की ओर कदापि न बढ़ने देंगे।

डोवर की गुप्त सन्धि, १६७० ई०–सन् १६६८ ई० की सन्धि से हालैण्ड को किसी सीमा तक शान्ति मिली। परन्तु फ्रांस का राजा चतुर तथा विद्वान पुरुष था। वह कठिन से कठिन काम सरलतापूर्वक कर सकता था। उसने अपनी आशाओं पर पानी पड़ते देख चार्ल्स द्वितीय को अपनी ओर मिलाने की इच्छा से एक अद्भुत जाल फैलाया। उसने उसे यह लालच दिया कि हालैण्ड, फ्रांस तथा इङ्गलैण्ड दोनों का शत्रु है। अतः यदि दोनों सम्मिलित होकर यत्न करें तो हालैण्ड को पराजित करना और परस्पर बाँट लेना कठिन कार्य नहीं है। चार्ल्स लुई की बातों में आगया और हालैण्ड से शत्रुता करली। स्वीडेन भी लुई की बातों में आगया और हालैण्ड निवासियों का साथ छोड़ दिया।

इस प्रकार लुई की चाल से सन् १६६८ ई० की सन्धि का दो ही वर्ष में अन्त होगया। चार्ल्स ने उसके साथ डोवर के स्थान पर एक सन्धिपत्र लिखा जिसकी प्रतिज्ञायें इस प्रकार थीं—(१) चार्ल्स और लुई मिल कर हालैण्ड से युद्ध करेंगे। इसके बदले में चार्ल्स को आधा हालैण्ड तथा व्यय के लिये बहुत सा धन मिलेगा। (२ चार्ल्स अवसर पाकर पोपानुयायी होने की घोषणा करेगा और कैथोलिकों पर कृपाभाव रक्खेगा। यदि इङ्गलैण्डवासी विद्रोह करेंगे, तो लुई उन्हें परास्त करने को सेना भेजेगा। इन प्रतिज्ञाओं को चार्ल्स से स्वीकार कराने में उसकी बहिन, डचेज ऑफ आर्लियन्स (Dutchess of Orlians ने बड़ा परिश्रम किया था। इस सन्धिपत्र का ज्ञान केवल मन्त्रिमण्डल के दो कैथोलिक मन्त्रियों के सिवाय किसी को भी न था। इस प्रतिज्ञा को गुप्त रखने के लिये एक झूठा प्रतिज्ञापत्र भी लिखा गया था। इस में द्वितीय प्रतिज्ञा का लेशमात्र भी वर्णन न था। चार्ल्स भली भांति जानता था कि यदि इङ्गलैण्डवासियों को इसका पता लग जावेगा तो उसके प्राण सङ्कट में पड जावेंगे।

हालैन्ड का तीसरा युद्ध, १६७२–७४ ई०--मूर्ख अंग्रेजी राजा आंखें बन्द किये हुये लुई की आज्ञा पालन कर रहा था। अंग्रेजी राष्ट्र तथा पार्लियामेण्ट की उसे लेशमात्र भी चिन्ता न थी। आश्चर्य है कि चार्ल्स ने सन् १६६० ई० की घटना को इतने शीघ्र भुला दिया। उसने लुई से मिल कर हालैण्ड से दो वर्ष तक युद्ध किया। जब हालैण्ड वासियों से कुछ करते न बना तो उन्होंने बांध खोल दिये जिससे समुद्र के जल ने देश में प्रवेश किया। फ्रांस की सेनाओं को हालैण्ड छोड कर भाग जाना पडा। चार्ल्स ने पार्लियामेण्ट के जोर देने पर हालैण्ड से सन्धि करली। इस युद्ध से हालैण्ड की शक्ति पूर्णत: घट गई। उसने व्यापार में भाग लेना कम कर दिया जिसके कारण अङ्गरेजी व्यापार ने अत्यन्त उन्नति की।

विलियम और मेरी का विवाह—सन् १६७४ ई० के पश्चात् चार्ल्स की वाह्यनीति का वर्णन लगभग समाप्त हो जाता है। इसके पश्चात् देशी झगड़ों में संलग्न होने के कारण चार्ल्स ग्यारह वर्ष तक विदेशी बातों में भाग न ले सका। इस काल में एक विवाह अवश्य हुआ जो इङ्गलैण्ड के इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है। चार्ल्स के भाई जेम्स के दो पुत्रियां थीं। एक मेरी (Mary), दूसरी ऐन् (Anne)। चार्ल्स ने पार्लियामेण्ट के कहने से मेरी का विवाह हालेण्ड के राजकुमार विलियम से कर दिया। राजकुमार विलियम चार्ल्स द्वितीय की बहिन मेरी का पुत्र था और यूरप के प्रोटेस्टेण्ट राजाओं का नेता था। अतः पार्लियामेण्ट को विश्वास था कि यदि चार्ल्स और जेम्स के सन्तान न होगी तो जेम्स की मृत्यु पर इङ्गलैण्ड का राज्य एक प्रोटेस्टेण्ट राजकुमार को मिलेगा। वास्तव में हुआ भी ऐसा ही।

(द) विदेशी घटनायें: व्यापार और उपनिवेशों की बढ़ती।

भारतवर्ष में अंग्रेज़ी फेक्ट्रिया—एमबोयना के वध के पश्चात् अंग्रेजों ने पूर्वी इण्डीज को छोड़ कर भारतवर्ष की ओर पग बढ़ाया और हालेण्ड के दूसरे युद्ध के समाप्त होने पर पूर्वी इण्डीज से बिल्कुल निश्चिन्त हो गये। उन्हों ने दक्षिणी किनारे पर कई फेक्ट्रिया बनाईं और मदरास, बम्बई तथा कलकत्ते में गढ़ भी बना लिये। मुख्य २ फेक्ट्रिया चार थीं—

(१) सूरत	सन् १६१२ ई०।
(२) मदरास	सन् १६३९ ई०।
(३) बम्बई	सन् १६६१ ई०।
(४) कलकत्ता	सन् १६९० ई०।

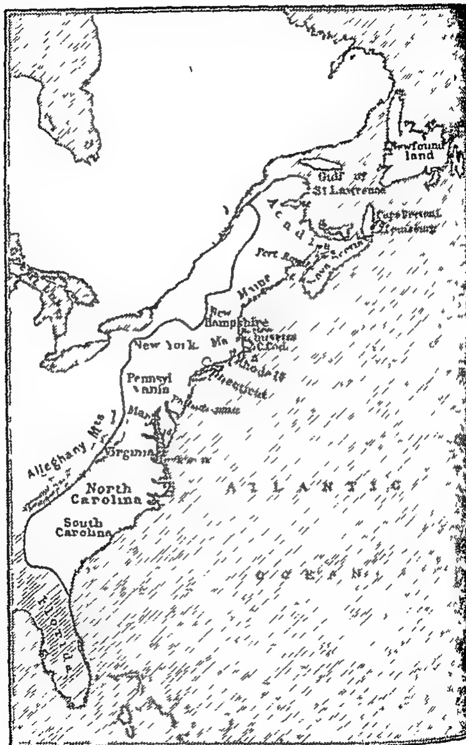
चार्ल्स द्वितीय का शासन भारतवर्ष की फेक्ट्रियों के अतिरिक्त

उपनिवेशों के लिये भी बहुत प्रसिद्ध है। उत्तरी अमेरिका के पूर्वी किनारे पर हालैण्ड ने तीन नई बस्तियाँ बसा ली थीं। परन्तु हालैण्ड के दूसरे युद्ध के अन्त में यह तीनों बस्तियाँ अङ्गरेजों को मिल गईं। इस प्रकार पूर्वी किनारे के समस्त उपनिवेश अङ्गरेजों के अधिकार में आ गये। सब मिला कर १३ उपनिवेश थे, इनके नाम निम्नांकित हैं—

(१) वर्जीनिया	सन् १६०७ ई० ।
(२) मेन	सन् १६१५ ई० ।
(३) मेसाचुसेट्स	सन् १६२८ ई० ।
(४) मेरीलैण्ड	सन् १६२९ ई० ।
(५) कनेक्टीकट	सन् १६३३ ई० ।
(६) न्यूहेम्पशायर	सन् १६३५ ई० ।
(७) रहोड द्वीप	सन् १६४७ ई० ।
(८) उत्तरी करोलिना	सन् १६६३ ई० ।
(९) दक्षिणी करालिना	सन् १६६३ ई ।
(१०) न्यूयार्क	सन् १६६४ ई० ।
(११) न्यूजर्मी	सन् १६६४ ई० ।
(१२) डेलावेयर	सन् १६६४ ई० ।
(१३) पेनसिलवेनिया	सन् १६८३ ई० ।

चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु, १६८५ ई०-फर्वरी सन् १६८५ ई० में चार्ल्स द्वितीय बीमार पड़ा और कुछ दिवस उपरान्त इस असार संसार से बिदा हो गया। चार्ल्स द्वितीय ने स्टुअर्टवंश की दूसरी स्वच्छन्दता तथा अत्याचार की नीव डाली थी। स्वतन्त्रता के मार्ग पर आगे बढ़ने के बदले अङ्गरेजी राष्ट्र पीछे जाता दिखाई देता था। जेम्स द्वितीय ने आकर चार्ल्स की नीति से पूरा २ लाभ उठाया।




Newfound land
St Lawrence
Maine
New Hampshire
New York
Pennsyl vania
Alleghany Mts
North Carolina
South Carolina
A T L A N T I C

अंग्रेजी उपनिवेश।

अभ्यास।

(१) 'ह्विग' और 'टोरी' शब्दों के क्या अर्थ हैं ? चार्ल्स द्वितीय के समय में राजनैतिक दलों के ये नाम कैसे पड़े ? इस से पूर्व इनके क्या नाम थे ?

(२) एक्सक्लूजन बिल क्या था ? ह्विग दल इसके पास कराने का क्यों प्रयत्न कर रहा था ? भला यह बिल पास क्यों न हुआ ?

(३) नीचे चार्ल्स द्वितीय के शासन की कुछ घटनायें दी हुई हैं। इनकी सहायता से इस राजा के चरित्र तथा व्यवहार के ऊपर १० पंक्तियाँ लिखो —

[अ] डोवर का गुप्त सन्धिपत्र सन् १६७० ई०, [ब] धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा, सन् १६७२ ई०, [स] चारटरों का बदला जाना सन् १६८३ ई०।

(४) सत्रहवीं शताब्दि के अन्त में इङ्गलैण्ड तथा हालैण्ड के बीच युद्ध होने के क्या कारण थे ? इन युद्धों से इङ्गलैण्ड को क्या लाभ हुआ ?

(५) क्लेरेण्डन कौन था ? इसकी बनाई हुई नियमावली से इङ्गलैण्ड को क्या लाभ तथा हानि हुये ?

(६) प्रजातन्त्र राज्य तथा क्रॉम्वेल के समय के जीवन का ध्यान करो और सोचो कि चार्ल्स द्वितीय के राजा बनने से इस में क्या २ परिवर्तन हुये ?

(७) निम्न लिखित पर नोट लिखो —[अ] डेन्बी, [ब] पोपिश षड्यन्त्र, [स] डोवर की गुप्त सन्धि, [ट] प्रचण्डअग्नि, [र] टस्ट ऐक्ट, [ल] हालैण्ड का प्रथम युद्ध।

(८) चार्ल्स द्वितीय का वृत्तान्त तुम पढ चुके हो। सोचो कि उसके शासन के चार सिद्धान्त कौन से थे ? इनको ध्यान में रख कर अगला अध्याय पढ़ो।

सत्ताईसवां अध्याय।

जेम्स द्वितीय (१६८५–१६८८)

चरित्र—जेम्स द्वितीय अपने भाई से कई बातों में अच्छा था। वह बुद्धिमान, साहसी तथा चतुर था। वह रणविद्या में पूर्णतया कुशल था क्योंकि वह इङ्गलैण्ड का जल सेनापति रह चुका था और हालैण्ड के विरुद्ध कई बार युद्ध कर चुका था। स्टुअर्टवंश के प्रथम तीन राजाओं की भांति जेम्स द्वितीय भी स्वयं को ईश्वर का अंश मानता था। अपने भ्राता के राजकाल में वह चौदहवें लुई तथा अन्य कैथोलिकों के साथ षड्यन्त्र कर चुका था। उसने यह भी अनुभव कर लिया था कि



जेम्स द्वितीय।

एक शक्तिशाली सेना के बिना पार्लियामेण्ट तथा अङ्गरेजी जाति पर आधिपत्य प्राप्त करना असम्भव है। अतः उसने अपनी शासनप्रणाली के चार सिद्धान्त रक्खे। प्रथम, अंग्रेजी राष्ट्र पर अत्याचार करना। दूसरे, एक शक्तिशाली सेना को सर्वदा तैयार रखना। तीसरे, कैथोलिकों पर दया करना। चौथे, चौदहवें लुई के साथ मित्रता स्थिर रखना। इन्हीं चार सिद्धान्तों का चार्ल्स द्वितीय ने भी अनुकरण किया था।

(अ) जेम्स का प्रारम्भिक काल।

टोरी पार्लियामेन्ट—आरम्भ में जेम्स द्वितीय की शक्ति बहुत बढ़ी हुई थी। वही मंत्रियों तथा सेनाध्यक्षों को नियुक्त करता था। ह्विगदल बिल्कुल निर्बल था और टोरीदल राजा का साथ देने के लिये प्रस्तुत था। पार्लियामेण्ट के सदस्य भी जेम्स के कहने पर चलते थे क्योंकि उनमें ह्विगदल के सदस्य बहुत कम थे। पार्लियामेण्ट ने जेम्स को पर्य्याप्त धन स्वीकृत किया जिससे वह लुई पर निर्भर न रहे। तिस पर भी जेम्स ने लुई की मित्रता न त्यागी। पार्लियामेण्ट ने पोपिश षड्यंत्र का उपद्रव मचानेवालों को कड़ा दण्ड दिया। अकेले टाइटस ओट्स पर तीन दिन के अन्दर तीन हजार चार सौ चाबुक पड़े, फिर भी ओट्स का स्वभाव न सुधरा।

मॉनमथ का विद्रोह, १६८५ ई०—अभी जेम्स को सिंहासनारूढ़ हुये अधिक समय न हुआ था कि उसे मॉनमथ के विद्रोह का सामना करना पड़ा। शेफ्ट्सबरी ने मॉनमथ को राजा बनाने का बड़ा प्रयत्न किया था, परन्तु चार्ल्स ने उसे और मानमथ दोनों को देशनिकाला दे दिया था। सन् १६८५ ई० में मॉनमथ ने अवसर पाकर गुप्त रीति से इङ्गलेण्ड के पश्चिमी नगरों में प्रवेश किया और कृषकों की सेना एकत्रित करके पूर्व की ओर बढ़ा। पार्लियामेण्ट ने एक सेना फीवरशेम (Feversham) तथा जान चार्चिल (John Churchill) के आधिपत्य में मानमथ से युद्ध करने को भेजी। मॉनमथ जानता था कि राजसेना के सम्मुख उसकी एक न चल सकेगी। अतः वह उस पर अचानक धावा करने का अवसर खोज रहा था। एक दिन रात्रि के समय, जब जेम्स की सेना सेजमूर (Sedgemoor) के स्थान पर पड़ी था, मानमथ अपनी सेना के साथ उसकी ओर चल पड़ा। वर्षा ऋतु थी। सर्वत्र पानी भरा हुआ था। मानमथ को बहुत दूर चलना था। उधर उसे यह भी भय था कि यदि प्रात

काल हो जावेगा तो शत्रु को आक्रमण की सूचना मिल जावेगी। अतः रात ही रात में उसकी सेना ने यात्रा समाप्त की। प्रातः काल होते ही वह शत्रु के समीप जा पहुची। दुर्भाग्यवश मॉनमथ क्या देखता है कि मार्ग में एक ऐसी खाई है जिसे पार करना अति कठिन है। उधर फीवरशेम और जानचर्चिल को भी मॉनमथ के अचानक धावा करने की सूचना मिल चुकी थी। वे भी उसी खाई की ओर बढे और कुछ समय में उनके निकट पहुच गये। विरोधी सेनाओं में खाई के दोनों ओर घण्टों युद्ध होता रहा, अन्त में मॉनमथ की पराजय हुई। उसकी सेना रणक्षेत्र से भाग गई। मॉनमथ स्वयं बन्दी हुआ और जेम्स की आज्ञा से बध कर दिया गया। मॉनमथ के विद्रोह ने यह बात सिद्ध करदी कि कृषकों तथा ग्रामनिवासियों में अभी तक प्यूरिटन मत तथा देशी स्वतन्त्रता का सच्चा उत्साह भरा हुआ है।

रक्तमय न्यायालय— मॉनमथ को प्राणदण्ड देकर जेम्स ने शेष विद्रोहियों के साथ कठोरता तथा निर्दयता का व्यवहार किया। सहस्रों विद्रोही बिना जाँच पडताल के बध करा दिये गये। बहुतों को अपना जीवन कारागृह में व्यतीत करना पडा। जेम्स ने एक कठोरहृदय न्यायाधीश को मॉनमथ के विद्रोह की जाँच करने के लिये पश्चिमी नगरों में भेजा। इस का नाम जेफरीज (Jaffreys) था। उसने अकेले इतने मनुष्यों को प्राणदण्ड दिया कि उसका न्यायालय "रक्तमय न्यायालय" (Bloody Assizes) के नाम से प्रसिद्ध है। इतिहास लेखक इस विषय में एक मत हैं कि जितना रक्तपात जेफरीज ने इस समय किया उतना संसार में बहुत कम अवसरों पर हुआ है।

(व) जेम्स की निर्दयता तथा धार्मिकपक्षपात।

शक्तिशाली सेना— मॉनमथ के शान्त हो जाने से जेम्स की शक्ति बहुत बढ़ गई। मॉनमथ प्यूरिटन था और प्यूरिटन कृषकों की

सेना लेकर आया था, अतः जेम्स को प्यूरिटन अथवा डिसेण्टर पर अत्याचार करने और एक बडी सेना के एकत्रित करने का सुअवसर मिलगया। उसने ३० हजार सेनिक इकट्ठा किये और उन की सहायता से डिसेण्टर को पराजित करने और कैथोलिक सम्प्रदाय की उन्नति करने में सफल हुआ। उसने विद्वानों के इस कथन को नितान्त भुला दिया कि नम्रता और दयालुता वे रसायन हैं जो शत्रु को मित्र बना देते हैं, और अन्याय तथा अत्याचार वे विष है जो सहृदय मित्रों को भी कट्टर शत्रुओं में बदल देते हैं।

टैस्ट एक्ट का स्थगित होना—जेम्स सोचता था कि राजा देशी नियमों को स्वेच्छानुसार बदल सकता है। चार्ल्स प्रथम के काल में बेकन नामक न्यायाधीश ने भी यही सम्मति दी थी। इस सम्मति के अनुसार जेम्स ने टेस्ट एक्ट को रद्द कर दिया। पार्लियामेण्ट ने यह नियम इस अभिप्राय से बनाया था कि अंग्रेजी गिर्जा सदैव उन्नति करती रहे और उसके शत्रु सरकारी पद न पावें। जेम्स कैथोलिक का मित्र था, अतः उस ने इस नियम के तोडने से तनिक भी आगा पीछा न किया।

कर्मचारियों का उलटफेर—जेम्स ने अङ्गरेजी गिर्जा को मानने वाले मन्त्रियों तथा सेनाधिकारियों को पद से हटा दिया और टेस्ट एक्ट के विरुद्ध रोमन कैथोलिकों को उनके स्थान पर नौकर रख लिया। उसने जफ्रीज़ को, जो अभी २ रक्त की नदियां बहा कर पश्चमीय प्रान्तों से लौटा था, प्रधान न्यायाधीश बना दिया और एक कट्टर तथा निर्दयी रोमन कैथोलिक को, जिसका नाम टायरकनेल (Tyrconnel) था, आयरलैण्ड पर शासन करने को भेज दिया। अङ्गरेजी जाति मन ही मन जेम्स को बुरा कह रही थी, परन्तु कुछ समय तक वह कुछ न कर सकी।

हाई कमीशन न्यायालय का पुनर्जीवित होना—कुछ पादरी ऐसे थे जो राजा की धार्मिक नीति के विरुद्ध थे और पोप के धर्म में प्रकट

रूप से त्रुटियाँ निकाल रहे थे। उनका मुँह बन्द करने के लिये जेम्स ने हाई कमीशन न्यायालय को फिर से स्थापित कर लिया और अपने शत्रुओं को इसके द्वारा दण्ड दिलाने लगा। जेफरीज और सण्डरलैण्ड इस के न्यायाधीश नियुक्त हुये। हाई कमीशन को पुनर्जीवित करना देशी नियमों के विरुद्ध था। राष्ट्र कहाँ तक सहन कर सकती थी? प्रत्येक बात की सीमा हुआ करती है। जब वह इस सीमा का उल्लंघन कर जाती है तो उसका सुधार आवश्यक हो जाता है। ह्विगदल वैसे तो शान्त था परन्तु वह गुप्तरीति से जेम्स को नीचा दिखाने की आकांक्षा बराबर कर रहा था।

धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा, १६८७ ई०—लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ जब उन्हों ने अप्रैल १६८७ में सुना कि जेम्स धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा (Declaration of Indulgence) कर रहा है। लोगों का आश्चर्य अनुचित न था क्योंकि एक ओर तो जेम्स डिसेण्टर की स्त्रियों तथा बालकों को स्काटलेण्ड की नदियों में डुबा रहा था और गोली से उड़वा रहा था, दूसरी ओर वह धार्म्मिक स्वतन्त्रता देने की घोषणा कर रहा था। भला इस में भेद क्या था? केवल यही कि डिसेण्टर और अंग्रेजी गिर्जा के अनुयायियों के निकल जाने के कारण सरकारी पदों पर नियुक्त होने के लिये कैथोलिक पर्य्याप्त संख्या में न मिलते थे क्योंकि इस सम्प्रदाय की दशा छठवें एडवर्ड के समय से बराबर बुरी थी और प्रजातन्त्र राज्य तथा क्रॉम्वेल के समय में और भी शोचनीय हो गई थी। दूसरे, जेम्स ने चार्ल्स द्वितीय की भांति यह भी सोचा था कि यदि मैं कैथोलिक के साथ अन्य सम्प्रदायों को भी स्वतन्त्रता दे दूंगा तो कोई मुझसे कुछ न कहेगा।

मेगडेलन कालेज* का सुधार, १६८७ ई०—ऐसा सोचने में जेम्स की नितान्त भूल थी। जाति उस की चाल को तुरन्त समझ गई

* यह कॉलेज ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के आधीन था।

और उसके विरुद्ध गुप्त रीति से बराबर तैयारियाँ करती रही। अब जेम्स ने एक काम ऐसा किया जिसने उसके विरुद्ध उपद्रव खड़ा कर दिया। मेगडेलन कालेज के सभापति की मृत्यु पर जेम्स ने यह आज्ञा घोषित की कि भविष्य में सभापति प्राचीन धर्मानुयायी हुआ करेगा। अतः उसके निर्वाचकों (फेलोज) को चाहिये कि प्राचीन धर्म के अवलम्बियों में से किसी को सभापति चुनें। परन्तु निर्वाचकों ने जेम्स की आज्ञा के विरुद्ध अंग्रेजी गिर्जा के अनुयायियों में से एक मनुष्य को सभापति चुन लिया। यह सुन कर जेम्स के क्रोध की सीमा न रही। उसने समस्त निर्वाचकों को बाहर निकाल दिया और मेगडेलन कालेज की जागीरें भी छीन लीं। इसके पश्चात् उसने एक कैथोलिक को सभापति बनाकर सम्पूर्ण जागीरें लौटा दीं। अंग्रेजी राष्ट्र ने निर्वाचकों का साथ देकर यह बात प्रकट कर दी कि राष्ट्रीय उत्साह का अभी अन्त नहीं हुआ है और यह एक तुच्छ चिनगारी के समान बहुत कुछ कर सकता है।

(स) रक्तहीन क्रान्ति–जेम्स का अधः पतन, १६८८ ई०

पादरियों का बन्दी होना— जेम्स के अत्याचार सीमा उल्लंघन कर चुके थे। उसकी कठोरता तथा अन्याय की कथा ईश्वर के सन्मुख उपस्थित होने ही वाली थी। सन् १६८८ ई० में जेम्स ने यह आज्ञा घोषित की कि इङ्गलैण्ड की समस्त गिर्जाओं में धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा (*Declaration of Indulgence*) सुनाई जावे जिससे सब लोग उसे भली प्रकार जान जावें। परन्तु पादरी लोग यह बात भली भाँति जानते थे कि कैथोलिकों को स्वतन्त्रता देना नियम के विरुद्ध है। अतः सात पादरियों ने मिल कर जेम्स के नाम इस विषय पर एक प्रार्थना पत्र लिखा कि हम लोग आप की आज्ञा कदापि पालन न करेंगे क्योंकि आप नियम के विरुद्ध जा रहे हैं और पार्लियामेण्ट सत्यमार्ग ग्रहण किये है। जेम्स ने इस प्रार्थना पत्र को पढ़ कर फेंक दिया और सातों पादरियों पर दोषारोपण

करके उन्हें पकड़ लिया और उन पर अभियोग चलाने का दृढ़ विचार कर लिया।

राजकुमार की उत्पत्ति—अभी तक जेम्स द्वितीय के कोई पुत्र उत्पन्न न हुआ था। अत लोग यह सोचते थे कि उसकी मृत्यु पर उसका जामातृ हालेण्ड का अधिकारी, विलियम आफ आरेञ्ज सिंहासनारूढ़ होगा। परन्तु १० जून को जेम्स के पुत्र उत्पन्न होने की सूचना सुनाई पड़ी जिस को सुन कर लोग स्तम्भित रह गये। आमोद प्रमोद मनाने के बदले समस्त देश ने शोक सूचक वस्त्र पहिने। लोगों के दुखी होने का कारण केवल यह था कि जेम्स स्वय निर्दयी तथा कट्टर रोमन कैथोलिक था। वह उनको नाना प्रकार से दुख दे रहा था। परन्तु उनको यह सोच कर सतोष हो जाता था कि जेम्स की मृत्यु पर एक प्रोटेस्टेण्ट राजकुमार अर्थात् हालेण्ड का अधिकारी विलियम इङ्गलैण्ड का राजा बनेगा। अब उन को यह चिन्ता हुई कि जेम्स अपने पुत्र को कैथोलिक धर्म की शिक्षा देगा। अत सम्भव है कि राजा बनने पर उसका पुत्र प्रोटेस्टेण्ट धर्म को सदा के लिये इङ्गलेण्ड से बिदा करदे। प्रजा के दुखित होने का एक विशेष कारण यह भी था कि यह बात प्रकट रूप से प्रसिद्ध थी कि जेम्स के पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ है और उसने एक बालक को टोकरे में रख कर कहीं से मँगालिया है। इसी बालक को वह पूजनीय तथा पदाधिकारी पुत्र कह कर पुकारता है और लोगों को अपने सौभाग्य का विश्वास दिलाता है जिससे वे उसके छल कपट मे आजावें और नवजात बालक को राजकुमार मानलें और उसकी मृत्यु पर उसे राजा बनावें।

विलियम का आगमन—यदि जेम्स में बुद्धि होती तो वह प्रजा की बेकली देख कर उन सात पादरियों पर अभियोग न चलाता जिन्हें उसने कुछ समय पूर्व बन्दी कर लिया था। इसके प्रतिकूल उन पर अभियोग चला परन्तु वे सातों के सातों मुक्त हो गये। लोगों को यह

सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई। ईश्वर की कृपादृष्टि अपनी ओर देख कर सात भले तथा धनाढ्य-ह्विग-तथा टोरी-धनाढ्यों ने विलियम को इस विषय पर पत्र लिखा कि आप आवें और इङ्गलैण्ड का राज्य स्वीकार करके हमें कृतज्ञ करें। इङ्गलैण्ड का बच्चा २ आपको राज्य देने तथा आप पर अपने प्राण निछावर करने की इच्छा रखता है। यूरप में इस समय फ्रांस और हालैण्ड में युद्ध हो रहा था। विलियम निर्बल होने के कारण अकेला फ्रांस के राजा चौदहवें लुई से युद्ध न कर सकता था। अतः उसे एक बलवान सहायक की आवश्यकता थी। यूरप महाद्वीप में प्रोटेस्टेण्टदल की भी प्रत्येक स्थान पर पराजय हो रही थी। विलियम के पास उसकी रक्षार्थ पर्याप्त धन न था, परन्तु इङ्गलैण्ड का राजा बनने से उसे धन और सेना की कमी न रह सकती थी। यह सोच कर विलियम ने ह्विग तथा टोरी धनाढ्यों की प्रार्थना शीघ्र ही स्वीकार कर ली। जल सेना की रक्षा में वह प्रसन्नतापूर्वक इङ्गलैण्ड को चला और टोरबे की खाड़ी में उतरा। ह्विग तथा टोरीदल के नेता उसे आदरपूर्वक लन्दन लिवा लाये और वहाँ उसे और मेरी को बड़ी धूमधाम से राजगद्दी पर बैठाया। विलियम के आते ही जेम्स द्वितीय इङ्गलैण्ड से भाग गया।

क्रान्ति का महत्त्व—सन् १६८८ की रक्तहीन क्रान्ति इङ्गलैण्ड के इतिहास में एक विशेष महत्त्व रखती है। अभी तक ट्यूडर और स्टुअर्ट वंशों के राजाओं पर पार्लियामेण्ट का कोई विशेष दबाव न रहता था। राजा स्वयं को बड़ा बताते थे। पार्लियामेण्ट अपने बड़े होने का राग गाती थी। परन्तु इस विद्रोह ने यह बात भली प्रकार सिद्ध कर दी कि पार्लियामेण्ट का पद राजपद से बहुत ऊँचा है। विलियम और मेरी चार्ल्स द्वितीय से भी अधिक पार्लियामेण्ट के कृतज्ञ थे क्योंकि उसने उन्हें जेम्स द्वितीय की उपस्थिति और जीवन में राजा बनाया था। अतः पार्लियामेण्ट को यह अधिकार प्राप्त था कि जिस प्रकार चाहे विलियम

और मेरी से राज्य करावे। जिस पार्लियामेण्ट ने विलियम तथा मेरी को निमन्त्रण देकर राजपद दिया था वही पार्लियामेण्ट जेम्स द्वितीय के समान उनको भी अलग कर सकती थी और उन्हें इङ्गलैण्ड के बाहर भेजकर उनके स्थान पर किसी अन्य पुरुष को, जो इङ्गलैण्ड के राजवंश से था, राजा बना सकती थी। इस प्रकार पार्लियामेण्ट तथा राजा के पारस्परिक विरोध का अन्त हुआ जो लगभग एक शताब्दि से हो रहा था और जिसके कारण घरेलू युद्ध के समय में सहस्रों मनुष्यों के प्राण गये थे।

क्रान्ति तथा घरेलू युद्ध की तुलना—स्वभाविक रीति से यह प्रश्न उठता है कि यह आवश्यक कार्य्य जो शस्त्रद्वारा न हो सका था शान्ति से किस प्रकार पूर्ण हुआ? क्या कारण है जो इस शान्त-विद्रोह के द्वारा राष्ट्र को इच्छित फल प्राप्त हुआ जबकि वही राष्ट्र लगभग चालीस वर्ष पूर्व राजा का रक्त बहा कर भी शान्त न हुआ था? इन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार है। घरेलू युद्ध के समय देश में ऐक्य न था। देश वासियों के दो बड़े दल बने हुये थे। एक दल कवेलियर और दूसरा राउण्डहेड्स का था। इन दो दलों के अतिरिक्त जाति दो धार्मिक दलों में भी बँटी हुई थी। जब देश में कुमति होती है तो विजय सदैव शत्रु ही की होती है। दूसरी बात यह है कि घरेलू युद्ध के समाप्त होने पर इङ्गलैण्ड का शासन राजा तथा पार्लियामेण्ट दोनों के अधिकार से निकल कर सैनिक अफसरों के हाथों में आगया था। जब सैनिक अफसर राज करते है तो वे प्रजा पर अत्याचार करने से नहीं चूकते। यही कारण है कि अंग्रेजी राष्ट्र क्रामवेल के शासन से भी प्रसन्न न हुआ था, यद्यपि उसने स्वतन्त्र राज्य स्थापित करके शासन किया था।

अभ्यास।

(१) सन् १६८८ ई० के राज्यक्रांति के कारण वर्णन करो और बताओ कि यह बड़ी घटना इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है?

(२) जेम्स द्वितीय के शासन के मुख्य २ सिद्धान्तों के नाम लो? इन सिद्धान्तों में से चार्ल्स द्वितीय ने किन २ का अनुकरण किया था? सोचो कि सन् १६८८ ई० के पश्चात् जब ह्विगदल का शासन प्रारम्भ हुआ तो उसने इन सिद्धान्तों के प्रतिकूल कौन सिद्धान्त बनाये होंगे?

(३) सन १६८८ ई० की राज्यक्रान्ति से घरेलू युद्ध की तुलना करो। क्या कारण है जो राष्ट्र को घरेलू युद्ध द्वारा अपनी मनोकामना सिद्ध करने का अवसर न मिला?

(४) विलियम तृतीय तथा मेरी के आगमन पर एक लेख लिखो—

[अ] जिस भांति कोई जेम्स द्वितीय का पक्षपाती लिखेगा [ब] जिस भाँति कोई विलियम तृतीय का पक्षपाती लिखेगा।

(५) निम्न लिखित में से किसी तीन पर नोट लिखो —

[अ] रक्तमय न्यायालय, [ब] धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा, [स] मॉनमथ का विद्रोह, [द] सन् १६८८ ई० की रक्तहीन राज्यक्रान्ति, [र] महारानी मेरी।

(६) "जेम्स द्वितीय कैथोलिक था और कैथोलिक मत को इङ्गलैण्ड में पुन स्थापित करना चाहता था"। इस कथन को सिद्ध करो।

(७) जिन चार स्टुअर्ट राजाओं का वृतान्त तुमने पढ़ा है उनके चित्रों की तुलना करो। चारों में तुम किसे सब से अधिक सुन्दर समझते हो? क्या इस राजा का चरित्र भी उतना ही सुन्दर था जितना सुन्दर उसका चित्र है?

अट्ठाईसवां अध्याय।



स्टुअर्टकाल में आयरलैण्ड।

वेण्टवर्थ का शासन, १६३३-४० ई०-अल्स्टर के बसने के २५ वर्ष तक आयरलैण्ड में कोई वर्णनीय घटना नहीं हुई। इसके पश्चात् सन् १६३३ ई० में चार्ल्स प्रथम ने अपने मित्र तथा सम्मतिदाता वेण्टवर्थ को आयरलैण्ड में शासन करने को भेजा। वेण्टवर्थ ने आयरलैण्ड में कई आवश्यक सुधार किये। आयरलैण्ड के सागर की "लूटमार" बन्द होगई। सेना की दशा पहले से सँभल गई। वेण्टवर्थ के भय से सरकारी कर्मचारियों ने घूस लेना बन्द करदिया और वे मन लगा कर काम करने लगे। वेण्टवर्थ ने प्रोटेस्टेण्ट गिर्जा का भी उचित प्रबन्ध किया। उसने आयरलैण्ड की पार्लियामेण्ट को बुला कर कई लाभकारी नियम बनवाये और सरकारी ऋण चुका कर आयरलैण्ड की आर्थिक दशा सुधारी। परन्तु यह समझ लेना नितान्त भूल होगी कि आयरलैण्डवासी वेण्टवर्थ के शासन से सन्तुष्ट थे। जो कुछ वेण्टवर्थ कर रहा था वह सब अङ्गरेजी राजा तथा अङ्गरेज जाति की भलाई के लिये था नकि आयरलैण्ड की भलाई के लिये। यही कारण है जो उसने यहाँ के निवासियों के साथ नाना प्रकार के अत्याचार किये थे और उन्हें स्वतन्त्र विचार प्रकट करने का अवसर न दिया था। सन् १६३९ ई० में चार्ल्स प्रथम ने घरेलू युद्ध के विषय में सम्मति लेने के अभिप्राय से वेण्टवर्थ को आयरलैण्ड से बुला लिया।

सन् १६४१ का विद्रोह—वेण्टवर्थ के चले जाने के पाँच मास पश्चात् आयरलैण्ड में एक महान् विद्रोह हुआ। इसके कई कारण थे।

आयरलण्डवासी जागीरों के छिन जाने से रुष्ट हो गये थे। वेण्टवर्थ के अत्याचार के कारण उनका क्रोध अधिक बढ़ गया था। दीर्घ पार्लियामेण्ट ने आकर उन्हें यह भय दिया था कि रोमन केथोलिसिज्म जो आयरलैण्ड का प्राचीन धर्म था, स्थगित कर दिया जावेगा और सबों को प्रोटेस्टेण्ट मत का अनुयायी बनना पड़ेगा। विद्रोह अल्स्टर के प्रान्त में प्रारम्भ हुआ। वहाँ से वह डबलिन-नगर के दक्षिण में फैल गया। आयरलैण्ड के निवासियों ने अंग्रेजों को सहस्रों की संख्या में मार डाला। शेष प्राण बचा कर इङ्गलैण्ड चले जाने को प्रस्तुत हो गये। दीर्घ पार्लियामेण्ट ने यह दशा देख कर एक सेना विद्रोह शान्त करने को आयरलैण्ड भेजी। उसने आयरलैण्डवासियों के विरुद्ध दो नियम भी बनाये। प्रथम, यह कि भविष्य में कैथोलिक मतानुयायियों पर लेश मात्र भी कृपा न होगी। द्वितीय, यह कि जो लोग विद्रोह को शान्त करने का प्रयत्न करेंगे उनको आयरलैण्ड निवासियों से छीनी हुई जागीरें उपहार रूप में दी जावेंगी। इन नियमों के बनने से विद्रोह शीघ्र ही शान्त होगया।

आयरलैण्ड, १६४२-१६४६ ई०—सन् १६४२ ई० में इङ्गलैण्ड में घरेलू युद्ध प्रारम्भ हुआ। जब तक वह होता रहा इङ्गलैण्ड में बड़ी अशान्ति फैली रही। चार्ल्स प्रथम के वध के पश्चात् जब इङ्गलेण्ड में स्वतन्त्र राज्य स्थापित हुआ तो आयरलेण्डवासियों ने अंग्रेजी सरकार के आधीन रहना स्वीकार न किया और वे चार्ल्स के पुत्र को राजा बनाने का प्रयत्न करने लगे। यह देख कर क्रॉम्वेल स्वयं आयरलैण्ड गया और विद्रोहियों पर विजय प्राप्त करके शान्ति स्थापित की। यों तो क्रॉम्वेल ने विद्रोहियों पर विजय प्राप्त कर ली थी, परन्तु विजय प्राप्त करने में सहस्रों मनुष्यों का रक्त बहा था। ड्राहेडा का वध उस के नाम को कलङ्कित करता है और जब तक इतिहास पढ़ा जावेगा उसके नाम को बराबर कलङ्कित करता रहेगा। देशी जनसंख्या का दो तिहाई भाग नष्ट हो गया

खेत बना लिये गये। शल्जम और आलू के अतिरिक्त स्टुअर्टकाल में गेहूं अधिक होता था।

ऊन, सन और रुई का व्यापार—ऊन का व्यापार ट्यूडरकाल से बराबर उन्नति कर रहा था। यद्यपि अब कृषकों और जमीदारों ने खेतों के स्थान पर भेडें पालने को चारे बनाना बन्द कर दिया था, तथापि ऊन की वस्तुयें पहले की भांति अधिक मात्रा में बनती थीं। ऊन की कलाकौशल का सामना सन और रुई की कलाकौशल से होता था। सन की कला बृटिश द्वीपों में रोमन्स के समय से चली आती थी। स्काटलेण्ड इसके लिये बहुत प्रसिद्ध था। वेण्टवर्थ ने इस बात का बहुत प्रयत्न किया कि इस कला को आयरलेण्ड में उन्नति दे, परन्तु वह ऊन की कला के सन्मुख कुछ न कर सकता था। रुई का काम कुछ समय से लङ्काशायर में होने लगा था। बोल्टन (Bolton) नगर इसका केन्द्र था। रुई की बनी हुई वस्तुयें स्टुअर्टकुल के समय में ऐसी बहुमूल्य समझी जाती थीं कि बड़े २ अमीर तथा नवाब उनका प्रयोग करने में अपना गौरव समझते थे। परन्तु इस कला का सामना कृषकों और ऊन के व्यापारियों ने इतने जोर से किया कि स्टुअर्टकुल के शासनकाल में वह उन्नति न कर सकी। सन की वस्तुयें भी भद्दी तथा बुरी समझी जाने लगीं। अन्त उन्हें भी ऊन की वस्तुओं के आगे नीचा देखना पड़ा।

नमक, कोयला और लोहा—ऊनी वस्तुओं की भांति नमक की मांग भी बहुत थी। परन्तु सेक्सन के समय से अभी तक बृटिश द्वीपों में नमक बहुत कम होता था। विशेषत नमक स्पेन और दक्षिणी फ्रांस से आता था। अत जब कभी इङ्गलैण्ड इन देशों में से किसी से युद्ध करता होता, तो नमक का भाव चढ़जाता और उसका मिलना कठिन हो जाता था। सोलहवीं शताब्दि में मनुष्य पत्थर के कोयले का प्रयोग बहुत कम करते थे। लकड़ी का कोयला प्राप्त करने के लिये बहुत से वन

खेत बना लिये गये । शलजम और आलू के अतिरिक्त स्टुअर्टकाल में गहूं अधिक होता था ।

ऊन, सन और रुई का व्यापार—ऊन का व्यापार ट्यूडरकाल से बराबर उन्नति कर रहा था । यद्यपि अब कृषकों और जमींदारों ने खेतों के स्थान पर भेड़ें पालने को बाड़ें बनाना बन्द कर दिया था, तथापि ऊन की वस्तुयें पहले की भांति अधिक मात्रा में बनती थीं । ऊन की कलाकौशल का सामना सन और रुई की कलाकौशल से होता था । सन की कला बृटिश द्वीपों में रोमन्स के समय से चली आती थी । स्काटलेण्ड इसके लिये बहुत प्रसिद्ध था । वेण्टवर्थ ने इस बात का बहुत प्रयत्न किया कि इस कला को आयरलेण्ड में उन्नति दे, परन्तु वह ऊन की कला के सन्मुख कुछ न कर सकता था । रुई का काम कुछ समय से लङ्कास्टर में होने लगा था । बोल्टन (Bolton) नगर इसका केन्द्र था । रुई की बनी हुई वस्तुये स्टुअर्टकुल के समय में ऐसी बहुमूल्य समझी जाती था कि बड़े २ अमीर तथा नवाब उनका प्रयोग करने में अपना गौरव समझते थे । परन्तु इस कला का सामना कृषकों और ऊन के व्यापारियों ने इतने जोर से किया कि स्टुअर्टकुल के शासनकाल में वह उन्नति न करसकी । सन की वस्तुये भी भद्दी तथा बुरी समझी जाने लगीं । अतः उन्हें भी ऊन की वस्तुओं के आगे नीचा देखना पड़ा ।

नमक, कोयला और लोहा—ऊनी वस्तुओं की भांति नमक का मांग भी बहुत थी । परन्तु सेक्सन के समय से अभी तक बृटिश द्वीपों में नमक बहुत कम होता था । विशेषतः नमक स्पेन और दक्षिणी फ्रान्स से आता था । अतः जब कभी इङ्गलेण्ड इन देशों में से किसी से युद्ध करता होता, तो नमक का भाव चढ़जाता और उसका मिलना कठिन हो जाता था । सोलहवीं शताब्दि में मनुष्य पत्थर के कोयले का प्रयोग बहुत कम करते थे । लकड़ी का कोयला प्राप्त करने के लिये बहुत से वन

अङ्गरेजी सरकार इङ्गलैण्ड में बनी हुई व्यापारिक वस्तुओं को तो बाहर जाने से न रोकती थी परन्तु अन्य देशों से आई हुई वस्तुओं को इङ्गलैण्ड में आने की कठिनाई से आज्ञा देती थी। इसका मुख्य कारण यह है कि उस समय मनुष्य बाहर की वस्तुओं को मोल लेकर इङ्गलैण्ड का धन अन्य देशों को न भेजना चाहते थे। वे समझते थे कि यदि इङ्गलैण्ड का सोना चाँदी बाहर जावेगा तो देश कङ्गाल हो जावेगा। इसके विरुद्ध वे इङ्गलैण्ड में बनी हुई वस्तुओं को अन्य देशों के हाथों खूब बेचते थे और उनका सोना चाँदी अपने अधिकार में कर लेते थे। यही कारण है जो जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम के समय में ईस्ट इण्डिया कम्पनी बहुत कम उन्नति कर सकी। जैसे २ समय व्यतीत होता गया, मनुष्यों के विचार बदलते गये यहाँ तक कि चार्ल्स द्वितीय और विलियम-तृतीय के समय में ईस्ट इण्डिया कम्पनी इङ्गलैण्ड का सोना चाँदी अधिक मात्रा में भारतवर्ष ले जाने और उनके स्थान में वहाँ की बनी हुई वस्तुओं और मसालों को मोल लेने लगी।



अभ्यास।

(१) सत्रहवीं शताब्दि में व्यापार तथा कलाकौशल ने कितनी उन्नति की?

(२) स्टुअर्टकाल में कौन सी कला ने सब से अधिक उन्नति की और क्यों?

(३) सोना चाँदी बाहर भेजने के विषय में अंग्रेजी सरकार का क्या विचार था? इसका ईस्ट इण्डिया कम्पनी पर क्या प्रभाव पड़ा?

(४) रेशम की कला के लिये किन २ बातों की आवश्यकता होती है? भारतवर्ष में यह कला क्यों कम होती है?



अङ्गरेजी सरकार इङ्गलेण्ड में बनी हुई व्यापारिक वस्तुओं को तो बाहर जाने से न रोकती थी, परन्तु अन्य देशों से आई हुई वस्तुओं को इङ्गलण्ड में आने की कठिनाई से आज्ञा देती थी । इसका मुख्य कारण यह है कि उस समय मनुष्य बाहर की वस्तुओं को मोल लेकर इङ्गलेण्ड का धन अन्य देशों को न भेजना चाहते थे । वे समझते थे कि यदि इङ्गलैण्ड का सोना चाँदी बाहर जावेगा तो देश कङ्गाल हो जावेगा । इसके विरुद्ध वे इङ्गलैण्ड मे बनी हुई वस्तुओं को अन्य देशों के हाथो खूब बचते थे और उनका सोना चादी अपने अधिकार मे कर लेते थे । यही कारण है जो जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम के समय में ईस्ट इण्डिया कम्पनी बहुत कम उन्नति कर सकी । जैसे २ समय व्यतीत होता गया, मनुष्यों के विचार बदलते गये यहाँ तक कि चार्ल्स द्वितीय और विलियम तृतीय के समय में ईस्ट इण्डिया कम्पनी इङ्गलेण्ड का सोना चाँदी अधिक मात्रा मे भारतवर्ष ले जाने और उनके स्थान में यहाँ की बनी हुई वस्तुओं और मसालों को मोल लेने लगी ।



अभ्यास ।

(१) सत्रहवीं शताब्दि में व्यापार तथा कलाकौशल ने कितनी उन्नति की ?

(२) स्टुअर्टकाल में कौन सी कला ने सब से अधिक उन्नति की और क्यों ?

(३) सोना चाँदी बाहर भेजने के विषय में अंग्रेजी सरकार का क्या विचार था ? इसका ईस्ट इण्डिया कम्पनी पर क्या प्रभाव पडा ?

(४) रेशम की कला के लिये किन २ बातों की आवश्यकता होती है ? भारतवर्ष में यह कला क्यों कम होती है ?



अङ्गरेजी सरकार इङ्गलैण्ड में बनी हुई व्यापारिक वस्तुओं को तो बाहर जाने से न रोकती थी परन्तु अन्य देशों से आई हुई वस्तुओं को इङ्गलैण्ड में आने की कठिनाई से आज्ञा देती थी । इसका मुख्य कारण यह है कि उस समय मनुष्य बाहर की वस्तुओं को मोल लेकर इङ्गलैण्ड का धन अन्य देशों को न भेजना चाहते थे । वे समझते थे कि यदि इङ्गलैण्ड का सोना चाँदी बाहर जावेगा तो देश कङ्गाल हो जावेगा । इसके विरुद्ध वे इङ्गलैण्ड में बनी हुई वस्तुओं को अन्य देशों के हाथों खूब बचते थे और उनका सोना चांदी अपने अधिकार मे कर लेते थे । यही कारण है जो जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम के समय में ईस्ट इण्डिया कम्पनी बहुत कम उन्नति कर सकी । जैसे २ समय व्यतीत होता गया, मनुष्यों के विचार बदलते गये यहाँ तक कि चार्ल्स द्वितीय और विलियम तृतीय के समय में ईस्ट इण्डिया कम्पनी इङ्गलैण्ड का सोना चाँदी अधिक मात्रा में भारतवर्ष ल जाने और उनके स्थान में यहाँ की बनी हुई वस्तुओं और मसालों को मोल लेने लगी ।



अभ्यास ।

(१) सत्रहवीं शताब्दि में व्यापार तथा कलाकौशल ने कितनी उन्नति की ?

(२) स्टुअर्टकाल में कौन सी कला ने सब से अधिक उन्नति की और क्यों ?

(३) सोना चाँदी बाहर भेजने के विषय में अंग्रेजी सरकार का क्या विचार था ? इसका ईस्ट इण्डिया कम्पनी पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(४) रेशम की कला के लिये किन २ बातों की आवश्यकता होती है ? भारतवर्ष मे यह कला क्यों कम होती है ?



तीसवां अध्याय ।



सत्रहवी शताब्दि का सामाजिक जीवन ।



घरेलू युद्ध के समय को छोड कर सत्रहवीं शताब्दि में इङ्गलैण्ड की प्रजा सदा प्रसन्न और सन्तुष्ट थी। कभी २ राजा अथवा गिर्जा के कठोर व्यवहार के कारण मनुष्यों के जीवन अवश्य सङ्कट में पड जाते थे, परन्तु प्रथम तो पार्लियामेण्ट के शक्तिशाली होने के कारण उनका कठोर व्यवहार अधिक समय तक न ठहर पाता था, दूसरे उसका प्रभाव सबों पर न पड कर किसी विशेष दल अथवा संस्था पर पडता था। स्टुअर्टकाल में प्रजा के सुखी होने का एक मुख्य कारण यह था कि सत्रहवीं शताब्दि में व्यापार तथा कलाकौशल की अधिक उन्नति हो रही थी जैसा कि हम पिछले पाठ में बता आये हैं। एक बात यह भी है कि सन् १६०३ ई० तक इङ्गलैण्ड भली प्रकार से प्रोटेस्टेण्ट बन चुका था और प्रोटेस्टण्ट दल का जीवन सारी समाज को प्रभावित कर रहा था।

प्यूरिटन जीवन—प्रोटेस्टेण्ट इञ्जील पढ़ते थे और उसमें लिखी हुई बातों के अनुसार काय्य करने का प्रयत्न करते थे। इसका यह प्रभाव पडा कि वे समस्त बुराइयाँ जो समाज के अन्तर्गत आगई थी दूर हो गई और इङ्गलैण्ड के निवासी धार्मिक तथा पवित्रजीवन व्यतीत करने

लगे। जैसे २ समय व्यतीत होता गया मनुष्य सजावट और सजधज को त्यागते और सादे वस्त्र ग्रहण करते गये। वार्तालाप, कपडे और खेलकूद में लोग सादा बनने का प्रयत्न करने लगे। जेम्स प्रथम ने एक किताब लिखी जिस में उस ने लोगों को केवल ऐसे तमाशे तथा खेल कूद में भाग लेने की शिक्षा दी जिन से उनके आचरण पर बुरा प्रभाव न पडे। जब प्यूरिटनों ने जोर पकडा तो उन्हों ने इस पुस्तक को जला दिया और इस बात की शिक्षा दी कि समस्त खेल, तमाशे तथा आनन्द प्रमोद एक साथ बन्द कर दिये जायें। उनका कथन था कि मनुष्य का कर्तव्य है कि सदैव ईश्वर का ध्यान रक्खे और खाने पीने ओढने बिछाने में जहाँ तक सम्भव हो अपने को कष्ट दे।



एक प्यूरिटन स्त्री।

पवित्रता की पराकाष्ठा—जो कुछ प्यूरिटन कह रहे थे, ठीक था। बुराई केवल इतनी थी कि वे मध्यवर्ती मार्ग पर न चलना चाहते थे और उससे बहुत आगे बढे हुये थे। वे उचित और अनुचित का अन्तर न समझते थे और एक ओर से समस्त कौतुकों तथा खेल-कूद को बुरा बताते थे और उन्हें बन्द करने का प्रयत्न कर रहे थे। प्रजातन्त्र राज्य के समय में समस्त कौतुक और नाच रंग बन्द कर दिये गये थे। छुट्टियाँ बहुत कम मिलने लगीं। रविवार के दिन जो तमाशे नाच और खेल कूद होते थे वे एक साथ रोक दिये गये। नाटक देखना और दिखाना, मदिरा पीना, जुआ खेलना, मुर्गों, सांडों और रीछों की लडाइयाँ तथा रविवार के दिन लेन देन करना अनुचित ठहराये गये। गिर्जाघरों की

सजावट घृणा की दृष्टि से देखी जाने लगी। कुछ प्यूरिटन तो गिर्जाघरों में जाने की आवश्यकता तक नहीं समझते थे। एक छोटा सा कच्चा कमरा, जोकि भीतर से स्वच्छ हुआ, उन के लिये गिर्जा का काम दे देता था। जो पुस्तकें छपती थीं उनको सरकार भली प्रकार देख लेती थी कि कहीं उन में कोई बात उसकी इच्छा के विरुद्ध तो नहीं है। चमक दमक, लम्बे बाल, लम्बी नोक का जूता, झालर और किनारीदार कपड़ों को लोग बुरा बताने लगे। वे सादे वस्त्र धारण करने लगे और शीश के केश मुड़वाने लगे। मनुष्यों के हाथों में तलवारों तथा छड़ियों के स्थान पर इञ्जील दिखाई देने लगी। एक बार तो यहां तक नौबत आई कि प्यूरिटन सरकार ने घुड़दौड़ तक को अनुचित ठहरा कर बन्द करा दिया।

चार्ल्स द्वितीय का परावर्तन तथा समय का परिवर्तन—

यह दशा सन् १६६० ई० तक जैसी की तैसी बनी रही। इस वर्ष प्रजातत्र राज्य समाप्त हुआ। इसके साथ २ प्यूरिटनों का बल भी सदा के लिये क्षीण हो गया। प्यूरिटनों के साथ २ प्यूरिटन जीवन भी लोगों ने भुला दिया। चार्ल्स द्वितीय कुछ काल तक फ्रांस के राजा के यहां अतिथि रह चुका था। वहां रहकर उसने वह सारी दुराचरण की बातें सीख लीं थीं जो चौदहवें लुई के दरबार पर कालिमा लगा रही थीं। अतः जब चार्ल्स इङ्गलैण्ड लौटा तो वह केवल इन दुराचरणों को ही साथ न लाया वरन् उसके साथ फ्रांसीसी अमीरों तथा वेश्याओं का एक समूह भी आया। इनके आने से चार्ल्स द्वितीय और उसके साथी सुख तथा विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगे और प्रत्येक भांति से अपने को प्रसिद्ध करने लगे। जिस मार्ग पर राजा जाता है उसी मार्ग पर प्रजा भी जाती है। प्रजातत्र राज्य के समय में, जैसा कि ऊपर लिख आये हैं, लोगों ने अपनी समस्त विलासितापूर्ण अभिलाषायें स्थगित कर दी थीं। अब ये अभिलाषाये बारह वर्ष तक स्थगित रहने के पश्चात् इतनी आवेगपूर्ण रूपों कि

सादा जीवन व्यतीत करने के बदले जनता भोग विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगी। नाटकालय पुन खुले और आवेगपूर्ण खुले। लोग दुराचारिणी स्त्रियों को स्टेज पर नङ्गी नचाने लगे। मदिरा का प्रयोग पुन आरम्भ हुआ। साँडों के युद्ध, शपथ खाना, द्यूतक्रीडा इत्यादि २ पुन: आरम्भ हुये। लोग प्रत्येक प्रकार से दुर्जीवन व्यतीत करने लगे। इसका प्रभाव उस समय की पुस्तकों पर भी पड़ा। जितने उपन्यास, नाटक, इत्यादि २ चार्ल्स के राजा बनने के पश्चात् लिखे गये उन सबों में वे सारे दोष उपस्थित थे जो उस समय समाज मे विद्यमान थे क्योंकि नाटक और उपन्यास इत्यादि किसी समय के जीवन का वर्णन होते हैं जो पुस्तकरूप में प्रकट होता है। इस समय के प्रसिद्ध कवि जान ड्राइडन (John Dryden) की पुस्तकों के पढ़ने से इस बात का ज्ञान भली प्रकार हो जाता है।

ग्राम्य जीवन—इस से यह परिणाम न निकालना चाहिये कि इङ्गलण्ड की प्रजा स्टुअर्टकुल के समय मे अधिक धनी थी क्योंकि मनुष्य दरिद्रता तथा धनाढ्यावस्था दोनों में दुराचरण ग्रहण कर सकता है। जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं, इङ्गलैण्ड के निवासी प्रति दिन सुखी होते जाते थे। धनाढ्यजन तथा लॉर्ड ग्राम छोड कर लन्दन नगर और विशेष कर राजभवनों के चारों ओर रहना चाहते थे। मध्यम श्रेणी के लोग और कृषकगण ग्राम्य जीवन को नागरिक जीवन से उत्तम समझते थे। उनके लडके बहुधा सेना अथवा गिर्जाघर में नौकरी कर लेते थे। कुछ इङ्गलैण्ड त्याग कर अमेरिका जैसे देशों में चले जाते थे और या तो वहीं रहने लगते थे या इन देशों से व्यापार करने लग जाते थे। गाव वाले बहुत सादा जीवन व्यतीत करते थे जो नगर वासियों के जीवन से प्रत्येक भांति से भिन्न होता था। विशेषत: वे कृषी करते थे और भेडें पालते थे। कृषक प्रत्येक भांति से प्रसन्न थे,

परन्तु मजदूरों को बहुत कम वेतन मिलता था। अतः उन्हें अपने लिये अलग पृथ्वी जोतनी पड़ती थी और अपने घरों में ऊन, रुई, इत्यादि की कलायें करनी पड़ती थीं। मजदूर तीन तीन चार चार गायें भी रखते थे और उनके दूध मक्खन इत्यादि की आय से थोड़ा बहुत काम चलाते थे।

नागरिक जीवन—नगरवासियों का जीवन ग्रामनिवासियों के जीवन से प्रत्येक प्रकार से उत्तम था। ये अधिक धनी थे। इनके पात्र बहुधा चाँदी और कांसे के होते थे। कभी २ वे शीशा और चीनी मिट्टी के पात्रों का भी प्रयोग करते थे। उन के घरों में पर्य्याप्त सामग्री थी और किसी प्रकार की भी कमी न थी। नगर के दीनजन धनाढ्यों की अपेक्षा दुःखी थे। इसका एक विशेष कारण यह है कि उनको बहुत कम वेतन मिलता था। व्यापारिक वस्तुओं का भाव प्रति दिन बढ़ रहा था। तिस पर भी बहुत से लोग ग्राम त्याग कर नगरों में आ गये थे। अतः नगरों की जनसंख्या बहुत बढ़ गई थी। नगरों की सड़कें और गलियाँ एलिज़बेथ के समय से अभी तक कम चौड़ी थीं। लोगों को स्वच्छता का ध्यान भी बहुत कम था। परिणाम यह होता कि नगरों में सदैव कोई न कोई रोग बना रहता था। विशेषतः महामारी नगरनिवासियों का पीछा न छोड़ती थी। जून सन् १६६५ की महामारी, जिसका वर्णन पूर्व भी कर आये हैं, मनुष्यों को आज तक स्मरण है। इससे जनसंख्या का ⅕ भाग नष्ट हो गया। इस के एक वर्ष पश्चात् भयङ्कर अग्नि ने जनसंख्या का शेष भाग भी नष्ट कर दिया*। कहते हैं कि यह अग्नि इतनी प्रचण्ड थी और उस से घरों के नष्ट हो जाने का ऐसा भय था कि जिस मुहल्ले में अग्नि लगी थी उस के चारों ओर के घर सैकड़ों की

* जिस जगह अग्नि लगी थी वहाँ आज तक एक ऊँचा स्तम्भ खड़ा हुआ है जो दर्शकों को इस भयंकर ज्वाला का स्मरण कराता है।

चतुर्थ खण्ड

इंगलैण्ड सन् १६८८ ई०

के पश्चात्

सन् १६८८–१८१५ ई०

राष्ट्रीयशासन तथा धार्मिक स्वतंत्रता

इकतीसवां अध्याय।

ह्विगदल का सन् १६८६ ई० का प्रबन्ध।

सन् १६८८ की विचित्र घटना से टोरीदल की हार तथा ह्विगदल की विजय हुई। अब ह्विगदल को उन चार सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करने का अवसर मिला जिन को कार्य्य रूप में परिणत करने का प्रयत्न वे चार्ल्स द्वितीय के समय में कर रहे थे। सन् १६८९ ई० में जो शासनप्रणाली इस दल ने स्थापित की उस के ये चार स्तम्भ कहे जा सकते हैं। परन्तु इतनी बात हमें भली भांति स्मरण रखनी चाहिये कि हनोवरवंश के राज्य के आरम्भ होने के दो वर्ष पश्चात् तक ये नियम पूर्णतया प्रयोग में न लाये जा सके।

ह्विग शासन के चार सिद्धान्त—ह्विगदल में पार्लियामेण्ट के पक्षपाती, प्रोटेस्टेण्ट धर्म के अनुयायी और मध्यम श्रेणी के मनुष्य सम्मिलित थे। यह सब चौदहवें लुई के शत्रु थे। अतः इस दल के चार सिद्धान्त इस प्रकार थे। प्रथम, यह दल राजा के अधिकारों को छीन कर पार्लियामेण्ट को प्रदान करना चाहता था, परन्तु इस समय के ह्विग राजा को पूर्ण रूप से बलहीन न करना चाहते थे। द्वितीय वह डिसेण्टरों को धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करना चाहता था। तृतीय, ह्विगदल सर्वत्र मध्यम श्रेणी की भलाई चाहता था। चतुर्थ, वह चौदहवें लुई को नीचा दिखाना चाहता था।

राजबल की हीनता—प्रथम नियम के अनुसार ह्विगदल ने राजा को बलहीन करके पार्लियामेण्ट को बलवान बनाने का प्रयत्न किया। स्टुअर्ट

वंश के दैवी अधिकार का अन्त हुआ। केबिनेट के * प्रबन्ध ने नवीन जीवन प्राप्त किया। केवल राजा अथवा केवल पार्लियामेण्ट के स्थान पर दोनों मिलकर देशी प्रबन्ध के उत्तरदायी बनाये गये। राजा से यह शपथ ली जाने लगी कि वह पार्लियामेण्ट के बनाये हुये नियमों के अनुसार कार्य करेगा और प्रोटेस्टेण्ट धर्म को सदैव स्थापित रक्खेगा। मन्त्री पार्लियामेण्ट के आधीन होगये। यदि पार्लियामेण्ट उनके ऊपर अभियोग चलाता तो राजा उनको शरण नहीं दे सकता था जैसा उसने बकिंघम, स्ट्रैफर्ड तथा डैन्बी के साथ किया था। सेना तथा न्यायालयों का प्रबन्ध भी पार्लियामेण्ट करने लगी। इस प्रकार राजा के कई आवश्यक अधिकार पार्लियामेण्ट को मिल गये। परन्तु इतने पर भी सन् १६८९ के पश्चात् कुछ आवश्यक अधिकार राजा ही के अधिकार में बने रहे। उदाहरणार्थ, वह युद्ध तथा सन्धि कर सकता था, पार्लियामेण्ट को बुला सकता था तथा भङ्ग भी कर सकता था † और पद, पुरस्कार इत्यादि प्रदान कर सकता था।

धार्मिक स्वतन्त्रता का प्रारम्भ—ह्विगदल ने अपने द्वितीय सिद्धान्त के अनुसार धार्मिक स्वतन्त्रता की स्थापना की। सन् १६८९ में एक नियम टालरेशन एक्ट (Toleration Act) नामक बना जिससे डिसेण्टरों को धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त हुई, परन्तु 'टेस्ट' तथा 'कारपोरेशन एक्ट' ज्यों के त्यों बने रहे। यहूदियों को पार्लियामेण्ट में बैठने की आज्ञा प्राप्त न हुई। ह्विगदल ने कैथोलिक धर्मावलम्बियों पर भी कोई विशेष कृपा न की।

आर्थिक प्रबन्ध—तृतीय नियम के अनुसार ह्विग दल ने मध्यम

---

* केबिनेट से मन्त्रियों की एक विशेष सभा से तात्पर्य है। इसका स्पष्ट वर्णन अलग अध्याय में होगा।

† एक नियम से यह बात निश्चय हुई कि पार्लियामेण्ट के लिये हर तीसरे साल आना आवश्यक है।

श्रेणी के मनुष्यों को धनी बनाने के अभिप्राय से एक नवीन आर्थिक प्रबन्ध की नींव डाली। उन्हों ने जातीय ऋण (National Debt) की स्थापना की। यह ऋण देशवासी अपनी इच्छा से सरकार को देते हैं। सरकार उसे कभी भी नहीं लौटाती, परन्तु उसका ब्याज सदैव देती रहती है। इस ऋण से ह्विगदल को अनेकों लाभ हुये। प्रथम, उन्हें यूरुप महाद्वीप के युद्धों के हेतु पर्याप्त धन प्राप्त हो गया। द्वितीय, मनुष्य हृदय से सन् १६८९ के प्रबन्ध व विलियम के शुभचिन्तक हो गये। तृतीय, इस ऋण द्वारा मध्यम श्रेणी के मनुष्यों को बड़ा लाभ हुआ। जातीय ऋण के उगाहने तथा धन द्वारा सरकार की सहायता करने को इङ्गलैण्ड का बैङ्क (Bank of England) स्थापित हुआ। यह बात निश्चित हुई कि राजा धन की स्वीकृत के लिये प्रति वर्ष पार्लियामेण्ट में आया करेगा और उसके सदस्यों के प्रश्नों के उत्तर दिया करेगा। राजा के सेवकों का वेतन पार्लियामेण्ट से नियत होने लगा। इस से यह लाभ हुआ कि राजा दुराचारियों को नौकर न रख सकता था। यह बात भी निर्धारित हो गई कि राजा धन केवल उन कार्यों में व्यय करेगा जिन के हेतु उसकी स्वीकृति हुई है।

इङ्गलैण्ड तथा फ्रांस के युद्ध—ह्विगदल का चतुर्थ नियम फ्रांस से युद्ध करके चौदहवें लुई को नीचा दिखाना था। इस नियम के अनुसार इङ्गलैण्ड ने सन् १६८९ ई० से १८१५ ई० तक फ्रांस के विरुद्ध सात बड़े युद्ध किये। इन युद्धों द्वारा इङ्गलैण्ड ने यूरुप की शक्तियों में विशेष लाभ पाया। क्रॉम्वेल की वाह्यनीति के अनन्तर चार्ल्स द्वितीय व जेम्स द्वितीय ने चौदहवें लुई तथा यूरुप के अन्य राजाओं के सम्मुख अपना शीश झुका कर भारी अपमान प्राप्त किया था। अब इङ्गलैण्ड ने फ्रांस के विरुद्ध सात युद्ध करके यूरप की शक्तियों में उच्चपद प्राप्त किया। सारे देश उसको सर्वोच्च मानने लगे और ह्विगदल का आदर करने लगे।

अभ्यास।



(१) ह्विगदल के चार सिद्धान्तों का वर्णन करो। क्या तुम बत सकते हो कि ह्विगदल ने यह सिद्धान्त क्यों बनाये थे ?

(२) जातीय ऋण से क्या आशय है ? इस ऋण से इङ्गलैण्ड व सरकार को क्या लाभ हुआ ?

(३) सन् १६८९ ई० के प्रबन्ध से राजा के अधिकार किस प्रका कम हो गये ? विलियम तृतीय और चार्ल्स प्रथम के अधिकारों में क्य अन्तर था ?

(४) निम्नलिखित पर सक्षेप नोट लिखो :—

[अ] बैङ्क ऑफ इङ्गलैण्ड, [ब] टालरेशन एक्ट।



बत्तीसवां अध्याय।

विलियम तृतीय व मेरी (१६८९–१७०२)।

जिस समय विलियम तृतीय इङ्गलैण्ड में आया पार्लियामेण्ट की बैठक न हो रही थी। विलियम ने पार्लियामेण्ट (Convention Parliament) को निमन्त्रित किया। उसने आकर विलियम और मेरी को इङ्गलैण्ड का शासनकर्ता बनाया। विलियम अपनी ही निमन्त्रित की हुई पार्लियामेण्ट द्वारा राजा बना था,—अतः कुछ इतिहासलेखक उसके राजा बनने को अनुचित बताते हैं और सन् १६८९ के प्रबन्ध में दोष निकालते हैं।



विलियम तृतीय।

बिल आफ़ राइट्स, १६८९ ई०—पार्लियामेण्ट विलियम को अपने वश में रखना चाहती थी। ह्विगदलवालों की इच्छा थी कि विलियम हमारे चार नियमों के अनुसार कार्य करे। इस कारण सन् १६८९ ई० में पार्लियामेण्ट ने एक नियम (Bill of Rights) बनाया जिसने विलि-

यम की सारी स्वतन्त्रता छीन ली। इस से यह बात निश्चित हुई कि राजा कभी देश के नियमों के विरुद्ध कार्य न करेगा और हाई कमीशन जसे न्याया लयों की पुन स्थापना न करेगा। भविष्य में न वह सेना रख सकता था और न पार्लियामेण्ट की इच्छा के विरुद्ध कर ही उगाह सकता था। यह निश्चय हुआ कि पार्लियामेण्ट की बैठक जहाँ तक सम्भव होगी प्रति वर्ष हुआ करेगी और उसके सदस्यों को राजा की शासन प्रणाली में दोष निकालने का अधिकार प्राप्त होगा।



मेरी।

राज्याभिषेक के विषय में इस नियम ने यह निर्धारित किया कि यदि विलियम और मेरी के कोई सन्तान न होगी तो मेरी की छोटी बहिन ऐन रानी बनेगी। कोई व्यक्ति जो रोमन कैथोलिक धर्मावलम्बी है अथवा जिसका विवाह किसी रोमन कैथोलिक धर्मावलम्बी के साथ हुआ है, सिंहासनारूढ नहीं हो सकता। इस नियम द्वारा पार्लियामेण्ट के अधिकारों की रक्षा हुई। उसे राजा पर प्रभुत्व स्थापित करने का अवसर प्राप्त हुआ। विलियम के राज्य की नींव पुष्ट हुई क्योंकि जेम्स द्वितीय तथा उसका पुत्र कैथोलिकधर्मावलम्बी होने के कारण इस नियम का उलंघन किये बिना राजा नहीं बन सकते थे। यह नियम ह्विगदल के १६८९ के प्रबन्ध का बलवान स्तम्भ है।

विलियम को इसका पूर्ण ज्ञान था कि ह्विगदल उसके अधिकारों को छीन कर पार्लियामेण्ट को देना चाहता है। वह यह भी जानता था कि टोरीदल जेम्स द्वितीय को पुन राजा बनाने के उद्योग में लीन है। अत उसने अपनी सभा में ह्विग और टोरी दोनों को बैठने की आज्ञा दी। कुछ समय पश्चात् उसको ज्ञात हुआ कि टोरीदल उसका और देश-प्रीति का शत्रु है। अत वह ह्विगदल पर अधिक भरोसा करने लगा और केवल इसी दल से मन्त्री नियुक्त करने लगा। इस प्रकार विलियम तृतीय के राज्यकाल में 'पार्टी सिस्टम' (Party System) की प्रथा प्रचलित हुई।

विलियम तथा मेरी का स्वभाव—विलियम के स्वभाव के कारण ह्विग तथा टोरी दोनों उस से घृणा करते थे। प्रजा उसे परदेशी समझती थी। जेम्स द्वितीय से वह अवश्य अच्छा था। वह प्रसिद्ध सेनापति तथा चतुर राजनीतिज्ञ भी था। परन्तु परदेशी होने के कारण इङ्गलैण्डवासियों के हृदय में उसकी ओर से प्राकृतिक प्रेम न था। इङ्गलैण्ड की गिर्जा का अनुयायी होने के बदले विलियम कैल्विन का अनुयायी था। उसका अधिकाश समय बाहर कार्यों के करने में व्यय होता था। अत वह घरेलू प्रबन्धों में कंचित मात्र भी जी न लगाता था। विलियम का रूप रंग भी प्रभावशाली न था। वह एकान्त प्रिय था और किसी पर विश्वास न करता था। यदि विलियम अकेला राजा बनता तो उसके राज्य का अन्त बहुत शीघ्र हो गया होता। केवल मेरी के कारण ह्विग व टोरी दोनों विलियम के शुभचिंतक तथा आज्ञानुरागी बने रहे। मेरी सुन्दर, व दयालु व सर्व प्रिय थी। वह प्रत्येक मनुष्य से मिलती थी। वह घरेलू प्रबन्धों में भी चित्त लगाती थी। अत विलियम के अवगुणों का बुरा प्रभाव मनुष्यों को ज्ञात न होने पाता था।

घरेलू नीति—विलियम में एक अवगुण यह था कि वह अंग्रेजी

धन महाद्वीप के युद्धों में व्यय करना चाहता था। कोष गार्ल्स था। सिक्का हेनरी के राज्यकाल ही से बुरा चला आ रहा था। विलियम के परदेशी होने के कारण कोई उसे धन उधार न देता था। अत उसने जातीय ऋण की नीव डाली और बैङ्क ऑफ इङ्गलैण्ड स्थापित किया। इस रीति से विलियम ने बहुत धन एकत्रित कर लिया। अंग्रेजी सिक्कों के अवगुण दूर हो गये। सन् १६९४ ई० में विलियम की पार्लियामेण्ट ने डिसेण्टरों को धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करने के हेतु एक नियम बनाया। इस के एक वर्ष पश्चात् छापाखानों को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। भविष्य में पुस्तकों के मुद्रित कराने के लिये पार्लियामेण्ट की स्वीकृति की आवश्यकता न थी। इस का एक मुख्य परिणाम यह हुआ कि राजा के शत्रु उसे नीचा दिखाने को गुप्त रीति का अनुशीलन न करके पत्रों तथा पुस्तकों द्वारा राजा के शासन में दोष निकालने लगे।

विलियम की विदेशी नीति—यूरप महाद्वीप के झगड़ों के कारण विलियम को अधिक सुधार करने का अवसर प्राप्त न हुआ था। उसका वंश प्राचीन काल से फ्रान्स तथा स्पेन के विरुद्ध युद्ध कर रहा था। विलियम का पालन पोषण विपत्तिकाल में हुआ था। इस कारण वह स्वभाव से ही बलवान, परिश्रमी तथा साहसी था। उसको अपने पूर्वजों के गौरव-पूर्ण कार्य्य भली भाँति स्मरण थे। उसकी हार्दिक इच्छा अपने पुराने शत्रु चौदहवें लुई का गौरव चूर्ण करने की थी। इङ्गलैण्ड में आने के पूर्व ही उसने लुई से युद्ध करने की इच्छा से जर्मनी के सम्राट तथा अपने प्राचीन शत्रु स्पेन को अपनी ओर मिला लिया था। इङ्गलैण्ड का राजा बनने से विलियम को धन, सेना तथा जहाजी बेड़ों की कमी न रही। हॉलैण्ड पूर्व समय से ही फ्रान्स का शत्रु था। इस कारण विलियम को लुई से युद्ध आरम्भ करने में अधिक उद्योग न करना पड़ा।

अंग्रेजी राज्याभिषेक का युद्ध, १६८९–९७ ई०—लुई इस

बात का प्रयत्न कर रहा था कि बृटिश टापुओं के निवासी विलियम को हटा कर जेम्स द्वितीय को पुन राजा बनावें। उसकी यह भी इच्छा थी कि फ्रांस की पूर्वी सीमा राइन नदी से जा मिले। वह उत्तरी अमेरिका, अफ्रीका तथा भारतवर्ष में अङ्गरेजी व्यापारियों के अधिकार छीनने का भी उद्योग कर रहा था। इन समस्त कारणों से इङ्गलैण्डवासी विलियम की सहायतार्थ तत्पर थे, परन्तु स्काटलैण्ड तथा आयरलैण्ड में जेम्स द्वितीय और कैथोलिकों का जोर था। इन दोनों देशों के निवासी विलियम के स्थान पर जेम्स को राजा बनाने का प्रयत्न कर रहे थे।

स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड के विद्रोह—स्काटलैण्ड में जेम्स का पक्षपाती लार्ड डण्डी (Lord Dundee) था। सन् १६८९ ई० में सारी कैथोलिक जनता विलियम के विरुद्ध उठ खड़ी हुई। परन्तु विलियम की सेना ने जो 'मेके (Mackay) की अध्यक्षता में थी, उसे क्रीक्रैंकी (Killiecrankie) के युद्ध में हराया। लार्ड डण्डी स्वय युद्ध में मारा गया। विलियम ने स्काटलैण्ड वासियों से यह शपथ ली कि वे उसके विरुद्ध कभी अस्त्र धारण न करेंगे। मैकडोनल्डदल के नेता 'मैकईन (Mack Ian) ने शपथ न खाई। अत विलियम ने उसका और उसके दल के स्त्री पुरुष तथा बच्चों तक का वध करा दिया। इस घटना को पढ कर बड़ा आश्चर्य होता है क्योंकि विलियम स्वय कठोरहृदय तथा अत्याचारी राजा न था। इसके अतिरिक्त वह इङ्गलैण्डवासियों से अत्यन्त दयालुता से व्यवहार कर रहा था।

आयरलैण्डवासियों के साथ भी विलियम ने दयालुता का व्यवहार न किया। लुई की सहायता से जेम्स द्वितीय आयरलैण्ड पधारा। कैथोलिक जनता उसके पक्षार्थ उठ खड़ी हुई। जेम्स ने लन्डनडरी (London-derry) के अतिरिक्त सारे अङ्गरेजी नगर छीन लिये। उसने इस नगर को चारों ओर से घेर कर अङ्गरेजों को भूखों मारना प्रारम्भ किया। यह देख

कर विलियम ने तीन अंग्रेजी जहाजों को भोजन सामग्री से भर कर लण्डनडरी भेजा । जेम्स ने विवश हो अपनी सेना इस नगर से बुला ली। सन् १६९० ई० मे विलियम स्वयं आयरलैण्ड गया और जेम्स की सेना को बोयन नदी के किनारे हरा कर लिमेरिक (Limerick) के स्थान पर आयरलैण्डवासियों से सन्धि कर ली । जेम्स इसके पूर्व ही आयरलैण्ड से भाग गया था ।

विलियम ने आयरलैण्डवासियों को स्काटलैण्डवासियों की भांति कठिन दण्ड तो न दिया, परन्तु उसने अनेकों प्रकार से देश को नष्ट भ्रष्ट किया । सन् १६९८ ई० मे उसने इङ्गलैण्ड के व्यापारियों की भलाई के लिये आयरलैण्ड मे बने हुये कपडे का बाहर जाना स्थगित करा दिया। डिसेण्टरों की जागीरें छीन कर उसने इङ्गलैण्ड की गिर्जा के अनुयायियों को प्रदान कर दी जिसके कारण सहस्रों डिसेण्टर आयरलैण्ड त्याग कर अन्य देशों को प्रस्थान कर गये । इस प्रकार के कार्य्य विलियम की मूर्खता के प्रमाण है । यदि प्रोटेस्टेण्ट की रक्षा करना उसके जीवन का मुख्य लक्ष्य था, तो उसका कर्तव्य था कि आयरलैण्ड की डिसेण्टर जनता को भी सन् १६९४ ई० के नियम से लाभ उठाने का सुअवसर प्रदान करता ।

सामुद्रिक युद्ध—जिस समय विलियम आयरलैण्ड में था लुई ने एक जलसेना इङ्गलैण्ड पर आक्रमण करने को भेजी । परन्तु अङ्गरेजी सेनापति लॉर्ड टोरिङ्गटन (Lord Torington) ने उसे पराजित करके भगा दिया । इस आक्रमण की सूचना पाकर विलियम इङ्गलैण्ड लौट आया । लुई ने दूसरी बार एक सेना इङ्गलैण्ड पर आक्रमण करने को भेजी, परन्तु अङ्गरेजी सेनापति लॉर्ड रसल (Lord Russel) ने उसे लाहोग (La Hogue) के स्थान पर पराजित करके फ्रासीसी जहाजों में आग लगा दी । सारे फ्रासीसी जल कर भस्म हो गये ।

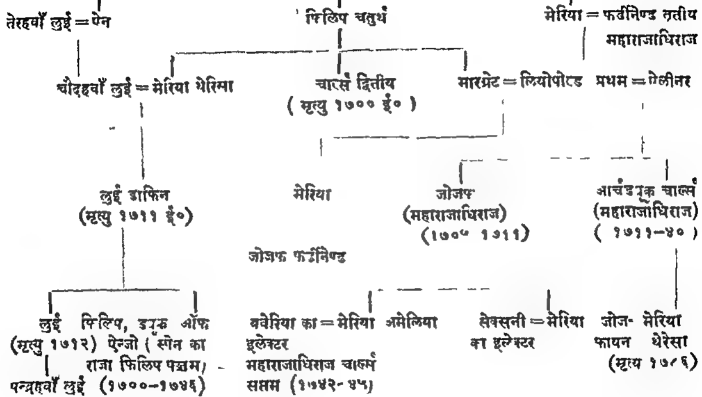
नामूर का घेरा, १६६५ ई०—लाहोग के युद्ध के अनन्तर लुई ने इङ्गलैण्ड पर आक्रमण करने का विचार त्याग कर अपनी सारी शक्ति हालैण्ड के गढ़ विजय करने में लगाई। शत्रु के अनेकों प्रसिद्ध गढ उसके अधिकार में आगये। इन में सब से प्रसिद्ध नामूर (Namur) का गढ़ था। सन् १६९५ ई० में विलियम ने उसे चारों ओर से घेर लिया और कई मास पर्यन्त उसको घेरे पडा रहा। अन्त में फ्रासीसियों को गढ छोड़ कर भाग जाना पडा। विलियम के सैनिकों ने उस पर अधिकार कर लिया।

रिज़विक का सन्धिपत्र, १६९७ ई०—नामूर के गढ़ हाथ से निकल जाने से लुई का सारा साहस जाता रहा। उसने सन्धि हेतु दूत भेजे। विलियम ने प्रसन्नतापूर्वक रिजविक। (Ryswick) के स्थान पर सन्धि करली। लुई ने स्ट्रेसबर्ग नगर को छोड़ कर हालैण्डवासियों के सारे नगर लौटा दिये। उसने विलियम को इङ्गलैण्ड का राजा स्वीकार किया और यह शपथ भी खाई कि मैं भविष्य में जेम्स को राजा बनाने का उद्योग न करूंगा। यदि यूरूप महाद्वीप की दृष्टि से देखा जाये तो रिजविक का सन्धिपत्र व्यर्थ प्रमाणित हुआ। इससे फ्रास और इङ्गलैण्ड का वैमनस्य न गया। यदि इङ्गलैण्ड की दृष्टि से देखा जाय तो रिजविक के सन्धिपत्र से विलियम को बडा लाभ हुआ। भविष्य के लिये वह जेम्स द्वितीय की ओर से निर्भीक हो गया। यूरुप की सबसे बड़ी शक्ति ने सन् १६८९ ई० के प्रबन्ध में अपनी स्वीकृति देदी।

स्पेन का सिंहासन तथा उसके अधिकारी—रिजविक के सन्धिपत्र को लिखे हुये अभी चार ही वर्ष व्यतीत हुये थे कि यूरुप में एक भयङ्कर सग्राम होने के चिह्न दृष्टिगोचर हुये। स्पेन का राजा चार्ल्स द्वितीय मरणासन्न था। उसके कोई पुत्र अथवा भाई न था जो उसकी मृत्यु के पश्चात् राजसिंहासन पर बैठता। उसकी बडी बुआ फ्रास के राजा

तेरहवीं लुई को ब्याही थी। चौदहवां लुई उसी का पुत्र था। चार्ल्स की छोटी बुआ जर्मनी के राजा फर्डीनेण्ड को ब्याही थी। उनका पुत्र लियोपोल्ड इस समय जर्मनी का सम्राट था। चार्ल्स द्वितीय की बड़ी बहिन चौदहवें लुई और छोटी बहिन लियोपोल्ड को ब्याही थी। इस भांति चौदहवें लुई और लियोपोल्ड की मातायें तथा स्त्रियाँ स्पेन की राजकुमारियाँ थीं। अब यह प्रश्न उठता है कि चार्ल्स की मृत्यु के पश्चात् स्पेन का महान् साम्राज्य, जो स्पेन के अतिरिक्त इटेली, नेदरलैण्ड्स और अमेरिका में विस्तृत था, लुई के पुत्र डाफिन को मिले अथवा लियोपोल्ड के पुत्र जोजफ को।

विलियम यूरप की युद्धशक्ति को एक समान रखना चाहता था। उसने स्पेन के राज्य का उचित प्रबन्ध करने को चौदहवें लुई के साथ दो प्रतिज्ञापत्र लिखे। प्रथम से दोनों ने यह निश्चित किया कि चार्ल्स की मृत्यु के अनन्तर स्पेन का राज्य सम्राट लियोपोल्ड के धेवता बवेरिया के इलेक्टर जोजफ को मिले। परन्तु सन् १६९९ ई० में जोजफ की मृत्यु होगई। तब विलियम ने लुई के साथ द्वितीय प्रतिज्ञापत्र लिखा। इस से यह निश्चय हुआ कि चार्ल्स का राज्य उसकी मृत्यु के पश्चात् फ्रांस व जर्मनी दोनों में विभाजित कर दिया जाय। परन्तु विलियम का प्रयत्न निष्फल सिद्ध हुआ। मरते समय चार्ल्स अपने वसीयतनामे में यह लिख गया कि मेरा सारा साम्राज्य लुई के नाती फिलिप को मिले। लुई ने दूसरे प्रतिज्ञापत्र के प्रमाणों पर ध्यान न देकर यह प्रबन्ध तुरन्त स्वीकार कर लिया। प्रसन्न होकर वह कहने लगा "पिरेनीज पहाड़ों का अन्त हो गया है"। इसके कुछ समय पश्चात जब जेम्स द्वितीय की मृत्यु हुई तो लुई ने उसके पुत्र जेम्स अर्थात् "बड़े राज्याभियोगी" (Old-Pretender) को इङ्गलैण्ड का राजा स्वीकार करके उसके आगे मस्तक नवाया।


फिलिप तृतीय (स्पेन का राजा)
तेरहवाँ लुई = ऐन
फिलिप चतुर्थ
मेरिया = फर्डीनेण्ड तृतीय
महाराजाधिराज
चौदहवाँ लुई = मेरिया थेरिसा
चार्ल्स द्वितीय
(मृत्यु १७०० ई०)
मारग्रेट = लियोपोल्ड प्रथम = एलीनर
लुई डाफिन
(मृत्यु १७११ ई०)
मेरिया
जोजफ
(महाराजाधिराज)
(१७०५ १७११)
आर्चड्यूक चार्ल्स
(महाराजाधिराज)
(१७११–४०)
जोजफ फर्डीनेण्ड
लुई
(मृत्यु १७१२)
पन्द्रहवाँ लुई (१७००–१७४६)
फिलिप, ड्यूक ऑफ ऐन्जो (स्पेन का राजा फिलिप पञ्चम)
बवेरिया का = मेरिया
इलेक्टर
महाराजाधिराज चार्ल्स
सप्तम (१७४२-४५)
अमेलिया
सेक्सनी = मेरिया
का इलेक्टर
जोज- मेरिया
फायन थेरेसा
(मृत्यु १७८६)

एक्ट आफ़ सेट्लमेण्ट, १७०१ ई०—विलियम लुई के अविश्वास पर शोक करने लगा, परन्तु वह कर ही क्या सकता था। वृद्धावस्था थी। मेरी का देहान्त हुये सात वर्ष हो चुके थे। उनके कोई सन्तान न हुई थी। मेरी की भगिनी एन् का भी कोई बालक जीवित न था। अतः सन् १७०१ में पार्लियामेण्ट ने राज्य प्रबन्ध के हेतु एक्ट ऑफ सेट्लमेण्ट (Act of Settlement) नामक नियम बनाया। इस से यह बात निश्चित हुई कि यदि ऐन् के कोई सन्तान न होगी, तो इङ्गलण्ड का सिंहासन जेम्स प्रथम की नातिन सोफ़िया को मिलेगा। राजा पार्लियामेण्ट की आज्ञा के बिना न अन्य देशों को जा सकता है और न उन से युद्ध ही कर सकता है।

विलियम की मृत्यु—सन् १७०१ ई० में विलियम घोडे से गिर कर परलोक सिधार गया। विलियम की गणना इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध राजाओं में नहीं की जाती है। बाह्य घटनाओं के कारण उसे घरेलू प्रबन्धों पर ध्यान देने का अवसर न मिलता था। उसने कुछ आवश्यक सुधार अवश्य किये थे। स्काटलैण्डवासियों का वध तथा आयरलैण्ड की अवनति उसके नाम को सदैव कलङ्कित करती रहेंगी। विलियम क्रॉम्वेल, रिशलू और बिस्मार्क के समान नीतिज्ञ अवश्य था, परन्तु वह यूरप की राष्ट्रीय शक्ति-सतुलन बनाये रखने में तनिक भी सफल न हुआ।



अभ्यास।

(१) विलियम तृतीय का अंग्रेजी सिंहासन पर क्या अधिकार था?

(२) विलियम तृतीय तथा मेरी का स्वभाव वर्णन करो और बताओ कि इङ्गलण्ड के निवासी मेरी को क्यों अधिक चाहते थे?

(३) विलियम तथा मेरी के राज्य में फ्रांस से युद्ध होने के क्या कारण थे ?

(४) तुम जेम्स द्वितीय और विलियम तृतीय दोनों का वृतान्त पढ़ चुके हो। दोनों में तुम किसको अच्छा समझते हो, और क्यों ?

(५) निम्न लिखित पर नोट लिखो —

[अ] एक्ट ऑफ सेट्लमेण्ट, [ब] डिक्लेरेशन ऑफ राइट्स, [स] नामूर का घेरा।

(६) विलियम तृतीय का चित्र देखो। उसका प्रकृति प्रथम चार स्टुअर्ट राजाओं में से किस से मिलती है ?



तेंतीसवां अध्याय ।

महारानी एन् (१७०२—१७१४)

विलियम की मृत्यु के पश्चात् मेरी की छोटी बहिन बिल ऑफ राइट्स के अनुसार रानी बनी। एन् का विवाह डेनमार्क के राजकुमार जार्ज से हुआ था। राजकुमार जार्ज महारानी विक्टोरिया (१८३७—१९०१) के पति की भांति देशी कार्यों में लेश मात्र भाग न लेता था। एन् स्वयं राज्य कार्यों में बहुत कम चित्त लगाती थी। विलियम की भाँति वह विदेशी तथा केलविन की अनुयायिनी न थी। इस कारण जनता उससे प्रेम करती थी। एन् टोरी दल को बहुत चाहती थी। अतः उसके राज्यकाल में इस दल का बड़ा जोर रहा।



महारानी एन् ।

टोरीदल के सिद्धान्त तथा शासन, १७०२—१७०५

ई०—विलियम सदैव ह्विगदल का पक्ष करता था। उसके शासन काल में इङ्गलैण्ड को फ्रांसीसी आक्रमणों का डर सदैव लगा रहता था। इन दो कारणों से विलियम के शासन में टोरीदल से कुछ भी करते न बना था। अब एङ्गलीकन गिर्जा का अनुयायिनी महारानी ऐन् का राज्य था। ऐन् प्रत्येक भांति से टोरीदल का पक्ष करने को तत्पर थी। फ्रांसीसी आक्रमणों का भय पूर्णतया जाता रहा था। इस कारण एन् के शासनकाल में टोरीदल ने ह्विगदल के चार सिद्धान्तों में दोष निकालने और उनको स्थगित करके अपने सिद्धान्तों के स्थापित करने का प्रत्येक भांति से प्रयत्न किया। टोरीदल में जमींदार, कृषक, राजकर्मचारी और एङ्गलीकन गिर्जा के अनुयायी सम्मिलित थे। इस से वह सन् १६८९ के प्रबन्ध के चारों नियमों के विरुद्ध था। प्रथम टोरी राजा की शक्ति को सदैव स्थापित रखना चाहते थे, परन्तु वे स्टुअर्टवंश के अत्याचारों को न लौटाना चाहते थे। द्वितीय, वे डिसेण्टरों को स्वतन्त्रता प्रदान न करना चाहते थे। तृतीय वे व्यापारियों तथा मध्यम श्रेणी के मनुष्यों को शक्तिहीन करके जमींदारों तथा कृषकों को बलवान बनाना चाहते थे। चतुर्थ, टोरीदल फ्रांस से युद्ध न करना चाहता था। सन् १७०५ ई० तक देश का प्रबन्ध टोरी दल के हाथों में रहा। इसके अनन्तर वह ह्विगदल को मिला।

ड्यूक आफ़ मार्लबरो—ऐन ने रानी बनते ही विलियम के मन्त्रियों को हटा कर टोरीदल में से मन्त्री नियुक्त किये। इन में सब से प्रसिद्ध गुडोल्फिन (Godolphin) और जॉन चर्चिल (John Churchill) थे। गुडोल्फिन बड़ा अनुभवी तथा चतुर मन्त्री हुआ है। उसका मन्त्रित्व सन् १७१० ई० तक रहा। जॉन् चर्चिल डेवनशायर के एक धनाढ्य का पुत्र था। चार्ल्स द्वितीय के राज्यकाल में उसने सैनिक व्यवसाय स्वीकार किया। सेजमूर के युद्ध में उसने अच्छा यश

प्राप्त किया था। इसके पश्चात् जेम्स द्वितीय को देश निकाला दिलाने में उसने बड़ी कोशिश की। विलियम तृतीय के शासनकाल में उसने आयरलैण्ड तथा नेदरलैण्ड्स के युद्धों में वीरता दिखाई। ऐन् ने उसे अंग्रेजी सेना का सेनापति नियुक्त किया। सन् १७०४ में ब्लेनहिम (Blenheim) के युद्ध में ऐसी वीरता दिखाई कि ऐन् ने प्रसन्न हो कर उसे ड्यूक आफ मार्लबरो (Duke of Marlborough)-का पद प्रदान किया।



ड्यूक आफ मार्लबरो।

मार्लबरो का इङ्गलैण्ड के सेनापतियों में महान् ऐश्वर्य स्थापित है। उसका स्वभाव ऐसा सुन्दर था कि वह क्रोधित होना जानता ही न था। वह प्रत्येक भांति से अपने सैनिकों का पालन करता था। उसकी सेना में कभी भी भोजन सामग्री तथा वस्त्रों की कमी न रहती थी। मार्लबरो शत्रु सेना पर आँधी की भांति टूट कर उसे असमञ्जस में डाल कर विजय प्राप्त करना भली भांति जानता था। उसे इस बात का भी पूर्ण ज्ञान था कि किस समय किस अस्त्र का प्रयोग करना उचित है। एक इतिहासलेखक ने उसकी प्रशंसा में यहाँ तक लिखा है कि मार्लबरो ने

शायद ही कोई युद्ध ऐसा किया हो जिसमें उसने विजय न प्राप्त की हो और शायद ही किसी गढ़ को घेरा हो जिसे उसने अन्त में जीत न लिया हो। मार्लबरो की भांति उसकी स्त्री—सारा (Sarah) भी घरेलू कार्य्यों में भाग लेने के लिये बहुत प्रसिद्ध है वह ऐन् के विश्वासपात्रों में से थी। ऐन उसकी बात बहुत मानती थी।

स्पेनीय उत्तराधिकार के युद्ध का प्रारंभ, १७०२ ई०—

प्रारम्भ में गुडोल्फिन, मार्लबरो और उसकी स्त्री तीनों फ्रांसीसी युद्ध के विरुद्ध थे। वे समझते थे कि यदि फ्रांस से युद्ध किया जायगा तो उन्हें देशी सुधार करने और ह्विगदल के पराजित करने का अवसर प्राप्त न होगा, परन्तु युद्ध का रोकना असंभव था। फ्रांस का राजा चौदहवां लुई विलियम के साथ अविश्वास कर चुका था। उसने रिजविक के सन्धिपत्र की प्रतिज्ञाओं का उल्लंघन करके फ्रांस तथा बेल्जियम के गढ़ों पर अधिकार कर लिया था। फ्रांसीसी व्यापारी अङ्गरेजी व्यापारियों के अधिकारों से, जो उन्हें कुछ समय पूर्व स्पेन के राजा से प्राप्त हुये थे, अनुचित लाभ उठा रहे थे। यूरप की महानशक्तियों में से हालैण्ड आस्ट्रिया और जर्मनी की सेनायें लुई से युद्ध करने को उद्यत थीं। स्पेन तथा बवेरिया लुई की सहायता कर रहे थे। अङ्गरेजी सरकार ने भी विवश होकर हालैण्ड, आस्ट्रिया तथा जर्मनी की सहायता का बीड़ा उठाया। गुडोल्फिन ने पर्याप्त धन युद्ध हेतु स्वीकार किया। मार्लबरो अङ्गरेजी सेनाओं को लेकर नेदरलैण्ड्स गया और फ्रांसीसियों को बेल्जियम से हटाने का उद्योग करने लगा।

अभी मार्लबरो नेदरलेण्ड्स ही में था कि सन् १७०४ ई० में उसे फ्रांस तथा बवेरिया की सेनाओं के आस्ट्रिया की राजधानी वियाना की ओर बढ़ने का समाचार मिला। समाचार पाते ही उसने अपनी सेना सहित दक्षिण पूर्व की ओर प्रस्थान किया। कठिन मार्गों को पार करके वह

वियाना और शत्रुसेना के बीच ब्लेनहिम के स्थान पर पहुंचा और आस्ट्रिया के प्रसिद्ध सेनापति यूजीन (Eugene) की सहायता से उन्हें पराजित करके आस्ट्रिया के राजा को स्वतन्त्रता दिलाई। इसी वर्ष अंग्रेजी अफसर रुक (Rook) नामा ने जिब्राल्टर पर अधिकार कर लिया।

ह्विगदल का शासन, १७०५-१७१० ई०—ब्लेनहिम तथा जिब्राल्टर पर अधिकार प्राप्त हो जाने से इङ्गलैण्ड की जनता ने उत्साहित होकर मङ्गल कार्य्य किये। प्रत्येक ओर मार्लबरो तथा अंग्रेजी सेना का यश सुनाई देने लगा। परन्तु गुडोल्फिन के अतिरिक्त टोरीदल के शेष सदस्य प्रसन्न न हुये। जनता युद्ध के पक्ष में थी। अत सन् १७०५ ई० के पार्लियामेण्ट के चुनाव में ह्विगदल की विजय हुई। इस दल ने टोरी दल से राज्यप्रबन्ध छीन कर अपने हाथों में ले लिया, परन्तु गुडोल्फिन मन्त्रित्व पद से न हटाया गया। इसके दो कारण थे। प्रथम, वह ह्विगदल की भाँति फ्रान्सीसी युद्ध के पक्ष में था। द्वितीय, कुछ समय से उसके मन्त्रिमण्डल के टोरी मन्त्री फ्रान्सीसी युद्ध के विरुद्ध होने के कारण पदच्युत किये जा रहे थे और ह्विग मन्त्री उनमें सम्मिलित हो रहे थे।

इङ्गलैण्ड तथा स्काटलैन्ड का संयोग, १७०७ ई०—ह्विग सरकार ने एक लाभदायक कार्य्य यह किया कि उसने सन् १७०७ ई० में इङ्गलैण्ड तथा स्काटलैण्ड को एक में सङ्गठित कर लिया। स्काटलैण्ड की पार्लियामेण्ट भङ्ग कर दी गई। स्काटलैण्डवासियों को ६१ सदस्य अर्थात् ४५ कामन्स और १६ लार्डस इङ्गलैण्ड की पार्लियामेण्ट में भेजने की आज्ञा मिल गई। वहां की प्रेसबिटेरियन गिर्जा ज्यों की त्यों स्थापित रही। वहाँ के व्यापारियों को वे सारे अधिकार मिल गये जो अंग्रेजी व्यापारियों को प्राप्त थे। सन् १६०३ ई० में जेम्स प्रथम के इङ्गलैण्ड का राज्य स्वीकार कर लेने से इङ्गलैण्ड तथा स्काटलैण्ड के पारस्परिक वैमनस्य का अन्त हो चुका था। सन् १७०७ ई० के नियम से दोनों में

ा प्रेम का सञ्चार हुआ और ह्विगदल को फ्रांस से युद्ध करने के लिये
ाप्त धन तथा सेना प्राप्त हुये।

महाद्वीप में अंग्रेज़ों की विजय—महाद्वीप में मार्लबरो बराबर
य प्राप्त कर रहा था। सन् १७०६ ई० में उसने फ्रान्सीसियों को
ालैण्ड्स में रेमेलीज (Ramilles) के स्थान पर पराजित किया।
सीसियों को सारा नेदरलैण्ड्स त्याग कर फ्रांस लौट जाना पड़ा।
डी भी मित्रों के अधिकार में आ गई। अङ्गरेजी व पुर्तगाली सेनाओं ने
लित होकर मैड्रिड पर अधिकार प्राप्त कर लिया। सन् १७०८ ई०
मार्लबरो ने फ्रान्सीसियों को ऊडेनार्ड (Oudenarde) के स्थान पर परा
त करके उनके ऐतिहासिक गढ लिल पर अधिकार स्थापित कर
या। चौदहवें लुई को सारा नेदरलैण्ड्स छोड़ कर फ्रांस लौट जाना
ा। यही नहीं वरन् उसने सन्धि की प्रार्थना भी की, परन्तु मार्लबरो
फ्रांस की राजधानी पेरिस पर अधिकार कर लेने की आशा थी।
गदल के सदस्य सोचते थे कि यदि युद्ध स्थगित कर दिया जावेगा
देशवासियों को उनके शासन में दोष निकालने का अवसर मिल
वेगा और उन्हें शासन पद से पदच्युत होना पड़ेगा। अतः लुई की
र्थना स्वीकार न हुई। मार्लबरो को पेरिस पर आक्रमण करने की
ा मिली। उसने १७०९ ई० में माल्प्लाके (Malplaaquet) के
ान पर शत्रु पर विजय प्राप्त की, परन्तु पेरिस पर आक्रमण करना
सम्भव था।

माल्प्लाके की विजय मार्लबरो तथा ह्विगदल के लिये अन्तिम
ेजय थी। कुछ समय से लोग स्पेनीय उत्तराधिकार के युद्ध के विरुद्ध हो
ए थे। उन्हें भय था कि यदि मार्लबरो अधिक यश प्राप्त कर लेगा तो
ह क्राम्वेल की भांति राज्यप्रबन्ध को अपने हाथों में लेकर अत्याचार
ा भण्डार भरेगा। ऐन् स्वयं युद्ध के विरुद्ध हो गई थी। उसने लेडी

सारा को निकाल दिया था। सन् १७०९ ई० में ह्विगदल ने टोरीदल के एक पादरी शेवरल (Scheverell) नामी पर अभियोग चला कर अपना सत्यानाश कर लिया। शेवरल ने दो भाषणों में ह्विगदल के अवगुण वर्णन किये थे। हाउस ऑफ लॉर्ड्स् ने उसे यह दण्ड दिया कि उसके भाषणपत्र जला दिये जायें और वह तीन वर्ष तक किसी प्रकार का भाषण न दे। इङ्गलेण्डवासियों ने शेवरल के प्रति सहानुभूति प्रकट की और ह्विगदल के पतन के साधन एकत्रित किये। सन् १७१० ई० में महारानी ऐन् ने गुडोल्फिन तथा ह्विग मन्त्रियों को पदच्युत करके टोरीदल के नेता सेण्ट जॉन (St John) और हार्ले (Harley) से मन्त्रिमण्डल स्थापित करने को कहा।

हार्ले और सेण्ट जॉन का मन्त्रिमण्डल, १७१०–१७१४ ई०—सेण्ट जॉन हार्ले से अधिक प्रसिद्ध तथा शक्तिशाली था। वह राजकार्य्य को भली भांति समझता था। ऐन् ने उसे विस्काउण्ट बोलिङ्ग्ब्रुक (Viscount Bolingbroke) की उपाधि प्रदान की। बोलिङ्ग्ब्रुक ने ह्विगदल से अति शीघ्र बदला लिया। उसने मार्लबरो को सेनापतित्व से अलग कर दिया। शत्रुदल की शक्ति को हीन करने के हेतु बोलिङ्ग्ब्रुक ने दो नियम बनाये। प्रथम नियम (Occasional Conformity Act) से, जो सन् १७११ में बना, यह निर्धारित हुआ कि सरकारी पद मिलने पर जो कोई डिसेण्टर अपने धर्म को पुनः स्वीकार करेगा उसे कठिन दण्ड दिया जायगा। भविष्य में डिसेण्टर जनता अपमानित होकर सर्कारी नौकरी न कर सकती थी। द्वितीय नियम (Schism Act) से, जो सन् १७१४ ई० में बना, यह निश्चय हुआ कि डिसेण्टर जनता किसी एङ्गलिकन धर्म के पादरी की आज्ञा के बिना अंग्रेजी शिशुओं को शिक्षा नहीं दे सकती है।

यूट्रेच्ट की सन्धि १७१३ ई०—वाह्यनीति में भी टोरी मन्त्रियों

ने ह्विगदल की नीति के विरुद्ध कार्य्य किया । उन्हों ने फ्रासीसी युद्ध को स्थगित करके यूट्रेक्ट (Utrecht) के स्थान पर चौदहवें लुई से सन्धि करली । स्पेन का विस्तृत साम्राज्य दोनों उत्तराधिकारियों में विभाजित कर दिया गया । लुई के नाती फिलिप को स्पेन तथा अमेरिका के उपनिवेश मिले । आर्च डयूक चार्ल्स को, जो अब जर्मनी का सम्राट बना हुआ था, नेदरलैण्डस् तथा स्पेन के वे राज्यविभाग प्राप्त हुये जो इटैली में थे । हालैण्डवासियों को फ्रान्स तथा बेल्जियम के बीच के देशों में सेना रखने की आज्ञा प्राप्त हो गई । इङ्गलैण्ड को फ्रासीसी राज्य में से नोवा-स्कोशिया, न्यूफाउण्डलैण्ड और हडसन खाड़ी के किनारे की भूमि और स्पेन के राज्य में से जिब्राल्टर और मिनार्का मिले । इङ्गलैण्ड को हबशियों के व्यापार के समस्त अधिकार प्राप्त हो गये । यूरप के देशों ने ऐन् को इङ्गलैन्ड की रानी स्वीकार किया । ह्विगदल ने सन्धि रोकने के लिये अनेकों प्रयत्न किये, परन्तु ऐन् ने नवीन लार्डस् की रचना करके उपरोक्त लिखित सन्धि को स्वीकार करा दिया* ।

टोरीदल का पतन, १७१४ ई०-यूट्रेक्ट के सन्धिपत्र से अंग्रेजों को कई ऐसे अधिकार तथा उपनिवेश प्राप्त हुये जो भविष्य में उनके हेतु बहुत लाभदायक प्रमाणित हुये । फ्रासीसी युद्ध ह्विगदल ने किया था, परन्तु इसका अच्छा परिणाम टोरीदल ने प्राप्त किया । सन् १७१२ ई० के पश्चात् इस दल ने अनेकों अनुचित कार्य्य किये जिनके कारण उसका पतन हो गया । ऐन् की सन्तान में से कोई भी जीवित न था जो राज्य का उत्तराधिकारी होता । इस कारण एक्ट ऑफ सेटलमेण्ट के अनुसार सोफिया‡-का पुत्र जार्ज राज्याधिकारी था । ह्विगदल उसको सिंहासना

*इङ्गलैण्ड के शासकों को नवीन लार्डस बना कर किसी बिल को हाउस आफ लार्डस में पास कराने का अधिकार प्राप्त था ।

‡ सोफिया को परलोकगमन किये दो मास व्यतीत हो चुके थे ।

रूढ करने का विचार कर रहा था, परन्तु बोलिङ्गब्रुक और हार्ले जेम्स द्वितीय के पुत्र बड़े राज्याभियोगी को राजा बनाने का यत्न कर रहे थे। इङ्गलेण्डवासी उसे वैसे ही न चाहते थे। दूसरे, वह कैथोलिक धर्मावलम्बी था। बोलिङ्गब्रुक ने उसे धर्म बदलने को लिखा, परन्तु उसने सूखा उत्तर दे दिया। बोलिङ्गब्रुक और हार्ले में वैमनस्य होने के कारण टॉरीदल बहुत शक्तिहीन हो गया था। इन्हीं दिनों एन् कठिन रोगग्रसित हो गई। बोलिङ्गब्रुक हार्ले को मन्त्रित्व से पदच्युत कराके बड़े राज्याभियोगी को निमन्त्रित करने का यत्न करने लगा, परन्तु ऐन् की मृत्यु तुरन्त हो जाने से बोलिङ्गब्रुक अपनी इच्छाओं को पूर्ण न कर सका। उसे विवश होकर ह्विगदल के नेताओं श्रूजबरी, सण्डरलैण्ड और आर्गाइल इत्यादि के साथ जार्ज को निमन्त्रण भेजना पड़ा।

महारानी ऐन् का शासनकाल इङ्गलैण्ड के इतिहास में अधिक प्रसिद्ध है। उसके राज्यकाल में टोरीदल के सदस्यों ने सन् १६८९ के प्रबन्ध को हटा कर अपने चार सिद्धान्तों को स्थापित करने और बड़े राज्याभियोगी को राजा बनाने के लिये बड़ा उद्योग किया, परन्तु वे सफल न हुये। उनकी ऐसी पराजय हुई कि वे लगभग ७० वर्ष तक कुछ न कर सके। इस के पश्चात् जब वे लार्ड नार्थ (Lord North) और छोटे पिट (Pitt the Younger) की अध्यक्षता में उभरे, तो उनके सिद्धान्तों में अनेकों परिवर्तन हो चुके थे।



अभ्यास।



(१) महारानी ऐन् को जनता विलियम तृतीय से अधिक क्यों चाहती थी?

(२) स्पेनीश उत्तराधिकार के युद्ध में अंग्रेजों ने आर्चड्यूक चार्ल्स का पक्ष क्यों लिया ? इस युद्ध मे भाग लेने मे उन्हें क्या लाभ हुआ ?

(३) मार्लबरो तथा क्राम्वेल मे तुम किसको अच्छा सैनिक समझते हो, और क्यों ? दोनों के चित्रों की तुलना करो। दोनों मे कौन अधिक सुन्दर है ?

(४) महारानी ऐन के शासनकाल मे राजनैतिकदलों की क्या अवस्था थी ? सन् १७१० ई० मे ह्विगदल का अध पतन क्यों हुआ ?

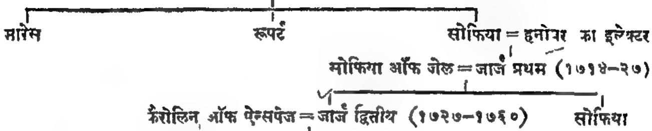
(५) सक्षेप मे नोट लिखो —[अ] ब्लेनहिम, [ब] इङ्गलेण्ड तथा स्काटलैण्ड का सयोग, [स] सिज़म ऐक्ट, [द] शेवलर।

(६) टोरीदल के शासन के मुख्य सिद्धान्त वर्णन करो ? इनकी तुलना ह्विगदल के सिद्धान्तों से करो जो तुमने इक्तीसवें अध्याय में पढ़े है ?

(७) क्या तुम समझते हो कि यूट्रेक्ट की सन्धि से अङ्गरेजों और फ्रांसीसियों की प्राचीन शत्रुता का अन्त हो गया ? यदि नहीं, तो इस सन्धि में त्रुटियाँ निकालने का प्रयत्न करो ?



हनोवर वंश



एलिजबेथ
(जेम्स प्रथम की पुत्री)
मारेस
रूपर्ट
सोफिया = हनोवर का इलेक्टर
सोफिया ऑफ जेल = जार्ज प्रथम (१७१४–२७)
कैरोलिन ऑफ ऐन्सपेज = जार्ज द्वितीय (१७२७–१७६०)
सोफिया
ऑगस्टा ऑफ सेक्स-गोथा = फ्रेड्रिक प्रिन्स ऑफ वेल्स (मृत्यु १७५१)
ड्यूक ऑफ कम्बरलैण्ड
जार्ज तृतीय (१७६०–१८२०) = चार्लट ऑफ मेकलिनबर्ग
जार्ज चतुर्थ (१८२०-३०)
ड्यूक ऑफ यार्क (मृत्यु १८२७)
विल चतुर्थ (१८३० ३७
ड्यूक ऑफ केन्ट (मृत्यु १८२०) = विक्टोरिया ऑफ सेक्स कोबर्ग
ड्यूक ऑफ कम्बरलैण्ड (मृ० १८५१)
ड्यूक आफ ससेक्स (मृ० १८४३)
ड्यूक आफ केम्ब्रिज (मृ० १८५०)
विक्टोरिया (१८३७-१९०१)
एडवर्ड सप्तम (१९०१–१०)
जार्ज पञ्चम (१९१०—)

चौंतीसवां अध्याय ।



जार्ज प्रथम (१७१४–१७२७)।

जार्ज प्रथम स्वार्थी, शक्तिहीन तथा हठी राजा था। वह अंग्रेजी भाषा किञ्चित मात्र भी न जानता था। वह स्पेनीय उत्तराधिकार के युद्ध में जर्मनी की ओर से युद्ध कर चुका था। उसके हृदय में सदा हनोवर लौट जाने का विचार उपस्थित रहता था। इस कारण वह राज्यप्रबन्ध में तनिक भी चित्त न लगाता था। जार्ज का चरित्र आदर्शपूर्ण न था। वह प्राय अपनी स्त्री और बच्चों से लड़ता रहता था। उसकी आकृति भी प्रभावशाली न थी। स्टुअर्ट राजाओं के सामने वह कोई चीज न था। उसके राज्यकाल में राजा की शक्ति पूर्णतया क्षीण हो गई। जो अधिकार उसके हाथों से निकले वे प्रधान मन्त्री को प्राप्त हुये।



जार्ज प्रथम

रावर्ट वालपोल—जार्ज प्रथम को ह्विगदल ने हनोवर से बुला कर राजा बनाया था। इस कारण वह विलियम तृतीय के समान इस दल का बड़ा ही कृतज्ञ था। उसने टोरी मन्त्रियों को पदच्युत करके ह्विग मन्त्रियों को राज्य प्रबन्ध सौंपा। इनमें टाउनशेण्ड (Townshend), सण्डरलण्ड (Sunderland), स्टेनहोप (Stanhope) और वालपोल (Walpole) मुख्य थे। वालपोल सन् १७०२ ई० में लिन रेगिस (Lynn Regis) के गाँव से पार्लियामेण्ट का सदस्य निर्वाचित हुआ था। कुछ दिनों तक वह ऐन् के पति डेनमार्क के राजकुमार की सेवा में रहा। सन् १७०८ ई० में गुडाल्फिन ने उसे सेनाविभाग का सेक्रेटरी नियुक्त किया। जार्ज प्रथम ने राजा बनने पर उसे वेतन विभाग का अफसर बना दिया, परन्तु एक वर्ष के भीतर ही भीतर उसकी योग्यता को देख कर जार्ज ने कोषविभाग उसे सौंप दिया। सन् १७२१ में वालपोल प्रधान मन्त्री नियुक्त हुआ और २१ वर्ष तक इस उच्च पद पर बना रहा। वालपोल बड़ा ही हँसमुख, प्रसन्नचित्त, बुद्धिमान, दूरदर्शी व नियमानुसार कार्य्य करनेवाले मन्त्रियों में से था। आखेट उसको ऐसा प्रिय था कि प्रधान मन्त्री बनने पर भी वह आखेट-मन्त्री के यहाँ से आये हुये पत्रों को सब से पहिले खोलता था। वालपोल का चालचलन आदर्शपूर्ण न था। चेटम और छोटे पिट की भांति वह सुन्दर भाषण भी न दे सकता था। हाँ, सब से मिलने का उसे बड़ा चाव था।



रावर्ट वालपोल।

ह्विग मन्त्रिमण्डल, १७१४-१७२० ई०—वालपोल तथा

अन्य ह्विगमन्त्रियों की सम्मति से पार्लियामेण्ट ने एन् के टोरी मन्त्रियों के ऊपर अभियोग चलाया। बोलिङ्गब्रुक प्राण बचा कर फ्रांस चला गया। वहां उसने बड़े राज्याभियोगी के यहां नौकरी करली। यह बालिङ्गब्रुक की सब से बड़ी भूल थी। इङ्गलैण्डवासियों को स्पष्ट रूप से प्रकट हो गया कि वह उनका प्राणघातक शत्रु है। हार्ले को पार्लियामेण्ट ने कठोर दण्ड दिया। इस से दो बातें स्पष्टतः प्रकट थीं। प्रथम, यह कि ह्विगदल मन्त्रियों के उत्तरदायित्व होने पर जोर देता है। द्वितीय, यह कि वह टोरीदल को बड़े राज्याभियोगी का पक्षपाती अर्थात् जेकोबाइट (Jacobites)* समझ कर कठिन दण्ड देना चाहता था। जार्ज प्रथम को ह्विगदल के ये दो नियम बहुत ही प्रिय थे। वाह्यनीति में वह ह्विगदल के साथ विलियम की वाह्यनीति का अनुकरण करना चाहता था। अंग्रेजी सर्कार ने हालैण्ड, आस्ट्रिया तथा स्पेन से सन्धि करके बहुत यश प्राप्त किया। बाल्टिकसागर पर स्वीडेन और रूस दोनों हनोवर के शत्रु थे। अंग्रेजी सर्कार ने स्वीडेन को नीचा दिखाया, परन्तु वह रूस का कुछ न कर सकी।

जैकोबाइट का विद्रोह और उसके परिणाम, १७१५ ई०— ह्विग मन्त्रिमण्डल के स्थापित होने के कुछ ही समय पश्चात् बोलिङ्गब्रुक के कहने से बड़े राज्याभियोगी के पक्षपातियों ने स्काटलैण्ड में विद्रोह किया, परन्तु विद्रोहियों का नेता अर्ल आफ मार (Earl of Mar) प्रेस्टन तथा शेरिफमूर (Sheriffmuir) के युद्धों में परास्त हुआ। जेम्स स्टुअर्ट (बड़ा राज्याभियोगी) स्वयं फ्रांस से स्काटलैण्ड आया परन्तु सर्कारी सेना ने उस वर्ष के स्थान पर इस प्रकार पराजित किया कि

* जैकोबाइट शब्द लैटिन भाषा के 'जेकोबस' शब्द से बना है। लैटिन भाषा में बड़े उत्तराधिकारी का नाम 'जेकोब्स' ही था। अतः उसका पक्ष करनेवाले जैकोबाइट कहलाते थे।

उसे स्काटलैण्ड त्यागते ही बना। ह्विग मन्त्री ने विद्रोहियों को कठा दण्ड दिया। अत विद्रोह पूर्णतया शान्त हो गया।

जैकोबाइट के विद्रोह के कारण इङ्गलैण्ड में बडी अशान्ति फल गई थी। जनता डरती थी कि यदि वर्तमान पार्लियामेण्ट भङ्ग कर दी जायेगी, तो कदाचित ऐसा न हो कि नवीन पार्लियामेण्ट में टोरीदल बलवान हो जाय। अत पार्लियामेण्ट ने सप्तवर्षीय नियम (Septennial-Act) बनाया जिस से यह बात निश्चित हुई कि वर्तमान तथा भावी पार्लियामेण्ट सात वर्ष तक स्थापित रहेंगी। इस नियम की रचना से जेकोबाइट ह्विग मन्त्रियों को कुछ भी हानि न पहुँचा सकते थे। इसके तीन वर्ष पश्चात् ह्विगदल को बलवान बनाने के अभिप्राय से पार्लियामेण्ट ने आकेजनल कनफार्मिटी और सिज्म एक्ट, जो बोलिङ्गब्रुक ने अपने शत्रुओं के विरुद्ध बनाये थे, रद्द कर दिये, परन्तु वालपोल की असहमति के कारण टेस्ट एक्ट रद्द न होसका। ह्विग मन्त्री राजा के लॉर्ड बनाने के अधिकार को कम करने और वर्तमान लार्डस की शक्ति को स्थिर रखने के लिये पीरेज बिल (Peerage Bill) पास कराना चाहते थे परन्तु वालपोल के विरोध के कारण वे ऐसा न कर सके।

दक्षिणी सागर का बुलबुला, १७२० ई०—वालपोल की हार्दिक इच्छा प्रधान मन्त्री का पद प्राप्त करने की थी। परन्तु स्टेनहोप तथा सण्डरलैण्ड के कारण उसे प्रधान मन्त्री बनने का अवसर न मिल पाता था। सन् १७२१ ई० में उसे ईश्वर की ओर से अपनी हार्दिक इच्छा पूर्ण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सन् १७११ ई० में बोलिङ्गब्रुक तथा हार्ले ने दक्षिणी अमेरिका और दक्षिणी समुद्रों में बसे हुये अन्य देशों में व्यापार करने को एक व्यवस्था (South Sea Company) स्थापित की थी। उसने व्यापार में बडी उन्नति की, यहाँ तक कि उसने सारा जातीय ऋण अपने ऊपर ले लिया। यूट्रेच्ट की सन्धि के कारण देश में सुख शान्ति विराज

रहा थी। देश की आर्थिक दशा भी अच्छी थी। सबों ने उपरोक्त कम्पनी की पत्ती मोल लेने का प्रयत्न किया, अत पत्तियों का मूल्य दिन दिन बढ़ने लगा यहाँ तक कि १०० पौण्ड की पत्ती एक सहस्र पौण्ड में भी कठिनता से प्राप्त होती थी। इस कम्पनी की देखा देखी इङ्गलेण्ड में और भी बहुत सी कम्पनिया स्थापित हो गई थीं जो धोखे की टट्टी होने के अतिरिक्त कुछ अस्तित्व न रखती थीं। उदाहरणार्थ, एक कम्पनी सोना चाँदी बनाने को, दूसरी खारी पानी को मीठा बनाने को और तीसरी स्पेन से गदहे लाने को स्थापित हुई। इन कम्पनियों के कारण दक्षिणी सागर की कम्पनी का महत्व कम हो गया और जनता उसकी आर्थिक दशा पर शङ्का प्रकट करने लगी। फिर क्या था, उसकी पत्तियों का मूल्य एकायक घट गया यहाँ तक कि एक पत्ती का मूल्य १०० पौण्ड से भी कम रह गया। सैकड़ों पत्तीदारों के दिवाले निकल गये।

वालपोल के शासन का आरम्भ, १७२१ ई०—यह अवस्था देख कर दक्षिणी सागर की कम्पनी तुरन्त स्थगित कर दी गई। अत इङ्गलैण्ड में बड़ी अशान्ति फैली। टाउनशेण्ड और स्टेनहोप पर, जिन्हों ने कम्पनी को सर्कारी ऋण देकर उसको उत्साहित किया था और उसके सञ्चालकों से घूस ली थी, अभियोग चले और वे मन्त्रिमण्डल से अलग कर दिये गये। वालपोल को सुअवसर प्राप्त हुआ। वह आरम्भ ही से इस कम्पनी के विरुद्ध था, यद्यपि उसने उसकी पत्तियों की क्रय विक्रय से बहुत लाभ उठाया था। स्टेनहोप और टाउनशेण्ड इत्यादि के पतन के पश्चात् जार्ज प्रथम ने वालपोल को प्रधान मंत्री बनाया। वालपोल ने दक्षिणी सागर के सञ्चालकों से धन उगाह कर कम्पनी के पत्तीदारों को दिया। इस भांति देश में सुख शान्ति की स्थापना हुई। वालपोल ने जार्ज प्रथम तथा उसके पुत्र जार्ज द्वितीय के कई अधिकार छीन कर स्वय ग्रहण कर लिये। यह क्योंकर हुआ इसका स्पष्ट वर्णन आगे होगा।



(अ) आन्तरिक प्रबन्ध

वालपोल का शासन, १७२१--४२—राजा के अतिरिक्त कुछ र्गी तथा ह्विग भी वालपोल के विरुद्ध थे । टोरीदल का नेता बोलिङ्गब्रुक था जिसे पार्लियामेण्ट ने देश में लौट आने की आज्ञा दे दी थी । वाल्पोल के विरोधी ह्विग विलियम पिट (William Pitt) व पल्टने (Pultney) की अध्यक्षता में काम कर रहे थे। इतनी अनबन के होते हुये भी वालपोल ने कई प्रशंसनीय कार्य्य किये । व्यापार को स्वतन्त्र करने के अभिप्राय से उस ने ३० भीतर आनेवाली और १६० बाहर जानेवाली वस्तुओं पर कर घटा दिया । उसने जार्जिया, करोलिना और पश्चिमी इण्डीज को यूरप महाद्वीप में चावल भेजने की आज्ञा दे दी । जब वालपोल के मित्रों ने उस से नव उपनिवेशों पर कर लगाने को कहा तो उसने कोरा उत्तर दे दिया । सन् १७३३ ई० में वाल्पोल ने एक एक्साइज बिल (Excise Bill) पार्लियामेण्ट में उपस्थित किया। इस बिल का यह अभिप्राय था कि चाय, तम्बाकू और कुछ अन्य व्यापारिक वस्तुओं पर इङ्गलैण्ड में आते समय चुङ्गी न ली जावे वरन् इङ्गलैण्ड में आकर वे सर्कारी अफसरों की निगरानी में गोदामों में एकत्रित रहें और जब व्यापारी उनको बेचने के हेतु गोदामों से मोल लें तो उन पर कर लिया जाये । वालपोल चाहता था कि इस प्रबन्ध से इनकम टैक्स घटा दिया जावे और सरकार की जो हानि हो वह चुङ्गी द्वारा पूरी कर दी जावे । द्वितीय वह लन्दन के बन्दरगाह को चुङ्गी से स्वतन्त्र करके उसकी उन्नति करना चाहता था । इस प्रबन्ध में प्रधान मन्त्री ने जनता की सम्मति किञ्चित मात्र भी न ली थी । समस्त इङ्गलैण्ड में नवीन बिल के विरुद्ध कोलाहल होने लगा । जनता को भय था कि यदि यह बिल स्वीकार कर लिया जावेगा तो वस्तुओं का भाव बढ़ जायगा । टोरीदल के सदस्य तथा वालपोल के विरोधी ह्विग नेताओं, पिट और पल्टने ने

पेंतीसवां अध्याय।



जार्ज द्वितीय (१७२७–१७६०)।

जार्ज द्वितीय अपने पिता की भांति विद्या तथा कलाकौशल का प्रेमी न था, परन्तु वह उस की भांति नेदरलेण्डस् में युद्ध कर चुका था। उसकी स्त्री करोलिन (Caroline) चतुर तथा बुद्धिमान थी। वह राज्य प्रबन्ध को भली भांति समझती थी। प्रायः वह अपने पति के स्थान पर राज्य प्रबन्ध भी स्वयं करती थी। केरोलिन वालपोल की बुद्धिमानी तथा दूरदर्शिता का आदर करती थी, परन्तु जार्ज प्रारम्भ में उस से प्रेम न करता था। इसका कारण यह था कि वालपोल शान्ति प्रिय मनुष्य था और जार्ज युद्धविद्या में निपुण होने के कारण युद्ध का बड़ा प्रेमी था।



जार्ज द्वितीय।

(अ) आन्तरिक प्रबन्ध

वालपोल का शासन, १७२१–४२—राजा के अतिरिक्त कुछ टोरी तथा ह्विग भी वालपोल के विरुद्ध थे। टोरीदल का नेता बोलिङ्गब्रुक था जिसे पार्लियामेण्ट ने देश में लौट आने की आज्ञा दे दी थी। वालपोल के विरोधी ह्विग विलियम पिट (William Pitt) व पल्टने (Pultney) की अध्यक्षता में काम कर रहे थे। इतनी अनबन के होते हुये भी वालपोल ने कई प्रशंसनीय कार्य्य किये। व्यापार को स्वतन्त्र करने के अभिप्राय से उस ने ३८ भीतर आनेवाली और १६० बाहर जानेवाली वस्तुओं पर कर घटा दिया। उसने जाजिया, करोलिना और पश्चिमी इण्डीज को यूरप महाद्वीप में चावल भेजने की आज्ञा दे दी। जब वालपोल के मित्रों न उस से नव उपनिवेशों पर कर लगाने को कहा तो उसने कोरा उत्तर दे दिया। सन् १७३३ ई० में वालपोल ने एक एक्साइज बिल (Excise Bill) पार्लियामेण्ट में उपस्थित किया। इस बिल का यह अभिप्राय था कि चाय, तम्बाकू और कुछ अन्य व्यापारिक वस्तुओं पर इङ्गलैण्ड में आते समय चुङ्गी न ली जावे वरन् इङ्गलैण्ड में आकर वे सर्कारी अफसरों की निगरानी में गोदामों में एकत्रित रहें और जब व्यापारी उनको बेचने के हेतु गोदामों से मोल लें तो उन पर कर लिया जाये। वालपोल चाहता था कि इस प्रबन्ध से इनकम टैक्स घटा दिया जावे और सरकार की जो हानि हो वह चुङ्गी द्वारा पूरी कर दी जावे। द्वितीय वह लन्दन के बन्दरगाह को चुङ्गी से स्वतन्त्र करके उसकी उन्नति करना चाहता था। इस प्रबन्ध में प्रधान मन्त्री ने जनता की सम्मति किंचित मात्र भी न ली थी। समस्त इङ्गलैण्ड में नवीन बिल के विरुद्ध कोलाहल होने लगा। जनता को भय था कि यदि यह बिल स्वीकार कर लिया जावेगा तो वस्तुओं का भाव चढ़ जायगा। टोरीदल के सदस्य तथा वालपोल के विरोधी ह्विग नेताओं, पिट ओर पल्टने ने

उसका सामना बडे आवेग से किया। इस लिये उसे विवश होकर एक्साइज बिल लौटा लेना पडा।

वालपोल का पतन—उपरोक्त प्रस्ताव के कारण वालपोल बडा ही अप्रसिद्ध होगया। इसके तीन वर्ष पश्चात स्काटलैण्डवासी भी उसके शत्रु हो गये। सर्कार ने दो चौकीदारों को एडिनबरा नगर में प्राणदण्ड दिया था। फांसी के पश्चात् नगरवासियों ने उनके पक्ष में विद्रोह किया। सर्कारी अफसर पोटियस (Porteous) ने विद्रोहियों पर गोली चलाने की आज्ञा दे दी। कुछ विद्रोही परलोक सिधारे और बहुत से घायल हुये। पोर्टियस पर अभियोग चला और उसे प्राण दण्ड की आज्ञा हुई, परन्तु वालपोल ने उसे बचा लिया। विद्रोहियों ने पोर्टियस को स्वय वध कर दिया। वालपोल के विरोधियों को सुअवसर प्राप्त हुआ। वे उसको पदच्युत करने की चिन्ता करने लगे। इस के कुछ मास अनन्तर फ्रेडरिक प्रिन्स आफ वेल्स उन से जा मिला। इस कारण उनकी शक्ति और भी बढ़ गई। इसी वर्ष रानी कैरोलिन की मृत्यु हो गई। इस कारण वालपोल और भी शक्तिहीन होगया। सन् १७३९ में उसके विरोधियों ने उसकी इच्छा के विरुद्ध उस से स्पेन से युद्ध कराया, परन्तु युद्ध में कई स्थानों पर अंग्रेज पराजित हुये। प्रधान मन्त्री इसका उत्तरदायी ठहराया गया। विवश होकर सन् १७४२ ई० में वालपोल को पद त्याग देना पडा।

वालपोल में कई अवगुण थे। ऐश्वर्य तथा पद का लोभी होने के अतिरिक्त वह बुद्धिमान तथा योग्य पुरुषों का मान न करता था। उसके समय में पार्लियामेण्ट में कई त्रुटियां थीं। प्राय वालपोल गुप्तचर विभाग का धन वोटों के मोल लेने तथा घूस देने में व्यय कर देता था। वह बिना सोचे विचारे धन व्यय करता था और बडे २ पद अपने मित्रों तथा हितैषियों को प्रदान करता था। परन्तु यह बात याद रखने के योग्य है कि

कुछ वाल्पोल ने किया वह देशोन्नति के लिये किया। यही कारण है मरते समय उसे ५० सहस्र पोण्ड ऋण के चुकाने थे।

कारट्रेट का मन्त्रित्व, १७४२-४४ ई०—वाल्पोल के पतन पश्चात् एक अन्य ह्विग मन्त्रिमण्डल ने शासन का भार अपने ऊपर लिया। वाल्पोल के शत्रुओं में से बहुत कम उस में सम्मिलित हुये। ही नहीं, वरन् उसके मित्रों में से पेलहैमवश के नेता हनरी तथा न्यू-कासिल भी उसमें सम्मिलित थे। नवीन मन्त्रिमण्डल का सब से प्रसिद्ध मन्त्री लॉर्ड कारट्रेट Lord Carteret) था। कारट्रेट योग्य तथा प्रसन्न चित्त पुरुष था, परन्तु वह बड़ा मद्यपी था। जार्ज द्वितीय के मन्त्रियों में से वह वही जर्मन भाषा जानता था। राजा उस से बड़ा प्रेम करता था। कारट्रेट ने सफलतापूर्वक बवेरिया और फ्रास के विरुद्ध आस्ट्रिया की राज कुमारी मेरिया थेरिसा Maria Theresa की सहायता की। इस युद्ध में उसने कई कार्य्य अपने सहचर मन्त्रियों और हाउस आफ कॉमन्स की अनुमति के बिना किये। अत पेलहैम भाई उसके विरुद्ध होगये। हाउस ऑफ कॉमन्स में भी उसके सहायकों की संख्या घट गई। पेलहैम भाइयों के कहने से जार्ज द्वितीय ने कारट्रेट को मन्त्रिमण्डल से अलग कर दिया।

पेलहैम मन्त्रिमण्डल, १७४४-५४ ई०—कारट्रेट को पदच्युत कराके हेनरी तथा न्यूकासिल पेलहैम ने स्वयं मन्त्रिमण्डल स्थापित किया। इसमें अन्य राजनैतिक दलों के सदस्य भी सम्मिलित हुये। इस कारण यह विस्तृत नींव वाले मन्त्रिमण्डल (Broad Bottomed Ministry) के नाम से प्रसिद्ध है। नवीन मन्त्रिमण्डल वालपोल की भांति घूस देने के कारण अप्रसिद्ध है। न्यूकासिल के विषय में तो यहा तक कहा जाता है कि वह प्रत्येक दिन घण्टे दो घण्टे खुशामदियों से मिलने और धन तथा पद बाँटने में संलग्न रहता था। कारट्रेट की भांति पेलहैम भाई भी

मेरिया थेरिमा की सहायता करते रहे और अङ्गरेजी मेनायें फ्रासीसियों को नेदरलैण्ड्स में पराजित करती रहीं ।

जैकोबाइट का विद्रोह, १७४५ ई०—अभी अङ्गरेजी सेनायें नेदरलैण्ड्स ही में थीं कि बड़े राज्याभियोगी का पुत्र चार्ल्स एडवर्ड, जो छोटे राज्याभियोगी (Young Pretender) के नाम से प्रसिद्ध है, कुछ सेना लेकर पश्चिमी किनारे से स्काटलैण्ट में आ विराजा । स्काटलैण्ड वासियों ने उसे सहायता देना स्वीकार कर लिया । इङ्गलैण्ड का शत्रु फ्रांस भी उसकी सहायता कर रहा था । न्यूकासिल ने बड़ी कठिनाई से एक सेना उस से युद्ध करने को भेजी परन्तु वह प्रेस्टनपान्स (Prestonpans) के स्थान पर पराजित हो कर लौट आई । यह देख कर न्यूकासिल ने कई अङ्गरेजी सेनायें नेदरलैण्ड् से लौटा लीं । चार्ल्स एडवर्ड लन्दन विजय करने की इच्छा से दक्षिण की ओर बढ़ा और डर्बी नगर तक पहुंच गया । यहा से लन्दन केवल १२७ मील था । सारे नगर में अशान्ति फैली हुई थी । जार्ज ने हनो वर भाग जाने का दृढ विचार कर लिया । न्यूकासिल जैकोबाइट से जा मिलने का मार्ग खोजने लगा । उसके सौभाग्य से छोटे राज्याभियोगी की सेना में सैनिकों की कमी पड गई । इस कारण वह



छोटे राज्याभियोगी के आने का मार्ग, १७४५ ई० ।

इवीनगर से आगे न बढ़ कर स्काटलैण्ड लौट गया। वहाँ पहुच कर उसने पुनः अंग्रेजी सेना को फाल्कर्क (Falkirk) के स्थान पर पराजित किया, परन्तु जार्ज के द्वितीय पुत्र ड्यूक आफ कम्बरलैण्ड (Duke of Cumberland ने, जो हाल में फ्रांसीसियों को नेदरलेण्ड में पराजित करके लौटा था, क्लोडन (Culloden) के स्थान पर ऐसा पराजित किया कि उसके छक्के छूट गये। चार्ल्स एडवर्ड को पांच मास तक स्काटलैण्ड में भ्रमण करके फ्रांस लौट जाना पड़ा।

न्यूकासिल का मन्त्रित्व, १७५४-५६ ई०—सन् १७५४ ई० में हेनरी पेलहैम की मृत्यु हो गई। अतः उसके ज्येष्ठ भ्राता न्यूकासिल ने अकेले मन्त्रिमण्डल स्थापित किया। उसके आधीन मन्त्रियों में से चार्ल्स जेम्स फाक्स (Charles James Fox) चतुर और बलवान मन्त्री था। फाक्स इंग्लैन्ड में सब से स्वतन्त्र विचार रखता था, परन्तु उसका चरित्र उत्तम न था। वह मद्यपान करता, जुआ खेलता और अन्य अनुचित कार्य्य करता था। न्यूकासिल ने उसे हाउस आफ कामन्स का नेता नियुक्त किया। सन् १७५६ ई० में अङ्गरेजों तथा फ्रांसीसियों के बीच सप्तवर्षीय युद्ध प्रारम्भ हुआ। न्यूकासिल उसका उचित प्रबन्ध न कर सका। इस कारण उसको पद त्याग देना पड़ा।



चार्ल्स जेम्स फाक्स

पिट व न्यूकासिल, १७५७-६१ ई०—अब पिट ने न्यूकासिल

मे मिल कर एक मन्त्रिमण्डल की रचना की। बडा पिट* कार्नवाल क एक धनाढ्य व्यापारी का पुत्र था। उसका पितामह टामस पिट वर्षों ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय में बङ्गाल तथा मद्रास में व्यापार कर चुका था और उसके पास कोह नूर के पश्चात् ससार का सब से बडा तथा बहुमूल्य हीरा था। विलियम पिट ने एटिन तथा ऑक्सफोर्ड के नगरों में शिक्षा प्राप्त की थी। वालपोल के शासन काल में वह एक साधारण पद पर नियुक्त हुआ। सन् १७३१ में वह ओल्ड सेरम (Old Sarum) के गाँव से पार्लियामेण्ट का सदस्य निर्वाचित हुआ। बडे पिट के



बडा पिट।

भाषणों ने सदस्यों के हृदयों को प्रभावित कर दिया। धीरे २ वह ह्विग दल की एक शाखा का नेता बन गया। बडे पिट ने वालपोल का सामना बडे आवेगपूर्ण किया। कार्टरेट की वाह्यनीति के भी वह सदा विरुद्ध रहता था। उसका कथन था कि इङ्गलैण्ड को हनोवर की किञ्चित्र मात्र भी चिन्ता न करना चाहिये। इस कारण जार्ज द्वितीय सदैव उसके विरुद्ध रहता था। परन्तु सन् १७५७ में उसे विवश होकर पिट को मन्त्रिमण्डल स्थापित करने की आज्ञा देनी पडी। पिट ने जनता क कथनानुसार वाह्यनीति का भार अपने ऊपर लेकर न्यूकासिल को घरेलू राज्य प्रबन्ध सौंपा। इस पद पर उसने इङ्गलेण्ड के विस्तृत साम्राज्य की नीव डाली। यह किस भांति हुआ इसका वर्णन आगे होगा।

---

* बडे पिट को जार्ज तृतीय ने अर्ल ऑफ चैटम (Earl of Chatham) की उपाधि प्रदान की, अत वह इस नाम से भी प्रसिद्ध है।

जान वेस्ली—यूट्रेक्ट और पिट के समान इस समय का एक प्रसिद्ध मनुष्य जान वेस्ली (John Wesley) है। जान वेस्ली ने धर्मविभाग में उतना ही नाम पाया है जितना बड़े पिट ने राजनैतिक प्रबन्ध में पाया था। उसने एक नवीन गिर्जा (Methodist Church) की स्थापना की, जिसके अनुयायी मथोडिस्ट्स (Methodists) कहे जाते हैं। प्रारम्भ में यह गिर्जा अंग्रेजी गिर्जा की शाखा थी, परन्तु कुछ समय पश्चात् वह उस से अलग हो गई। जॉन वेस्ली तथा उसके भाइयों के भाषणों द्वारा इङ्गलेण्ड में समाज सुधार हुआ और वे बुराइयाँ दूर होगईं जो अठारहवीं शताब्दि के आरम्भ में समाज को कलङ्कित कर रही थीं।

(ख) वालपोल, कारट्रेट और बड़े पिट की बाह्यनीति।

यूट्रेक्ट की सन्धि के २६ वर्ष पर्यन्त यूरप में सुख शान्ति का प्रसार रहा। यूरप की शक्तियां उस महान् युद्ध के कारण, जो उन्हों ने अभी २ किया था, थकी हुई थीं। चौदहवें लुई की मृत्यु हो चुकी थी। फ्रांस प्रथम तो थका हुआ था, द्वितीय वहाँ एक शान्तिप्रिय मन्त्री फ्ल्यूरी (Cardinal Fleury) शासन कर रहा था। इङ्गलण्ड में वालपोल का शासन था। वह भी कार्डिनल फ्ल्यूरी की भांति युद्ध के विरुद्ध था। उसका कथन था कि इङ्गलण्ड का भलाई इसी में है कि वह महाद्वीप के झगडों में किसी प्रकार हस्तक्षेप न करे।

वालपोल की विदेशी नीति—वालपोल बुद्धिमान तथा योग्य मन्त्री था। उसे भली प्रकार ज्ञात था कि युद्ध से इङ्गलेण्ड को भारी हानि होगी। युद्ध प्रारम्भ होने पर बड़े राज्याभियोगी के आयरलैण्ड अथवा स्काटलैण्ड की सहायता से इङ्गलैण्ड पर आक्रमण करने और विद्रोह करने की सम्भावना थी, अतः वालपोल ने जीवन भर फ्ल्यूरी की सहायता द्वारा यूरप के सुख शान्ति स्थिर रखने का प्रयत्न किया। परन्तु वाल-

पाल क्राम्वेल अथवा विलियम तृतीय के समान नीतिज्ञ न था। इन दोनों नीतिज्ञों के भय से सारा यूरप कांपता था क्योंकि दोनों बलवान् तथा उत्साहपूर्ण शासक थे और प्रत्येक समय यूरप की प्रोटेस्टेण्ट जातियों की ओर से युद्ध करने को उद्यत रहते थे। समस्त शक्तियां उन्हें यूरप का सरपञ्च मानती थीं, परन्तु वे वालपोल को इस भांति न समझती थीं। वालपोल ने प्रत्येक भांति से यूरप के झगडों में हस्तक्षेप न करने का प्रयत्न किया, परन्तु इङ्गलेण्ड में हनोवरवशीय राजा शासन कर रहे थे। हनोवर जर्मनी के सम्राट के निर्वाचक प्रदेशों में से था। जार्ज प्रथम तथा द्वितीय अपनी जन्मभूमि पर प्राण बलिदान करने को उद्यत रहते थे। अतः वालपोल को उनके कहने से कई बार जर्मनी की भलाई के हेतु युद्ध में तत्पर जातियों के बीच सन्धि करानी पड़ी। यही नहीं, वरन् सन् १७३९ में उसे अपने नियम के विरुद्ध स्पेन से युद्ध करना पड़ा।

जेनकिन्स के कान का युद्ध, १७३९ ई०—स्पेन यूट्रेच्ट के सधिपत्र से सन्तुष्ट न हुआ था। वहाँ का राजा फिलिप पञ्चम, जो फ्रांस के बोरबूनवंश से था, सोचता था कि मुझे केवल इङ्गलैण्ड के कारण यूट्रेच्ट की सधि के समय स्पेन का सम्पूर्ण राज्य न मिल सका था। अतः वह उस से बदला लेने का प्रयत्न कर रहा था। इस सन्धिपत्र ने यह बात भी निश्चित हो गई थी कि इङ्गलैण्ड प्रति वर्ष एक व्यापारी जहाज पोर्टबेलो (Portbello) के बन्दरगाह को, जो पनामा के स्थल डमरूमध्य पर स्थित था, भेजा करेगा। अंग्रेजी व्यापारियों ने इस अधिकार से बहुत अनुचित लाभ उठाया। दिन के समय यह जहाज अमेरिका के तट पर माल उतार देता था और रात के समय छोटे २ अंग्रेजी जहाज, जो दिन के समय आँख से ओझल रहते थे माल लाकर उसे भर देते थे। इस रीति से यह जहाज सदा जैसा का तैसा भरा हुआ मिलता था। स्पेन के व्यापारी यह देख कर आश्चर्य में रह जाते थे।

यही नहीं, वरन् अंग्रेजी व्यापारी हाकिन्स तथा ड्रेक के समान अन्य अनुचित रीतियों से भी पश्चिमी इण्डीज और दक्षिणी तथा मध्य अमेरिका के साथ व्यापार करके लाभ उठा रहे थे। इस पर स्पेन की सरकार ने अङ्गरेजी जहाजों की तलाशी लेना आरम्भ कर दिया। जिन जहाजों को वे स्पेनीय अमेरिका जाता देखते, उन्हें वह मार्ग ही में रोक लेते और उन में बैठे हुये अङ्गरेजों के साथ क्रूरता का व्यवहार करते थे।

इङ्गलैण्ड में स्पेनवालों की क्रूरता के विषय में कई कहानियां प्रसिद्ध थीं। बहुधा मनुष्य लन्दन की गलियों में उस गन्दे खाने को दिखाते फिरते जो स्पेनवासी बन्दी अङ्गरेजों को देते थे। अङ्गरेज जब उस गन्दे खाने को देखते, तो उनकी आंखों में खून उतर आता था। एक दिन एक अङ्गरेजी व्यापारी ने, जिसका नाम जेनकिन्स (Jenkins) था, एक कान लाकर हाउस आफ कामन्स की मेज पर रक्खा और कहा "मेरा कान स्पेन के निवासियों ने कतर दिया है। उन्हों ने अभिमान में आकर यह भी कहा है कि इस कान को ले जाओ और अपने राजा को दिखलाओ"। पार्लियामेण्ट के सदस्य जेनकिन्स की ओर देखते के देखते रह गये। उनको उनकी कहानी * सुन कर बड़ा शोक तथा आश्चर्य हुआ। वे स्पेन के विरुद्ध सेना भेजने का प्रयत्न करने लगे।

इन सारी बातों के होते हुये भी वालपोल युद्ध के विरुद्ध था। पिट, पल्टने और उसके अन्य शत्रु उसे देश का वैरी कहकर पुकारने लगे। जनता भी स्पेन से युद्ध किया चाहती थी। अतः जब पार्लियामेण्ट ने वाल्पोल के ऊपर बहुत दबाव डाला, तो उसे स्पेन से युद्ध करने की आज्ञा देनी पड़ी। जनता को जब यह समाचार ज्ञात हुआ कि प्रधान मन्त्री ने स्पेन से युद्ध करने की आज्ञा दे दी है तो वह अति प्रसन्न हुई।

* कुछ ऐतिहासिक जेनकिन्स की कहानी को गल्प समझते हैं।

चारो ओर घण्टो के बजने के शब्द सुनाई पडने लगे। जब वालपोल ने उन्हें सुना तो वह क्रोध से कहने लगा—"अभी लोग घण्टे बजा रहे हैं, शीघ्र ही ये अपने हाथों को मलेंगे"*।

वालपोल ने दो भूलें की। प्रथम उसे पार्लियामेण्ट तथा जनता की इच्छा का विरोध न करना चाहिये था। दूसरे, जब पार्लियामेण्ट ने उसकी न सुनी, तो उसे पद त्याग देना चाहिये था। उसके प्रधान मन्त्री बने रहने से मनुष्यों ने यह परिणाम निकाला कि वालपोल पद तथा धन का लोभी है। वालपोल ने यह सोचा था कि यदि मैं पद त्याग दूगाँ तो राज्यप्रबन्ध अयोग्य पुरुषों के हाथों में चला जावेगा जिनके कारण देश की बडी हानि होगी।

पार्लियामेण्ट ने स्पेनवालों को पराजित करने के लिये एक सेना पोर्टोबेलो और दूसरी कार्टेजेना (Cartagena) भेजी जो दक्षिण अमेरिका के उत्तरी पश्चिमी किनारे पर स्पेन का बन्दरगाह है, परन्तु दोनों सेनायें हार कर लौट आई। वालपोल के शत्रुओं ने उसे इसका दोषी ठहराया। अत सन् १७४२ ई० में उसे मन्त्रित्व से अलग हो जाना पडा।

वालपोल की नीति से अङ्गरेजी सिंहासन पर हनोवरवंश की स्थिति दृढ हो गई। दूसरे, देश में शान्ति विराजने के कारण व्यापार तथा कला कौशल ने बडी उन्नति की। अत वह उन बडे युद्धों में सफलता पूर्वक भाग ले सका जो उसे फ्रांस से करने पडे।

आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध का प्रारम्भ, १७४० ई०—इन युद्धों में से प्रथम युद्ध इङ्गलैण्ड को मेरिया थेरिसा की ओर

* "They are ringing the bells now,
They shall soon be wringing their hands"

से लड़ना पड़ा। इङ्गलैण्ड तथा स्पेन में जेनकिन्स के कान का युद्ध अभी तक हो रहा था। अतः अङ्गरेजी सरकार को स्पेन के शत्रुओं का पक्ष करने में तनिक भी आगा पीछा न करना पड़ा। आस्ट्रिया में स्त्रियां राज कार्य्य न करती थीं। इस कारण मेरिया थेरिसा के पिता चार्ल्स षष्ठ ने मरने के पूर्व ही यूरप की बड़ी २ शक्तियों से यह प्रतिज्ञापत्र (Pragmatic Sanction) लिखवा लिया था कि उसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी पुत्री मेरिया राज्य करेगी। सन् १७४० ई० में उसकी मृत्यु हो गई। यूरप की शक्तियों ने अपनी प्रतिज्ञायें एक साथ भुला दीं। प्रशिया के युवक और उत्साही राजा फ्रेडरिक द्वितीय ने साइलेशिया पर अधिकार कर लिया। फ्रांस को नेदरलैण्ड्स विजय करने की इच्छा हुई। स्पेन को मेरिया थेरिसा के इटैली के प्रान्तों पर अधिकार करने की चिन्ता हुई। बवेरिया का इलेक्टर कहने लगा कि मुझे चार्ल्स षष्ठ के बड़े भ्राता की पुत्री ब्याही है अतः आस्ट्रिया का राज्य मुझे मिलना चाहिये। बेचारी मेरिया बड़े सङ्कट में पड़ गई। उसने अङ्गरेजी सर्कार से सहायतार्थ प्रार्थना की। वालपोल ने उसके और फ्रेडरिक के बीच सन्धि कराने की चेष्टा की, परन्तु फ्रेडरिक साइलेशिया लौटाने को उद्यत न हुआ। उसने फ्रांस को अपनी ओर मिला लिया। बवेरिया के इलेक्टर ने भी सेना सङ्गठित की। हाल में वह जर्मनी का सम्राट निर्वाचित हो गया था। इस कारण उसे धन तथा सेना की कमी न थी।

कारट्रेट की नीति—अभी मेरिया के शत्रु आस्ट्रिया पर आक्रमण करने की इच्छा ही कर रहे थे कि इङ्गलैण्ड में वालपोल के मन्त्रित्व का अन्त हो गया। वाह्यनीति का प्रबन्ध कारट्रेट को सौंपा गया। कारट्रेट वेश तथा शिक्षा दोनों से द्विग था। वह जर्मन भाषा भी भली प्रकार जानता था। जार्ज द्वितीय उससे बहुत प्रेम करता था। कारटेट के शासन के दो मुख्य लक्ष्य थे। प्रथम, यह कि मेरिया को आस्ट्रिया की

महारानी बना कर अपने राजा का प्रभुत्व यूरप की शक्तियों पर स्थापित करे। द्वितीय, यह कि इङ्गलैण्ड के प्राचीन शत्रु अर्थात् फ्रांस का इस प्रकार शक्तिहीन कर दे कि वह इङ्गलैण्ट के विरुद्ध कभी भी अस्त्र उठाने के स्वप्न न देख सके। कारट्रेट ने प्रयत्न करके मेरिया के शत्रुओं से युद्ध करने को हालैण्ड, इङ्गलैण्ड, आस्ट्रिया और जर्मनी की छोटी रियासतों को मिला कर एक संघ बनाया। इसके पश्चात वह और जार्ज द्वितीय दोनों युद्ध का ठीक २ प्रबन्ध करने के लिये एक शक्तिशाली सेना लेकर यूरप गये।

प्रसिद्ध लड़ाइयां—कारट्रेट ने फ्रेडरिक द्वितीय को सालशिया दिला कर युद्ध से अलग कर दिया। फ्रांस और बवेरिया का उत्साह भी क्षीण होने लगा सन् १७४३ ई० में मित्रदल ने दोनों को डेटिञ्जन (Dettingen) के स्थान पर पूर्ण रीति से पराम्त किया। रणभूमि में जार्ज द्वितीय ने बहुत वीरता दिखाई। इसके पश्चात् कभी किसी अंग्रेजी राजा ने रणक्षेत्र में पदार्पण नहीं किया। इटैली में आस्ट्रिया के सैनिकों ने स्पेन की सेना को कुछ न करने दिया। जब फ्रांस के राजा और बवेरिया के इलेक्टर ने, जो चार्ल्स सप्तम के नाम से प्रसिद्ध था, अपना पराजय होती देखी तो उन्होंने सधि की प्रार्थना की, परन्तु कारट्रेट के विरोधी मन्त्रियों ने सधि न होने दी। परिणाम यह हुआ कि फ्रेडरिक द्वितीय पुन फ्रांस तथा चार्ल्स सप्तम से जा मिला। अब की बार उन्होंने ऐसे साहस के साथ युद्ध किया कि रूम सागर, नेदरलैण्ड्स, इटैली और बवेरिया में सब जगह अंग्रेज परास्त हुये। वालपोल की भांति कारट्रेट अंग्रेजी पराजयों का उत्तरदायी निश्चित किया गया। उसके शत्रुओं ने जार्ज द्वितीय से उसको पदच्युत करने को कहा। वालपोल ने कारट्रेट के विरुद्ध 'हाउस आफ़ लार्डस' में एक प्रभावशाली भाषण दिया,। जब प्रजा भी कारट्रेट की विरोधी होगई तो जार्ज द्वितीय ने उसे निकाल दिया। कारट्रेट की विदेशी नीति में

कई दोष थे। इङ्गलैण्ड के लाभ हानि की कुछ चिन्ता न करके वह प्रत्येक बात में हनोवर और आस्ट्रिया की भलाई चाहता था। फ्राँस पर आक्रमण करके पेरिस जीतने का उद्योग करना उसकी मूर्खता का प्रमाण है। यह भी कारट्रेट की भूल थी कि बाह्य घटनाओं में पालियामेण्ट की सम्मति स्वीकार न करके वह सदैव राजा की आज्ञा का पालन करता था।

कारट्रेट के पदच्युत होने पर अंग्रेजी मन्त्री युद्ध का उचित प्रबन्ध न कर सके। सन् १७४५ ई० में फ्रांसीसी सेनायें नेदरलैण्ड्स विजय करने के अभिप्राय से उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ीं। अंग्रेजी सेना उन्हें न रोक सकी। यही नहीं वरन् फ्रांसीसियों ने अंग्रेजों को फाण्टीनाय (Fontenoy) के स्थान पर ऐसा परास्त किया कि वे फिर सिर न उठा सके। इसके पश्चात् फ्रांस के राजा ने छोटे राज्याभियोगी चार्ल्स एडवर्ड को स्काटलैण्ड के मार्ग से इङ्गलैण्ड पर आक्रमण करने को भेजा, परन्तु वह अपने उद्देश में सफल न हुआ, जैसा कि हम पहले वर्णन कर आये हैं। उसका सामना करने के लिये कई अङ्गरेजी सेनायें महाद्वीप से इङ्गलैण्ड लौट आईं। नेदरलैण्ड्स फ्रांसीसियों के अधिकार में आ गया।

भारतवर्ष तथा अमेरिका में भी अङ्गरेजों और फ्रांसीसियों में युद्ध हो रहा था। भारतवर्ष में फ्रांसीसियों ने मद्रास विजय करके सेण्ट डेविड के दुर्ग को विजय करने का प्रयत्न किया, परन्तु वे उसे न ले सके। इसके जवाब में अङ्गरेजों ने पाण्डचेरी को घेर लिया, परन्तु वे भी उसे न जीत सके। अमेरिका में अङ्गरेजों ने लुईबर्ग (Louisburg) नगर विजय कर लिया, जो सेण्ट लारेन्स के मार्ग को रोके खड़ा था। अङ्गरेजों को फ्रांसीसी कनाडा में प्रवेश करने का मार्ग मिल गया।

एलाशपल की सन्धि और उसकी त्रुटियाँ, १७४८ ई०— लुईबर्ग अङ्गरेजों के आधीन अधिक समय तक न रहा। १७४८ ई० में

जब दोनों दलों ने सन्धि कर ली, तो लुईबर्ग पुनः फ्रासीसियों को मिल गया। उन्होंने नेदरलैण्ड्स और मद्रास लौटा दिये। मेरिया थेरिसा आस्ट्रिया की रानी बनी, परन्तु सालेशिया फ्रेडरिक द्वितीय के ही अधिकार में रहा। इस सन्धि से अंग्रेजों तथा फ्रासीसियों की प्राचीन शत्रुता का अन्त न हुआ। पिछले युद्ध में दोनों ने एक दूसरे की त्रुटियों का अवलोकन भली प्रकार कर लिया था। दोनों देश इन से लाभ उठाने का अवसर खोजने लगे। मेरिया थेरिसा सालेशिया प्रान्त लेने की चिन्ता में थी। स्पेन ने अभी तक अंग्रेजी जहाजों की तलाशी लेना बन्द न किया था। फ्रासीसियों को राइन नदी की ओर बढने से रोकने का कोई प्रबन्ध न हुआ था। भारतवर्ष तथा उत्तरी-अमेरिका में भी फ्रासीसियों तथा अंग्रेजों के झगड़े लेशमात्र कम न हुये थे।

अंग्रेज और फ्रांसीसी अमेरिका में—उत्तरी अमेरिका में १३ अंग्रेजी उपनिवेश थे जो अटलाण्टिक तथा अलेघनी पर्वत के बीच में स्थित थे। उत्तर की ओर कनाडा में फ्रासीसी उपनिवेश थे। कुछ फ्रासीसी उपनिवेश अंग्रेजी उपनिवेशों के दक्षिण-पश्चिम में बसे हुये थे जो सब मिल कर फ्रासीसी राजा लुई के नाम पर लूसियाना कहलाते थे। लूसियाना तथा कनाडा के बीच उपजाऊ मैदान थे जिन में कई मीठे पानी की नदियां हिलोरें ले रही थीं। इन में सब से प्रसिद्ध मिस्सिसिपी नदी है। फ्रासीसी मिस्सिसिपी की उपजाऊ घाटी पर अधिकार करने का प्रयत्न कर रहे थे जिस से दक्षिणी कनाडा तथा लूसियाना को मिला कर उनका शक्तिशाली राज्य अलेघनी पर्वत के पश्चिम में स्थापित हो जावे।

इस विचार से फ्रांसीसियों ने उत्तर से पश्चिम की ओर दुर्गों की एक पंक्ति बना ली थी। इन में सब से प्रसिद्ध डुकेन (Duquesne) का दुर्ग था जो ओहियो तथा अन्य दो नदियों के सङ्गम पर स्थित था। उस में खाद्य सामग्री पर्याप्त मात्रा में एकत्रित थी। अंग्रेजों को यह चिन्ता हुई कि

यदि फ्रांसीसी और दुर्ग बना कर मिस्सिसिपी नदी तथा ओहियो की घाटियों पर अधिकार जमा लेंगे तो उन्हें पश्चिम की ओर बढने का अव सर कठिनाई से प्राप्त होगा। यही नहीं, वरन् यह भी सम्भव था कि फ्रांसीसी इन उपजाऊ मैदानों पर अधिकार करके अंग्रेजों को अटलाण्टिक सागर में ढकेल दें। ऐसा होना इस कारण और भी सम्भव था कि फ्रांस की सरकार सब प्रकार से अपने उपनिवेशों की सहायता कर रही थी और इङ्गलैण्ड की सरकार अपने उपनिवेशों की ओर किञ्चित मात्र भी ध्यान न देती था। सन् १७५५ ई० में प्रधान मन्त्री न्यूकासिल ने एक अंग्रेजी अफसर को, जिसका नाम ब्रेडाक (Braddock) था डुकेन तथा अन्य फ्रांसीसी दुर्गों को सर करने के लिये अमेरिका भेजा, परन्तु ब्रेडोक कायर तथा शक्तिहीन निकला। शत्रु ने उसे डुकेन के दक्षिण में सहज ही में परास्त कर लिया। वह और बहुत से अन्य अङ्गरेज जान से मारे गये।

सप्तवर्षीय युद्ध, १७५६-६३ ई०—इस समाचार को सुन कर इङ्गलैण्ड में सब को शोक हुआ। अङ्गरेजी सर्कार ने ब्रडोक के वध का बदला लेना निश्चित किया। भारतवर्ष में क्लाइव ने अर्काट को घेर कर मुहम्मदअली को कर्नाटिक का नवाब बनाया। फ्रांसीसी सर्कार को बहुत बुरा लगा। उसने डूप्ले को भारतवर्ष से बुलाकर फ्रांसीसी व्यापारियों की सहायतार्थ शक्तिशाली जहाज बनवाये। यूरप में फ्रांस, आस्ट्रिया तथा स्वीडन मिल कर फ्रेडरिक द्वितीय के विरुद्ध सेना सगठित कर रहे थे। फ्रेडरिक ने न्यूकासिल से सहायता माँगी। न्यूकासिल ने सहायता देनी स्वीकार कर ली। यूरप महाद्वीप में एक महान् युद्ध हुआ जो सात वर्ष तक बराबर होता रहा। इस युद्ध में प्राचीन शत्रु अर्थात इङ्गलैण्ड और प्रशिया एक ओर थे और आस्ट्रिया तथा फ्रांस दूसरी ओर। फ्रांसीसी सर्कार ने एक सेना मनार्का विजय करने को भेजी। जब न्यूकासिल ने यह समाचार सुना तो उसने एक अङ्गरेजी अफसर बिङ्ग

(Byng) नामा को मनार्का की सहायतार्थ निदा किया, परन्तु कायर होने के कारण बिङ्ग शत्रु की सेना का सामना न करके इङ्गलैण्ड लौट आया। मनार्का पर फ्रासीसियों का अधिकार होगया। पार्लियामेण्ट को बिङ्ग पर बडा क्रोध आया। उसने उसे प्राणदण्ड दिया। बिङ्ग अपने ही जहाज पर गोली से उडा दिया गया।

विलियम पिट की युद्धनीति—पार्लियामेण्ट ने न्यूकासिल का बिङ्ग की पराजय का कारण ठहराया। उसने विलियम पिट से मन्त्रिमण्डल स्थापित करने को भी कहा। पिट ने न्यूकासिल से मिल कर मन्त्रिमण्डल बना के वाह्यनीति का भार अपने ऊपर लिया। पिट युद्धविद्या में बडा निपुण था। वह बडा वीर, साहसी तथा परिश्रमी था। छोटे से छोटे कार्य्य का अवलोकन वह स्वय करता था। वह मनुष्यों के गुण तथा अवगुण आकृति देख कर पहिचान लेता था। अत वह सदैव चतुर तथा अनुभवी सेनापतियों को नियुक्त करता था। सेना को ठीक समय ठीक स्थान पर भेजना और मार्लबरो की भाति एकाएक शत्रु पर आक्रमण करने की आज्ञा देना उसे भली प्रकार आता था। पिट युद्ध सम्बन्धी आज्ञाओं तथा तैयारियों को अन्तिम समय तक गुप्त रखता था। प्राय: वह सेना को तैयार होने की आज्ञा दे देता था, परन्तु उसके विदा होने के घण्टे दो घण्टे पूर्व तक उसके सेनापति तक को यह न बताता कि सेना को कहाँ जाना है। कायर से कायर सैनिक के दिल में वह एक दो शब्द कह कर नवीन जीवन का सञ्चार कर देता था। एक इतिहासलेखक उसके विषय में लिखता है कि जो कोई उसके कमरे में जाता था वीर और साहसी बन कर लौटता था। पिट अपने ऊपर पर्य्याप्त विश्वास रखता था। उसका कथन था कि केवल मैं ही इङ्गलेण्ड की रक्षा कर सकता हूँ, और कोई नहीं कर सकता। सप्तवर्षीय युद्ध के समय पिट की दृष्टि सदैव भारतवर्ष तथा कनाडा पर रहती थी। इन देशों को सेना

भेजने के अतिरिक्त वह फ्रेडरिक को सेना और धन बराबर भेज रहा था। पिट की आज्ञा से छोटे २ अंग्रेजी जहाज फ्रांस पर उत्तर तथा पश्चिम की ओर से गोले बरसा रहे थे। अत फ्रासीसी जर्मनी में निश्चिन्त होकर युद्ध न कर सकते थे। पिट ने कुछ जहाज अटलाण्टिक महासागर में इस कार्य्य पर नियुक्त किये थे कि शत्रुसेनायें महाद्वीप से कनाडा न जाने पावें। इन जहाजों को यह भी आज्ञा मिली थी कि अवसर पाकर उस धन को भी छीन लें जो फ्रासीसी जहाज अमेरिका से ला रहे थे। एक सेना उसने अफ्रीका में फ्रासीसियों पर आक्रमण करने को भेजी। इस प्रकार पिट ने ससार के कई भागों में फ्रासीसियों से युद्ध आरम्भ कर दिया था जिसके कारण शत्रु को एक स्थान पर सेनायें एकत्रित करने और अंग्रेजी सेना पर पूरी शक्ति से आक्रमण करने का अवसर न मिलता था।

युद्ध की प्रसिद्ध घटनायें—युद्ध के प्रारम्भ होते समय पिट का मित्र फ्रेडरिक बडी सकटावस्था में था। अङ्गरेजी प्रधान मन्त्री ने एक सेना ड्यूक ऑफ कम्बरलैण्ड की अध्यक्षता में हनोवर भेजी। यही नहीं वरन् उसने फ्रेडरिक को ६५० पौंड प्रति वर्ष देने का वचन भी दिया, परतु प्रारम्भिक वर्षों मे हनोवर की सेना कुछ न कर सकी। फ्रासीसी सेना ने उसे और प्रशिया की सेना को ऐसा परास्त किया कि कम्बरलैण्ड को अस्त्र डालते बना। अङ्गरेजी सरकार की बडी भद्द उडी। अमेरिका तथा भारतवर्ष में भी लगभग प्रत्येक स्थान पर अङ्गरेज पराजित हुये। अमेरिका में कई अमूल्य दुर्ग अङ्गरेजों के अधिकार से निकल गये। भारतवर्ष में सिराजुद्दौला ने कलकत्ता ले लिया। इसके पश्चात् कालकोठरी की शोचनीय घटना हुई *। सन् १७५७ ई० के अन्त में अङ्गरेजों की विजय प्रारम्भ हुई।

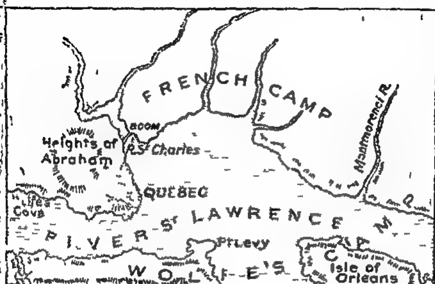
* आधुनिक काल में विद्वानों ने बडे परिश्रम के पश्चात् यह बात मालूम की है कि कालकोठरी की घटना बिल्कुल असत्य है

फ्रेडरिक ने फ्रान्सीसियों को रोजबेक (Rossbauk) के प्रसिद्ध युद्ध में इस प्रकार पराजित किया कि कई वर्षों तक फ्रान्सीसी अंग्रेजों का सामना करने का साहस न कर सके। भारतवर्ष में अंग्रेजों ने कलकत्ता विजय करके सिराजुद्दौला को प्लासी के युद्ध में पराजित किया। अंग्रेज यूरप में फ्रांसीसी बन्दरगाहों पर आक्रमण करने में सफल हुये। अमेरिका में पिट की भेजी हुई चार सेनाओं ने अंग्रेजी दुर्ग पुनः प्राप्त कर लिये और ओहियो नदी के किनारे के फ्रांसीसी दुर्गों पर भी अधिकार जमा लिया। इन में से एक डुक्वेन का दुर्ग था, जिसके विजय करने में ब्रेडोक ने चार वर्ष पूर्व अपने प्राण दे दिये थे। शत्रु का प्रसिद्ध नगर लुईबर्ग भी अंग्रेजों को मिल गया जो सेण्टलारेन्स के मुहाने पर चौकीदारी का काम कर रहा था। इन विजयों की सूचना पाकर इङ्गलैण्ड में आमोद प्रमोद मनाये गये। छोटे बड़े सब पिट की प्रशंसा करने लगे।

सन् १७५९ ई० में फ्रांसीसी शासन ड्यूक आफ चोसल (Duke of Choiseul) के अधिकार में आया। चोसल पिट की भांति योग्य तथा अनुभवी मन्त्री था। उसने स्काटलैण्ड और अंग्रेजी नहर द्वारा इङ्गलैण्ड पर आक्रमण करने का कई बार प्रयत्न किया परन्तु पिट के सामने उसकी एक न चली। चोसल भारतवर्ष, अमेरिका तथा यूरप में भी फ्रासीसियों को पराजित होने से न रोक सका। भारतवर्ष में फ्रांसीसी सेनापति लैली कुछ न कर सका। यूरप में इङ्गलेण्ड और प्रशिया की सेनाओं ने फ्रासीसियों को मिण्डन (Minden) के युद्ध में पूर्णतया नष्ट भ्रष्ट कर दिया। अमेरिका में कनाडा विजय करने को अंग्रेजी सेनापति वुल्फ (Wolfe) नामक नियुक्त किया।

जनरल वुल्फ की क्यूबेक विजय, १७५९ ई०—कनाडा की राजधानी क्यूबेक है जो सेण्टलारेन्स नदी के मुहाने पर स्थिति है। यह फ्रासीसियों का एक शक्तिशाली गढ था जो नदियों के बीच बना हुआ

था। इसके चारों ओर ऊँची तथा चौडी पहाडियाँ थीं जिनको देख कर



वुल्फ की क्यूबेक विजय।

हृदय में भय मालूम होने लगता था। यह पहाडियाँ अब्राहम की पर्वत श्रेणियाँ (Heights of Abraham) के नाम से प्रसिद्ध थीं। क्यूबेक का गढ़ एक चतुर तथा अनुभवी अफसर मॉण्टकाम (Montcalm) नामी के अधिकार में था। वह भली भांति जानता था कि वुल्फ उन पहाडियों को पार किये बिना जो क्यूबेक के चारों ओर चौकीदार का काम दे रही थीं, गढ़ को नहीं जीत सकता। वास्तव में ऐसा ही हुआ।

जब वुल्फ को क्यूबेक के सामने पडे कई दिन व्यतीत हो गये तो उसने एक दिन आधीरात के समय १३ नावें मँगाईं। उन में अङ्गरेजी सैनिक सवार हुये। नावें धीरे २ क्यूबेक के गढ की ओर बढीं। चारों ओर अन्धकार छाया हुआ था। मॉण्टकाम को इस बात का ज्ञान न था कि वुल्फ उसके ऊपर आक्रमण कर रहा है। वह जान ही कैसे सकता

था ? जिस समय वुल्फ की नावें पहाड़ियों की ओर बढ़ रही थीं उसी समय अंग्रेजी जल सेना दूसरी ओर से गढ़ पर गोलों की वर्षा कर रही थी। मार्ग में दो फ्रांसीसी सैनिकों ने वुल्फ को टोका। वुल्फ ने उनको वीरतापूर्वक उत्तर दिया कि हम फ्रांस से तुम्हारे लिये खाद्य पदार्थ लाये हैं। कुछ मिनटों में नावें अब्राहम की पर्वतश्रेणी से जा लगीं। अंग्रेज़ी सैनिक चुपचाप उतरे और एक तङ्ग टेढ़े मार्ग से पर्वत पर चढ़ना आरम्भ किया। जब उसका बहुत बड़ा भाग ऊपर पहुंच गया तब माण्टकाम को ज्ञात हुआ कि शत्रु निकट आगया है। फ्रांसीसी सेना नगर के बाहर आई। विरोधी दलों में युद्ध प्रारम्भ हुआ। वुल्फ घायल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। अचानक उसको यह शब्द सुनाई दिये—वह देखो वे भाग रहे हैं। वुल्फ ने सर उठा कर पूछा —"कौन भाग रहे हैं"? उत्तर मिला —"फ्रांसीसी"। वह बोला —"ईश्वर को धन्यवाद है मैं अत्यन्त शोकरहित मर रहा हूँ। यह कहते ही वुल्फ की मृत्यु हो गई। माण्टकाम भी युद्ध में मारा गया। अतः फ्रांसीसी क्यूबेक छोड़ कर भाग गये और उस पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

सन् १७६० ई० में फ्रांसीसियों ने क्यूबेक लेने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु वे उसे न ले सके। यही नहीं, वरन् अंग्रेजों ने माण्ट्रियल नगर विजय करके समस्त पूर्वी कनाडा पर अधिकार कर लिया। भारतवर्ष में भी फ्रांसीसियों की बराबर पराजय हो रही थी। सर आयरकूट ने उन्हें वाण्डवाश के युद्ध में परास्त कर लिया। पाण्डीचरी तथा कई अन्य फ्रांसीसी बन्दरगाह अंग्रेजों के अधिकार में आ गये यूरप में भी अङ्गरेजों की विजय हो रही थी। जब कुछ बस न चला तो चोसल ने सन् १७६१ ई० में स्पेन के नवयुवक राजा को अपनी ओर मिला लिया। यह समाचार पाकर विलियम पिट ने एक शक्तिशाली सेना स्पेन पर आक्रमण करने के लिये भेजने का उद्योग किया। परन्तु जार्ज द्वितीय का परलोक

गमन हो चुका था। उसका पोता जार्ज तृतीय शासन कर रहा था। जार्ज तृतीय पिट को अपने अधिकार में रखना चाहता था। वह युद्ध के भी प्रतिकूल था। उसने पिट को सेना स्पेन भेजने की आज्ञा न दी। अत: पिट मन्त्रिमण्डल से अलग हो गया।

पेरिस का सन्धिपत्र, १७६३ ई०—पिट के अलग हो जाने पर जार्ज तृतीय के गुरु बूट (Bute) नामक ने एक नवीन मन्त्रिमण्डल की रचना की, परन्तु बूट युद्ध का ठीक प्रबन्ध न कर सका। उसने फ्रेडरिक को धन तथा सेना भेजना बन्द कर दिया। बेचारा फ्रेडरिक बड़े सङ्कट में पड़ गया। फ्रेडरिक को अकेला छोड़ कर बूट ने झट पेरिस नगर में फ्रांस तथा स्पेन से सन्धि कर ली। अङ्गरेजों ने फ्रांस तथा स्पेन के वे सारे नगर लौटा दिये जो उन्होंने यूरप तथा भारतवर्ष में जीते थे। यह बात भी निश्चित हो गई कि फ्रांसीसी भारतवर्ष में गढ़ न बनायेंगे। इङ्गलेण्ड को फ्रांस तथा स्पेन से कई बहुमूल्य भाग मिले। फ्रांस ने उसे अमेरिका में नीचे का कनाडा, मिस्सिसिपी नदी के पूर्व की सारी भूमि, सेण्टलारेन्स नदी पर बने हुए सम्पूर्ण बन्दरगाह और पश्चिमी इण्डीज के कुछ टापू दिये। स्पेन ने अङ्गरेजों को मनार्का का द्वीप तथा फ्लोरिडा का प्रायद्वीप दिये। फ्रांसीसियों को न्यूफाउण्डलैण्ड के चारों ओर मछली पकड़ने की आज्ञा मिल गई।

इन प्रतिज्ञाओं से अंग्रेजों को बड़ा लाभ हुआ। कनाडा तथा भारतवर्ष में फ्रांसीसियों की शक्ति पूर्णत: कम हो गई। यूरप में उनकी शक्ति को ऐसा धक्का पहुंचा कि वह अधिक समय तक अङ्गरेजों के विरुद्ध शस्त्र न उठा सके। इन तीनों देशों में अङ्गरेजों की तूती बोलने लगी। इसके लिये हमें विलियम पिट का कृतज्ञ होना चाहिये। यदि वह सप्तवर्षीय युद्ध का प्रबन्ध अपने हाथों में न लिये होता तो भारतवर्ष तथा अमेरिका में अङ्गरेजी साम्राज्य की नींव इतनी दृढ़ कदापि न बन सकती

थी। यह बडे शोक की बात है कि पेरिस की सन्धि में उपनिवेशों के शासन के विषय में कोई बात ठीक २ निश्चित न हुई। इस कारण इङ्गलैण्ड की सरकार और उपनिवेशों के बीच युद्ध का मार्ग खुला। बूट ने जल्दी में आकर कई ऐसे बहुमूल्य अधिकार स्पेन तथा फ्रांस को लौटा दिये जिन्हें पिट इङ्गलैण्ड के लिये रखना चाहता था। फ्रांसीसियों को न्यूफाउण्डलैण्ड में मछली पकडने की आज्ञा मिल जाने से भविष्य में अनेकों झगडे पडे। इन समस्त दोषों के होते हुये भी पेरिस की सन्धि का महत्व कम नहीं होता।



अभ्यास।

(१) सन् १६८८ ई० के पश्चात स्टुअर्टवंश को राज्य सौंपने का प्रयत्न कब २ किया गया? इस का क्या फल हुआ?

(२) अंग्रेजों को कनाडा किस प्रकार मिला?

(३) जेनकिन्स कौन था? इतिहास में उसे क्यों याद करते हैं?

(४) सप्तवर्षीय युद्ध के कारण वर्णन करो। बडे पिट ने इसका प्रबन्ध किस प्रकार किया?

(५) "वालपोल शान्तिप्रिय मन्त्री था और इङ्गलैण्ड को युद्ध से पृथक् रखना चाहता था"। वालपोल युद्ध के विरुद्ध क्यों था? इसकी नीति से इङ्गलैण्ड को क्या लाभ हुआ?

(६) संक्षेप नोट लिखो:—चैटम, पेरिस की सन्धि। आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध।

(७) अपने अध्यापक से जनरल वुल्फ और कनाडा विजय के विषय में किसी पुस्तक का नाम पूछो और उसे स्कूल के पुस्तकालय से लेकर पढ़ो।

(८) "मैं कनाडा ऐल्ब नदी के तट पर विजय कर सकता हूं"। बडे पिट के इस कथन की व्याख्या करो।

छत्तीसवां अध्याय।



केबिनेट की उन्नति-प्रधान मन्त्री का राजा पर प्रभुत्व स्थापित करना।

अर्वाचीन समय में अङ्गरेजी साम्राज्य का सारा प्रबन्ध केबिनेट द्वारा होता है। केबिनेट मन्त्रियों की एक सभा है, जिसका मुख्य अभिप्राय राजा को देशी कार्यों में सम्मति देना है। जो दल पार्लियामेण्ट में शक्तिशाली होता है अर्थात् जिसके सदस्यों की संख्या सब से अधिक होती है उसके नेता को राजा प्रधान मन्त्री नियुक्त करता है। प्रधान मन्त्री केबिनट के शेष मन्त्रियों को, जिनकी संख्या बहुधा आठ से अधिक नहीं होती, नियुक्त करता है। प्रत्येक मन्त्री को शासन के विभागों में से एक भाग सौंप दिया जाता है, परन्तु सब मन्त्री मिल कर राज्य का ठीक प्रबन्ध करने के उत्तरदायी होते हैं। यदि वे राज्य का उचित प्रबन्ध नहीं करते, तो पार्लियामेण्ट उन्हें निकाल देती है।

केबिनेट के बनने में शताब्दियां लग गई हैं। प्राचीन समय से इङ्गलैण्ड के राजा को सम्मति देने के लिये एक सभा नियुक्त थी। आरम्भ में इसके सदस्यों की संख्या बहुत अधिक थी। अतएव हेनरी षष्ट (१४२२-१४६१) ने गुप्त बातों पर सम्मति लेने के लिये इस सभा के कुछ विश्वासनीय मन्त्रियों की एक अलग सभा बना ली जो प्रिवी कौंसिल (Privy Council) के नाम से प्रसिद्ध है। जब बड़ी सभा में सब बातें निश्चित हो जातीं तब वे प्रिवी कौंसिल के सम्मुख लाई जाती थीं। ज्यों

ज्यों प्रिवी कौंसिल की शक्ति बढ़ती गई, प्राचीन सभा की शक्ति कम होता गई यहाँ तक कि कुछ समय के पश्चात् उसकी स्थिति तक न रही।

केविनेट का जन्म—ट्यूडर राजाओं के समय में प्रिवी कौंसिल के सदस्यों की संख्या बढते २ चालीस तक पहुच गई थी । अतएव वह आवश्यकीय बातों को गुप्त रखने के योग्य न रही । यह देख कर चार्ल्स द्वितीय ने हेनरी षष्ट की भाति प्रिवी कौंसिल के विश्वासनीय सदस्यों की एक पृथक् सभा निर्माण की जो केबिनट (Cabinet) के नाम से प्रसिद्ध हुई । जब राजनैतिक विषय कैबिनट में निश्चित हो जाते, तब वे स्वीकृति के हेतु प्रिवी कौंसिल के सामने लाये जाते थे । राजा केबिनेट का प्रधान बनता था । जो विषय केबिनेट के सम्मुख लाये जाते थे उन में राजा दिल लगाकर भाग लेता था ।

विलियम तृतीय का समय–पार्टी सिस्टम की प्रथा*—जेम्स द्वितीय भी चार्ल्स द्वितीय की भाति केबिनेट के नियमों का पालन

---

* आधुनिक काल में पार्टी सिस्टम का प्रबन्ध इस प्रकार है । जिस दल के सदस्यो की संख्या पार्लियामेन्ट में सब से अधिक होती है वह केबिनेट निर्माण करके राज्यप्रबन्ध अपने हाथों में लेता है । इसके पश्चात् जिस दल के सदस्य पार्लियामेण्ट में सबसे अधिक होते हैं वह शक्तिशाली दल का विरोध करता है । कभी कभी दो अथवा अधिक दल मिल कर राज्यप्रबन्ध का भार अपने ऊपर लेते हैं । ऐसे अवसर पर जिस दल के सदस्य इन दलों के पश्चात् पार्लियामेण्ट में सब से अधिक होते हैं, वही इनका विरोध करने को खडा होता है । जब शक्तिशाली दल विरोधीदल से किसी आवश्यक कार्य्य-वश पराजित हो जाता है तो वह राज्यप्रबन्ध से हट जाता है और विरोधीदल को राज्य प्रबन्ध करने का अवसर देता है ।

करता रहा। सन १६८८ की राज्यक्रान्ति के उपरान्त जब विलियम तृतीय राजा बना, तो केबिनेट की प्रथा और भी शक्तिशाली होगई। विलियम परदेशी था। ह्विग और टोरी दोनों उसे अपने अधिकार में रखना चाहते थे, परन्तु विलियम दोनों दलों के अधिकार से बाहर रहना चाहता था। इसके साथ साथ उसे फ्रांस के चौदहवें लुई से युद्ध करने के लिये पार्लियामेण्ट की स्वीकृति की भी आवश्यकता थी। इन दोनों कारणों से उसने आरम्भ में ह्विग और टोरी दोनों दलों से केबिनेट के लिये मन्त्री नियुक्त किये, परन्तु सन् १६९३ ई० और सन् १६८५ ई० के बीच में उसने सण्डरलैण्ड के कहने से ऐसा करना बन्द कर दिया। इस समय पार्लियामेण्ट में ह्विगदल अधिक शक्तिशाली था, अतएव विलियम ने केवल इस दल के सदस्यों में से केबिनेट के मन्त्री नियुक्त किये। शनैः शनैः यह प्रथा चल गई कि जो दल पार्लियामेण्ट में शक्तिशाली होता, उसी से मन्त्री नियुक्त होते थे। यह सिद्धान्त केबिनेट की शासनप्रणाली का मुख्य स्तम्भ है।

एन के समय में केबिनेट की उन्नति—केबिनेट का द्वितीय आवश्यकीय सिद्धान्त ऐन् के समय में बना। विलियम के समान ऐन् भी केबिनेट के मन्त्रियों को स्वयं नियुक्त करती थी, परन्तु गुडोल्फिन इस प्रथा के विरुद्ध था। सन् १७०६ ई० में उसने जोर देकर अपने मित्र सण्डरलैण्ड को ऐन् की इच्छा के विरुद्ध मन्त्री बना लिया। धीरे २ राजा के स्थान पर प्रधान मन्त्री स्वयं केबिनेट के मन्त्रियों को नियुक्त करने लगा। यह सिद्धान्त केबिनेट की शासनप्रणाली का दूसरा स्तम्भ है।

प्रथम दो जार्ज और वालपोल—विलियम और ऐन् दोनों प्रधान मन्त्री तथा केबिनेट के अन्य मन्त्रियों पर प्रभुत्व स्थापित रखते थे, परन्तु जार्ज प्रथम और द्वितीय उन पर किञ्चित् मात्र भी प्रभुत्व स्थापित न रख सके। इसका एक मुख्य कारण यह था कि वे अंग्रेजी

भाषा से सर्वथा अनभिज्ञ थे। हनोवर से आने के कारण वे अङ्गरेजी रहन सहन तथा रीतियों से भी अनभिज्ञ थे। उन्हें सर्वदा हनोवर लौटने का ध्यान रहता था। अतः उन्होंने राज्यप्रबन्ध से पूर्णतः ध्यान हटा लिया और केबिनेट का सम्पूर्ण प्रबन्ध प्रधान मन्त्री वालपोल के हाथों में समर्पण कर दिया। वालपोल चतुर और प्रभावशाली मन्त्री था। जार्ज प्रथम और उसके पुत्र को सर्वदा जैकोबाइट का भय लगा रहता था। अतएव वे वालपोल को, जो हनोवरवंश की नींव दृढ़ करने की चेष्टा कर रहा था, अप्रसन्न न करना चाहते थे। बड़े बड़े ह्विगकुल वालपोल के सहायक थे। पार्लियामेण्ट के सदस्यों को वालपोल घूस देकर अपनी ओर मिला लिया करता था। इन सब बातों का स्वाभाविक फल यह हुआ कि वालपोल के समय में राजा के अधिकार अत्यन्त निर्बल हो गये और प्रधान मन्त्री के अधिकार पराकाष्ठा पर पहुँच गये। जो कार्य्य प्रधान मन्त्री करता था वह नाम मात्र के लिये राजा के नाम से होते थे। वास्तव में प्रधान मन्त्री ही राजा था और राजा उसका आज्ञाकारी था। राजा का काम केवल पेंशन और पारितोषिक इत्यादि का समर्पण करना और प्रधान मन्त्री के कथनानुसार नियमों पर अपनी स्वीकृति प्रकट करना रहगया। जो प्रधान मन्त्री वालपोल के पश्चात् हुये उन्हों ने भी राजा पर अपना प्रभुत्व स्थापित रक्खा।

राजा की शक्ति के साथ २ वालपोल ने हाउस ऑफ़ लॉर्डस् की शक्ति भी कम कर दी। हाउस ऑफ कॉमन्स को शक्तिशाली और लार्डस् को शक्तिहीन करना वालपोल की नीति का मुख्य उद्देश था। यही कारण है जो उसने जार्ज प्रथम के समय में पीरेज बिल पास न होने दिया था। सन् १७६० ई० तक, जब जार्ज द्वितीय की मृत्यु हुई, प्रजा प्रधान मन्त्री को देश का वास्तविक शासक समझने लगी।



अभ्यास।

१) केबिनट के प्रबन्ध से क्या समझते हो? इस से देश को क्या लाभ है?

(२ वालपोल के समय में राजा के शक्तिहीन होने के कारण वर्णन करो?

(३) क्या राजा खोई हुई शक्ति की पुनर्जागृति कर सकता था? ऐसा करने के लिये राजा में किन २ गुणों की आवश्यकता थी? इन प्रश्नों के उत्तर ध्यान में रख कर जार्ज तृतीय के समय का इतिहास पढ़ो।



सैंतीसवां अध्याय।

जार्ज तृतीय (१७६०–१८२०)।

(अ) जार्ज तृतीय का खोई हुई शक्ति को प्राप्त करने की चेष्टा करना।

जार्ज तृतीय ने राज्य का शासन ग्रहण करते ही उस शक्ति का पुन लेने की चेष्टा की जो जार्ज प्रथम और द्वितीय के समय में राजा के हाथों से निकल गई थी। इसक और ह्विगदलों के मध्य विरोध था। केवल दस हा वर्ष के भीतर उसने ह्विग-दल पर प्रभुत्व स्थापित करके प्रधान मन्त्री का शक्तिहीन कर दिया। इस प्रकार सन् १७७० ई० में राजा और प्रधान मन्त्री के अधिकार पुनः वही हो गये जो सन् १६८९ ई० के प्रबन्ध से उन्हें मिले थे। बारह वर्ष तक जार्ज ने अपने अधिकारों को जागृत रक्खा। इस के



जार्ज तृतीय।

पश्चात् छोटे पिट (पहली बार १७८३–१८०१) के प्रधान मन्त्री बनते ही राजा की शक्ति का पुन ह्रास होने लगा ।

नवीन राजा की शिक्षा—यह केवल जार्ज तृतीय की शिक्षा का प्रभाव था जो उसने खोई हुई शक्ति को इतने शीघ्र पुन प्राप्त कर लिया। जार्ज तृतीय जार्ज द्वितीय का पोता था। राज्यासन ग्रहण करने के समय उसकी आयु बाइस वर्ष की थी। उसका पिता उसे तेरह वर्ष का छोड़ कर स्वर्गवास कर गया था। अतएव जार्ज ने अपनी माता तथा गुरु बूट (Bute) के द्वारा शिक्षा प्राप्त की थी। जार्ज की माता सर्वदा उसे यही उपदेश देती कि मे जार्ज राजा बन कर दिखा देना। बूट अपने शिष्य को बोलिङ्गब्रुक के टोरी सिद्धान्तों की ओर लाना चाहता था और कहता था कि सन् १६८९ ई० के प्रबन्ध का वास्तविक मन्तव्य राजा को सर्वथा शक्तिहीन करना कदापि न था। जार्ज तृतीय ने अपनी माता और गुरु के उपदेशों से भली प्रकार लाभ उठाया। जार्ज का आचरण भी अच्छा था। वह हठी, चिड़चिड़ा, घमण्डी, स्वार्थी और अल्पबुद्धि तो अवश्य था, परन्तु हनोवरवंश के प्रथम दो राजाओं के समान परदेशी न था। वह अंग्रेजी भाषा खूब जानता था और इङ्गलैण्ड में शिक्षा ग्रहण करने के कारण अंग्रेजी प्रथा तथा रहन सहन से भली भाँति परिचित था। जार्ज तृतीय भोगविलासप्रिय, न था। वह प्रोटेस्टेण्ट धर्म का कट्टर अनुयायी था। बाबर बादशाह की भाँति वह ऐसा साहसी था कि कठिन से कठिन कार्य्य उसके लिये सरल था। आपत्तियाँ झेल कर उसका साहस सदा द्विगुणित हो जाया करता था।

जार्ज तृतीय के उद्देश व उनकी प्राप्ती के साधन—जार्ज तृतीय हृदय से प्रजा का भलाई चाहता था। उसका कथन था कि प्रजा का हित इसी में है कि राज्यशासन टोरीदल के अधिकार में रहे। अतएव वह ह्विगदल के अधिकारों को छीन कर टोरीदल को सौंपना

चाहता था। द्वितीय, वह प्रधान मन्त्री के अधिकारों को स्वयं ग्रहण करना चाहता था। इन उद्देशों को वह पार्लियामेण्ट की स्वीकृत से प्राप्त करना चाहता था। पार्लियामेण्ट के सदस्यों को जार्ज तृतीय ने कई प्रकार से अपनी ओर मिला लिया था। जार्ज के पास धन अधिक था। अतएव चुनाव के समय वह वोटों के क्रय और उसके पश्चात् सदस्यों को घूस देने के लिये तत्पर रहता था, परन्तु भारतवर्ष से लौटे हुये ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अफसरों और अन्य धनाढ्य सदस्यों को घूस की किञ्चित् चाह न थी। उन्हें जार्ज उच्चपद, जागीरें और उपाधि से अलंकृत कर प्रसन्न कर लिया करता था। नवाबों और जमींदारों को घूस देकर वह उनके भेजे हुये सदस्यों को अपनी ओर मिला लिया करता था। हाउस ऑफ कॉमन्स में जार्ज के सहायकों का एक शक्तिशाली समूह था जो इतिहास में "राजमित्र" (King's Friends) के नाम से प्रसिद्ध है। जनता ह्विगदल के शासन से पहिले ही से दुखित थी। जार्ज स्वयं अत्यन्त प्रसिद्ध था। वह राजकार्य्यों में परिपूर्ण रूप से भाग लेता था। जैकोबाइट्स के विद्रोह का भय भी जाता रहा था। इन समस्त कारणों से जार्ज तृतीय को ह्विग्ज और प्रधान मंत्री के अधिकारों के प्राप्त करने में अधिक कष्ट न उठाना पड़ा।

जान विल्क्स और मिडिलसैक्स का चुनाव, १७६८ ई०-

जार्ज तृतीय के सिंहासनारूढ़ होने के समय बड़े पिट और न्यूकासिल का मन्त्रिमण्डल शासन कर रहा था। सन् १७६१ ई० में जब इस का अन्त हुआ तो जार्ज तृतीय ने अपने गुरु बूट को प्रधान मंत्री बनाया। लोगों को ज्ञात हो गया कि नूतन राजा हनोवरवंश के प्रथम दो राजाओं की रीति से राज्यशासन न करेगा। बूट के मन्त्रित्व के पश्चात् चार ह्विग मन्त्रिमण्डलों ने और शासन किया*, परन्तु चारों एक एक दो-दो वर्ष पश्चात्

* (१) ग्रेन्विल (१७६३–१७६५)। (२) राकिंघम (१७६५–१७६६)। (३) चैटम (१७६६–१७६८)। (४) ग्रेफ्टन (१७६८–१७७०)।

निर्वासित कर दिये गये क्योंकि राजा ह्विग मन्त्रिमण्डलों के विरुद्ध था। अन्तिम मन्त्रिमण्डल के शासनकाल में राजा के पक्षपातियों और ह्विगदल के मध्य जान विल्क्स (John Wilkes) के विषय में बड़ा झगड़ा हुआ। जॉन विल्क्स पार्लियामेण्ट का सदस्य था। उसने अपने समाचारपत्र नार्थ ब्रटेन (North Britain) नामक में राजा की उस वक्तृता की आलोचना की थी जो उसने पेरिस की सन्धि के विषय में दी थी। राजा ने उसे बन्दी कराकर देशनिर्वासन का दण्ड दिया। देशनिर्वासन की अवधि के अन्त होने पर विल्क्स फ्रांस से लौट आया। दैवयोग से सन् १७६८ ई० में मिडिलसेक्स (Middlesex के निवासियों ने उसे पार्लियामेण्ट का सदस्य निर्वाचित किया, परन्तु पार्लियामेण्ट ने उसे अन्दर प्रवेश करने की आज्ञा न दी। यह बात राजा के शत्रुओं को बहुत बुरी प्रतीत हुई। जॉन विल्क्स इसी प्रकार तीन बार मिडिलसेक्स के प्रान्त से सदस्य निर्वाचित हुआ, परन्तु तीनों बार पार्लियामेण्ट ने उसे प्रवेश न करने दिया। यही नहीं, वरन् राजा के पक्षपातियों ने प्रभाव डाल कर विल्क्स के विरोधी कर्नल लुटरल (Colonel Luttrel) को पार्लियामेण्ट में बैठने की आज्ञा दे दी, यद्यपि अन्तिम बार उसके वोट विल्क्स के एक चौथाई भी न थे।

लार्ड नार्थ का मंत्रित्व, १७७०-१७८२—जान विल्क्स का मामला बहुत प्रसिद्ध है। प्रजा द्वारा निर्वाचित सदस्य को पार्लियामेण्ट में प्रवेश न करने देना कोई मामूली बात नहीं है। इस से ज्ञात होता है कि जार्ज तृतीय प्रभावशाली राजा था और पार्लियामेण्ट में उसके पक्षपातियों की शक्ति बहुत बढ़ी हुई थी। इस घटना के दो वर्ष पश्चात् जार्ज तृतीय का चापलूस लार्ड नार्थ (Lord North) प्रधान मन्त्री के पद पर नियुक्त हुआ। उसके समय में जार्ज का प्रभुत्व केबिनेट और पार्लियामेण्ट दोनों पर स्थापित हो गया। लार्ड नार्थ शक्तिहीन तथा

डरपोक मन्त्री था। जार्ज सहज ही में उसे अपने आधीन रखता था। नॉर्थ ने अपने सम्पूर्ण अधिकार राजा को समर्पण कर दिये। वह ऐसा चापलूस और निस्साहसी था कि वह अपने को प्रधान मन्त्री तक न कहता था। उसकी भांति उसके आधीन मन्त्री भी राजा के साथ हां में हां करने को तत्पर रहते थे। वास्तव में जार्ज तृतीय स्वयं अपना प्रधान मन्त्री और सेना नायक था। वही केबिनेट का प्रबन्ध करता नौकरों को नियुक्त करता और वाह्यनीति सम्बन्धी बातों की देखभाल करता था। नॉर्थ के शासनकाल में टोरीदल पार्लियामण्ट में बहुत शक्तिशाली था। अतएव चैटम, शैलबर्न (Shelburn), फाक्स (Fox), बर्क (Burke) और अन्य ह्विग धनाढ्यों की बिलकुल न चलती थी। ह्विग धनाढ्यों में स्वयं प्रेम तथा एका न था। अतएव राजा का कार्य्य सर्वदा सहज ही में बन जाता था। कभी २ जार्ज तृतीय ह्विग सदस्यों को घूस देकर अपनी ओर मिला लेता था घूस और वोटों के क्रय कार्य्य में इतना अधिक व्यय होता कि सरकार पर बहुत ऋण हो गया था। ह्विग तथा टोरीदलों के मध्य पार्लियामेण्ट में इतना झगड़ा होता था कि नॉर्थ के शासनकाल में वर्णनीय घटनायें बहुत कम हुईं। इन में से एक रेग्यूलेटिंग एक्ट (Regulating Act) का बनना है। यह नियम ईस्ट इण्डिया कम्पनी की बुराइयों के दूर करने के लिये बना था। दूसरी प्रसिद्ध घटना अमेरिका की स्वतन्त्रता का युद्ध है। इस का स्पष्ट वर्णन अलग होगा।

लॉर्ड नॉर्थ ने इतनी अधिक त्रुटियाँ कीं कि प्रजा टोरीदल को बुरा कहने लगी। नॉर्थ की मृत्यु के पश्चात् दो ह्विग और एक ह्विग और टोरीदलों के सम्मिलित मन्त्रित्व स्थापित हुये*। इनके समय में ह्विग

* (१) राकिंघम, मर्च सन् १७८२—जौलाई १७८२ ई०। (२) शेलबर्न, जौलाई सन् १७८२—फर्वरी सन् १७८३ ई०। (३) सम्मिलित मन्त्रिमडल फर्वरी सन् १७८३—दिसम्बर सन् १७८३ ई०।

दल के प्रभावशाली सदस्य फाक्स ने जार्ज तृतीय की शक्ति को कम करने का अनेकों उपाय किये और कुछ सीमा तक वह सफल भी हुआ। इसके पश्चात् छोटे पिट ने राजा की शक्ति का बिल्कुल नाश कर दिया।

छोटे पिट का शासन, १७८४–१८०१ ई०—जैसा कि नाम से पता लगता है, छोटा पिट बड़े पिट का पुत्र था। बड़ा पिट उसे अधिक प्यार करता था। अभी छोटा पिट पूरे २५ वर्ष का भी न हुआ था कि उसे प्रधान मन्त्री बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। छोटा पिट योग्य, साहसी और सुआचरण मन्त्री था। अपने पिता के समान उसके हृदय में भी स्वदेशप्रेम का सच्चा रक्त भरा था। अपने पिता के समान वह वक्तृता भी अच्छी देता था, परन्तु वह उसके समान न चतुर शासक ही था और न योग्य सेनापति ही था। दलबन्दी के कार्य्य में वह अवश्य अपने पिता से अधिक दक्ष था। टोरीदल का नेता होने के कारण छोटा पिट जार्ज तृतीय का गहरा मित्र था, परन्तु वह राजा के समस्त अधिकार छीन कर कुछ तो पार्लियामेण्ट को प्रदान करना चाहता था और कुछ अपने लिये रखना चाहता था। उसने टोरीदल की कुरीतियों को दूर करके उसे नवीन जीवन प्रदान किया। छोटा पिट प्रधान मन्त्री के सारे अधिकारों को ग्रहण किये था। उसने केबीनेट को पुनः शक्तिशाली बना दिया और मन्त्रियों को भी स्वयं नियुक्त करने लगा। राजा के पक्षपातियों की शक्ति पार्लियामेण्ट में भी कम



छोटा पिट ।

होगई। जार्ज तृतीय ने घूस देना और वोट क्रय करना बन्द कर दिया। पिट एक रिफार्म बिल भी स्वीकृत कराना चाहता था, परन्तु वह सफलीभूत न हुआ। पिट के कारण पार्लियामेण्ट तथा प्रधान मंत्री दोनों के अधिकार बढ़ गये, परन्तु ह्विगवंश ज्यों के त्यों शक्तिहीन बन रहे। छोटे पिट का शासन पार्लियामेण्ट और प्रधान मंत्री के शक्तिशाली बनने के अतिरिक्त और भी कई बातों के लिये बहुत प्रसिद्ध है। उसने भारतवर्ष की सरक्षता के लिये एक बोर्ड आफ कण्ट्रोल (Board of Control) बनाया। वारेन् हेस्टिंग्ज पर उसने अभियोग चलाया, परन्तु पार्लियामेण्ट ने हेस्टिंग्ज को क्षमा कर दिया। कनाडा का देश, जो वुल्फ ने सप्तवर्षीय युद्ध में विजय किया था, दो भागों अथवा ऊपरी और नीचे के कनाडाओं में विभाजित कर दिया गया। आयरलैण्ड की पार्लियामेण्ट भङ्ग कर दी गई और इङ्गलैण्ड की पार्लियामेण्ट आयरलैण्ड के लिये भी नियम बनाने लगी। पिट अपने मित्र विल्बरफोर्स (Wilberforce) के कथनानुसार हब्शियों का व्यापार बन्द करने की चेष्टा कर रहा था, परन्तु वह व्यापारियों के विरोध के कारण सफल न हो सका। उसने फ्रांसीसी क्रान्ति और नेपोलियन का विरोध भी वीरतापूर्वक किया।

लिवरपूल का शासन, १८१२–१८२७ ई०—सन् १८०१ ई० में छोटे पिट के प्रथम मन्त्रित्व का अंत हुआ। इसके पश्चात् जार्ज तृतीय के शासनकाल में छे और छोटे बड़े ह्विग और टोरी मन्त्रित्व हुये*। इन में लार्ड लिवरपूल (Liverpool) का टोरी मंत्रित्व बहुत प्रसिद्ध है। इसके समय में इङ्गलैण्ड की प्रजा का ध्यान नेपोलियन के युद्धों की ओर आकर्षित था। अतः पार्लियामेण्ट में ह्विग और टोरीदलों में

* (१) एडिंगटन १८०१–१८०४ ई०। (२) पिट १८०४–१८०६ ई०। (३) ग्रेनविल १८०६–१८०७ ई०। (४) पोर्टलैण्ड १८०७–१८०९ ई०। (५) पर्सीवल १८०९–१८१२ ई०। (६) लिवरपूल १८१२–१८२७ ई०।

ापरिक झगडे कम हो गये थे, परन्तु जार्ज तृतीय स्वस्थ न रहता । उसे प्राय सिडीपन सताता था । अत प्रधान मन्त्री अति शक्ति-ाी बना हुआ था ।

जार्ज तृतीय के समय में राजा और प्रधान मन्त्री के बीच विरोध के कई परिणाम हुये । इस विरोध के कारण जार्ज तृतीय के समय में मन्त्रिमण्डलों ने शासन किया । अतएव शासनपद्धति में भी सत्ता परि न होते रहे । द्वितीय, इसके कारण सन् १८१५ ई० के पश्चात् ह्विग टोरी दल के सिद्धान्तों में प्रशंसनीय परिवर्तन हुये । तृतीय, इस ाद के कारण देश में राजनैतिक तथा सामाजिक सुधार न हो सके पि व्यावसायिक क्रान्ति (Industrial Revolution) के प्रारम्भ ान के कारण इनकी अत्यन्त आवश्यकता थी । चतुर्थ इस विरोध कारण इङ्गलेण्ड उन युद्धों में ठीक रीति से भाग न ले सका जो उसे र्ज तृतीय के समय में लड़ने पड़े । इन में से पहला युद्ध इङ्गलेण्ड को ने उपनिवेशों से लड़ना पड़ा ।

(ब) अमेरिका की स्वाधीनता का युद्ध (१७७५–१७८३) ।

उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट पर तेरह अङ्गरेजी उपनिवेश थे । प्रत्येक निवेश का प्रबन्ध एक गवर्नर और एक जातीय सभा (National sembly) के हाथों में था । गवर्नरों को अङ्गरेजी सरकार नियुक्त करती, अतएव वे सर्वदा उसकी भलाई चाहते थे । उपनिवेशों के धर्म ग २ थे । जो उपनिवेश अङ्गरेजी गिर्जा को मानते थे उनके धार्मिक ध का देखभाल इङ्गलेण्ड का विशप करता था । जार्जिया, करोलिना र दूसरी दक्षिणी बस्तियाँ हब्शियों के व्यापार से बहुत लाभ उठा रही । अतएव वे उत्तरी उपनिवेशों से अधिक धनाढ्य थीं ।

प्राचीन वैमनस्य—उपनिवेशों की नींव एलिज़बेथ के काल में पड़ी थी। परन्तु सम्पूर्ण उपनिवेश स्टुअर्टवंश के प्रथम चार राजाओं के शासनकाल में स्थापित हुये थे। उनके स्थापित करने वाले वे लोग थे जो इन राजाओं के धार्मिक अथवा राजनैतिक अत्याचारों से दुखित हो अमेरिका चले आये थे। अतः उपनिवेश प्रारम्भ ही से इङ्गलैण्ड के शत्रु थे। उनके और इङ्गलैण्ड के मध्य प्रायः गवर्नरों के वेतन, टैक्स अथवा धार्मिक बातों के विषय में झगड़े होते रहते थे, परन्तु अभी तक पारस्परिक विरोध बढ़ने न पाया था क्योंकि उपनिवेश शक्तिहीन थे, और उनमें आपस में स्वयं मेल न था। परन्तु जैसे २ समय व्यतीत होता गया उपनिवेशों की शक्ति भी बढ़ती गई और उन में प्रेम का सञ्चार होता गया। अब वे उस अनीति व्यवहार को सहन न कर सके जो इङ्गलैण्ड उन के साथ कर रहा था।

व्यापारिक बाधायें—अंग्रेजी सरकार ने उपनिवेशों के व्यापार में अनेकों बाधायें डाल रक्खी थीं। इस समय के अङ्गरेजी मन्त्री तथा नीतिज्ञ उपनिवेशों को इङ्गलैण्ड की सम्पत्ति समझते थे। अतएव वे उन के द्वारा सर्व प्रकार का अनुचित लाभ उठा रहे थे। वे सर्वदा यही चाहते थे कि इङ्गलैण्ड द्वारा निर्माणित, भली और बुरी, सब प्रकार की वस्तुयें उपनिवेशों में खपती रहें और उपनिवेश उन वस्तुओं को न बनायें जो इङ्गलैण्ड में बनती थीं। उपनिवेश तम्बाकू, शक्कर, कपास, नील, इत्यादि जो अमेरिका में अधिक उत्पन्न होते हैं केवल इङ्गलैण्ड को भेज सकते थे। यद्यपि अमेरिका में लोहा बहुत मिलता था, परन्तु उपनिवेश लोहे की वस्तुयें न तो स्वयं बना सकते थे और न इङ्गलैण्ड के अतिरिक्त किसी और देश से मँगा सकते थे। जो वस्तुयें बाहर से उपनिवेशों में आती थीं और जो वस्तुयें उन से बाहर जाती थीं, उन सब पर अनेकों बाधायें आरोपित थीं। इतनी बात अवश्य है कि अंग्रेजी सरकार ने उपनिवेशों के लाभ के लि

रद्द थाते की थी। उदाहरणार्थ, वर्जीनियों की तम्बाकू की बिक्री बढाने के लिये इङ्गलैण्ड में यह आज्ञा कर दी गई थी कि कोई पुरुष तम्बाकू उत्पन्न न करे। इसी प्रकार जो लोग उपनिवेशों से जहाजों के लिये चीड़ और अन्य वस्तुयें मँगाते थे उनके साथ सरकार विशेष रियायत करती थी।

जहाजी नियम—जहाजी नियम भी, जो क्रामवेल और चार्ल्स द्वितीय के समय में निर्माण किये गये थे, व्यापार के मार्ग में बाधा डाल रहे थे। यदि उपनिवेशों का कोई व्यापारी एशिया अथवा यूरप से माल मँगाता, तो वह केवल अंग्रेजी जहाजों में आ सकता था। इसके अतिरिक्त इन जहाजों को सीधे अमेरिका न पहुंच कर इङ्गलैण्ड जाना पडता था और वहा से वह अमेरिका जाते थे। इसी प्रकार इङ्गलैण्ड का बनाया हुआ माल केवल अंग्रेजी जहाजों में अमेरिका पहुंच सकता था। यूरप महाद्वीप के जहाज व्यापारी वस्तुयें लेकर वहा तक न पहुंच सकते थे। यदि उपनिवेशों का कोई व्यापारी अपना माल बिक्री के लिए यूरप भेजना चाहता तो वह भी अंग्रेजी जहाजों में इङ्गलैण्ड हो कर जाता था।

इन बाधाओं से उपनिवेशो को बहुत हानि हुई। उनकी आर्थिक दशा बिगड गई। आर्थिक दशा के बिगड जाने के कारण सोना चांदी के सिक्को का ह्रास हो गया और कागज के नोटों से धन की पूर्ति की जाने लगी। न्यूयार्क में तम्बाकू तथा बलाव के ऊन से सिक्को का कार्य्य लिया जाने लगा। इन कुरीतियों के दूर करने के लिये अंग्रेजी सरकार ने सन् १७४४ ई० में कई नियम बनाये, परन्तु इन से कोई विशेष लाभ न हुआ। केवल यही नहीं, किन्तु इन नियमो के बन जाने से उपनिवेश, अङ्गरेजों से प्रथम से अधिक शत्रुता मानने लगे। इसके कुछ वर्ष उपरान्त सप्तवर्षीय युद्ध आरम्भ हुआ। इसमें उपनिवेशो की सेना ने अंग्रेजी सेना से मिल कर फ्रांसीसियों के विरुद्ध युद्ध किया। इसका एक मुख्य परिणाम यह हुआ कि दोनों एक दूसरे की निर्बलता से भली भांति परिचित हो गये। युद्ध

के अन्त हो जाने पर उपनिवेशों को एक विशेष निश्चिन्तता प्राप्त हुई। जब तक पूर्वी कनाडा फ्रांसीसियों के अधिकार में था, उपनिवेशों का सदा यह भय लगा रहता था कि कहीं ऐसा न हो कि फ्रान्सीसी दक्षिण की ओर बढ़ कर उन्हें पराजित करने की चेष्टा करें। जब सप्तवर्षीय युद्ध में वुल्फ ने पूर्वी कनाडा पर विजय प्राप्त कर ली तो उपनिवेशों का भय दूर हो गया। उन्हें स्वतन्त्रतापूर्वक आन्तरिक विषयों की ओर ध्यान देने और अंग्रेजी सरकार के शासन में त्रुटियां निकालने का अवसर प्राप्त हो गया।

ग्रेन्विल का स्टाम्प एक्ट, १७६५ ई०—उपरोक्त युद्ध के कारण अंग्रेजी सरकार पर बहुत ऋण हो गया था। उसका कथन था कि यह युद्ध उपनिवेशों की भलाई के लिये लड़ा गया था, अतएव उन्हें ऋण के चुकाने में भाग लेना चाहिये। प्रधान मन्त्री ग्रेन्विल (१७६३–१७६५) ने ऋण चुकाने के लिये कुछ रुपया सालाना उपनिवेशों पर लगाना चाहा, परन्तु वह इस में सफल न हुआ। तब उसने एक स्टाम्प एक्ट (Stamp Act) पास किया जिसके अनुसार उपनिवेशों में अदालती कागजों पर टिकट लगने लगे। जितना धन टिकटों से आता, वह सब इङ्गलैण्ड भेज दिया जाता था। ऋण चुकाने के अतिरिक्त अंग्रेजी सरकार इस रुपये का एक भाग उपनिवेशों को जंगली जातियों के धावों से सुरक्षित रखने में व्यय कर देती थी। यद्यपि ग्रेन्विल ने यह प्रतिज्ञा की थी कि जब उपनिवेश इन दो बातों के लिये किसी अन्य रीति से धन देना स्वीकार कर लेंगे तो टिकटों का कर बन्द कर दिया जायगा, तो भी इस कर का लगाना अङ्गरेजी प्रधान मन्त्री की अल्पबुद्धि का उदाहरण था। उपनिवेशों ने मेल कर के इस कर को हटाने की चेष्टा की, और इङ्गलैण्ड में ह्विगदल के प्रसिद्ध नेताओं में से बर्क, फाक्स और चैटम ने पार्लियामेण्ट में ग्रेन्विल की राजनीति के विरुद्ध सम्मति दी। अन्त में प्रधान मन्त्री राकिंघम (१७६५–१७६६) ने स्टाम्प एक्ट रद्द कर दिया, परन्तु इस दावे

को बनाये रक्खा कि अंग्रेजी सरकार को उपनिवेशों पर कर लगाने का अधिकार प्राप्त है। इस प्रकार अंग्रेजी सरकार ने जो कुछ एक हाथ से प्रदान किया वह दूसरे हाथ से ले लिया।

कागज, रोगन और चाय की चुङ्गी—राकिंघम के पतन पर चैटम (१७६६—१७६८) प्रधान मन्त्री बना। वह प्राय गठिया के रोग से पीड़ित रहता था। देश प्रबन्ध का अधिकम उसके आधीन मन्त्री करते थे। टाउनशेण्ड (Townshend) नामी मन्त्री ने, जो कोष विभाग की देख भाल करता था, चैटम की अनुपस्थिति में यह नियम बना दिया कि भविष्य में जो कागज, चाय और रोगन उपनिवेशों में आवेंगे उन पर बन्दरगाहों में उतरते समय चुङ्गी लगेगी। जब चैटम को इस नियम की सूचना मिली तो उसे बड़ा दु:ख हुआ। इसके पश्चात् जब इङ्गलैण्ड और अमेरिका दोनों में इस नियम का विरोध होने लगा तो लॉर्ड नॉर्थ (१७७०—१७८१) ने कागज और रोगन पर चुङ्गी लेना बन्द कर दिया, परन्तु चाय पर चुङ्गी प्रचलित रक्खी। शोक है कि सरकार की समझ में यह बात न आती थी कि उपनिवेशों को कर के न्यून अथवा अधिक होने की लेशमात्र चिन्ता नहीं है और वे केवल कर लगाये जाने के सिद्धान्त के विरुद्ध हैं। उपनिवेश यह दलील उपस्थित करते थे कि हम अंग्रेजी पार्लियामेण्ट के लिये सदस्य नहीं भेजते अतएव वह हम पर कर नहीं लगा सकती है। अंग्रेजी सरकार को चाहिये कि वह चाय की चुङ्गी, भी हटा ले।

बोस्टन बन्दर की घटना, १७७३ ई०—जब चाय की चुङ्गी न हटी तो उपनिवेश समझ गये कि अंग्रेजी सरकार अपनी कुरीतियों को न त्यागेगी। अमेरिका के नवयुवक जो फ्रान्स के दर्शनशास्त्र की पुस्तकों का अध्ययन पूर्णरूप से कर चुके थे, इङ्गलैण्ड से युद्ध छेड़ने को तत्पर हुये। उन्हों ने कई अफसरों के घरों में आग लगा दी। बोस्टन

बन्दर में उपनिवेशों के व्यापारियों और सरकारी अफसरों में कई वार झगड़े हुये। दैवयोग से इसी समय बोस्टन के गवर्नर के हस्तलिखित कुछ ऐसे पत्र उपनिवेशों के हाथ लगे जो उस ने उन की प्रतिभा के विरुद्ध लिख कर अपने नातेदारों और मित्रों के लिये इङ्गलेण्ड भेजे थे। उपनिवेशों के निवासियों के क्रोध की सीमा न रही। उन्हों ने चाय पर चुङ्गी देने से साफ जवाब दे दिया। यह देख कर लॉर्ड नॉर्थ ने यह नियम बना दिया कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी की चाय इङ्गलैण्ड आये बिना भारतवर्ष से सीधी अमेरिका जा सकती है। उसने चुङ्गी की दर भी एक शिलिङ्ग से गिरा कर तीन पैंस फी पौण्ड कर दी। अतएव चाय भी सस्ती हो गई। लॉर्ड नॉर्थ सोचता था कि उपनिवेशों के व्यापारी हिन्दोस्तानी चाय सस्ते दामों में मोल लेकर अङ्गरेजी सरकार के कर लगाने के अधिकार को स्वीकार कर लेंगे, परन्तु ऐसा न हुआ। अनेक व्यापारियों ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की चाय को मोल लेना स्वीकार न किया। जिन्हों ने ऐसा नहीं किया उनके घर जला कर राख कर दिये गये और उनके जहाज डुबो दिये गये। जब लार्ड नॉर्थ को इस वृत्तान्त की सूचना मिली तो उसने अपनी भूल स्वीकार न कर के बोस्टन बन्दरगाह को बन्द कर दिया।



जार्ज वाशिंगटन।

फ़िलेडल्फ़िया की कांग्रेस, १७७५ ई०—बोस्टन बन्दर की घटना के दो वर्ष पश्चात् उपनिवेशों ने एक कांग्रेस फिलेडल्फिया में की। उस में जार्जिया के उपनिवेश के अतिरिक्त सम्पूर्ण उपनिवेशों ने भाग लिया। सबों ने एक मत हो यह बात निश्चित की कि सम्पूर्ण नवीन बस्तियाँ आपस में मेल करके इङ्गलैण्ड का विरोध करें। उन्हों ने वर्जीनिया

के एक अमीर जार्ज वाशिङ्गटन-(George Washington) नामक को अपना सेनाध्यक्ष बनाया। वाशिङ्गटन परिश्रमी, वीर और अनुभवी मनुष्य था। वह सप्तवर्षीय युद्ध में भाग ले चुका था। उसने बोस्टन बन्दर के चतुर्दिक् घेरा डाल दिया, परन्तु वह उसके लेने में सफल न हुआ। एक अंग्रेजी अफसर गेज (Gage) नामी ने शत्रु को बङ्कर की पहाड़ी (Bunker's Hill) पर पराजित किया। अंग्रेजी सेना का बहुत बड़ा भाग मारा गया।

स्वतन्त्रा की घोषणा, जुलाई १७७६ ई०—बङ्कर के युद्ध ने अंग्रेजों पर यह बात प्रत्यक्ष कर दी कि उपनिवेशों के सैनिक, जैसा कि वे अनुमान करते थे, नवीन शिक्षित नहीं है। उपनिवेशों की एक सेना ने क्यूबेक शहर पर अधिकार प्राप्त करने की चेष्टा की, परन्तु वह उस पर अधिकार प्राप्त न कर सकी। वाशिङ्गटन और अन्य अनुभवी नीतिज्ञों को इस बात का ध्यान हुआ कि नवीन बस्तियाँ स्वतन्त्र राज्य-शासन स्थापित करें और उसके अधिकार में सब मिल कर एक साथ काम करें। ४ जुलाई सन् १७७६ ई० को उपनिवेशों ने अपनी काम्रेस में स्वतन्त्रता की घोषणा (Declaration of Independence) इस प्रकार की कि " १४ जुलाई से उपनिवेश इङ्गलैण्ड की सरकार के शासन से स्वतन्त्र हो जायँगे क्योंकि वे स्वतन्त्र होने के योग्य हैं। अङ्गरेजों को चाहिये कि उपनिवेश छोड़ कर इङ्गलैण्ड अथवा कनाडा की ओर प्रस्थान कर जायें"। स्वतन्त्रता की घोषणा से उपनिवेशों में प्रेम का तो अवश्य सञ्चार हुआ, परन्तु सम्पूर्ण नवीन बस्तियों का प्रबन्ध करने के लिये एक गवर्नमेण्ट स्थापित न हो सकी। इसी वर्ष उपनिवेशों ने तीन दूत फ्रांस भेजे। इन में से एक बेञ्जिमन फ्रैङ्कलिन-(Benjamin Franklin) नामी पुरुष था। इन दूतों के फ्रॉस पहुँचने के पहले जार्ज तृतीय की भेजी हुई दो सेनायें अमेरिका पहुँच चुकी थीं।

सेराटोगा की पराजय, १७७७ ई०—प्रथम सेना लॉर्ड 'हो' (Howe) के आधिपत्य में थी। दूसरी सेना बर्गोयन (Burgoine) के आधिपत्य में थी। लार्ड 'हो' ने वीरतापूर्वक युद्ध करके न्यूयार्क पर अधिकार कर लिया। परन्तु सेनापति बर्गोयन लार्ड 'हो' की भाँति दृढ़ तथा साहसी न था। वह कनाडा होता हुआ उपनिवेशों की ओर बढ़ा। ज्यों ज्यों वह आगे बढ़ता था त्यों त्यों उसकी सेना का भी ह्रास होता जाता था। उसे पूर्ण आशा थी कि लार्ड 'हो' उसके लिये न्यूयार्क से सेना भेजेगा, परन्तु 'हो' ने ऐसा न किया। परिणाम यह हुआ कि सेराटोगा के स्थान पर शत्रुओं की सेना ने बर्गोयन को घेर लिया। अंग्रेजी सेनापति उनके सम्मुख न ठहर सका। उस ने पाँच सहस्त्र सैनिकों के साथ पराजय स्वीकार कर ली।

फ्रांस और स्पेन का युद्ध में सम्मिलित होना—सेराटोगा की पराजय ने युद्ध का परिणाम स्पष्ट कर दिया। इसके पश्चात् उपनिवेशों का साहस धीरे २ बढ़ता गया और अङ्गरेजी सरकार का साहस कम होता गया। फ्रेङ्कलिन की चेष्टा से इङ्गलैण्ड के प्राचीन शत्रु अर्थात् फ्रांस तथा स्पेन भी उपनिवेशों की ओर से युद्ध करने को तत्पर हो गये। उन्होंने कुछ सेनायें अमेरिका भेजीं और उपनिवेशों की सहायता ऐसी वीरता से की कि अन्त में वे विजयी हुये।

चैटम की मृत्यु—इसके पहिले कि इङ्गलैण्ड फ्रांस और स्पेन के विरुद्ध कोई कार्य्य करे, चैटम अथवा बड़े पिट की मृत्यु हो गई। चैटम का कथन था कि उपनिवेश इङ्गलैण्ड की पार्लियामेण्ट में सदस्य नहीं भेजते, अतएव अङ्गरेजी सरकार उन पर कोई आन्तरिक कर नहीं लगा सक्ती। यदि वह चाहे तो व्यापारिक वस्तुओं पर चुङ्गी लगा सक्ती है। चैटम उपनिवेशों से युद्ध करने के विरुद्ध था, परन्तु जब उसने देखा कि इङ्गलैण्ड के प्राचीन शत्रु अर्थात् फ्रांस और स्पेन उपनिवेशों से आ मिले

है तो उसने अपनी धारणा बदल दी। कारण यह था कि चैटम की इच्छा थी कि इङ्गलैण्ड फ्रांस और स्पेन से पराजय स्वीकार न करे। अतएव जब ७ अप्रैल सन् १७७८ ई० को हाउस ऑफ लॉर्डस में यह प्रस्ताव उपस्थित हुआ कि उपनिवेशों को स्वराज्य दे दिया जाय और अंग्रेजी सेनायें अमेरिका से लौटा ली जाँय तो चैटम और कुछ अन्य सदस्यों ने उसका आवेगपूर्ण विरोध किया। चैटम हाउस ऑफ लॉर्ड्स गया और इस विषय में एक व्याख्यान दिया। ज्योंही व्याख्यान का अन्त हुआ वह काँपता हुआ पृथ्वी पर गिर पड़ा। छोटा पिट बड़ी कठिनाई से उसे घर ले गया। कुछ दिनों के पश्चात् बड़े पिट की मृत्यु हो गई।

युद्ध का अन्त—चैटम की मृत्यु के पश्चात् चार वर्ष तक बराबर युद्ध होता रहा। फ्रांस और स्पेन के सम्मिलित हो जाने से अमेरिका के अतिरिक्त पश्चिमी द्वीपसमूह, भारतवर्ष और यूरप में भी युद्ध छिड़ गया था। अंग्रेजों की जान घोर सङ्कट में थी। न उनके पास योग्य अफसर थे और न उनको कोई सहायता ही देने वाला था। वे अकेले कई देशों से युद्ध कर रहे थे, अतएव वे कई स्थानों पर पराजित हुये। मानर्का का द्वीप अङ्गरेजों के हाथों से निकल गया, परन्तु जनरल रोडने (General Rodney) ने फ्रांसीसियों को द्वीप से निकाल दिया। फ्रांसीसी भारतवर्ष में मरहटों और हैदरअली से सन्धि करके अपना कार्य्य पूर्ण करने में संलग्न थे, परन्तु वारेन हेस्टिङ्गज ने उनका विरोध प्रबलता पूर्वक किया। अमेरिका में वाशिङ्गटन ने अङ्गरेजी अफसर कार्नवालिस को यार्कटाउन में थलमार्ग से घेर लिया। जलमार्ग से फ्रांसीसी जहाज अङ्गरेजी सेना पर बराबर गोलों की वर्षा कर रहे थे। अतएव कार्नवालिस को पराजय स्वीकार करनी पड़ी। यार्कटाउन की विजय को अमेरिका के इतिहास में वही स्थान प्राप्त है जो क्रेसी और पोइटियर्स ने फ्रान्स के इतिहास में पाया है, अथवा जो प्लासी का युद्ध अंग्रेजी

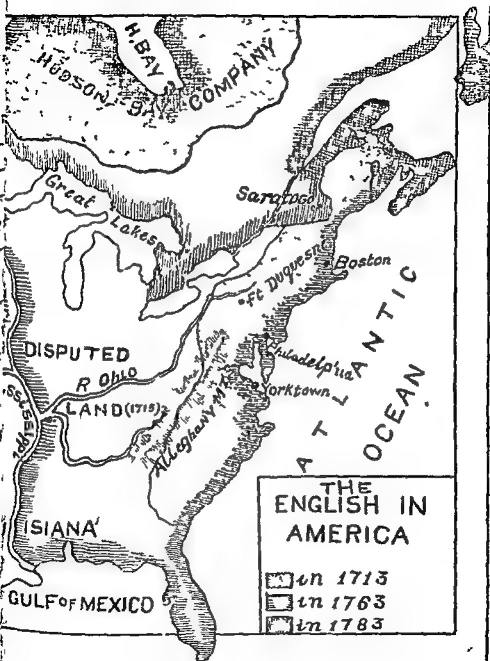
इतिहास में रखता है। इसके पश्चात् अंग्रेजी सरकार ने अपनी सेनायें अमेरिका से लौटा लीं और उपनिवेशों से सन्धि कर ली।

वारसेल्स की सन्धि, १७८३ ई०—इङ्गलेण्ड, फ्रांस, स्पेन और उपनिवेशों के मध्य एक सन्धिपत्र फ्रांस के प्रसिद्ध नगर वारसेल्स में लिखा गया जो पेरिस के नितान्त समीप स्थित है। उपनिवेशों को स्वराज्य मिल गया। वही तेरह उपनिवेश जो पहले एक दूसरे से पृथक थे, परन्तु जिन्हों ने कुछ समय पश्चात् मेल करके अंग्रेजों को अपने देश से बाहर निकाला था, आधुनिक काल में "अमेरिका के संयुक्त प्रदेश (United States of America)" के नाम से प्रसिद्ध हैं। वे केवल स्वतन्त्र ही नहीं हैं वरन् वे अंग्रेजी व्यापार का विरोध बड़े भयङ्कर रूप से कर रहे हैं। उपनिवेशों की देखादेखी कनाडा के निवासी भी स्वतन्त्रता प्राप्त करने के स्वप्न देखने लगे। अमेरिका की स्वाधीनता के युद्ध के कारण इङ्गलैण्ड और फ्रांस की प्राचीन शत्रुता ने और भी भयङ्कर रूप धारण कर लिया। यूरप के राजाओं ने इस युद्ध से यह शिक्षा ग्रहण की कि यदि वे सब एक होकर स्वतन्त्रता चाहने वाली जातियों को पराजित न करेंगे तो उनकी शक्ति शीघ्र ही नाश हो जावेगी। फ्रांसीसी विद्रोह तथा नैपोलियन के समय में उन्हें इस शिक्षा पर कार्य्य करने का अवसर मिला।

(स) फ्रांसीसी क्रान्ति (१७८९—१७९३)।

फ्रांसीसी क्रान्ति १७८९ ई० में आरम्भ हुई। इस में फ्रांसीसी जाति ने राजा के विरुद्ध युद्ध किया। जाति की ओर से फ्रांसीसी सेना, मध्यम श्रेणी के मनुष्य और अन्य देश के स्वतन्त्र विचार के मनुष्य थे। राजा के सहायक धनाढ्य पुरुष, नवाब और यूरप के राजा थे।

फ्रांस की सामाजिक दशा— फ्रांस की सामाजिक दशा शोचनीय थी। यहाँ पर फ्यूडलिज्म का अभी तक ज़ोर था। यद्यपि नवाब कई


H. BAY
HUDSON BAY COMPANY
Great Lakes
Saratoga
Ft Duquesne
Boston
ATLANTIC OCEAN
DISPUTED
R Ohio
LAND (1715)
Philadelphia
Yorktown
Allegheny Mts
ISIANA
GULF OF MEXICO
THE ENGLISH IN AMERICA
in 1713
in 1763
in 1783

अमेरिका में अंग्रेज ।

कारणों से शक्तिहीन हो गये थे, तथापि वे बेचारे कृषकों पर अनेक अन्याय कर रहे थे। प्राय० वे उनका पैदा किया हुआ सम्पूर्ण नाज छीन लिया करते थे। किसानों को आज्ञा थी कि आटा केवल अपने नवाब की चक्की में पिसावें। जब कभी नवाब के यहाँ विवाह संस्कार होता, तो कृषकों को उसके व्यय के लिये कुछ धन देना पड़ता था। वे तीतर, बटेर कबूतर, हिरन और अन्य पशुओं को अपने खेतों से बाहर न कर सकते थे क्योंकि ऐसा करने से नवाब के आखेट में विघ्न पड़ता था। कृषकों को कई अनुचित कर नवाब तथा सरकार को देने पड़ते थे जिनके कारण उनके पास भोजन तक को न बचता था *।

कृषकों की भांति अन्य मनुष्यों की अवस्था भी शोचनीय थी। मध्यम श्रेणी के मनुष्यों को राजमन्त्री तथा अन्य राजकर्मचारी बिना अभियोग लगाये ही राजा की आज्ञा से कारागृह का दण्ड दे देते थे। बहुधा ऐसे पुरुषों को समस्त जीवन कारागृह ही में व्यतीत करना पड़ता था। गिर्जा के छोटे कर्मचारियों को वेतन कम मिलता था, परन्तु काम सब से अधिक करना पड़ता था। बड़े पादरी कामचोर, आलसी तथा सुखप्रिय होने के कारण आमोद प्रमोद में जीवन बिताते थे।

फ्रांस की सरकार उपरोक्त सामाजिक बुराइयों के दूर करने का यत्न कर रही थी। फ्रांस का राजा सोलहवाँ लुई (Louis XVI) कहने को तो नवयुवक होने के कारण राज का भार उठाने के योग्य न था,

* एक अंग्रेजी यात्री आर्थर यंग (Arthur Young) नामी ने फ्रांस की आर्थिक दशा का वर्णन स्पष्ट रूप से किया है। माण्टोबन के गाँव के विषय में यंग लिखता है—"दरिद्र मनुष्यों के पास वास्तव में आवश्यक पात्र तक नहीं हैं। लड़के फटे वस्त्र धारण किये रहते हैं, इस से तो यही अच्छा था कि वे नितान्त नग्न रहते। जूतों और मोजों को लोग भोगविलास की वस्तुयें समझते थे"।

परन्तु वह सामाजिक बुराइयों के दूर करने के पक्ष में था । उसके मन्त्री टर्गो (Turgot) और नेकर (Necker) इस विषय मे सम्पूर्ण परिश्रम कर चुके थे। परन्तु सरकार की आर्थिक दशा के बुरे होने के कारण वे सफल न हो सके थे। जब राजा तथा मन्त्रीगण समाज सुधार न कर सके तो फ्रांसीसी कवि, विज्ञानियों तथा अन्य विद्वानों ने ऐसा करना निश्चय किया । इन विद्वानों में सुप्रसिद्ध विज्ञानी रूसो (Rousseau) तथा वाल्टेर (Voltaire) हैं। रूसो सामाजिक तथा राजनैतिक और वाल्टर धार्मिक बुराइयों के दूर करने का मार्ग बता रहा था । इनकी पुस्तकें पढ़ कर मनुष्यों से सहन न हो सका। उन्होंने राजा को सारी बुराइयों का कारण ठहराया, अत वह उसे हटा कर स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने का उपाय सोचने लगे। हाल ही में ये अमेरिका की ओर स इङ्गलैण्ड से युद्ध करके उपनिवेशों को स्वतन्त्रता दिला चुके थे । अत उनका साहस अधिक बढ़ा हुआ था। युद्ध के समाप्त होने पर जब बेञ्जमिन फ्रैंकलिन और अन्य दो दूत उपनिवेशों की ओर से फ्रांस पधारे तो फ्रांसीसियों ने इन महान् पुरुषों का सब प्रकार से आदर किया और उन से स्वतन्त्रता के युद्ध की कथायें सुन कर बहुत लाभ उठाया । वे भी अपने राजा से राज्य छीनने का प्रयत्न करने लगे।

फ्रांसीसी राष्ट्र की विजय, १७८९-९३—फ्रांसीसियों ने परिस को राजनैतिक आन्दोलन का केन्द्र बनाया। पेरिस की देखादेखी अन्य नगरों तथा उपनगरों में भी राजनैतिक सभायें स्थापित हुईं। ५ मई १७८९ ई० में फ्रांस की पार्लियामेण्ट (States General) की १७५ वर्ष के पश्चात् पहली बैठक हुई। उसने कई आवश्यक सुधार करके सोलहवें लुई के विरुद्ध युद्ध करने की घोषणा की। राष्ट्रीय दल वालों ने सरकारी कारागृह बेस्टाइल (Bastille) को परास्त करके बन्दियों को स्वतन्त्र कर दिया। बेस्टाइल बोरबूनवंश के अत्याचार तथा दुराचार का

चिह्न समझी जाती थी । उसके जीते जाने से यूरपवासियों ने यह फल निकाला कि फ्रास के राजा के बल तथा अत्याचार का अन्त हो गया है। अन्त में दुःखी होकर सोलहवें लुई ने अपनी स्त्री मेरी एण्टोइनेट (Marie Antoinette) के कहने से उसके भाई आस्ट्रिया के राजा के पास भाग जाने का प्रयत्न किया, परन्तु फ्रासीसी उसे कुटुम्ब सहित उत्तर पूर्वी सीमा से पकड़ कर पेरिस ले आये । यदि लुई ऐसी भूल न करके इङ्गलैण्ड के राजा विलियम तृतीय की भांति राष्ट्र के कहने के अनुसार चलता तो उसे कदापि नीचा न देखना पड़ता । उसके भागने के प्रयत्न से प्रजा के क्रोध की सीमा न रही। उन्हों ने दो बार उसके भवनों पर आक्रमण करके प्रत्येक प्रकार से उसका अनादर किया । सितम्बर सन् १७९२ ई० में विद्रोहियों ने राजा के सहायकों को पेरिस तथा अन्य नगरों में सहस्रों की सख्या में मार डाला । इसके कुछ दिवस पश्चात् उन्होंने राजा के पद को स्थगित करके स्वतन्त्र सरकार (Republic) स्थापित की । इस पर भी सोलहवें लुई ने विदेशों से पत्र-व्यवहार बन्द न किया । धीरे २ फ्रास की नवीन सरकार गर्म दलवालों के हाथों में आ गई । उन्होंने राजपक्षियों का बध करने के लिये एक विचित्र हत्याकाण्ड रचा । सहस्रों धनाढ्य तथा सामन्त बिना अपराध बध कर दिये गये। जनवरी सन् १७९३ ई० में सोलहवें लुई की बारी आई । इस मास में विद्रोहियों ने उसे और इसके नौ मास पश्चात् उसकी स्त्री, दोनों को ससार से विदा कर दिया ।

लुई के बध से सारे यूरप में हाहाकार मच गया । यूरप के समस्त राजा फ्रास के विद्रोहियों को परास्त करके पुनः राजपद स्थापित करने का उपाय करने लगे । आस्ट्रिया तथा प्रशिया के राजा तो पिछले छै मास से फ्रास के विद्रोहियों से युद्ध कर रहे थे। अब फ्रासीसी राष्ट्र ने स्वय अपनी ओर से इङ्गलैण्ड, हालैण्ड और स्पेन से लुई के बध से प्रतिकूलता दिखाने के कारण युद्ध आरम्भ करने की घोषणा की ।

इङ्गलैंएड और फ्रांसीसी क्रान्ति--फ्रासीसी क्रान्ति के प्रारम्भ होते समय इङ्गलैण्ड निवासियों ने सोचा था कि यह एक साधारण विद्रोह है और एक दो मास में समाप्त हो जावेगा । ह्विगदल ने उसके साथ सहानुभूति प्रकट की । इसके नेता जेम्स फाक्स ने बैस्टायल के विजय हो जाने का समाचार सुन कर कहा --"यह ससार की सबसे महान् तथा उपयोगी घटनाओ में से है'। छोटे पिट ने स्वय फ्रासीसी क्रान्ति का तमाशा शान्तिपूर्वक देखा । उसे विश्वास था कि यूरपीय महाद्वीप मे १५ वर्ष तक बराबर शान्ति स्थापित रहेगी । अत उसने बहुत से व्यापारिक कर हटा दिये और युद्ध सामग्री भी कम कर दी । जो पत्र छोटे पिट ने इस समय अपनी माता को लिखे उन से स्पष्ट प्रकट है कि वह इङ्गलैण्ड को फ्रास की अद्भुत घटनाओं का तमाशा दूर ही से दिखाना चाहता था । यही विचार वाह्यनीति के मन्त्री ग्रेन्विल के भी थे । यह अंग्रेजी प्रधान मन्त्री तथा ग्रेन्विल की बडी भूल थी जो वे इस प्रकार निश्चिन्त बैठे रहे जब कि पास ही ऐसी घटनाये हो रही थीं जिन से समस्त यूरुप कम्पायमान हो रहा था ।

जैसे २ समय व्यतीत होता गया इङ्गलैण्डवासियों के विचारों में परिवर्तन होता गया । कुछ मास में इङ्गलैण्ड फ्रास का शत्रु हो गया । उसकी शत्रुता के कई कारण थे । इङ्गलेण्ड में पूर्वकाल से राजपद स्थापित था । फ्रास का विद्रोह राजपद नष्ट करने के अभिप्राय से हो रहा था । फ्रांस के विद्रोही इङ्गलैण्ड में भी विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित करना चाहते थे । अत छोटा पिट उनका शत्रु था । नवम्बर सन् १७९० ई० में ह्विगदल के एक प्रसिद्ध सभासद ने, जिसका नाम बर्क था, एक पुस्तक फ्रासीसी विद्रोह पर लिखी । इसमें उसने इस महान् विद्रोह को एक नये रूप में प्रकट किया । इसको पढ कर इङ्गलैण्डवासी क्या, अन्य देशवासी भी विद्रोह के शत्रु बन गये । बहुत से फ्रासीसी प्राण बचा कर

इङ्गलैण्ड भाग गये थे। उनकी भयानक कथायें सुन कर इङ्गलैण्डवासियों को रोमाञ्च होने लगा। सितम्बर के वध की सूचना पा कर उनके हृदय में लुई के पक्षपातियों के लिये और भी अधिक दया उत्पन्न हुई। उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त कई अन्य कारण भी ऐसे हैं जिनसे इङ्गलैण्ड की सरकार फ्रांसीसी क्रान्ति के विरुद्ध हो गई। नवम्बर सन् १७९२ में विद्रोहियों ने इस बात की घोषणा की कि वे उन जातियों को सहायता देने के लिये उद्यत हैं जो अपने राजा के विरुद्ध युद्ध करके राजपद नष्ट किया चाहती है। इस घोषणा से यूरप का कोई राजा निर्भय होकर जीवन व्यतीत न कर सकता था। फ्रांसीसी सेनाओं ने बेलजियम पर अधिकार कर लिया था और वे हालैण्ड पर आक्रमण करने की चिन्ता में मग्न थीं। बेलजियम पर अधिकार करने के समय उन्हों ने यह घोषणा की कि वहां की प्रसिद्ध नदी शेल्ड से प्रत्येक देश के व्यापारी व्यापार कर सकते थे। यह बात इङ्गलैण्ड तथा हालेण्ड में एक सन्धिपत्र द्वारा निश्चित हो चुकी थी कि शेल्ड नदी से इङ्गलेण्ड, हालैण्ड तथा बेलजियम के सिवा कोई देश व्यापार न करेगा। सन १७८१ ई० में फ्रांस ने स्वय यह प्रतिज्ञा स्वीकार करली थी। जब फ्रांस की सरकार ने शेल्ड नदी से प्रत्येक देश को व्यापार करने की आज्ञा दे दी, तो इङ्गलैण्ड के व्यापार की बडी हानि हुई। अतः छोटे पिट को फ्रांस से युद्ध करने का विचार हुआ। अभी वह फ्रांस पर धावा करने की इच्छा से आस्ट्रिया तथा प्रशिया से पत्र व्यवहार ही कर रहा था कि उसे सोलहवें लुई के वध की सूचना मिली। इस सूचना को पाकर विलियम पिट ने क्या, वरन् समस्त इङ्गलैण्ड ने फ्रांस से युद्ध करने का दृढ विचार कर लिया।

छोटे पिट की युद्धनीति—छोटा पिट अपने पिता के समान युद्धविद्या में निपुण न था। स्थल पर युद्ध करना उसे बहुत कम आता था। न वह विलियम तृतीय के समान वीर ही था और न मार्लबरो की

भांति चतुर तथा साहसी। पिट वालपाल के समान शान्ति-प्रिय मन्त्री था। अतः वह शान्तिनीति में बहुत सफल हुआ, जैसा कि पहले वर्णन कर आये हैं। सन् १७९२ में जब उसे फ्रांसीसी विद्रोहियों से युद्ध करना पड़ा तो वह उस में सफल न हुआ। उसने आस्ट्रिया, प्रशिया, हालैण्ड, स्पेन तथा सार्डीनिया से मिल कर विद्रोहियों से युद्ध करने को पहला यूरुपी संघ (First Coalition) बनाया। जल पर युद्ध करने और अपने मित्रों को स्थल पर युद्ध करने के लिये धन भेजने का भार छोटे पिट ने अपने ऊपर लिया। इसके अतिरिक्त उसने उन्हें युद्ध के लिये धन उधार देना भी स्वीकार कर लिया। पिट का यह आदर्श बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण है। इङ्गलैण्ड धनी देश था। उसकी जलसेना भी अच्छी थी, परन्तु मनुष्य संख्या कम होने के कारण इङ्गलैण्ड सहस्त्रों मनुष्यों को स्थल पर युद्ध करके नष्ट न कर सकता था। मित्रों को धन भेजने के कारण छोटे पिट को बहुधा ऋण लेना पड़ा और उस पर बहुत ब्याज देना पड़ा। यह पिट की भूल थी जो वह करों के द्वारा युद्ध का व्यय न निकालना चाहता था।

यूरुपी संघ ने फ्रांसीसी विद्रोहियों से बड़ी वीरता से युद्ध आरम्भ किया। प्रथम छै मासों में उनकी बराबर विजय होती रही। इसके पश्चात् स्थल पर कई स्थानों में उनकी पराजय हुई। फ्रांस का युद्धमन्त्री कारनो (Carnot) बड़ा वीर तथा चतुर था। फ्रांसीसी सेनायें अपने देश की स्वतन्त्रता के लिये युद्ध कर रहीं थीं। अतः उनके बल तथा उत्साह की सीमा न थी। मित्रों की सेनायें उनके सामने न ठहर सकीं। शत्रुसेनाओं ने स्पेन की सेनाओं को पिरेनीज पर्वत के उस पार लौटा दिया। इङ्गलैण्ड तथा हालैण्ड की सेनाओं की प्रत्येक स्थान पर हार हुई। यही नहीं, वरन् हालैण्ड पर भी शत्रु का अधिकार हो गया। प्रशिया ने अपनी सेनायें रणक्षेत्र से फेरलीं। इस प्रकार स्थल पर मित्रों की

प्रत्येक स्थान पर पराजय हो रही थी। इसके प्रतिकूल जल पर बराबर उन की विजय हो रही थी। अङ्गरेज़ी जलसेना ने फ्रांस के कई उपनिवेश छीन लिये थे। कोर्सिका का द्वीप भी अङ्गरेजों के अधिकार में आगया था। छोटे पिट की भेजी हुई जलसेना ने जो लार्ड 'हो' (Lord Howe) की अध्यक्षता में थी, शत्रु को जून सन् १७९४ ई० में फ्रांस के पश्चिमी किनारे पर विजय किया। लार्ड 'हो' अनाज के कुछ जहाज़ों पर, जो अमेरिका से फ्रांस आ रहे थे, अधिकार करने आया था। परन्तु वह ऐसा न कर सका।

सन् १७९५ ई० में प्रशिया और स्पेन ने युद्ध में भाग लेना बिल्कुल बन्द कर दिया। हालैण्ड पर फ्रान्स का अधिकार हो चुका था। अब केवल इङ्गलेण्ड, आस्ट्रिया तथा सार्डीनिया युद्ध करने को रह गये थे। यह बताने के पूर्व कि इन देशों ने फ्रान्स से किस प्रकार युद्ध किया हमको अपनी दृष्टि उस सैनिक के जीवन पर डालनी चाहिये जिसने आकर फ्रान्स के विद्रोह को आदर दिलाया और जिसने बारह तेरह वर्ष के भीतर अपने को उस उच्च पद पर पहुँचा लिया कि जिसे देख कर प्रत्येक मनुष्य ने दाँतों तले अँगुली दबा ली। यह सैनिक संसार का महान् पुरुष नैपोलियन बोनापार्ट (Napoleon Bonaparte) था।

(द) नैपोलियन बोनापार्ट का उत्थान।

नैपोलियन का प्रारम्भिक जीवन तथा स्वभाव—नैपोलियन बोनापार्ट १५ अगस्त सन् १७६९ में कोर्सिका नामक टापू में पैदा हुआ था। उस के माता पिता इटैली के निवासी थे। उसके पिता कोर्सिका में वकालत करते थे। उसकी आय बहुत कम थी और कुटुम्ब बहुत बड़ा था। जब नैपोलियन दस वर्ष का हुआ तो उसके पिता उसे फ्रान्स लिवा गये और वहाँ ब्रीन (Brienne) नगर में उसे एक सैनिक

पाठशाला में भर्ती करा दिया। इस पाठशाला में अधिकतर धनाढ्यों के लड़के पढ़ते थे। नेपोलियन का पिता धनहीन था। नैपोलियन की आकृति भी इस समय विशेष सुन्दर न थी। अत जब तक वह ब्रीन की पाठशाला में रहा उसके साथी उसे सदा कष्ट देते रहे और उसकी हँसी उड़ाते रहे। कोर्स से बाहर किताबों के पढने का उसे बड़ा चाव था। गणित में वह प्रथम रहता था। इतिहास तथा भूगोल पढने में भी अच्छा था। प्राय मनुष्य उसे पाठशाला से दूर खेतों तथा बागों में पढता हुआ पाते थे।

जब नेपोलियन को ब्रीन की पाठशाला में शिक्षा पाते ५ वर्ष व्यतीत हो गये तो फ्रांस की सरकार ने उसे सेना का लेफ्टीनेण्ट नियुक्त कर दिया। शिक्षा का उत्सुक तो वह था ही, इस पद पर रह कर उसने अत्यन्त शीघ्र वे समस्त बातें रणनैपुण्य की जान लीं जो एक उच्च पदाधिकारी को जानना चाहिये। सन् १७९३ ई० में उसने अंग्रेजों को तूलन के बन्दरगाह से भगा कर फ्रान्सीसियों की रक्षा की। इसके दो वर्ष पश्चात् उसने फ्राँस की सरकार को पेरिस नगर में शत्रुओं से मुक्त कराया।

नेपोलियन जैसे योधा ससार में बहुत कम हुये हैं। बड़ होने पर उसका मुखाकृति सुन्दर तथा प्रभावशाली होगई थी। उसका बदन शक्तिशाली तथा सुडौल था। उसकी आवाज भी ऊँची तथा तेज थी। रणजीतसिंह की भांति उसकी आँखों से तेज बरसता था। नेपोलियन साधारण खाना और साधारण वस्त्र पसन्द करता था। युद्धविद्या में वह निपुण था। बलवान् तथा परिश्रमी होने के अतिरिक्त वह साहस का पूरा था। ऊँचे २ बर्फ से ढके पर्वतों पर शीतकाल में यात्रा करना, गोलियों की बौछार में ऊपर तक भरी हुई नदियों को तैर कर पार करना और रणक्षेत्र में लड़ते २ अकेले शत्रुसेना में चला जाना, बोनापार्ट के लिये साधारण बातें थीं। उसके ऊपर चाहे कैसा ही संकट क्यों न होता वह साहस

कभी न त्यागता था । जब अधिक आराम करने का अवकाश न मिलता, तो वह रणक्षेत्र ही में घोड़े की पीठ पर लेट कर मिनट दो मिनट के लिये सो



नैपोलियन बोनापार्ट ।

कर आराम कर लिया करता था। यह पिट की भांति वह सेना के छोटे से छोटे विभाग का प्रबन्ध स्वयं करता था। यही कारण है जो उसके सैनिक अफसर साउन्ट इत्यादि जहां कहीं जाते, अधिकतर विजयी होते थे।

नैपोलियन की इटेली की यात्रा, १७९६--९७ ई०— सन् १७९६ ई० में फ्रांस की सरकार ने नैपोलियन को सार्डीनिया तथा आस्ट्रिया से युद्ध करने को इटेली भेजा। उसके साथ ही साथ दो अन्य फ्रांसीसी सेनानायक आस्ट्रिया पर आक्रमण करने को पूर्व की ओर से वेना की ओर बढ़े। इटेली में नैपोलियन ने वीरता से काम लिया। उसने सार्डीनिया के राजा को परास्त करके आस्ट्रिया की सेनाओं का सामना किया। वे भी प्राण बचा कर भाग गईं। सार्डीनिया तथा मिलन पर उसका अधिकार हो गया। वह मिलन से आस्ट्रिया की ओर बढ़ा। उधर वे, दो सेनानायक, जो फ्रांस से सीधे आस्ट्रिया की ओर बढ़ रहे थे, वेना नगर के समीप पहुंच गये थे। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो फ्रांसीसी सेनायें शीघ्र ही इस नगर पर अधिकार कर लेंगी, परन्तु ऐसा होने के पूर्व फ्रांस और आस्ट्रिया में सन्धि हो गई। नैपोलियन अपनी सेनाओं सहित इटेली होता हुआ फ्रान्स लौट आया।

विन्सेण्ट अन्तरीप व केम्परडाउन के युद्ध, १७९७ ई०— इङ्गलैण्ड के अतिरिक्त फ्रान्स अपने प्राचीन शत्रुओं में से सब पर विजय प्राप्त कर चुका था। यही नहीं, वरन् उसके पुराने शत्रुओं में से स्पेन और हालैण्ड उसकी ओर से युद्ध करने को अग्रसर थे। इङ्गलैण्ड का सहायक कोई भी न था। अतः विलियम पिट बड़े सङ्कट में था। फ्रांस की सरकार स्पेन तथा हालैण्ड की जलसेनाओं को बुला कर इङ्गलैण्ड पर आक्रमण करने का उद्योग कर रही थी। अतः छोटे पिट ने समुद्र पर कई स्थानों में सेनायें इस हेतु रख छोड़ी थीं कि स्पेन, हालैण्ड तथा फ्रांस के बेड़ों को आपस में मिलने का अवसर प्राप्त न हो। उसे भय था कि यदि

तीनों बेड़े मिल जावेंगे तो वे अवश्य इङ्गलेण्ड पर आक्रमण करने का उद्योग करेंगे। इन सेनाओं में से एक जर्विस (Jervis) की अध्यक्षता में स्पेन के दक्षिणी पश्चिमी ओर और द्वितीय डङ्कन (Duncan) की अध्यक्षता में हालेण्ड के सम्मुख प्रस्तुत थी। जर्विस ने अवसर पा कर स्पेन की सेना को विन्सेण्ट अन्तरीप (Cape St Vincent) के समीप परास्त किया। इस युद्ध में एक अंगरेजी सैनिक ने, जिसका नाम नेल्सन (Nelson) था, विशेष रणनैपुण्यता दिखलाई। यही सेनानायक कुछ समय पश्चात् इङ्गलेण्ड के लिये गौरव का कारण प्रमाणित हुआ।

इसके पहले कि डङ्कन की जलसेना, जो हालैण्ड के सामने नियुक्त थी, कोई कार्य्य करे नोर (Nore) तथा स्पिटहेड (Spithead) की सेनाओं से, जिन्हें छोटे पिट ने फ्रांसीसियों के आक्रमण को रोकने के लिये नियुक्त किया था, विद्रोह के समाचार आये। डङ्कन के जहाजों में से बहुत से उसे अकेला छोड़ कर विद्रोहियों से जा मिले, परन्तु उसने साहस को न त्यागा। वह बराबर अपने झण्डे हिलाता रहा। हालैण्डवाले समझे कि डङ्कन झण्डे हिला कर एक अंग्रेजी बेड़े को बुला रहा है जो छोटे पिट ने उसकी सहायतार्थ भेजा है। ईश्वर का धन्यवाद है कि नोर और स्पिट हेड के विद्रोह शीघ्र ही शान्त हो गये और डङ्कन के विद्रोही जहाज भी हालेण्ड लौट गये। जैसे ही हालैण्ड का बेड़ा फ्रांस जाने को बन्दरगाहों से बाहर आया वैसे ही डङ्कन ने उसे केम्परडाउन के स्थान पर परास्त करके पीछे हटा दिया। यदि नोर तथा स्पिटहेड के विद्रोह कुछ समय तक और शान्त न होते तो डच जहाज सफलतापूर्वक फ्रांस पहुँच जाते।

विन्सेण्ट अन्तरीप और केम्परडाउन के युद्धों के कारण फ्रांस की सरकार ने इङ्गलैण्ड पर आक्रमण करने के स्वप्न देखना छोड़ दिया। उत्तरी समुद्र, अंग्रेजी नहर और एटलाण्टिक सागर में अंग्रेजी जलसेना का आधिपत्य बना रहा, परन्तु रूमसागर पर सब प्रकार से फ्रांस की जलसेना का

अधिकार हो चुका था। सन् १७९८ ई० में फ्रांस की सरकार ने नेपोलियन को पूर्वी देश विजय करने के लिये मिश्र भेजने का निश्चय किया। इसका एक मुख्य कारण यह था कि बोनापार्ट की इटैली प्रदेश की विजयों को देख कर फ्रांसवासी उसे राजप्रबन्ध सौंपना चाहते थे। फ्रांस की सरकार डरी हुई थी और उसे फ्रांस में न रखना चाहती थी। अतः उसने उसे मिश्र विजय करने को भेजा।

नैपोलियन की मिश्र की यात्रा, १७९८ ई०—१९ मई सन् १७९८ को नेपोलियन चालीस हजार सेना लेकर तूलन के बन्दरगाह से मिश्र को चला। मार्ग में माल्टा का द्वीप अंग्रेजों के अधिकार में था। नैपोलियन ने युद्ध करके उसे अपने अधिकार में कर लिया। तत्पश्चात् वह मिश्र की ओर बढ़ा। मिश्र इस समय एक मुसल्मानी जाति मेम्लूक (Memluke) नामक के अधिकार में था। काहिरा के पश्चिम की ओर सुल्तान की सेना ने नपोलियन का सामना किया। रणक्षेत्र के समीप अनेकों प्राचीन मीनारें थीं। अतः यह युद्ध मीनारों के युद्ध (Battle of the Pyramids) के नाम से प्रसिद्ध है*। सुल्तान पराजित हुआ। नैपोलियन ने तुरन्त काहिरा नगर पर अधिकार कर लिया। उसने मिश्र में फ्रांसीसियों का एक उपनिवेश जमाने का प्रयत्न किया, परन्तु वह सफल न हुआ।

नील नदी का युद्ध, १ अगस्त १७९८ ई०—इसी बीच में नेल्सन को, जिसे छोटे पिट ने एक शक्तिशाली सेना देकर रूमसागर में नियुक्त किया था नैपोलियन के मिश्र में होने की सूचना मिल चुकी थी। वह तुरन्त सेना लेकर सिकन्दरिया की ओर बढ़ा। इस समय नैपोलियन

* युद्ध आरम्भ होने के पूर्व नेपोलियन ने अपने सैनिकों के आगे एक भाषण दिया जिस में उसने कहा—"सैनिको, याद रक्खो कि सामने वाली मीनारों से ४० शताब्दियाँ तुम्हारी ओर देख रही हैं"।

काहिरा नगर में था। नेल्सन ने कुछ अंग्रेजी जहाज थल की ओर भेजे, जिन्होंने फ्रांसीसी जहाजों और किनारे के मध्य में जाकर उन पर गोले बरसाना आरम्भ किया। दूसरी ओर से भी अंग्रेजी तोपें चलीं। इस प्रकार फ्रांसीसी बेड़ों पर दोनों ओर से गोले बरसने लगे। तीन घण्टे तक घोर संग्राम होने पर नेल्सन की विजय हुई। एक फ्रांसीसी जहाज में आग लग गई। लगभग १२ जहाज या तो डूब गये अथवा शत्रु के अधिकार में आ गये। नैपोलियन की सेना को बड़ी हानि पहुची।

साहस न त्याग कर नेपोलियन वीरतापूर्वक स्थल मार्ग से पूर्व की ओर बढ़ा। जाफा नगर को जीत कर उसने ऐकर नगर को चारों ओर से घेर लिया, परन्तु उसका लेना कठिन था। अत नैपोलियन को निराश होकर मिश्र लौट आना पड़ा। वहाँ उसे सूचना मिली कि फ्रांस की दशा अत्यन्त शोचनीय है। सरकारी कोष खाली है। सरकार का चारों ओर अपमान हो रहा है और उसके शत्रुओं ने पुन उसके प्रतिकूल युद्ध आरम्भ कर दिया है। इस सूचना को पाकर नैपोलियन अक्टूबर सन् १७९९ ई० में फ्रांस लौट आया। सरकार को शक्तिहीन पाकर उसने स्वय को तलवार के जोर से सब से बड़ा पदाधिकारी (First Consul) बना लिया। राज्य का सारा प्रबन्ध उसी के अधिकार में आ गया।

दूसरे युरुपीय संघ का युद्ध, १७९९ ई० — फ्रांस में वास्तव में नेपोलियन जैसे बलशाली शासक की आवश्यकता थी। फ्राँस की आन्तरिक अवस्था ही बुरी न थी, जैसा कि ऊपर वर्णन हुआ है, वरन् बोनापार्ट के मिश्र देश से लौटने के पूर्व इङ्गलेण्ड, रूस, आस्ट्रिया तथा टर्की ने छोटे पिट के कहने से दूसरा यूरपीय सघ (Second Coalition) बना कर जर्मनी, स्विटजरलेण्ड तथा इटैली में फ्राँसीसी सेनाओं पर विजय प्राप्त कर ली थी। उत्तरी इटैली, जिसे नैपोलियन ने इतना परिश्रम उठा कर जीता था, फ्राँस की सरकार के अधिकार से निकल

गई थी । अतः फ्रांस के शासन को स्वयं ग्रहण करके नैपोलियन ने दूसरे यूरुपीय संघ से युद्ध करने को तुरन्त सेनायें भेजा । आरम्भ में उनकी प्रत्येक स्थान पर हार हुई, परन्तु इसके पश्चात् उन्हों ने जर्मनी, स्विटजरलैण्ड और इटेली तीनों देशों में शत्रुसेनाओं को परास्त किया । बोनापार्ट ने मैरिंगो (Marengo) के स्थान पर आस्ट्रिया की सेना को परास्त करके उत्तरी इटेली पर पुनः अधिकार कर लिया । यह देख कर रूस के जार और टर्की ने अपनी सेनायें रणक्षेत्र से फेर लीं । सन् १८०१ ई० में आस्ट्रिया के राजा ने भी नैपोलियन से सन्धि कर ली । उत्तरी इटेली फ्रांस का मिल गया ।

आम्येन की सन्धि, १८०२ ई०—जिस वर्ष आस्ट्रिया के राजा तथा नैपोलियन के बीच सन्धि हुई उसी वर्ष इङ्गलैण्ड में छोटा पिट जार्ज तृतीय के कहने से मन्त्रित्व से अलग हो गया । उसके स्थान पर एडिंगटन (Addington) प्रधान मन्त्री बना । एडिंगटन ने फ्रांसीसियों को मिश्र देश से निकाल कर उसे प्राचीन राजा को लौटा दिया । इसके पश्चात् उस ने नैपोलियन से सोम नदी के तट पर आम्येन (Amiens) के स्थान पर सन्धि कर ली । इङ्गलैण्ड को लगभग दस वर्ष के पश्चात् युद्ध से अवकाश मिला । एडिंगटन ने लङ्का तथा ट्रिनीडाड के द्वीपों के अतिरिक्त वे समस्त फ्रांसीसी प्रदेश लौटा दिये जो अब तक इङ्गलैण्ड ने जीते थे । नैपोलियन ने बेल्जियम और हालैण्ड के कुछ भागों के अतिरिक्त, जो राइन नदी के पश्चिम में थे, सारे विजय किये हुये स्थान लौटा दिये । फ्रांस की पूर्वी सीमा राइन नदी से जा मिली । अन्य बातों में भी आम्येन की सन्धि फ्रांस के लिये लाभकारी थी ।

नैपोलियन और तीसरा यूरुपीय संघ, १८०५ ई०—फ्रांस के निवासी नैपोलियन के साहस तथा वीरता को देख कर स्तम्भित रह गये । सन् १८०४ ई० में उन्हों ने अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुये

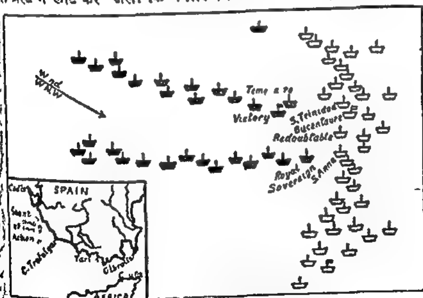
उसे फ्रांस का सम्राट (Emperor) बना दिया। नेपोलियन ने कुछ समय फ्रांस की आन्तरिक दशा सुधारने में लगाया। इसके पश्चात् उसे युद्ध की तैयारी करनी पड़ी। इसका एक मुख्य कारण यह था कि जिस वर्ष नेपोलियन फ्रांस में सम्राट बना उसी वर्ष इङ्गलेण्ड में छोटा पिट दूसरी बार (१८०४–१८०६) प्रधान मन्त्री नियुक्त हुआ। छोटा पिट नेपोलियन का परम शत्रु था। उसे बराबर अपने शत्रु के परास्त करने की चिन्ता लगी रहती थी। अत वह उसके विरुद्ध युद्ध आरम्भ करना चाहता था। उसे बहाना भी शीघ्र मिल गया। फ्रांस ने आम्येन की सन्धि का अनुकरण न किया था। अत. पिट ने सन् १८०५ ई० में आस्ट्रिया, रूस तथा स्वीडेन से मिल कर बोनापार्ट से युद्ध करने को तीसरा यूरपीय संघ (Third Coalition) बनाया। फ्रांस का सम्राट युद्ध करने को पहले ही से उद्यत था। चोसला और अन्य फ्रांसीसी मन्त्रियों की भाँति वह भी इङ्गलेण्ड पर आक्रमण करने के स्वप्न देख रहा था।

बोनापार्ट का इङ्गलैण्ड विजय करने का उद्योग— अपने मनोर्थ को पूर्ण करने के उद्योग में बोनापार्ट ने एक विशाल सेना बूलों नगर में एकत्रित की। इस सेना को इङ्गलैण्ड में उतारने को उसने २००० नावों का एक समूह बनाया, परन्तु अंग्रेजी नहर को पार करना बच्चों का खेल न था। अङ्गरेजी सेना सब प्रकार से उद्यत थी। नावों की रक्षा करने के लिये यह आवश्यक था कि नैपोलियन अपनी सेना को इङ्गलैण्ड पहुचाते समय अपनी जलसेना से काम ले*। ऐसा किये बिना फ्रांसीसी सेना का इङ्गलैण्ड तक पहुँचना असम्भव था। अतः नैपोलियन ने फ्रांसीसी बेड़ों को, जो ब्रेस्ट तथा तलन के बन्दरगाहों में नियुक्त थे, बुला भेजा, परन्तु अङ्गरेजी जहाज जो नेटसन के आधिपत्य में थे, उनको

* नैपोलियन का कहना था कि यदि मैं अङ्गरेजी नहर पर छै घण्टे के लिये अधिकार कर लूँ तो मैं संसार विजय कर सकता हूँ।

बाहर न निकलने देते थे। महीनों पर्यन्त फ्रांसीसी सेना उनकी प्रतीक्षा में बूलों के चारों ओर पड़ी रही, परन्तु वे कहीं भी दिखाई न दिये।

ट्रैफैलगार का ऐतिहासिक युद्ध, अक्टूबर १८०५ ई०— फ्रांसीसी बेड़ों के न आने का यह कारण था कि अङ्गरेजी जलसेना का सेनापति नेल्सन, जिसने नैपोलियन को सन् १७९८ में नील नदी के युद्ध में परास्त किया था, तूलन के बेड़े को जो विलेनो (Villaneau) के सेनापतित्व में था, बाहर न निकलने देता था। अतः वह ब्रेस्ट के बेड़े से मिलने और उसके साथ अङ्गरेजी नहर में प्रवेश करने का अवकाश न पाता था। जब समय बहुत व्यतीत हो गया तो विलेनो नैपोलियन की सम्मति से नेल्सन को धोखे में डालने के लिये अपनी सेना सहित पश्चिमी द्वीपों की ओर चल पड़ा। नेल्सन भी उसके पीछे गया, परन्तु पश्चिमी द्वीपों से ब्रेस्ट न लौट कर जैसी कि नेपोलियन की आज्ञा थी, विलेनो ने फ्रांस



ट्रैफैलगार का युद्ध।

काले रंग के जहाज अङ्गरेजों के हैं, सफेद शत्रु के हैं।

के मित्र स्पेन के बन्दरगाह केडिज मे शरण ली । नेल्सन भी विलनो की खोज में पश्चिमी द्वीपों से लौट आया और फ्रांस तथा स्पेन के बेड़ों को ट्रैफ़ेलगार नामी अन्तरीप के समीप ऐसा पराजित किया कि उनके सारे जहाज नष्ट हो गये, परन्तु नेल्सन स्वयं युद्ध करता मृत्यु को प्राप्त हुआ। नेल्सन की यह विजय मिश्र की विजय से भी अधिक प्रसिद्ध तथा प्रभावशाली है । शत्रुसेना को नष्ट करने के अतिरिक्त इसका विजय ने अङ्गरेजी बेडे का आधिपत्य पूर्ण रीति से जमा दिया । अब नैपोलियन ने इङ्गलैण्ड के व्यापार को हानि पहुचा कर उसे नीचा दिखाने का निश्चय किया। उसने विवश हो वृलों की सेना को पूर्व की ओर बढने की आज्ञा दी । इन दोनों बातों से कुछ समय पश्चात् बोनापार्ट के पतन का मार्ग खुला ।

नैपोलियन की विजय—कठिन मार्गों को पार करके नैपोलियन फ्रांसीसी सेना सहित डेन्यूब नदी के किनारे पहुचा । आस्ट्रिया के प्रसिद्ध नगर उल्म पर अधिकार करके नैपोलियन राजधानी वेना की ओर बढा । वह भी उसके अधिकार में आ गई । इसके पश्चात् नैपोलियन ने आस्ट्रिया तथा रूस की सेनाओं को आस्टरलिट्ज (Austerlitz) के स्थान पर परास्त किया । इस युद्ध से तीसरे यूरुपीय संघ का अन्त हो गया । रूस के जार ने तुरन्त अपनी सेना जर्मनी मे लौटा ली । आस्ट्रिया के राजा ने, जो जर्मनी का सम्राट भी था, नेपोलियन से सन्धि कर ली । जो अपमान नैपोलियन का ट्रैफ़ेलगार के युद्ध से हुआ था वह आस्टरलिट्ज के युद्ध से दूर हो गया । छोटे पिट को आस्टरलिट्ज की पराजय की सूचना प्राप्त होने पर इतना शोक हुआ कि उसकी मृत्यु हो गई* । उसने तीन यूरुपीय संघों की रचना करके नैपोलियन को

*युद्ध की सूचना पाने के समय सामने लटके हुये यूरुप के चित्र को देख कर पिट ने कहा—"यूरुप के इस चित्र को लपेट कर रख दो । हमें एक शताब्दि तक इसकी आवश्यकता न होगी' ।

पराजित करने का भरसक प्रयत्न किया था, परन्तु अंग्रेजी सेना के शक्तिशाली न होने, मित्रमण्डल में एका न होने, और नैपोलियन के शूरवीर तथा रणनिपुण होने के कारण पिट अपने शत्रु पर विजय प्राप्त न कर सकता था। तिस पर भी नील नदी और ट्रैफ लगार जैसी विजय छोटे पिट के महत्त्व के प्रमाण हैं।

आस्टरलिट्ज से प्रस्थान करके नेपोलियन उत्तर की ओर बढ़ा। प्रशिया तथा रूस के राजाओं को हरा कर ७ जुलाइ सन् १८०७ ई० को टिलसिट (Tilsit) के स्थान पर उसने सन्धिपत्र लिखा लिया। सन्धि की समस्त प्रतिज्ञायें नैपोलियन ने अपनी इच्छानुसार रक्खीं। आस्ट्रिया के राजा के समान प्रशिया तथा रूस के राजाओं ने भी उसे अपना सम्राट स्वीकार कर लिया।

नैपोलियन की शक्ति का शिरोविन्दु, १८०६ ई०—

अब नैपोलियन का सामना करने को इङ्गलण्ड के सिवा कोई देश न बचा था। इटैली तथा जर्मनी के अधिकतर भाग उसके आधीन थे। स्विटजरलैण्ड भी नैपोलियन के अधिकार में आ चुका था। हालैण्ड में उसका भाई लुई राज्य कर रहा था। वेल्जियम फ्रांस में सम्मिलित कर लिया गया था। चारों ओर नैपोलियन के यश का डङ्का बज रहा था। इङ्गलैण्ड, डैनमार्क, नार्वे, स्वीडेन और टर्की के अतिरिक्त यूरप का समस्त प्रदेश नैपोलियन के आधीन थे अथवा उससे युद्ध में हार मान चुके थे। सन् १८०९ के पश्चात् नपोलियन का अध पतन प्रारम्भ हुआ। उसके महत्त्व का नक्षत्र जो इतने ऊँचे पर चमक रहा था, सन् १८०० ई० के पश्चात् सदा के लिये अस्त हो गया।

Under French Rule
Under French Protection
Allied to France
Route to & from Moscow
The Old Roman or German Empire no longer existed

(र) इङ्गलैण्ड और नैपोलियन के पतन के साधन (१८०६–१८१५)।

नैपोलियन के प्राचीन शत्रुओं में केवल इङ्गलैण्ड एक ऐसा था जिसका वह अभी तक कुछ न बिगाड पाया था। सन् १७९८ ई० में उसने मिश्र जीत कर भारतवर्ष पहुँचने और अंग्रेजों का पूर्व में नीचा दिखाने का उद्योग किया था, परन्तु वह सफल न हो सका था। इसके उपरान्त उसने सन् १८०५ ई० में इङ्गलैण्ड पर आक्रमण करने का पूर्ण प्रबन्ध किया, परन्तु इस में भी उसे सफलता प्राप्त न हुई थी। नैपोलियन भली भाँति जानता था कि इङ्गलैण्ड का बल तथा महत्व व्यापार पर निर्भर है। अत उसने इङ्गलैण्ड के व्यापार को हानि पहुचा कर उसे नीचा दिखाने की ठानी। यह उद्योग निराश जुआरी का अन्तिम दाँव था।

निराश जुवारी का अन्तिम दांव—नैपोलियन ने सन् १८०६ ई० और सन १८१० ई० के बीच कई बार इङ्गलैण्ड से व्यापार बन्द करने के अभिप्राय से घोषणायें प्रकाशित कीं। इन म से तीन बहुत प्रसिद्ध हे जो बर्लिन, वारसा और मिलन के नगरों में प्रकाशित हुईं। इन घोषणाओं द्वारा फ्रास के सम्राट् न अपने मित्रों से इस बात की शपथ ली कि वे इङ्गलैण्ड से तनिक भी व्यापार न करेंगे। जहाँ कहीं इङ्गलैण्ड का व्यापारिक माल मिलेगा उसे अपने अधिकार में कर लेंगे और जहाँ कहा अंग्रेज मिलेंगे वे उन्हे बन्दी कर लेंगे। अंग्रेजी सरकार ने भी इन घोषणाओं का उत्तर घोषणाओं द्वारा दिया। उसने भी अपने मित्रों से फ्रास तथा उसके मित्रों से व्यापार न करने और उनके व्यापार को हानि पहुँचाने की प्रतिज्ञा कराई। इङ्गलैण्ड तथा फ्रास का एक दूसरे के व्यापार को हानि पहुँचाने का यह प्रबन्ध 'काण्टीनेण्टल सिस्टम' (Continental System) कहलाता है। परन्तु मित्रों को जाने दीजिये, फ्रास और इङ्गलैण्ड स्वय इन प्रतिज्ञाओं का पालन न कर सके। इन देशों के

व्यापारिक विरोध से समस्त संसार के व्यापार को हानि पहुँची। इङ्गलैण्ड से व्यापारिक विरोध कर लेने में नेपोलियन की बड़ी भूल थी। इसके कारण आस्ट्रिया, प्रशिया, रूस, और अन्य मित्र, जो अभी तक उसके आगे शीश झुकाते थे, व्यापारिक हानि का सहन न करने के कारण उसके विरोधी हो गये और इङ्गलैण्ड से मिल कर उसे परास्त करने का अवसर खोजने लगे।

आईबेरियन प्रायद्वीप का युद्ध, १८०८–१८१४ ई०—प्रथम इसके कि ये देश नैपोलियन के विरुद्ध पुनः शस्त्र उठायें, उसकी सेनायें स्पेन प्रायद्वीप में पराजित हो चुकी थीं। अन्य देशों की भांति सन् १८०७ ई० में बोनापार्ट ने पुर्तगाल के राजा से इङ्गलैण्ड से व्यपार बन्द करने को कहा। पुर्तगाल इङ्गलैण्ड का परम मित्र था। अतः उसके राजा ने फ्रांस के सम्राट की आज्ञा न मानी। नैपोलियन ने क्रोधित होकर फ्रांसीसी सेना भेज कर पुर्तगाल पर अधिकार कर लिया। इसके उपरान्त उसने स्पेन के राजा चार्ल्स चतुर्थ को सिंहासन से उतार कर अपने भाई जोजफ को राजा बना दिया। शत्रु के इन अनुचित कार्यों का समाचार पाकर लॉर्ड कैनिङ्ग (Lord Canning) से, जो इङ्गलैण्ड में वाह्यनीति का मन्त्री था, सहन न हो सका। उसने एक सेना सर आर्थर वेल्जली (Sir Arthur Wellesley) के आधिपत्य में नैपोलियन की सेनाओं को आईबेरियन प्रायद्वीप से निकाल देने को पुर्तगाल भेजी। वेल्जली ने आते ही फ्रांसीसी सेना को विमीरो (Vimoiro) के स्थान पर परास्त करके पुर्तगाल से निकाल दिया। स्पेन में जोजफ वेलन के स्थान पर स्पेन वासियों के हाथों परास्त हुआ। उसे राजधानी मेड्रिड छोड़ कर उत्तर की ओर भाग जाना पड़ा।

फ्रांसीसी सेनाओं के पुर्तगाल तथा स्पेन दोनों में परास्त होने की सूचना पाकर नेपोलियन स्वयं स्पेन आया और जोजफ को पुनः

मॅड्रिड नगर पर अधिकार प्राप्त कराया। मेड्रिड से वह दक्षिण की ओर बढ़ना चाहता था, परन्तु इसी बीच में उसे सूचना मिली कि आस्ट्रिया वाला उसके विरुद्ध युद्ध करने को उत्सुक हो रहे हैं। यह सूचना पाकर वह उत्तर की ओर चल दिया। मार्ग मे एक अंग्रेजी सेना से



आयबेरियन प्रायद्वीप का युद्ध, १८०८–१८१४ ई०।

मुठभेड़ हुई, जो अङ्गरेजी सेनापति सर जॉन मूर (Sir John Mooro) की अध्यक्षता मे थी। अङ्गरेजी सेना लड़ने का साहस न करके भाग खड़ी हुई। नैपोलियन ने उसका पीछा एस्टोर्गा (Astorga) नगर तक

किया इसके पश्चात् वह उसे एक फ्रांसीसी सेनानायक के आधिपत्य मे छोड कर जिसका नाम साउल्ट (Soult) था , आस्ट्रिया के राजा से युद्ध करने को मध्य यूरप की ओर चला गया। आस्ट्रिया का राजा सन् १८०९ ई० मे वेग्रम (Wagram) के स्थान पर परास्त हुआ। उसने अपने राज्य के कई बहुमूल्य भाग नैपोलियन को दे दिये । अङ्गरेजी सरकार ने एक सेना बेल्जियम के प्रसिद्ध नगर एण्टवर्प पर गोलों की वर्षा करने को भेजी, परन्तु वह वाल्करन (Walcheren) के द्वीप मे आगे न बढ सकी । सर जान मूर एसटोर्गा नगर से भाग कर कोरूना (Corunna) के बन्दरगाह में जा पहुचा जो स्पेन के उत्तर पश्चिम के कोने में स्थित है। सन् १८०९ ई० में उसने यहाँ साउल्ट की सेना को पराजित किया। परन्तु वह युद्ध में मारा गया। वीर सैनिकों ने उसे किसी प्रकार शान्तिपूर्वक रणक्षेत्र में ही दफनाया। इसका विस्तृत वर्णन एक अग्रेजी कवि वुल्फ (Wolfe) नामक नें किया है* मूर के मरजाने मे सैनिकों की हिम्मत टूट गई। अत॰ वे जहाजों पर चढ कर इङ्गलैण्ड भाग गये साउल्ट ने ओपोर्टो पर अधिकार कर लिया। अपनी पराजय होते देख अग्रेजी सर्कार ने सर आर्थर वेट्ज़ली को पुन पुर्तगाल भेजा। लिस्बन नगर में पहु च कर वह सीधा ओपोर्टो की ओर बढा और फ्रांसवासियों को नगर से बाहर निकाल दिया। इसके पश्चात्- वह राजधानी मेड्रिड का लेने की इच्छा से पूर्व की ओर बढा। मार्ग मे टालावेरा (Talavera) स्थान पर फ्रासीसी सेना से, जो विक्टर (Victor) की अध्यक्षता में थी, युद्ध हुआ। वेल्ज़ली ने शत्रु को पराजित

* जो कविता वुल्फ ने इस विषय पर लिखी है उसका एक पद इस प्रकार है —

We buried him darkly at dead of night
The sods with bayonets turning,
By the struggling moonbeam's misty light
And the lantern dimly burning"

किया । अङ्गरेजों का अधिकार जिब्राल्टर और केडिज बन्दरगाहों के अति रिक्त लगभग समस्त दक्षिणी स्पेन पर होगया । अङ्गरेजी सरकार वेल्जली से इतनी प्रसन्न हुई कि उसने उसे लॉर्ड वेलिङ्गटन (Lord Wellington) की उपाधि प्रदान की ।

युद्ध के अन्तिम क्षेत्र—जब नेपोलियन ने देखा कि उसकी सेनायें स्पेन तथा पुर्तगाल में चारों ओर पराजित हो रही हैं, तो उसने लाचार होकर सन् १८१० ई० में अपने प्रसिद्ध जनरल मेसिना (Messina) को वेलिङ्गटन से युद्ध करने को स्पेन भेजा । इस समय वेलिङ्गटन लिस्बन नगर में था । वह जानता था कि मेसिना कैसा वीर और अद्वितीय जनरल है । अतः उसने अपनी रक्षा के लिये लिस्बन नगर के चारों ओर तीन दृढ़ दीवारें बना ली थीं जो इतिहास में टारेस वेड्रास (Torres Vedras) की भीतों के नाम से प्रसिद्ध हुई । मेसिना लिस्बन गया और कई महीनों तक भीतों के बाहर पड़ा रहा, परन्तु वह उन को न ले सका । अतः उसे लाचार होकर स्पेन लौट आना पड़ा । यह देख कर वेलिङ्गटन मेसिना से युद्ध करने की इच्छा से उत्तर पूर्व की ओर बढ़ा । उसने फुएण्ट्स डि ओनोरो (Fuentes de Onoro के स्थान पर मेसिना से वीरतापूर्वक युद्ध किया । मेसिना परास्त हुआ । अंग्रेजी सेनाओं ने स्यूदाद राड्रिगो के चारों ओर घेरा डाल दिया । कुछ काल के पश्चात् वेलिङ्गटन ने गढ़ जीत लिया । बेडाजोज (Bedajoz) का ऐतिहासिक गढ़ भी अंग्रेजों के अधिकार में आ गया । नेपोलियन ने विवश होकर मेसिना को स्पेन से लौटा लिया ।

स्यूदाद राड्रिगो और बेडाजोज के गढ़ों के मिल जाने से वेलिङ्गटन को स्पेन की ओर बढ़ने का अवसर मिला । वह सेना लेकर उत्तर-पूर्व की ओर गया और सलामका के स्थान पर फ्रांसीसी सेना को पराजित करके मेड्रिड की ओर बढ़ा । उसके आने की सूचना पाकर जोजफ

उत्तर की ओर भाग गया। दक्षिणी स्पेन भी फ्रांसीसियों के हाथ से निकल गया। वेलिङ्गटन जोजफ की खोज में उत्तर की ओर बढ़ा और बर्गोज (Burgos) के चारों ओर घेरा डाल दिया परन्तु वह उसे न ले सका। अतः निराश होकर उसे पुर्तगाल लौट जाना पड़ा। वेलिङ्गटन का पुर्तगाल में प्रवेश करना था कि जोजफ ने पुनः मेड्रिड पर अधिकार कर लिया।

वेलिङ्गटन ने लेशमात्र साहस न छोड़ा। सन् १८१३ ई० में सेना लेकर वह एक बार पुर्तगाल से उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ा। इस बार वह विटोरिया नगर तक पहुँच गया, जो बर्गोज के उत्तर-पूर्व की ओर ऐब्रो नदी की उत्तरी घाटी में स्थित है। यहाँ पर उसने जोजफ का परास्त किया। जोजफ प्राण बचा कर फ्रांस लौट गया। स्पेन के उत्तरी प्रान्त भी वेलिङ्गटन के अधिकार में आ गये। अंग्रेजी सेनापति का साहस इतना बढ़ा कि उसने अवसर पाकर दक्षिण की ओर से फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। इसी बीच में उत्तरी यूरप में भी नैपोलियन का भाग्य नक्षत्र अस्त हो चुका था।

आईबेरियन प्रायद्वीप का युद्ध इङ्गलैण्ड और नैपोलियन के पारस्परिक विरोध में एक उच्च स्थान रखता है। व्यापारिक युद्ध में इङ्गलैण्ड को नीचा न दिखा सकने के कारण नेपोलियन की शक्ति अन्त क्षीण हो गई थी। पुर्तगाल तथा स्पेन में पराजित होने के कारण उसका बल और भी घट गया। न उसके पास धन बचा था और न पर्याप्त सेनायें। समस्त यूरप जान गया कि जल स्वामी इङ्गलैण्ड स्थल स्वामी नेपोलियन को स्थल पर भी हरा सकता है। यूरप की शक्तियाँ, जिन्हें बोनापार्ट ने अपने आधीन कर लिया था, उसके विरुद्ध शस्त्र उठाने का उद्योग करने लगीं। सब से पहले रूस ने, जो नैपोलियन की व्यापारिक नीति से दुखित हो गया था, उससे युद्ध करने के लिये सेनायें सँभालीं।

नैपोलियन और ज़ार का युद्ध, १८१२ ई०— यह देख नैपोलियन ने एक महती सेना एकत्रित की, जिस में भिन्न २ जातियों सैनिक सम्मिलित थे। इनकी संख्या चार लाख से किसी प्रकार कम थी। इस सेना को लेकर नैपोलियन रूस की राजधानी मास्को की ओर बढ़ा और बोरोडीनो (Borodino) नगर में पहुँचा जो मास्को से लगभग ९० मील पश्चिम की ओर है। यहाँ उसकी और ज़ार की सेनाओं के बीच पहला युद्ध हुआ। ज़ार की सेना पराजित हुई। फ्राँसीसी सेना भी बड़ी संख्या में मारी गई। इसके पश्चात् नैपोलियन पूर्व की ओर बढ़ा और मास्को पर अधिकार कर लिया। ज़ार तथा उसके राजकर्मचारी पहले ही से मास्को छोड़ कर चले गये थे। एक दिन उन्होंने नगर में आग लगा दी जिससे फ्रासीसी सेना की बड़ी हानि हुई। इसके अतिरिक्त शरद ऋतु भी समीप थी। नैपोलियन को भय था कि कहीं ऐसा न हो कि उसकी समस्त सेना रूस की बर्फ से ढक कर नष्ट हो जावे। अतः उसने मास्को से फ्रांस लौटना निश्चित किया।

जो आपत्तियां फ्रासीसी सेना पर मास्को से फ्रांस लौटते समय पड़ीं वे कदाचित ही किसी सेना पर पड़ी हों। जाड़े की ऋतु थी, चारों ओर देश बर्फ से ढका था। भोजन को जाने दीजिये, फ्रासीसियों के पास वस्त्र तक पर्याप्त संख्या में न थे। सैनिक रात्रि को सोते थे और प्रातःकाल मरे हुये मिलते थे। बहुधा उन्हें घोड़ों और कुत्तों के मांस पर दिन काटने पड़ते थे। एक इतिहास लेखक ने यहां तक लिखा है कि कुछ अवसरों पर फ्रासीसियों को मनुष्य तक का मांस खाना पड़ा। मार्ग में अनेकों कष्ट उठा कर नैपोलियन दिसम्बर सन् १८१२ ई० में फ्रांस लौट कर आया।

रूस के युद्ध से नैपोलियन का पतन और भी निकट आ गया। यदि उसकी व्यापारिक नीति उसके पराजय की ज़ंजीर का प्रथम और स्पे

नीय युद्ध द्वितीय छल्ला है, तो रूस के युद्ध को हम उसी जर्जर का तासरा छल्ला कह सकते हैं। नैपोलियन की विशाल सेना को रूस के बर्फील मार्गों में नष्ट होते देख यूरपीय राष्ट्रों का साहस उसका विरोध करने का और भी बढ गया। इन राष्ट्रों में से प्रशिया सब से प्रथम रणक्षेत्र में आई।

प्रशिया की जागृत—कुछ वर्षों से प्रशिया ने बडी उन्नति की थी। उसकी सेना अब प्रथम की भांति दुर्बल न थी। प्रत्येक देश वासी, जो शस्त्र ग्रहण कर सकता था, रणविद्या में दक्ष था, और उन समस्त कलाओं तथा भेदों को जानता था जो रणक्षेत्र में काम आते हैं। प्रजा प्रसन्न, निश्चिन्त तथा सुखी थी। स्थान २ पर विद्याध्ययन होता था। कलाकौशल भी पूर्ण उन्नति कर रहे थे। अतएव प्रशिया अब पहले की अपेक्षा अधिक बली तथा धनाढ्य थी। वहाँ का राजा नैपोलियन से बदला लेने का अवसर खोज रहा था। जब उस ने फ्रांस की महती सेना को रूसी यात्रा में नष्ट होते देखा और जब उसे उसकी अन्य सेनाओं की आयबेरियन प्रायद्वीप में पराजित होने की सूचना मिली तो उसने जार से सन्धि कर ली। इङ्गलैण्ड ने भी सहायता दन का बचन दिया। रूस तथा प्रशिया की सेनायें रणक्षेत्र में आईं, परन्तु नैपोलियन ने उन्हें दो बार परास्त करके तितर बितर कर दिया। इससे प्रकट है कि नैपोलियन बलहीन होने पर भी अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकता था।

लिपज़िगः यूरपीय राष्ट्रों का युद्ध, १८१३ ई०*—इसी बीच में स्पेन का विटोरिया नगर वेलिङ्गटन के अधिकार में आगया था। जब इसकी सूचना आस्ट्रिया के राजा को मिली तो उसने भी रूस, प्रशिया तथा इङ्गलैण्ड से मिल कर नैपोलियन से युद्ध करने की ठानी।

* यह युद्ध इस नाम (Battle of the Nations से प्रसिद्ध है कि इस में कई राष्ट्र सम्मिलित थे।

स्वीडेन भी नेपोलियन के विरुद्ध लड़ने को उद्यत हुआ। इस प्रकार नेपोलियन के प्राचीन शत्रु उस पर विजय प्राप्त करने को पुनः रणक्षेत्र में आए। लिपज़िग (Leipzig) के स्थान पर घोर संग्राम हुआ जो तीन दिन तक बराबर होता रहा। अन्त में नैपोलियन परास्त हुआ। वह बेचारा प्राण लेकर फ्रांस लौट गया।

नैपोलियन का राजपद त्यागना—लिपज़िग के युद्धने नेपोलियन का सत्यानाश कर दिया। आस्ट्रिया, प्रशिया और इङ्गलैण्ड की सेनाओं ने फ्रांस पर उत्तर पूर्व की ओर से आक्रमण किया। दक्षिण में वेलिङ्गटन पिरेनीज पर्वत पार करके पेरिस राजधानी की ओर बढ़ा। पेरिस मित्रों के अधिकार में आ गया। सब ने मिल कर नैपोलियन को फ्रांस छोड़ कर इटली के निकट एल्बा (Elba) द्वीप में जाने और उसे अपना साम्राज्य समझने को विवश किया। फ्रांस में प्रवेश करने के पूर्व एक बार मित्रों ने नैपोलियन को यह सम्मति दी थी कि वह फ्रांस में स्वतन्त्र होकर रहे और उन समस्त देशों को छोड़ दे जो फ्रांस ने पिछले बीस वर्षों में दबा लिये थे, परन्तु यह सम्मति उसने स्वीकार न की थी। अब उसको लाचार होकर एल्बा द्वीप में जीवन व्यतीत करना पड़ा। उसका 'सम्राट' पद पहले की भांति बना था, यद्यपि वह अब यूरप के स्थान में एक छोटे से द्वीप का सम्राट था।

वेना की कांग्रेस, १८१४ ई०—नेपोलियन के चले जाने के पश्चात् मित्रों ने सोलहवें लुई के भाई अठारहवें लुई * को राजा बनाया। इस प्रकार फ्रांस में बोरबून वंश फिर राज्य करने लगा। गत युद्धों के कारण यूरप के चित्र में कई परिवर्तन हो गये थे। अब यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि वे देश जो नेपोलियन ने जीते हैं यूरप के

---

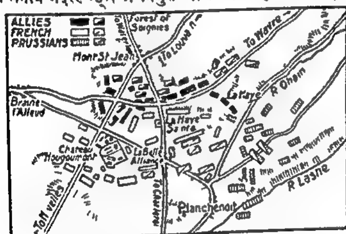
* सोलहवें लुई का पुत्र जो फ्रांसीसी विद्रोह के समय में मारा गया था, सत्रहवें लुई के नाम से प्रसिद्ध है।

राजाओं में किस प्रकार बांटे जावें । इन समस्त झगड़ों को निबटाने के हेतु सितम्बर सन् १८१४ ई० में एक विशाल कांग्रेस वेना नगर में बैठी । इस में यूरप के प्रत्येक देश ने भाग लिया । इङ्गलैण्ड की ओर से लार्ड कास्लरे (Castlereagh) और आस्ट्रिया की ओर से वहाँ का प्रसिद्ध मन्त्री मेटर्निक (Metternich) कांग्रेस में पधारे । रूस, प्रशिया, आस्ट्रिया, डेनमार्क तथा नारवे के राजा स्वयं उपस्थित हुये ।

"सिंह का छूट कर भागना"—वेना नगर की कांग्रेस अभी समाप्त भी न होने पाई थी कि मार्च सन् १८१५ ई० में मित्रों को नैपोलियन के फ्रांस लौट आने की सूचना मिली । सूचना वास्तव में सत्य थी । नैपोलियन ने एक वर्ष के लगभग एल्बा में बड़ी कठिनाई से व्यतीत किया । इसी बीच में उसने फ्रांस आने का उद्योग कर लिया था । एक दिन वह अंग्रेजी जहाज़, जो एल्बा के चारों ओर चक्कर लगाता था और नैपोलियन के आचरण की देख रेख करता था, द्वीप से कुछ दूर चला गया । नैपोलियन को उत्तम अवसर प्राप्त हुआ । अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों से विदा होकर ग्यारह सौ सैनिकों के साथ, जिनको उसने एल्बा में एकत्रित किया था; नेपोलियन फ्रांस की ओर चला । फ्रांस में प्रवेश करना था कि चारों ओर आनन्द के बाजे बजने लगे । फ्रांसीसियों को मेरिंगो तथा आस्टरलिट्ज भली भाँति स्मरण थे । फ्रांसीसी सैनिक भली भाँति जानते थे कि नैपोलियन में अभी वह बल और आवेग वर्तमान है जो एक युद्ध क्या सहस्त्रों युद्ध जीत सकते हैं । जैसे २ नैपोलियन दक्षिणी किनारे से पेरिस की ओर बढ़ता था वैसे २ उसकी सेना भी सहस्त्रों की संख्या में बढ़ती जाती थी । पेरिस में प्रवेश करना था कि चारों ओर से स्वागत के शब्द सुनाई देने लगे । अठारहवें लुई के मन्त्री आदि सब नेपोलियन की ओर हो गये । उसे स्वयं फ्रांस छोड़ कर भाग जाना पड़ा । वही नैपोलियन, जो किसी समय एल्बा टापू में बन्दी था, पुनः फ्रांस

राजसिंहासन पर बैठा। वही बोनापार्ट, जो रूमसागर में अपने
जन के दिन काट रहा था, अब शत्रुओं को परास्त करने का उपाय
चने लगा।

वाटरलू का ऐतिहासिक युद्ध, १८१५ ई०—इसी बीच में
त्रों को नैपोलियन के एल्बा से चले आने और फ्रांस पर पुन अधिकार
लेने की सूचना मिल चुकी थी। वेना की कॉंग्रेस ने उसके प्राण लेने
दृढ विचार कर लिया था। आस्ट्रिया, प्रशिया और रूस की सेनायें
फ्रांस की उत्तरी पूर्वी सीमा पर एकत्रित हुईं। अङ्गरेजी सेना वेलिङ्गटन की
अध्यक्षता में थी। प्रशिया की सेना का सेनापति ब्लूशर (Blucher) था।
नों की सेनायें नेदरलैण्ड्स में नियुक्त थीं। वे चाहते थे कि दोनों मिल



वाटरलू का युद्ध, १८१५ ई०।

कर नैपोलियन पर आक्रमण करें और इसके पूर्व कि उसे सेना एकत्रित करने
का अवसर मिले, उसे परास्त कर लें। परन्तु नैपोलियन उनकी नस नस
पहिचानता था। अभी इङ्गलैण्ड तथा प्रशिया की सेनायें नेदरलैण्ड्स ही
में थीं कि उसने उन पर अचानक आक्रमण कर दिया। ब्लूशर परास्त
हुआ। इसके पश्चात् नैपोलियन अङ्गरेजी सेना का सामना करने के लिये

अग्रसर हुआ। १८ जून सन् १८१५ ई० को वाटरलू के रणक्षेत्र में विरोधी सेनाओं की मुठभेड हुई। युद्ध दिन के ११ बजे प्रारम्भ हुआ। सायकाल के साढेचार बजे तक अकेले अग्रेज नैपोलियन से लडते रहे। इसके पश्चात् प्रशिया की सेनायें भी उन में आ मिलीं। अन्त में नैपोलियन पराजित हुआ। उस की समस्त सेना नष्ट भ्रष्ट हो गई।

नैपोलियन का देशनिर्वासन—वाटरलू का युद्ध नैपोलियन के लिये अन्तिम युद्ध था। अग्रेजों ने उसे बन्दी करके सेण्टहेलीना नामक द्वीप में देश निकाला दे दिया। ५ मई सन् १८२१ को इसी टापू में नैपोलियन की मृत्यु हो गई। नैपोलियन ने अपने जीवन के अन्तिम ६ वर्ष किस प्रकार बिताये, इसका वृत्तान्त हम उसके जीवनचरित्र में पढ सकते हैं जिसका कुछ अश उसने स्वय लिखा और कुछ उन मित्रों तथा सम्बन्धियों से लिखवाया जो अन्तिम घडी तक उसके साथ थे। यह चरित्र मनोहर तथा दु खपूर्ण कहानियों से भरा हुआ है जिसको पढ कर कभी २ आँखों में आँसू भर आते हैं।

पेरिस की सन्धि, १८१५ ई०—नैपोलियन को देश निकाला देकर वेना की काग्रेस पेरिस में उठ आई। यहाँ एक सन्धिपत्र लिखा गया, जिस में यूरप के लगभग सभी बडे देश सम्मिलित हुये। फ्रास का राज्य अठारहवें लुई को पुन दे दिया गया। अग्रेजों को माल्टा तथा मोरीशस द्वीप और केप ऑफ गुड होप (Cape of Good Hope) मिले। हालेण्ड और बेल्जियम को मिला कर एक सुदृढ राज्य बना दिया गया। इसी प्रकार आस्ट्रिया तथा रूस को कई स्थानों में अधिकार प्राप्त हुये। जर्मनी की रियासतों को सम्मिलित करके एक दृढ सघ बनाया गया। परन्तु फ्रास की सीमा वैसी ही रही जैसी फ्रान्सीसी क्रान्ति के आरम्भ होते समय थी।

उपरोक्त प्रतिज्ञाओं में दो विशेष त्रुटियाँ थीं । प्रथम, यूरप की महान् शक्तियों न जातीयता के भावों को ध्यान में न रख कर भिन्न २ राष्ट्रों को सम्मिलित करके उन पर क्रूर राजाओं का शासन स्थापित कर दिया था । द्वितीय, उन्होंने यूरप के किसी भाग में भी प्रजा को शासन प्रबन्ध करने का अवसर न दिया था, यद्यपि नैपोलियन के युद्धों का मुख्य उद्देश्य क्रूर तथा अत्याचारी राजाओं से शासन छीन कर प्रजा को सौंपना था । इन त्रुटियों के कारण सन् १८१५ ई० के पश्चात् अनेकों बार यूरप महाद्वीप में विद्रोह तथा झगडे हुये ।

(ल) नैपोलियन के युद्धों का इङ्गलैण्ड पर प्रभाव ।

नैपोलियन के युद्धों से यूरप के समस्त देशों को हानि पहुँचा, परन्तु इङ्गलैण्ड को अन्य देशों की अपेक्षा अधिक हानि सहन करनी पड़ी । इसका एक मुख्य कारण यह है कि यूरप के अन्य देशों को युद्ध में कभी २ अवकाश मिल जाता था, परन्तु जब से सन् १७९३ ई० में पिट ने फ्रांस के विरुद्ध प्रथम यूरपीय संघ रचा था तब से लगभग ३ वर्ष (१८०२—१८०५) के सिवा इङ्गलैण्ड को युद्ध से अवकाश न मिला था ।

कहने को तो इङ्गलैण्ड को पेरिस के सन्धिपत्र से बहुत कुछ मिला था । उसने अनेकों बहुमूल्य द्वीप अपने अधिकार में कर लिये थे जो व्यापार तथा युद्ध दोनों के लिये अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुये, परन्तु यह कहना कि इङ्गलैण्ड को नैपोलियन के युद्धों से लाभ के सिवा हानि तनिक भी नहीं हुई, नितान्त अनुचित है । कारण यह है कि यदि पेरिस के सन्धिपत्र ने इङ्गलैण्ड को इधर उधर कुछ अधिकार प्रदान किये तो नैपोलियन के युद्धों ने इङ्गलैण्ड को हानि भी बहुत पहुँचाई ।

जनसंख्या—सहस्रों अंग्रेज युद्ध में मारे गये थे । बहुत से वहाँ का चिन्ह तक न रचा था । तिस पर भी सन् १८१५ ई० में बृटिश

द्वीपसमूह की जनसख्या सन् १७९२ की जनसख्या से ३५ प्रति सैकडा अधिक थी। जब तक युद्ध होता रहा, बढी हुई जनसख्या के लिये काम की कमी न थी। सब मनुष्य रात दिन युद्ध सामग्री बनाने में लगे रहते थे और सुख तथा शान्ति से जीवन व्यतीत करते थे। ज्यों ही युद्ध समाप्त हुआ, रणक्षेत्र के लिये मनुष्यों की आवश्यकता किञ्चित मात्र भी न रही। सेना के लिये भोजन सामग्री की भी कम आवश्यकता थी। अब यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि बढी हुई जनसख्या क्या करे और किस प्रकार पेट भरे। स्वाभाविक रीति से मनुष्य भूखों मरने लगे।

इङ्गलैण्ड का व्यापार—व्यापार की भी यही दशा थी जो जनसख्या की थी। युद्ध के दिनों मे व्यापार ने अत्यन्त उन्नति की थी। इङ्गलण्ड में भाति २ के कलाकौशल होने लगे। अनेक जहाज सामान लेकर रणक्षेत्र को जाने लगे। छोटे पिट की सामुद्रिक विजयों के कारण समस्त ससार का व्यापार इङ्गलैण्ड के हाथों में आगया था। जैसे ही युद्ध स्थगित हुआ वैसे ही अग्रेजी व्यापार एक साथ ठण्डा हो गया। नैपोलियन के काण्टीनेण्टल सिस्टम ने भी अग्रजी व्यापारियों को बहुत हानि पहुँचाई थी। परिणाम यह हुआ कि सन् १८१५ ई० के पश्चात् कार्यालय बन्द होने लगे, व्यापारियों के दिवाले निकलने लगे, मजदूर भूखों मरने लगे। इङ्गलैण्ड में एक ओर से दूसरी ओर तक हाहाकार मच गया। हाल ही में कारखानों में मशीनों का प्रचार हुआ था जिसके कारण मजदूरों की आवश्यकता और भी कम हो गई थी। परिणाम यह हुआ कि मजदूरों का जीवन अत्यन्त कठिन हो गया।

सरकारी ऋण—नैपोलियन के युद्धों का प्रभाव केवल इङ्गलैण्ड निवासियों पर ही न पडा। उनके कारण सरकार की दशा भी बडी शोचनीय थी। वह लगभग २२ वर्ष से फ्रास से युद्ध कर रही थी। लाखों पौण्ड प्रति वर्ष सेनाओं के हेतु व्यय होते थे। इङ्गलेण्ड को स्वय

युद्ध करने के अतिरिक्त रूस, प्रशिया तथा आस्ट्रिया को भी धन भेजना पड़ता था। परिणाम यह हुआ कि सन् १८१४ ई० में इङ्गलैण्ड का वार्षिक व्यय १० करोड़ ६८ लाख पौण्ड से भी अधिक बढ़ गया था। यद्यपि व्यय के साथ इङ्गलैण्ड की आय भी अधिक हो गई थी परन्तु आय उतनी नहीं बढ़ी था जितना व्यय बढ़ा था। अतः सरकार को युद्ध के व्यय को पूर्ण करने के लिये ऋण लेना पड़ता था। सन् १८१५ ई० में इङ्गलैण्ड के ऊपर ८३ करोड़ पौण्ड से भी अधिक ऋण था।

उपरोक्त हानियों के कारण सन् १८१० ई० के पश्चात् न तो इङ्गलैण्ड की प्रजा ही प्रसन्न थी और न सरकार ही। परन्तु यह बात स्मरण रखने योग्य है कि जो आपत्तियाँ अङ्गरेजों के शीश पर नैपोलियन के युद्धों के कारण आईं वे स्थायी न थीं। इसके प्रतिकूल नैपोलियन के युद्धों ने इङ्गलैण्ड को कुछ ऐसे लाभ पहुँचाये जिनका अच्छा प्रभाव अभी तक स्थिर है।

नैपोलियन के युद्धों से लाभ—फ्रांस के विद्रोही प्रत्येक देश में स्वतन्त्र शासन स्थापित करना चाहते थे। जहाँ २ नैपोलियन की सेना जाती थी वहाँ २ वह मनुष्यों को स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने की आशा दिखाती थी। ऐसे देशों में जर्मनी, पोलैण्ड और इटैली की गणना सब से प्रथम होती है। इन देशों की भांति सन् १८१५ ई० के पश्चात् इङ्गलैण्ड में भी स्वतन्त्रता की लहर उठी। स्थान २ पर स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने के हेतु भाषण दिये जाने लगे। लोग उन को सुन कर स्वराज्य स्थापित करने के इच्छुक हुये। अतः अंग्रेजी सरकार को उन्हें प्रसन्न करने के लिये चार सुधार बिल (Reform Bill) पास करने पड़े।

सामाजिक दशा—नैपोलियन के युद्धों का समाज पर भी बड़ा प्रभाव पड़ा। इङ्गलैण्ड में क्या, वरन् यूरप के समस्त देशों में सन् १८१५ ई० के पश्चात् ऐसी बातें समाज में दृष्टिगोचर होने लगीं जिनका

इसके पूर्व किसी को ज्ञान तक न था । लोग सामाजिक कार्यों में स्वतन्त्रता के अभिलाषी हुये । उनकी यह इच्छा हुई कि ऐसे कार्यों में सरकार किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करे । पुत्र पिता से अपने अधिकार माँगने लगे, स्त्रियां पतियों से अपने अधिकार चाहने लगीं । प्रत्येक बात में जनता स्वाधीनता चाहने लगी । बन्दियों के हृदय से पुलिस का भय जाता रहा । 'अधिकार' 'अधिकार' यह शब्द चारों ओर सुनाई देने लगा।

अंग्रेज़ी साहित्य—जब मनुष्य स्वतन्त्रता चाहते हैं तो उनकी हार्दिक इच्छा यही होती है कि वे ऐसी पुस्तकें पढ़ें जिनमें स्वतन्त्र विचारों का वर्णन हो । अब ऐसी पुस्तकों की कमी न थी । इसके पूर्व कवि प्रकृति की ओर आँख उठा कर भी न देखते थे । वे बहुधा अपने काव्य में मनुष्य का वर्णन करते थे । सन् १८१५ ई० के पश्चात् कवि मनुष्य का वर्णन त्याग कर प्रकृति के ऊपर काव्य रचने लगे । इस प्रकार इङ्गलैण्ड में 'रोमेण्टिक मूवमेण्ट' (Romantic Movement) की नींव पड़ी । उन कवियों में जिन्हों ने अपनी कविता में प्रकृति के ऊपर विचार प्रकट किये हैं कॉलरिज (Coleridge), वर्डसवर्थ (Wordsworth), शेली (Shelly), बायरन (Byron) और कीट्स (Keats) सर्व श्रेष्ठ हैं । कवियों की भाषा में भी अन्तर पड़ा । अभी तक वे कठिन शब्दों का प्रयोग करते थे और ऐसा करने में अपना गौरव समझते थे । १८१५ ई० के पश्चात् कवियों ने कठिन शब्दों का प्रयोग करना त्याग दिया । अब वे छोटे २ सरल शब्दों में अपने विचार प्रकट करने लगे ।

इस प्रकार नैपोलियन के युद्धों का इङ्गलैण्ड की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक अवस्था पर बड़ा प्रभाव पड़ा । अगले अध्याय में लिखेंगे कि लार्ड लिवरपूल के मन्त्रिमण्डल ने उन बुराइयों को दूर करने का किस प्रकार उद्योग किया जो फ्रांसीसी क्रान्ति तथा उपरोक्त युद्धों के कारण इङ्गलैण्ड में फैल गई थीं ।



अभ्यास।

(१) निम्न लिखित स्थान किन २ ऐतिहासिक घटनाओं के लिये सिद्ध हैं —

[अ] ट्रैफेलगार, [ब] टारेस वेड्रास, [स] डुक्वेन।

(२) नेपोलियन बोनापार्ट के जीवन का वृत्तान्त सक्षेप मे लिखो ?

(३) सप्तवर्षीय युद्ध के लड़े जाने का क्या कारण था ? इङ्गलैण्ड इस युद्ध से क्या लाभ हुआ ?

४ [अ] छोटे पिट ने फ्रान्सीसी क्रान्ति का विरोध किस प्रकार किया।

[ब] उन युद्धों के नाम लो जो इङ्गलैण्ड को फ्रान्स के विद्रो ...यों से करने पड़े।

(५) इङ्गलैण्ड को नीचे दिये हुये स्थान कब और किस प्रकार मिले ? जिबराल्टर, केप आफ गुडहोप, जमैका।

(६) छोटे पिट ने फ्रान्सीसी क्रान्ति के विषय में कौन सी भूल की ? उन कारणों का वर्णन करो जिन से उसे फ्रास से युद्ध प्रारम्भ ...ना पड़ा ?

(७) नैपोलियन मिश्र क्यों गया था ? उस सैनिक का नाम बताओ ...सने उसे नील नदी के युद्ध में पराजित किया था ?

(८) उन उपनिवेशों के नाम लो जो जार्ज द्वितीय के शासनकाल ...अङ्गरेजों के आधीन उत्तरी अमेरिका मे थे ? वे कब स्थापित हुये थे ...र कब अङ्गरेजी सरकार के हाथों से निकल गये ?

(९) निम्न लिखित में से किसी एक का वर्णन सक्षेप रूप से करो—

[अ] बोनापार्ट की मिश्र की यात्रा, [ब] आयबेरियन प्रायद्वीप का युद्ध, [स] नैपोलियन और जार का युद्ध।

एक नकशा खींच कर अपने उत्तर को समझाओ।

(१०) यह तारीखें अङ्गरेजी उपनिवेशों के इतिहास में क्यों प्रसिद्ध हैं ? सन् १७१३, सन् १७६३, सन् १७८३ ई०।

अपने उत्तर को पृष्ठ ३५९ का नकशा देख कर समझाओ।

(११) नेपोलियन के युद्धों का इङ्गलैण्ड पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(१२) काण्टीनेण्टल सिस्टम क्या था ? इसे किसने, कब और चलाया था ?

(१३) इङ्गलैण्ड और नेपोलियन के युद्धों का वर्णन स्पष्ट रीति से करो ?

(१४) इन में से चार पर नोट लिखो —

जॉन विल्क्स, ग्रेन्विल, बोस्टन बन्दरगाह की घटना, मैरिंग आम्येन की सन्धि, आस्टरलिट्ज़ सर जॉन मूर, वाटरलू का युद्ध।

(१५) जार्ज द्वितीय की मृत्यु के समय राजा कितना शक्तिमान था ? जार्ज तृतीय ने खोई हुई शक्ति को किस प्रकार प्राप्त किया ? और क्यों उसकी शक्ति पुनः क्षीण हो गई ?

(१६) छोटे पिट के आन्तरिक प्रबन्ध का वर्णन करो। और पिट में क्या सम्बन्ध था।

(१७) चार्ल्स जेम्स फाक्स का स्वभाव तथा चरित्र कैसा था इसका चरित्र बुरा था तो वह इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है ? कुछ ऐसे पुरुषों के नाम लो जो बहुत प्रसिद्ध हों परन्तु जिनका अन्त शुद्ध न रहा हो।

(१८) जार्ज तृतीय के शासन के मन्त्रिमण्डलों की एक सूची तैयार करो ? एक ओर ह्विग और दूसरी ओर टोरी मन्त्रिमण्डलों तारीखवार लिखो। फिर बताओ कि किन की सख्या अधिक है और किन ने अधिक समय तक शासन किया। जो उत्तर आवे उसका कारण सोचो।

पंचम खण्ड

वर्तमान इंगलैण्ड

सन् १८१५–१९२१ ई०

पार्लियामेण्टसुधार तथा साम्राज्य।

अड़तीसवां अध्याय ।

सामाजिक तथा राजनैतिक सुधार का उद्योग

(१८१५–१८२०)



पेरिस की सन्धि के पश्चात् इङ्गलैण्ड की सरकार ने उन दोषों के दूर करने का उद्योग किया जो नेपोलियन के युद्धों के कारण इस देश में दृष्टिगोचर हुये थे । परन्तु प्रधान मन्त्री लिवरपूल, जो सन् १८१२ ई० से शासन की बागडोर अपने हाथों में लिये हुये था, इन दोषों को दूर करने में सफल न हुआ । इसका कारण यह था कि वह और उसके सहायक मन्त्री टोरीदल के सदस्य थे और स्वतन्त्र विचार न रखने के कारण उन सुधारों के करने को तैयार न थे जो प्रजा माग रही थी । कई वर्षों से जार्ज तृतीय का स्वास्थ्य भी ठीक न था । वह सिडी हो गया था । उसके स्थान पर उसका ज्येष्ठ पुत्र, जो सन् १८२० ई० में जार्ज चतुर्थ के नाम से राजा बना, राज्य की देख भाल कर रहा था । अत अङ्गरेजी मन्त्री राजनैतिक तथा सामाजिक सुधार करने में और भी कम सफल हुये ।

सर्वव्यापी विपत्ति—आन्तरिक प्रबध एडिङ्गटन (Addington) और वाह्यनीति लार्ड कासलरे के हाथो में था, जो पेरिस की सधि में इङ्गलैण्ड की ओर से भाग ले चुका था । एडिङ्गटन ने सब से पहले समाज सुधार करने का प्रयत्न किया । नेपोलियन के युद्धों के एकाएक रुक जाने से व्यापार को बड़ी हानि हुई थी । सेकड़ों सौदागरों के दिवाले निकल गये थे । कार्यालयों और मशीनों के बन जाने से सहस्रों मनुष्य बेरोजगार हो गये थे क्योंकि जिस काम के करने को पहले पचास मनुष्यों की आव

श्यकता होती थी अब उसी काम को पाँच मनुष्य मशीनों द्वारा कर लेते थे। सरकारी ऋण युद्ध सम्बन्धी व्यय के कारण बढ गया था। कई वर्ष से कृषी भी खराब हो रही थी। कर भी पहले से अधिक थे। आवश्यकता कम हो जाने से अनाज का भाव एक साथ गिर गया था। इन समस्त कारणों का यह प्रभाव हुआ कि बृटिश टापुओं में एक ओर से दूसरी ओर तक बेकली फैल गई। बहुत से मनुष्य ऐसे दिखाई देन लगे जिन को पेट भर खाना तक न मिलता था। फौजदारी के नियम भी कडे थे। उठाईगीरों तथा गठकटों को मृत्यु का दण्ड दिया जाता था। रूमाल जैसी तुच्छ वस्तु चुराने वालों को कभी कभी ७ वर्ष के लिये देश निकाला दे दिया जाता था। परन्तु यह बडे शोक की बात है कि लिवरपूल तथा एडिङ्गटन इन बुराइयों के दूर करने में लेशमात्र भी सफल न हुये।

राजनैतिक आन्दोलन तथा मैनचेस्टर का वध १८१९ ई०–

प्रजा की ओर से भी कई सुधारक इन बुराइयों के प्रतिकूल आन्दोलन कर रहे थे। इन में रोमली (Romilly) सब से श्रेष्ट है। वह फौजदारी के नियमों को सहल कराने का प्रयत्न कर रहा था। उसके पश्चात् विलियम कोबिट (William Cobbett) तथा राबर्ट ओवन (Robert Owen) अधिक प्रसिद्ध हैं। कोबिट पार्लियामेण्ट की बुराइयों के दूर करने पर जोर दे रहा था। ओवन सरकार की दृष्टि कार्यालयों के दोषों की ओर आकर्षित कर रहा था। परन्तु सन् १८२२ ई० तक उनकी वक्तृताओं का सरकार पर कुछ भी प्रभाव न पडा। एक ओर तो मनुष्य दीन तथा बेकल थे दूसरी ओर रोमली तथा अन्य नेता उन्हें सरकार के विरुद्ध चेतावनी देकर ताजे घावों पर नमक छिड़क रहे थे। परिणाम यह हुआ कि कई स्थानों में झगडे हुये। मनुष्य सरकार को नीचा दिखाने के अभिप्राय से लन्दन पर आक्रमण करने लगे, परन्तु उनका प्रयत्न निष्फल हुआ। अगस्त सन् १८१९ ई० में मनुष्य मैनचेस्टर नगर के एक प्रसिद्ध व्याख्यानदाता

का व्याख्यान सुनने के लिये, जिसका नाम हण्ट (Hunt) था, सहस्रों की संख्या में एकत्रित हुए। एडिङ्गटन को भय था कि कहीं ऐसा न हो कि यह लोग हण्ट की वक्तृता सुन कर लूट मार करने पर तत्पर हो जावें। अतः उसने कुछ सिपाही हण्ट को बन्दी करने के लिये भेजे। मनुष्य हण्ट की आवेश पूर्ण वक्तृता सुन रहे थे। ज्यों ही सिपाही निकट पहुंचे, कुछ मनुष्य उनकी सूरत देखते ही भाग गये, परन्तु अधिकतर ऐसे निकले जो अपने स्थान पर ज्यों के त्यों खड़े रहे। सिपाहियों ने तलवार और भालों से काम लिया। [redacted] मनुष्य जान से मारे गये। सैंकड़ों घायल हुये। शेष अपनी अपनी जान बचा कर भाग गये।

वध का परिणाम—मैनचेस्टर के वध का मनुष्यों के हृदयों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। अभी तक वे समझते थे कि सरकार से सुधार मांगने का समय अभी नहीं आया है, परन्तु जब उन्हों ने देखा कि लिवरपूल तथा एडिङ्गटन ने मैनचेस्टर नगर में ऐसे निरपराध व्यक्तियों का वध किया है जो केवल अपनी हार्दिक इच्छाओं को प्रकट करने के लिये एकत्रित थे, न कि लड़ाई झगड़ा करने को, जैसा कि सरकार समझती थी, तो उनके हृदयों में भी हण्ट और उसके पक्षपातियों की भांति स्वतन्त्रता का समुद्र हिलोरें लेने लगा। सरकार ने उनका उत्साह कम करने के अभिप्राय से छ नियम (Tagged Acts) बनाये जिन से मनुष्यों को आपस में मिलने और वादविवाद करने का अवसर बहुत कम मिलने लगा। इन में से मुख्य नियम यह था कि नगर के मजिस्ट्रेट की आज्ञा के बिना कोई सभा नहीं हो सकती है। लार्ड लिवरपूल ने जासूसों की एक टोली भी नौकर रख छोड़ी थी, जिसके कारण लोगों का और भी नाक में दम था।

विदेशी नीति—विदेशी नीति में भी लिवरपूल का मन्त्रिमण्डल फलीभूत न हुआ। कुछ राष्ट्र ऐसे थे जो पेरिस के सन्धिपत्र से सन्तुष्ट

न हुये थे। कारण यह था कि उसने उनके ऊपर ऐसे राजाओं का शासन स्थापित कर दिया था जिनको वे केवल घृणा की दृष्टि से ही न देखते थे किन्तु जिनको वे एक ओर हटा कर अपने लिये स्वतन्त्र शासन स्थापित करना चाहते थे। इस प्रकार के उत्साही देशों के सर कुचलने के निमित्त आस्ट्रिया, प्रशिया, रूस, फ्रांस एवं स्पेन ने एक टोली (Holy Alliance) *बना कर यह प्रतिज्ञा की कि जहां कहीं यूरप महाद्वीप में कोई राष्ट्र स्वतन्त्रता प्राप्त करने का उद्योग करेगा, वे पाँचों सेनायें भेज कर उसे पददलित करने का प्रयत्न करेंगे। दूरदर्शी होने के कारण कास्लरे ने उस में सम्मिलित होने से साफ जवाब दे दिया। यही नहीं, वरन् उसने जीवन भर इन राष्ट्रों का विरोध साहसपूर्वक किया। परन्तु उसने स्वतन्त्रता चाहनेवाले राष्ट्रों की सहायता सेना भेज कर न की। कास्लरे को पूरा भरोसा था कि महाद्वीप की शक्तियों के साथ इधर उधर सभायें करके वह इन राष्ट्रों को 'होली एलायन्स' के सदस्यों के अत्याचार तथा अनाचार से सुरक्षित रख सकेगा, परन्तु वह इसमें लेशमात्र भी सफल न हुआ। परिणाम यह हुआ कि यह सदस्य पाच वर्ष तक स्वतन्त्रता मांगनेवाली राष्ट्रों को बराबर दबाये रहे।

जार्ज तृतीय की मृत्यु, १८२० ई०—सन् १८२० ई० में जार्ज तृतीय की मृत्यु हो गई। कई वर्षों से उसकी अवस्था शोचनीय थी। सिड़ी होने के अतिरिक्त वह अन्धा भी हो गया था। उसकी मृत्यु से टोरीदल को बड़ा सोच हुआ। जार्ज तृतीय इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध राजाओं में से हुआ है। योग्य तथा चतुर होने के अतिरिक्त वह सुचरित्र तथा स्वभाव का अच्छा भी था। उसमें एक बुराई यह थी कि वह पार्लियामेण्ट और प्रधानमन्त्री के अधिकारों को छीन कर स्वयं ग्रहण करना चाहता था।

* कहने को इस टोली का यह उद्देश था कि ईसाई मत की पवित्र पुस्तकों की आज्ञानुसार यूरप के देशों मे आपस में भला व्यवहार करावे।

उसकी मृत्यु के पश्चात् जार्ज, जो सन् १८११ ई० से राज्य का काम स्वय कर रहा था, बृटिश टापुओं के सिंहासन पर बैठा।



अभ्यास।

(१) उन बुराइयों को सोचो जो नैपोलियन के युद्धों के कारण अंग्रेजी समाज में आ गई थीं। इङ्गलैण्ड की सरकार ने सन् १८१५ ई० और सन् १८२० ई० के बीच इनके दूर करने का उद्योग किस प्रकार किया ?

(२) "एडिङ्गटन तथा कासल्रे स्वतन्त्र विचार के मन्त्री न थे"। इस से क्या समझते हो ?

(३) कासल्रे यूरप की उत्साही राष्ट्रों को 'होली एलाइन्स' के सदस्यों के अत्याचार से किस प्रकार सुरक्षित रखना चाहता था। वह विदेशी नीति में सफलीभूत क्यों न हुआ ?



उन्तालीसवां अध्याय।

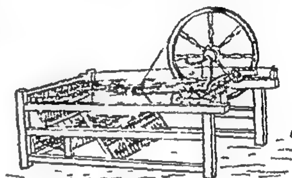
व्यावसायिक क्रान्ति।



अठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दियों में व्यापार तथा कला कौशल में एक अद्भुत परिवर्तन हुआ जिसने संसार की सभ्यता को उतना ही प्रभावित किया जितना फ्रांसीसी-क्रान्ति ने किया था। फ्रांसीसी क्रान्ति राजनैतिक तथा सामाजिक बुराइयों के कारण हुई थी और लगभग दस वर्ष तक आवेगपूर्ण रहने के उपरान्त उसका जोर कम हो गया था और शासन की बागडोर नैपोलियन के हाथों में आ गई थी। व्यावसायिक क्रान्ति का प्रारम्भ अठारहवीं शताब्दि की मध्यवर्ती सालों में हुआ था। इसके पश्चात् उन्नीसवीं शताब्दि में वह बराबर धीरे २ होती रही, यहां तक कि बीसवीं शताब्दि के आरम्भ होने तक व्यापार तथा कला-कौशल में प्रशंसनीय परिवर्तन हो चुके थे।

सूत कातना और कपड़ा बुनना—सब से बड़ी तथा आश्चर्य जनक उन्नति रूई की कलाकौशल में हुई। प्राचीन समय में रुई और ऊन लकड़ी के डण्डों और तकुओं के द्वारा काते जाते थे, जैसा कि ग्रामों में अभी तक प्रचार है। इसके पश्चात् चर्खों और करघों का प्रयोग ज्ञात हुआ, परन्तु इन में भी काम लेने में अधिक समय नष्ट होता था और कार्य भी उत्तम नहीं होता था। जुलाहे ताने और बाने का काम अपने हाथों से करते थे जिसके कारण कपड़े की चौड़ाई अधिक नहीं हो सकती थी। सन् १७३८ ई० में जान के (John Kay) ने, जो लैंकशायर का निवासी था, नाचने वाली ढरकी (Flying Shuttle) का आविष्कार किया।

इस के द्वारा एक जुलाहा बिना किसी की सहायता के धागे को थान की चौडाई में एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुचा सकता था। यदि थान की चौडाई अधिक होती तो भी इस ढरकी के द्वारा कार्य्य सरलता से हो सकता था। सन् १७६४ ई० में एक अंग्रेजी जुलाहे ने, जिसका नाम हारग्रेव्ज (Hargreaves) था, सूत कातने की एक मशीन बनाई जो उसकी लडकी के नाम पर 'जनी' (Jenny) कह लाने लगी है। इसके द्वारा सोलह तकुओं से एक साथ सूत कात सकते थे। इसके पाच वर्ष पश्चात् एक अंग्रेजी नाई ने, जिसका नाम 'ऑर्क—राइट' (Ark-wright) था, पानी से चलने वाली सूत कातने की मशीन बनाई। जो



सूत कातने की जेनी।

तागा इस मशीन से कत कर तयार होता था वह हारग्रेव्ज की मशीन से तैयार होने वाले तागे से अधिक उत्तम था। परन्तु सब से उत्तम तागा क्रॉम्पटन (Crompton) की मशीन से कतता था जो हारग्रेव्ज की जेनी और आर्क राइट की पानी की मशीन दोनों के सिद्धान्तों के अनुसार बनाई गई थी। इन आविष्कारो का परिणाम यह हुआ कि सूत अत्यन्त शीघ्रता से कतने लगा। अब जुलाहों को चिन्ता हुई कि कोई उपाय ऐसा करना चाहिये जिससे कपडा शीघ्रता से बुना जा सके। वे सोचते थे कि जब तक कपडा बुनने की कोई सरल रीति ज्ञात न होगी सूत कातने की रीतियों में जो उन्नति अभी तक हुई है, वह व्यर्थ है। केण्ट के एक पादरी डाक्टर कार्टराइट (Dr. Cartwright) ने जुलाहों की चिन्ता दूर की। उसने कपडा बुनने की एक ऐसी मशीन बनाई जिसका एक पहिया

घुमाने से सम्पूर्ण मशीन घूमती थी। इसके बन जाने से जिस काम के करने के लिये पहले दस जुलाहों की आवश्यक्ता होती थी उसके करने को अब केवल एक जुलाहे की आवश्यकता रह गई।

भाप का नवीन प्रयोग—कार्टराइट की मशीन में एक मुख्य गुण यह था कि हाथ से चलने के अतिरिक्त वह अन्य रीतियों से भी चल सकती थी। कुछ समय तक मनुष्यों ने उसे घोड़ों और बैलों से चलाया। इसके पश्चात् उन्हों ने उसके चलाने में पानी का प्रयोग किया। अत नहरों और नदियों के तटों पर कपड़ा बुनने के बहुत कार्यालय बने। पानी से मशीन चलाने में धन की बचत अवश्य थी, परन्तु उस में भी अधिक समय नष्ट होता था। कुछ समय के पश्चात् मनुष्यों को भाप का प्रयोग ज्ञात हुआ। सन् १७६९ ई० में जेम्स वाट (*James Watt*) ने भापशक्ति से काम करनेवाला इञ्जन बनाया। शनैः शनैः वाट का इञ्जन कारखानों में मशीन चलाने के काम मे लाया गया। यह इञ्जन भाप शक्ति से चलता था और रुई, ऊन आदि से कपड़ा बनाने की अभी तक जितनी रीतियाँ ज्ञात हुई थी, उन सब से शीघ्र कार्य्य करता था।

बिटने की कपास ओटने की मशीन तथा अन्य आविष्कार—कुछ समय बीतने पर अमेरिका के एक निवासी ने, जिसका नाम विटने (Whitney) था, कपास ओटने की एक मशीन बनाई। अभी तक एक आदमी एक दिन में अधिकाधिक ५ या ६ पौण्ड कपास ओट सकता था, परन्तु अब विटने की मशीन से वही मनुष्य एक दिन में सहस्र पौण्ड से अधिक कपास ओटने लगा। छींट छापने की रीतियों में भी उन्नति हुई। अभी तक इङ्गलैण्ड में छींट अधिकत भारतवर्ष से जाती थी। इसकी छपाई छोटे २ लकड़ी के छापों से होती थी, जिन पर भाति २ के बेल बूटे बने होते थे। भारतवर्ष में अभी तक छींट और अन्य वस्त्र अधिकतर इसी रीति से छपते हैं। इङ्गलैण्ड में रोलरों के द्वारा छपाई होने लगी।

लरों में बेल बूटे काट लिये जाते हैं और कपडा उनके नीचे से निकाला जाता है। इस रीति से काम शीघ्रता और स्वच्छता से होता है। इन जाति कार्यों के साथ २ कपडा साफ करने का रीतियों में भी उन्नति हुई। लोग कपडा धोने के लिये ऐसिड का प्रयोग करने लगे। वर्तमान समय में भी कारखानों के अन्दर कपडा ऐसिड हो से साफ होता है। अन्य मशीनों की भांति कपडा छापने की मशीन भी वर्तमान समय में भाप से चलती है।

कृषी और मिट्टी के बरतन—कृषकों ने भी अपने काम में उन्नति की, जिसके कारण उन्हें उतनी हानि न पहुची जितना कि मनुष्य करते थे। उनको फसलों के बदलते रहने का लाभ प्राप्त हुआ। इसका यह आशय है कि खेत में सदैव एक ही प्रकार की फसल उत्पन्न नहीं की जाता। एक वर्ष उस पर ऐसी फसल-बवाई जाती है जिसके लिये खाद, पानी और भूमि के उपजाऊ होने की अधिक आवश्यकता होती है। दूसरे वर्ष उस पर ऐसी फसल उत्पन्न की जाती है जिसके लिये इन वस्तुओं की कम आवश्यकता होती है। ऐसा करने से पृथ्वी सदा उपजाऊ बनी रहती है। बहुत सी पृथ्वी जो व्यर्थ पडी थी कृषी के योग्य बनाई गई। मनुष्यों ने छोटे २ खेतों को मिला कर बडे खेत बना लिये और उनके चारों ओर दीवारें उठा लीं। पशुओं के पालने की नई रीतियाँ निकाली गईं। इन समस्त बातों का परिणाम यह हुआ कि अनाज की उपज पहले से अधिक हो गई। मिट्टी के बर्तनों के बनाने में भी अधिक उन्नति हुई। लोग बरतन बनाने में चीनी मिट्टी का प्रयोग करने लगे। जब उन्हें इस बात का ज्ञान हुआ कि कार्नवाल के प्रान्त में इस प्रकार की मिट्टी बहुत मिलती है, तब तो उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

सड़कें, नहरें व रेलें--उत्तम वस्तुओं का बनना उस समय तक व्यर्थ होता है जिस समय तक उनको बन्दरगाहों तक पहुचाने का समुचित प्रबन्ध नहीं होता। अठारहवीं शताब्दि की सडकें ऐसी बुरी थीं जिनका

कुछ वर्णन नहीं हो सकता। रेलगाड़ियों का अभी आविष्कार नहीं हुआ था। उन्नीसवीं शताब्दि में उत्तमोत्तम सड़कें और नहरें बनीं। मुख्यतः सन् १८१५ ई० के पश्चात् इस ओर अधिक उन्नति हुई। सन् १८२७ ई० में प्रथम बार स्काटलेण्ड में भापशक्ति से चलनेवाले इञ्जन से रेलगाड़ियाँ खींचने का काम लिया गया। इसके पश्चात् इङ्गलैण्ड में लिवरपूल मेनचेस्टर रेलवे (Liverpool Manchester Railway) बनी। ज्यों २ समय व्यतीत होता गया त्यों २ रेल की सड़कें संख्या और उत्तमता में बढ़ता गई। जहाज और मोटर भी भापशक्ति से चलने लगे। युरुपीय महान् युद्ध के समय में वायुयानों और पानी के नीचे चलनेवाले जहाजों ने यह बात पूर्णतया सिद्ध कर दी कि भाप का प्रयोग जानने से मुख्य विज्ञान में कहाँ तक और उन्नति कर सकता है। इन आविष्कारों के सम्मुख तारबर्की, फोटोग्राफी, इलेक्ट्रीसिटी आदि जो आविष्कार उन्नीसवीं शताब्दि में हुये वे सब बिलकुल तुच्छ जान पड़ते हैं।

व्यावसायिक क्रान्ति के परिणाम—व्यावसायिक क्रांति ने इङ्गलेण्ड का वह धन पूरा कर दिया जो उसने अमेरिका की स्वाधीनता तथा नैपोलियन के युद्धों में उठाया था। भिन्न भिन्न वस्तुयें अत्यन्त सरलता से अल्प मूल्य में बनने लगीं। व्यावसायिक क्रान्ति के कारण इङ्गलैण्ड और अन्य व्यापारिक देशों की जनसंख्या बहुत बढ़ गई। जिन देशों में कोयला और लोहा अधिक मिलते हैं वह धनी हो गये और संसार के नेता बन गये। दृष्टान्त के लिए हम इङ्गलेण्ड, जर्मनी और अमेरिका के संयुक्तप्रदेश ले सकते हैं। जिन देशों में कोयला तथा लोहा नहीं मिलते अथवा कम मिलते हैं वे व्यापारिक दौड़ में पीछे रह गये। अधिकतर कारखाने ऐसे स्थानों में बने जहाँ कोयला तथा लोहा एक साथ मिलते हैं। बहुत से नये नगर बसे। लोग गाँव छोड़ २ कर शहरों में आकर बस गये। बहुत से गाँव तथा नगर उजाड़ हो गये। बहुत से ऐसे

नए शहर दिखलाई पडने लगे जो पहले छोटे गाँव थे । व्यापारिक नगरों में जगह कम और जनसख्या अधिक होने के कारण भाति भाति के रोग फैलने लगे । ज्यों ज्यों कारखानों की सख्या बढती गई, त्यों त्यों मनुष्यों का उत्साह कला कौशल में धन लगाने को भी बढता गया । कुछ समय के पश्चात् ऐसे धनिकों की सख्या बहुत बढ गई जो किसी न किसी कारखाने के पत्तीदार थे । कारखानों के स्वामी मजदूरों के साथ हर प्रकार का अन्याय करते थे और उनको बहुत कम वेतन देते थे । उनका सामना करने के लिये मजदूरों ने अलग सस्थायें स्थापित कीं, जिनका कर्तव्य मजदूरों को कारखानों के स्वामियों के अत्याचार से बचाना था । जब दोनों दलों में लडाई झगडे बहुत बढे तो विवश होकर सरकार को उनके मध्य में आना पडा और दोनो के हित के लिये नियम बनाने पडे ।

व्यावसायिक क्रान्ति से इङ्गलैण्डनिवासी दो अन्य दलो में बँट गये । एक दल कारखानों के स्वामियों तथा साहूकारो का था और दूसरा दल कृषकों तथा जमींदारो का था । दोनो दल एक दूसरे के शत्रु थे । दोनो में बहुधा झगडे होते रहते थे । विशेष कर पार्लियामेण्ट में उनका विरोध आवेशपूर्ण होता रहता था । सर रावर्ट पील (१८४१–१८४६) के मन्त्रित्व में दोनो के बीच अनाज सम्बन्धी नियमों के विषय मे खूब झगडा हुआ ।



अभ्यास ।



(1) अध्यापक को चाहिये कि दर्जे के लडकों को दो भागों में बाँट कर कारखानो तथा जमींदारों के पक्षपातियो के बीच वादाविवाद करावें ।

(२) रुई की कला कौशल में व्यावसायिक क्रान्ति में कौन २ से परिवर्तन हुये? इङ्गलेण्ड पर इनका क्या प्रभाव पड़ा?

(३) व्यावसायिक क्रान्ति का वर्णन करो और उसकी अच्छाइयाँ तथा बुराइयाँ बताओ।

(४) तुम्हारे घर के समीप यदि कोई कारखाना हो तो उस में जाकर मशीनों को देखो। उनके मूल्य का अनुमान करो। सोचो कि वह कहाँ से आती हैं और इनके मोल लेने में कितना धन व्यय होता है।

(५) किसी कृषक से फसल बदलते रहने का भेद पूछो।

(६) संक्षेप में नोट लिखो.—[अ] जेम्स वाट, [ब] जेनी।



चालीसवां अध्याय।

जार्ज चतुर्थ (१८२०-१८३०)

जार्ज चतुर्थ आलसी, भोगविलासी तथा अभिमानी था। उसके पिता न वर्षों तक पार्लियामेण्ट तथा प्रधान मन्त्री पर अधिकार रक्खा था। परन्तु जार्ज चतुर्थ शक्तिहीन होने के कारण उसको अपने अधिकार में न रख सका। परिणाम यह हुआ कि जिस प्रकार जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय के समय में मन्त्री शक्तिशाली और स्वतन्त्र हुआ करते थे उसी प्रकार फिर शक्तिशाली और स्वतन्त्र होने लगे। जार्ज चतुर्थ का चरित्र अच्छा न था। बहुधा वह भोग विलास में निमग्न रहता और राज्य प्रबन्ध मन्त्रियों के हाथों में छोड़ दिया करता था।



जार्ज चतुर्थ।

केटो स्ट्रीट का षड्यन्त्र, १८२० ई०—जार्ज चतुर्थ के शक्तिहीन होने से मनुष्यों का उत्साह इतना बढ़ गया था कि उन्हों ने

एक बार मन्त्रियों के बध करने के लिये एक षडयन्त्र लन्दन के केटो भाग मुहल्ले में रचा । फरवरी सन् १८२० ई० में इस मुहल्ले में मन्त्रियों दावत होने वाली थी । अत विद्रोहियों ने यह निश्चय किया कि मन्त्रीगण खाना खा रहे हों, तब उनका बध एक साथ कर दिया जाय विद्रोहियों का मुखिया थिस्लवुड (Thistlewood) था । न मालू किस प्रकार से मन्त्रियों को षडयन्त्र की सूचना मिल गई । अत के स्ट्रीट की दावत हटा दी गई । पुलिस ने विद्रोहियों को बन्दी कर लिया थिस्लवुड भी पकड़ा गया । उसे चार अन्य नवयुवकों के साथ फाँसी हुई

इङ्गलैण्ड की विदेशी नीति, १८२२--२६ ई०—केटो स्ट्री के षडयन्त्र के दो वर्ष पश्चात लिवरपूल के मन्त्रिमण्डल में कई प्रशासनी परिवर्तन हुये । कास्लरे ने आत्महत्या कर ली था । एडिङ्गटन की भी मृ हो गई थी । अत' लिवरपूल ने उनके स्थान पर केनिङ्ग को विदेशी नीति का मन्त्री बनाया और रॉबर्ट पील को आन्तरिक प्रबन्ध सौंपा । ये नेक मन्त्री थोड़ा बहुत स्वतन्त्र विचार रखते थे और आवश्यक सुधार क से न डरते थे । कास्लरे की भाति केनिङ्ग भी यूरप के महाद्वीप में सु शान्ति स्थापित रखना चाहता था । इसके अतिरिक्त वह उत्साही राष्ट्र की सहायता अंग्रेजी सेना भेज कर करने को भी उद्यत था । कास्लरे समय में होली एलायन्स के सदस्यों ने सेनायें भेज कर नेपिल्स तथा स्पे की राष्ट्रों को राज्यप्रबन्ध अपने हाथों में लेने से वञ्चित रक्खा था । परन्तु जब इन की भाति पुर्तगाल में भी लोगों ने अपने राजा को सिंहासन उतार कर स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना चाहा तो केनिङ्ग ने होली एलायन्स के सदस्यों को मुँहतोड़ जवाब दिया । उसने कुछ जहाज पुर्तगाल भेजे जिनके डर से होली एलायन्स के सदस्यों से कुछ करते न बना । केनिङ्ग ने मेक्सिको (Mexico), कोलम्बिया (Columbia) और ब्युइनोस आयर्स (Buenos Aires) को स्वतंत्र देश माना । इन राष्ट्रों की सहायता

के हेतु संयुक्तप्रदेश अमेरिका के प्रेसीडेण्ट मॉनरो (Monro) नामक ने केनिङ्ग के कहने से यह घोषणा प्रकाशित की कि यूरप के देशों का कर्तव्य है कि अमेरिका के भीतरी प्रबन्ध में हस्तक्षेप न करें। यदि कोई देश ऐसा करेगा तो वह संयुक्तप्रदेश का शत्रु समझा जावेगा। इस घोषणा से होली एलायन्स के सदस्यों का साहस बिलकुल कम हो गया।

यूनानी स्वाधीनता का युद्ध, १८२१–२६ ई०— सन् १८२१ ई० में यूनानियों ने स्वाधीनता प्राप्त करने के अभिप्राय से टर्की के सुलतान से एक गृहयुद्ध किया। केनिङ्ग ने यूनानियों की सहायता का बीड़ा उठाया। अंग्रेजी जलसेना को यूनान जाने की आज्ञा मिली। फ्रांस तथा रूस के राजाओं ने भी केनिङ्ग का साथ दिया। अंग्रेजी जलसेना ने सन १८२७ ई० में नवारीनो की खाड़ी (Gulf of Navarino) में सुलतान की सेनाओं पर विजय प्राप्त करके यूनानियों को स्वतन्त्रता दिलाई। इस युद्ध में एक प्रसिद्ध अंग्रेजी कवि लार्ड बायरन (Lord Byron) नामी खेत रहा। यदि केनिङ्ग यूनानियों की सहायता न करता तो वे सुलतान की सेनाओं को कभी परास्त न कर सकते थे। केनिङ्ग के उनकी सहायता को सेना भेजने से यह बात स्पष्ट रीति से सिद्ध हो गई कि इङ्गलेण्ड की वाह्यनीति अब वह नहीं रही है जो कास्लरे के समय में थी।

राजनैतिक, व्यापारिक तथा धार्मिक सुधार, १८२२–२७ ई०— आन्तरिक नीति में भी परिवर्तन हो चुका था। पील के मन्त्री बनने के पूर्व सरकार सुधार करने से डरती थी। अतः कोबडन, रोमली और अन्य सुधारों की सुनवाई न होती थी। परन्तु मैनचेस्टर के वध और उससे भी अधिक केटो स्ट्रीट के विद्रोह ने यह बात स्पष्ट प्रकट करदी कि यदि सरकार शान्तिपूर्वक सुधार न करेगी तो उस से जब पूर्वक ऐसा कराया

जावेगा। इधर लिवरपूल तथा उसके पश्चात आने वाले प्रधान मन्त्री, जिन में गुडरिच (Goderich) और वेलिङ्गटन बहुत प्रसिद्ध हैं, आवश्यक सुधार करने मे न डरते थे। पील तथा केनिङ्ग भी लिवरपूल का साथ दे रहे थे। पील ने सरकार का ध्यान फौजदारी के नियमों की ओर आकर्षित किया। उसके कथनानुसार साधारण दोषों का दण्ड कम कर दिया गया। मृत्यु का दण्ड केवल उन मनुष्यो के लिये रक्खा गया जिन्हो ने या तो किसी का वध किया था या देश अथवा राजा के विरुद्ध विद्रोह किया था। पुलिस विभाग में भी पील ने अनेकों सुधार किये। पुलिस का प्रबन्ध उत्तम हो जाने से चोर डाकू बहुत कम हो गये।

व्यापार विभाग में भी कई आवश्यक सुधार हुये। कृषी की उन्नति के लिये यह नियम पहले ही बन चुका था कि कोई व्यक्ति विदेश से अनाज उस समय तक नहीं मँगा सकता है जिस समय तक उसका भाव अधिक न चढ जावे। अब सरकार ने बाहर से आने वाले ऊन और रेशम पर कर कम कर दिये। जलव्यापार सम्बन्धी नियम (Navigation Laws) जो सन् १६५१ ई० में और इसके पश्चात् हालैण्डनिवासियों के विरुद्ध बने थे सरल कर दिये गये। अत इङ्गलैण्ड के व्यापार ने अत्यन्त उन्नति की। जो वस्तुयें अंग्रेजी उपनिवेशो से आती, उन पर भी कर कम हो गये जिसके कारण उपनिवेशो के व्यापार ने बहुत उन्नति की। व्यापार विभाग में सुधार करने वाला हस्किसन (Huskisson) नामी मन्त्री था।

डिसेण्टर और रोमन कैथोलिक की दशा सभालने को भी लिवरपूल ने कई काम किये। टेस्ट और कारपोरेशन एक्ट पील के कहने से रद्द कर दिये गये। भविष्य में डिसेण्टर को अङ्गरेजी गिरजा के अनुयायी होने की शपथ खाये बिना सरकारी पद मिल सक्ते थे, और वे शहर और नगरों की कौंसिलों में भी बैठ सकते थे। लिवरपूल ने कैथोलिक पर भी दया की। उसके कहने से सन् १८२९ ई० में पार्लियामेण्ट ने एक नियम

बनाया जिससे यह बात निश्चित हुई कि प्रोटस्टेण्ट की भांति केथोलिक भी पार्लियामेण्ट के सभासद बन सकते हैं। इस प्रकार केथोलिक सम्प्रदाय की एक पुरानी शिकायत दूर हुई।

डेनियल ओकोनल का चुनाव, १८२८ ई०—कथोलिक को स्वतन्त्रता मिल जाने का एक मुख्य कारण यह था कि सन् १८२८ ई० में आयरलण्ड के क्लेअर (Clare) नामी प्रान्त ने एक केथोलिक सम्प्रदाय के अनुयायी डेनियल ओकोनल (Daniel O' Connell) को पार्लियामेण्ट के लिये सदस्य निर्वाचित किया। कथोलिक होने के कारण वह पार्लियामेण्ट में नहीं बैठ सकता था, परन्तु क्लेअर के निवासियों ने उसी को पार्लियामेण्ट में भेजने का प्रतिज्ञा करली थी। इस पर आयरलैण्ड के प्रोटेस्टेण्ट और केथोलिक के मध्य लड़ाई झगड़े प्रारम्भ हुये। इङ्गलैण्ड में भी बड़ी बेकली फैली। अतः लिवरपूल को विवश हो, न केवल ओकोनल, वरन् समस्त रोमन कथोलिकों को पार्लियामेण्ट में बैठने की आज्ञा देनी पड़ी।

सड़कें और रेलें—उपरोक्त सुधारों के अतिरिक्त जार्ज चतुर्थ के शासन समय में और भी अनेकों लाभदायक सुधार हुये। उत्तम २ नहरें और सड़कें बनीं। जो नहरें और सड़क बुरी दशा में थीं उनका सुधार हुआ। एक अङ्गरेजी इंजीनियर ने, जिसका नाम जार्ज स्टेफन (George Stephen) था, एक इञ्जन निर्माण किया जो भाप के द्वारा सड़क पर चल सकता था। इसके पश्चात् रेल की सड़कें बनीं। मनुष्यों ने भापशक्ति से चलने वाले जहाज भी बनाये। गाड़ी और टमटमें भी अधिक संख्या में बनने लगीं।

जार्ज चतुर्थ की मृत्यु, १८३० ई०—सन् १८३० ई० में जार्ज चतुर्थ की मृत्यु हुई। उसके शासनकाल में टोरी मन्त्रियों ने कई सुधार किये थे, परन्तु वे अधिक सफल न हुये। कारण यह है कि

वे फूँक २ कर पैर रखते थे। सन् १८३२ के पश्चात, जब देशी शासन ह्विग मन्त्रियों के अधिकार में आया, तो इङ्गलण्ड की सरकार ने अनेकों ऐसे सुधार किये जिनके कारण प्रजा की अवस्था कई प्रकार से सुधर गई।



अभ्यास ।

(१) सन् १८२२ ई० मन्त्रियों के परिवर्तनों के लिये बहुत प्रसिद्ध है। बताओ इस वर्ष कौन २ परिवर्तन हुये और उनका [अ] आन्तरिक प्रबन्ध तथा [ब] वाह्यनीति पर क्या प्रभाव पड़ा?

(२) सन् १८१५ तथा सन् १८२९ ई० के बीच अंग्रेजी मन्त्रियों की वाह्यनीति के मुख्य सिद्धान्त वर्णन करो।

(३) इन तारीखों में कौन सी घटनायें हुईं :—

सन् १८२२ ई० सन् १८२८ ई०, सन् १८३० ई०

(४) निम्न लिखित पर सक्षेप नोट लिखो :—

[अ] कासलरे, [ब] नवारीनो, [स] कैथोलिक की स्वतन्त्रता।



इकतालीसवां अध्याय ।

विलियम चतुर्थ (१८३०–१८३७) ।

विलियम चतुर्थ का स्वभाव—जार्ज चतुर्थ की मृत्यु के पश्चात उसका छोटा भाई ड्यूक आफ क्लेरेन्स विलियम चतुर्थ के नाम से राजा बना। विलियम चतुर्थ में जार्ज तृतीय की भांति बहुत सी अच्छाइयाँ थी। वह उसकी भांति हठी न था। जब से वह जवान हुआ था वह अङ्गरेजी बेड़े में नौकरी कर रहा था। अत वह सेलर किङ्ग (Sailor King) के नाम से प्रसिद्ध है। वह शान्त स्वभाव था और प्रजा के साथ भलाइ करना चाहता था, परन्तु वह चतुर तथा दूरदर्शी न था। उसका विवाह एडीलेड ऑफ मेनिङ्गन (Adelaide of Meiningen) से हुआ था। उसके तीन बालक उत्पन्न हुये, परन्तु तीनों युवावस्था में मृत्यु को प्राप्त हुये। अत उनके स्थान पर विलियम की भतीजी विक्टोरिया सिंहासन पर बैठी।



विलियम चतुर्थ ।

लार्ड ग्रे का मन्त्रित्व, १८३०-३४ ई०—विलियम चतुर्थ को सिंहासन पर बैठे अभी अधिक समय न हुआ था कि वेलिङ्गटन क मन्त्रित्व का अन्त हो गया। इसके पश्चात् लार्ड ग्रे (Lord Grey) प्रधान मन्त्री बना। लार्ड ग्रे ह्विगदल का नेता था और पार्लियामेण्ट में सुधार करना आवश्यक समझता था, परन्तु लगभग ६० वर्षों से इङ्गलैण्ड की बागडोर टोरीदल के हाथों में थी। अतएव लोग अधिक सुधार की आशा न रखते थे। ह्विग मन्त्रित्व के हाथों में शासन आ जाने से उनकी आशायें द्विगुणित हो गईं। भविष्य में कई सालों तक इङ्गलैण्ड का शासन इसी दल के अधिकार में रहा। इसने आन्तरिक प्रबन्ध तथा वाह्यनीति में कई प्रशसनीय कार्य किये।

सन १८३० ई० के विद्रोह-लार्ड ग्रे के प्रधान मन्त्री बनने के पूर्व यूरप में एक बार पुन भयङ्कर विद्रोह हुआ जिसके कारण समस्त राजाओं के सिंहासन एक सिरे से दूसरे सिरे तक हिलने लगे। यह विद्रोह भी लार्ड लिवरपूल के समय के विद्रोहों की भाति उन राष्ट्रों की ओर से हुये जो प्राचीन निर्दयी एव क्रूर राजाओं को हटा कर ऐसे राजाओं को देश का शासक बनाना चाहती थी जो उनको राज्यप्रबन्ध में भाग देने को उद्यत थे। प्रथम विपल्व फ्रास देश में हुआ। यहा के राजा दसवें चार्ल्स की गणना निर्दयी तथा क्रूर राजाओं में थी। वह फ्रासीसी राष्ट्र को शासन में तनिक भी भाग न देना चाहता था। उसने २५ जौलाई सन् १८३० को प्रजा के विरुद्ध कई नियम बनाये, परन्तु कई महीनों के युद्ध के उपरान्त उस विद्रोहियों के आगे नीचा देखना पडा। फ्रासीसियों ने फ्रास का सिंहासन उस के भतीजे लुई फिलिप (Louis Philippe) को सौंप दिया। लुई फिलिप ने अनेकों आवश्यक सुधार किये और उसी प्रकार शासन किया जिस प्रकार लोगों की इच्छा थी। फ्रास से विपल्व की अग्नि पूर्व दिशा की ओर बढी और बेलजियम, इटैली, जर्मनी और पोलैण्ड मे फैली। चारों ओर स्वतन्त्रता की ध्वनि गुज उठी।

पामर्स्टन की विदेशी नीति, १८३०—३७ ई०—इस समय ब्रिटिश द्वीपसमूह की बाह्यनीति लॉर्ड पामर्स्टन (Lord Palmerston) के हाथों में थी। काम्फ्रे और कैनिङ्ग की भांति यह भी उन राष्ट्रों का सहायक था जो स्वतन्त्रता देवी पर बलिदान होने को उद्यत थीं। वह ऐसी राष्ट्रों की ओर से युद्ध करने को कैनिङ्ग से भी अधिक उद्यत था। मुख्यत उसकी इच्छा थी कि बलकान प्रायद्वीप की समस्त छोटी रियासतें टर्की के सुल्तान के अधिकार से बाहर होकर अपना प्रबन्ध स्वयं करें और स्वतन्त्र रियासतें बन कर रहें। पामर्स्टन ने फ्रांस के राजा लुई फिलिप से मिल कर बेलजियम को स्वतन्त्रता दिलाई और पुर्तगाल में शान्ति स्थापित की।

जितना नाम लॉर्ड पामर्स्टन ने बाह्यनीति में पाया उस से भी अधिक नाम लॉर्ड ग्रे ने पार्लियामेण्ट में सुधार करके पाया। यह ग्रे और ह्विग दल के एक अन्य सदस्य लॉर्ड जॉन रसल (Lord John Russel) ही के परिश्रम का परिणाम था जो प्रथम रिफार्म बिल पास हो सका। इस समय टोरी और ह्विगदल दोनों अत्यन्त प्रबल थे। टोरीदल का प्रधान नेता ड्यूक आफ वेलिङ्गटन था। वेलिङ्गटन पार्लियामेण्ट में सुधार करने के विरुद्ध था। वह भली प्रकार जानता था कि यदि इङ्गलैण्ड के मध्यम श्रेणी के मनुष्यों को पार्लियामेण्ट में बैठने की आज्ञा अधिक संख्या में मिल जावेगी तो केवल धनी पुरुषों की शक्ति ही क्षीण न हो जावेगी, प्रत्युत राज्य का प्रबन्ध भी बिगड़ जावेगा।

पार्लियामेण्ट में सुधार की आवश्यकता—ब्रिटिश द्वीपसमूह में पार्लियामेण्ट के सदस्यों का चुनाव दो स्थानों से होता था। प्रथम, कुछ सदस्य प्रान्तों (Counties) की ओर से निर्वाचित होते थे। द्वितीय, कुछ सदस्य ग्रामों और नगरों (Boroughs) की ओर से चुने

जाते थे । परन्तु सदस्यों के निर्वाचन होने के नियमों में निम्न लिखि चार दोष थे —

(१) बहुत से नगर ऐसे थे जहा सदस्य किसी धनाढ्य पुरु अथवा राजा के दबाव से निर्वाचित होते थे ।

(२) नगरों और प्रान्तों को मनुष्यगणना के अनुसार सदस्यों निर्वाचन करने का अधिकार प्राप्त न था। बहुत से प्राची नगर ऐसे थे जिनकी जन सख्या बहुत कम थी, परन्तु मेन चेस्टर आदि बडे २ नगरों की अपेक्षा पार्लियामेण्ट को अधि सदस्य भेजते थे ।

(३) भिन्न २ नगरों और प्रान्तों में भिन्न भिन्न श्रेणी के मनुष्यों क वोट देने का अधिकार था ।

(४) अधिकतर वोट उच्च श्रेणी के मनुष्य दे सकते थे जिसके कारण मध्यम श्रेणी के मनुष्यों तक को वोट देने का अधिकार प्राप्त न था निर्धनों को पूछता कौन था ।

प्रथम सुधार बिल, १८३२ ई०-लार्ड जान रसल ने सुधार बिल हाउस आफ कामन्स में उपस्थित किया* । इसका उद्देश उन दोषों को दूर करना था जिनका वर्णन ऊपर हुआ है । प्रथम बार हाउस आफ कामन्स में दो बार पढे जाने के पश्चात् वह केवल एक वोट से पास हुआ, परन्तु तीसरी बार वह १०९ वोटों से पास हो गया । इसके पश्चात्

* जब कोई बिल पार्लियामेण्ट में उपस्थित किया जाता है तो वह तीन बार हाउस आफ कामन्स में प्रकाशित होता है । यदि वह तीनों बार पास हो जाता है तो वह हाउस आफ लार्डस में भेज दिया जाता है । हाउस आफ लार्डस के सदस्य भी तीन बार पढने के पश्चात् या तो उस स्वीकार करते हैं या अस्वीकार करते हैं ।

सुधार बिल हाउस आँफ लार्डस में भेज दिया गया । लार्डस ने पहले ही बार पढ कर उसे अस्वीकार किया । यह देख कर कई स्थानों में विद्रोह और झगडे हुये । लन्दन के निवासियों ने ड्यूक आफ वेलिङ्गटन के भवन के शीशे तोड डाले । सुधार बिल पुन हाउस आफ कामन्स में पास हुआ और लार्डस के सामने लाया गया । अप्रैल के महीने में वह यहा द्वितीय बार पास हुआ । इसके पश्चात् जब उसके ऊपर हाउस आफ लार्डस की कमटी में वादाविवाद हो रहा था तो टोरीदल ने जोर लगा कर उसे फिर अस्वीकार करा दिया ।

जब लार्ड ग्रे ने देखा कि सुधार बिल हाउस आफ लार्डस में पास न होगा तो उसने विवश हो कर विलियम चतुर्थ को नये लार्डस बनाने की सम्मति दी । विलियम ने उसकी सम्मति स्वीकार न की । अत लार्ड ग्रे ने पद त्याग दिया । उसके स्थान पर वेलिङ्गटन ने मन्त्रित्व स्थापित करने का प्रयत्न किया, परन्तु वह सफल न हुआ । विलियम ने विवश हो कर लार्ड ग्रे को पुन बुलाया और उसके कथनानुसार लार्डस को यह भय दिया कि यदि वे सुधार बिल पास न करेंगे तो वह नये लार्डस बना कर उसे पास करा देगा । ड्यूक आफ वेलिङ्गटन समझ गया कि अब सुधार बिल को अस्वीकार करना मूर्खता है । अत जब अन्तिम बार हाउस आफ लार्डस में उस पर वादाविवाद हुआ तो वह और उसके दल के बहुत से लार्डस उपस्थित न हुये अत' सुधारबिल पास हो गया ।

सुधार बिल से वे सारी बुराइया बडी सीमा तक दूर हो गईं जिनका वर्णन ऊपर हुआ है ।

१—पार्लियामेण्ट ने आज्ञा दी कि मनुष्य अपने प्रतिनिधियों का चुनाव अपनी इच्छानुसार किया करें और राजा, धनाढ्यों अथवा जमीदारों से घूस लेकर अपनी इच्छा के प्रतिकूल वोट न दें ।

२—नगरों की वोटो में से ६५ वोट प्रान्तो और ४३ वोट नये नगरो

को मिले। इन में से २२ प्रान्त दो दो और २१ प्रान्त एक एक सभ्य पार्लियामेण्ट में भेज सकते थे। इस प्रकार जहा तक सम्भव हुआ, वोटों की संख्या जन संख्या के अनुसार कर दी गई।

३—वोट देने वालों की स्थिति ठीक से निश्चित हुई। कस्बों और शहरों में उन लोगों को वोट देने का अधिकार प्राप्त हुआ जो कम से कम १० पौण्ड वार्षिक किराया देते थे। प्रान्तों में १० पौण्ड सालाना की भूमि जोतने वाले मौरूसी तथा बहुत पुराने किसानों को और इसके अतिरिक्त ५० पौण्ड सालाना की भूमि जोतने वाले साधारण किसानों को वोट देने का अधिकार प्राप्त हुआ।

४—तीसरी प्रतिज्ञा का एक मुख्य परिणाम यह हुआ कि मध्यम श्रेणी के मनुष्यों को भी वोट देने का अधिकार प्राप्त हो गया।

उपरोक्त प्रतिज्ञाओं के पढ़ने से ज्ञात होता है कि जो चार दोष पार्लियामेण्ट के सदस्यों के निर्वाचन करने में थे वे बहुत बड़ी सीमा तक दूर हो गये। प्रथम सुधार बिल का मुख्य परिणाम यह हुआ कि मध्यम श्रेणी के मनुष्य अर्थात् व्यापारी और दूकानदार इत्यादि को बड़ी संख्या में वोट देने का अधिकार प्राप्त हो गया। अतः सन् १८३२ ई० के पश्चात् बृतानियां द्वीपसमूह का प्रबन्ध धनियों और नवाबों के स्थान पर मध्यम श्रेणी के मनुष्यों के हाथों में आ गया।

अन्य ह्विग सुधार—प्रथम सुधार बिल के अतिरिक्त विलियम चतुर्थ के शासन-समय में ह्विग मंत्रियों ने और भी अनेकों सुधार किये। इनका धन्यवाद हमें लार्ड ग्रे के अतिरिक्त लार्ड मेलबोर्न (Lord Melbourne)* को देना चाहिये। लार्ड ग्रे ने सन् १८३३ ई० में हब्शियों

* (१) लार्ड ग्रे, नवम्बर १८३०—जुलाई १८३४ ई०।
(२) लार्ड मेलबोर्न, जुलाई १८३४—नवम्बर १८३४ ई०।
(३) सर राबर्ट पील, दि० १८३४—अप्रैल १८३५ ई०।
(४) लार्ड मेलबोर्न, अप्रैल १८३५—अगस्त १८४१ ई०।

का व्यापार रोक दिया। इसी साल ईस्ट इण्डिया कम्पनी से चीनी व्यापार का ठेका छीन लिया गया। सरकार ने पहली बार शिक्षा विभाग के लिये धन स्वीकार किया। बैङ्क आफ इङ्गलण्ड का सुधार हुआ। कारखानों में काम करनेवाले मजदूरों की अवस्था सुधारने के लिये नियम बने। न्यायालयों का बुराइया दूर की गई। निर्धनों को उचित रीति से सहायता देने के लिये एक बोर्ड स्थापित हुआ। सन् १८३५ ई० में शहरों और नगरों का उचित प्रबन्ध करने के लिये प्रत्येक नगर तथा उपनगर में एक मेअर (Mayor) और एक कौंसिल स्थापित हुये जिसके सदस्यों का निर्वाचन नगर अथवा उपनगर निवासियों की ओर से होता था।

आयरिश टाइथ्स लार्ड मेलबोर्न ने आयरलण्ड के लिये भी अनेकों लाभदायक नियम बनाये। इङ्गलैण्ड की सरकार का धर्म प्रोटेस्टेंटिज्म था, परन्तु आयरलैण्ड के निवासी अधिकतर कैथोलिक धर्म के अनुयायी थे। तिस पर भी सरकार प्रोटेस्टेण्ट गिर्जों के व्यय के लिये कृषकों से उनकी आय का दशांश (Tithes) ले लेती थी। आयरलैण्ड के कृषक वैसे ही दीन थे, इस कर के कारण उनकी दीनता और भी अधिक बढ़ गई थी। सन् १८३३ ई० में ओकोनल ने इसके प्रतिकूल पार्लियामेण्ट में आवाज उठाई। आयरलैण्ड में विद्रोह और लड़ाई झगड़े होने लगे। लार्ड मेलबोर्न ने ओकोनल के कहने से कृषकों की आय का दशांश लेना बन्द कर दिया। गिर्जों के व्यय के लिये एक कर कृषकों के स्थान पर जमींदारों से लिया जाने लगा। इस परिवर्तन से आयरलैण्ड के कृषकों की आपत्ति किसी सीमा तक दूर हो गई। लार्ड मेलबोर्न ने आयरलैण्ड के निर्धन पुरुषों की सहायता हेतु एक नियम (Poor Law) बनाया जिस से आयरलैण्ड के दीन पुरुषों को सरकार की ओर से उसी प्रकार सहायता मिलने लगी जिस प्रकार इङ्गलैण्ड में मिलती थी।

विलियम चतुर्थ की मृत्यु, १८३७ ई० जून सन् १८३७

ई० में विलियम चतुर्थ की मृत्यु हुई । इस समय इङ्गलण्ड के ऊपर कई आपत्तियाँ थीं जिनका वर्णन अगले अध्याय में होगा ।



अभ्यास ।

(१) यदि तुम्हारे स्कूल में पार्लियामेण्ट होती है तो उसकी रचना शैली वर्णन करो । क्या तुम बता सकते हो कि देश उन्नति के लिये पार्लियामेण्ट का होना क्यों आवश्यक है ?

(२) सन् १८३२ ई० के सुधार बिल ने पार्लियामेण्ट के लिये सभासद निर्वाचन करने की प्रथा में क्या परिवर्तन किये ? इस बिल को किसने पार्लियामेण्ट में उपस्थित किया था ?

(३) प्रथम सुधार बिल से कौन २ बातें निश्चित हुई ? उसने उन बुराइयों को किस प्रकार दूर किया जो उसके पास होने के पूर्व पार्लियामेण्ट में विद्यमान थीं ?

(४) सक्षेप में लिखो :—

[अ] हब्शियों का व्यापार, [ब] पामर्स्टन, [स] आयरिश टाइथ्स, [द] विलियम चतुर्थ का चरित्र ।

(५) ह्विग मन्त्रियों ने विलियम चतुर्थ के शासनकाल में कौन २ आवश्यक सुधार किये ।



बयालीसवां अध्याय ।



महारानी विक्टोरिया (१८३७–१९०१)।



विलियम चतुर्थ के कोई सन्तान न थी। अत उसकी मृत्यु पर उसके छोटे भाई एडवर्ड ड्यूक आफ केण्ट (Edward, Duke of Kent) की पुत्री विक्टोरिया सिंहासनारूढ हुई। विक्टोरिया के साम्राज्ञी बनने का एक मुख्य परिणाम यह हुआ कि भविष्य के लिये बृटिश द्वीप समूह का सम्बन्ध हनोवर देश से बिलकुल टूट गया। जब से हनोवर वंश को इङ्गलैण्ड का शासन मिला था तब से इङ्गलैण्ड का राजा हनोवर पर भी शासन करता था, किन्तु विक्टोरिया को हनोवर का राज्य न मिला। कारण यह था कि वहाँ के नियमों के अनुसार स्त्रियाँ उस देश में शासन न करती थीं। हनोवर का राज्य विक्टोरिया के चचा ड्यूक आफ कम्बरलैण्ड (Duke of Cumberland) को मिला।

विक्टोरिया का चरित्र—सिंहासनारूढ होने के समय विक्टोरिया की आयु केवल १८ वर्ष की थी। अत अभी वह अल्पवयस्का ही थी। जार्ज तृतीय की भाति उसने अपनी माता द्वारा शिक्षा पाई थी। उस में वे सम्पूर्ण गुण थे जो एक राजकुमारी के लिये अत्यावश्यक होते हैं। वह परिश्रमी, शीलस्वभाव तथा बुद्धिमती थी। वह पार्लियामेण्ट में सुधार होने में बाधा न डालना चाहती थी। उसकी यह अभिलाषा थी कि इङ्गलैण्डनिवासी उस मार्ग पर आगे बढ़े चले जावें जो उन्होंने ग्रहण किया है। जब तक लार्ड मेलबोर्न प्रधान मन्त्री रहा, विक्टोरिया सदैव उसके कथनानुसार काम करती रही। मेलबोर्न ह्विगदल का सदस्य था।

अतः टोरीदल को भय था कि कहीं ऐसा न हो कि विक्टोरिया उस क
कहने से उनकी ओर से अपना ध्यान हटाले, किन्तु जब सन् १८४० ई०
में विक्टोरिया का विवाह उसके मामा के लड़के एलबर्ट ऑफ कोबर्ग
(Albert of Coburg) से हो गया, तो टोरीदल का भय बिलकु
जाता रहा क्योंकि एलबर्ट विक्टोरिया को सदैव मध्यवर्ती मार्ग का
अनुसरण करने की सम्मति देता था। जब तक वह जीवित रहा विक्टोरिया
सदैव उसके कथनानुसार काम करती रही। सन् १८६१ ई० में उसकी
मृत्यु हो गई। अतः इस वर्ष के उपरान्त विक्टोरिया को फिर पूर्णतया
ह्विग मन्त्रियों के कहने पर चलना पड़ा।

देश की अवस्था—जिस समय साम्राज्ञी विक्टोरिया ने ब्रिटिश
द्वीपसमूह के सिंहासन को सुशोभित किया इङ्गलैण्ड कई आपत्तियों में
ग्रसित था। पहले सुधार बिल के पास हो जाने से मध्यम श्रेणी के
मनुष्यों को पार्लियामेण्ट के लिये सदस्य निर्वाचन करने का अधिकार
प्राप्त हो गया था, परन्तु कृषकगण, मजदूर और अन्य निर्धनजन अभी तक
पार्लियामेण्ट में सदस्य न भेजने पाते थे। अनेक स्थानों पर विप्लव
और झगड़े हो रहे थे जिनका रोकना देश में शान्ति स्थापनार्थ अत्यन्त
आवश्यक था। कनाडा और आयरलैण्ड में भी विद्रोह के चिन्ह दृष्टिगोचर
हो रहे थे। भारतवर्ष के निवासी अंग्रेजी शासन से असन्तुष्ट थे। वे
गुप्त रीतियों से पुनः स्वतन्त्र बनने का प्रयत्न कर रहे थे। अनाज अभी
तक महँगा था। कारखानों में स्त्रियों तथा बच्चों के साथ कठोर व्यवहार
होता था। शिक्षा का प्रचार बहुत था।

महारानी विक्टोरिया ने उपरोक्त आपत्तियों का सामना बड़ी योग्यता
से किया। इन का वर्णन निम्न लिखित रीति से करेंगे।

(१)—आन्तरिक घटनायें। (२)—वाह्यनीति। (३)—आयरलैण्ड
(४)—अंग्रेजी राज्य की बढ़ती।

(अ) आन्तरिक प्रबन्ध ।

मेलबोर्न का द्वितीय मन्त्रित्व—लार्ड मेल्बार्न महारानी विक्टोरिया को सदैव सुधार करने की सम्मति देता था। सन् १८३७ ई० में उसे कनाडा में एक भयङ्कर विद्रोह का सामना करना पड़ा। उसने सफलतापूर्वक ऐसा किया। उसने आयरलण्ड में भी अनेकों आवश्यक सुधार किये। इनका वर्णन आगे होगा। लार्ड मेलबोर्न ने कनाडा और आयरलैण्ड दोनों ही में पूर्ण सफलता प्राप्त की।

डाकखानों का सुधार, १८३६ ई०-लार्ड मेलबोर्न ने डाकखानों में भी एक आवश्यक सुधार किया। अभी तक पत्रों पर दूरी के अनुसार कर लगा करता था, किन्तु वह एक शिलिङ्ग से कम कदापि न होता था। एक विशेष बात यह भी थी कि कर उस मनुष्य को देना पड़ता था जिसके नाम पत्र आता था। लार्ड मेलबोर्न की दृष्टि इन बुराइयों पर पड़ी। उसने यह नियम बना दिया कि पत्रों पर कर एक पेनी या पैंस से अधिक न होगा चाहे वह कितनी ही दूर से क्यों न आया हो। पत्र लिखने वाले को उस पर एक पेनी का टिकट लगाना पड़ता था जैसा कि वर्तमान समय में होता है। इस सुधार से प्रजा को बहुत सुख प्राप्त हुआ। डाकखानों में सुधार करके लार्ड मेलबोर्न ने २० सहस्र पौंड शिक्षा प्रचार के लिये दिये। वह शिक्षकों को शिक्षा देने की उचित रीति सिखाने को एक कालेज भी खोलना चाहता था, परन्तु ऐसा न कर सका।

प्रथम चार्टिस्ट आन्दोलन, १८३६ ई०—मजदूर सोचते थे कि जिस प्रकार सन् १८३२ ई० के सुधार बिल ने व्यापारियों और दूकानदारों की दशा सुधार दी है उसी प्रकार यदि हम को भी पार्लियामेण्ट के लिये सदस्य निर्वाचन करने की आज्ञा मिल जावे तो हमारी स्थिति भी सुधर जावे। सन् १८३० ई० में उन्हों ने सम्मिलित हो कर ओकानर (O'Connor) की अध्यक्षता में, जो आयरलैण्ड से आये हुये पार्लियामेण्ट

के सदस्यो में सब से श्रेष्ठ था, एक अधिकारपत्र अथवा चार्टर पार्लियामेण्ट के नाम लिखा। इस में उन्हों ने छः बातों की प्रार्थना की जो निम्न लिखित हैं ,—

१—पार्लियामेण्ट की बैठक प्रति वर्ष होनी चाहिये।

२—प्रत्येक युवक को पार्लियामेण्ट के लिये सदस्य निर्वाचन करने का अधिकार प्राप्त होना चाहिये।

३—सदस्य गुप्त रीति (Ballot) से निर्वाचित होने चाहिये।

४—सदस्य निर्वाचन होने के लिये देश के समान भाग होने आवश्यक हैं

५—पार्लियामेण्ट का सदस्य बनने के लिये भूमि अथवा निजी मकान का रखना आवश्यक न होना चाहिये।

६—हाउस ऑफ कॉमन्स के सदस्यों को वेतन मिलना चाहिये।

पार्लियामेण्ट ने चार्टिस्ट के अधिकार पत्र की ओर ध्यान तक न दिया। इस कारण कई स्थानों पर विद्रोह और झगडे हुये। सरकार ने चार्टिस्ट के कई नेताओं को पकड़ कर देशनिकाला दे दिया, परन्तु ओकोनर बच गया। देश में पुन॰ शान्ति स्थापित हुई।



रावर्ट पील

रावर्ट पील का कंज़रवेटिव मन्त्रित्व, १८४१–४६ ई०

सन् १८४१ ई० में लार्ड मेलवोर्न के द्वितीय मन्त्रित्व का अन्त हुआ। इसके पश्चात् रावर्ट पील ने कंज़रवेटिव मन्त्रित्व स्थापित किया। पील

* प्रथम सुधार बिल के पश्चात् टोरीदल कंज़रवेटिव (Conservative) और ह्विगदल लिबरल (Liberal) नाम से प्रसिद्ध हुये।

उसके सहायक अधिकतर बड़े बड़े जमींदार और कृषक थे। वह पार्लियामेण्ट में सुधार न करना चाहता था। हाँ, वह समाज सुधार अवश्य करना चाहता था। उसके दलवाले सुधार के प्रतिकूल होने के कारण उस से सदा अप्रसन्न रहते थे।

सब से प्रथम राबर्ट पील की दृष्टि कारखानों और खानों पर पड़ी। उसके कहने से पार्लियामेण्ट ने सन् १८४२ ई० में यह नियम बना दिया कि कोई लड़की अथवा बालक जिसकी आयु दस वर्ष से कम है, खानों में काम नहीं कर सकता है। जिस बालक की आयु तेरह वर्ष से कम है उस से कोई एक सप्ताह में तीस घण्टे से अधिक काम नहीं करा सकता। इसके दो वर्ष पश्चात् पार्लियामेण्ट ने यह नियम बनाया कि नौ वर्ष से कम आयु वाले बालक रुई और रेशम के कारखानों में काम नहीं कर सकते। पील ने लगभग एक सहस्र व्यापारिक कर कम कर दिये और लगभग छः सौ बिलकुल हटा दिये। सरकार की जो हानि हुई वह पील ने ७ पेंस प्रति पौण्ड इनकम टैक्स लगा कर पूरी कर दी। आयरलैण्ड में शिक्षा विभाग में कई सुधार हुये। बैङ्क ऑफ इङ्गलैण्ड के सुधार के लिये यह नियम बना कि यह बैंक उतने ही नोट निकाल सकती है जितना रुपया उसके पास नकद हो। पील ने उन नियमों को भी हटा दिया जो बाहर से नाज आने में बाधा डालते थे। यह क्योंकर हुआ इसका वर्णन नीचे करेंगे।

ऐंटि कार्न ला लीग, १८३८ ई०—सन् १८३८ ई० में कुछ मनुष्यों ने मैनचेस्टर नगर में एक लीग (Anti Corn Law League) स्थापित की, जिसका उद्देश्य उन नियमों को हटाना था जो बाहर से नाज न आने देते थे। काबूडन (Cobden) और ब्राइट (Bright) इन के नेता थे। प्रारम्भ में पील इन नियमों के हटाने के विरोध में था। कारण यह था कि ऐसा होने से उसके दल के जमींदारों तथा कृषकों को हानि

पहुचने की सम्भावना थी। इसके प्रतिकूल लिबरलदल, जिस मे अधिकतर व्यापारी तथा बडे बडे दुकानदार थे, नाज संबन्धी नियमों को हटाकर कजरवेटिव दल के जमींदारों इत्यादि को नीचा दिखाना चाहते थे।

कार्न लाज़ का अन्त, १८४६ ई०-सन् १८४५ ई० में आयरलैण्ड में आलू की कृषी न होने के कारण घोर दुर्भिक्ष फैला। सैकडों घर नष्ट हो गये। चारों ओर कार्न लाज के हटाने को शोर मचने लगा। यह देख कर रावर्ट पील के विचार बदल गये। उसने पार्लियामेण्ट से इन नियमों को रद्द करने की प्रार्थना की। परन्तु कंजरवेटिवदल के एक अन्य प्रसिद्ध सदस्य बेञ्जमिन डिजरेला (Benjamin Disraeli) ने पील का विरोध जोरों के साथ किया। लिबरल और कजरवेटिव दलों में पार्लियामण्ट में खूब वादविवाद हुआ। अत में लिबरलदल की विजय हुई। सन् १८४६ ई० में पार्लियामेण्ट ने कार्न लाज को रद्द करके यह नियम बना दिया कि भविष्य में अन्य देशों से आने वाले अनाज पर कोई कर न लिया जायगा। कजरवेटिवदल की हार के दो मुख्य परिणाम हुये। प्रथम, कृषी को हानि पहुंचने के कारण लोगों ने कृषी छोड कर व्यापार की ओर ध्यान लगाया। द्वितीय, कजरवेटिवदल को ऐसा धक्का पहुचा कि कई वर्ष तक वह राजप्रबन्ध अपने हाथों में न ले सका। कृषक, जमींदार तथा कजरवेटिवदल के अन्य सदस्य रावर्ट पील से बहुत अप्रसन्न हुये, अत उसके मन्त्रित्व का शीघ्र ही अन्त हो गया। कुछ समय पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई। उन्नीसवी शताब्दि के प्रधान मन्त्रियों में उसे उच्च पद प्राप्त है। वह पार्लियामेण्ट के नेताओं में बड़े पिट की भाति श्रेष्ठ स्थान रखता है। उसके भाषण बांसुरी की भाति सदस्यों के हृदयों को वश में कर लिया करते थे। पील का चरित्र आक्षेपरहित था। ड्यूक ऑफ वेलिङ्गटन उसके विषय में लिखता है कि "पील के हृदय में सत्य तथा न्याय सदा निवास करते थे"। इस से प्रभावशाली तथा उचित शब्दों में पील के चरित्र की व्याख्या करना कठिन है।

रसल के सुधार, १८४६-५२ ई०—पील के मन्त्रित्व का अन्त होने पर महारानी विक्टोरिया ने ह्विगदल के नेता लार्ड जान रसल (Lord John Russel) को प्रधान मन्त्री बनाया। रसल वही मनुष्य था जिसने पहला सुधार बिल हाउस आफ कामन्स में उपस्थित किया था। प्रधान मन्त्री बनने पर उसने कई आवश्यक सुधार किये। आयरलैण्ड पर उसकी विशेष कृपा रहती थी। अत उसने आयरलैण्ड निवासियों की अवस्था कई प्रकार से सँभाली। इङ्गलैण्ड में रेल की सड़कें बनीं। सन् १८४७ ई० में सरकार ने यह नियम बना दिया कि स्त्रियां तथा बालक कारखानों में दस घण्टों से अधिक काम नहीं कर सकते। इसके दो वर्ष पश्चात् जल व्यापार सम्बन्धी नियम, जो लिवरपूल के समय में सरल कर दिये गये थे, बिलकुल रद्द कर दिये गये। अंग्रेजी सरकार ने आस्ट्रेलिया को स्वतन्त्रता प्रदान की। व्यापार तथा कला कौशल को उन्नति देने के लिये जान रसल ने लन्दन नगर में एक नुमायश की जिस में दूर दूर से अनमोल वस्तुयें बिकने आईं।

द्वितीय चार्टिस्ट आन्दोलन, १८४८ ई०—सन् १८४८ ई० में जान रसल को द्वितीय चार्टिस्ट आन्दोलन का सामना करना पड़ा। सन् १८३९ ई० की भांति इस वर्ष भी चार्टिस्ट्स ने खूब जोर बांधा। इसका एक मुख्य कारण यह था कि इस वर्ष यूरुप महाद्वीप में कई स्थानों पर स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने के अभिप्राय से विप्लव हो रहे थे। ओकोनर की सम्मति के अनुसार चार्टिस्ट्स ने फिर एक अधिकारपत्र पार्लियामेण्ट को भेजा। सहस्रों पुरुषों ने उस पर हस्ताक्षर किये। सबों को लेकर ओकोनर लन्दन की ओर बढ़ा। यह देख कर जान रसल भयभीत हो गया। अत उसने लन्दन के चतुर्दिक् और उसकी गलियां में पुलिस बिठला दी। चार्टिस्ट्स का अधिकारपत्र पार्लियामेण्ट के सम्मुख उपस्थित हुआ। निरीक्षण करने से ज्ञात हुआ कि उसके हस्ताक्षरों में से आधे से अधिक

जाती है। अत सरकार ने अधिकारपत्र एक ओर रख दिया और चार्टिस्ट्स अपना सा मुह लिये लौट गये। इसके उपरान्त उनकी संख्या शनै शनै कम होती गई। कुछ वर्ष पश्चात उनका चिन्ह तक न रहा।

पामर्स्टन का मन्त्रित्व, १८५५-६५ ई०—सन् १८५२ ई० में रसल के मन्त्रित्व का अन्त हुआ। इसके तीन वर्ष पश्चात् लिबरलदल का एक अति प्रसिद्ध सदस्य पामर्स्टन (Palmerston) नामक प्रधान मन्त्री बना और एक वर्ष पाच महीनों * को छोड कर सन् १८६५ ई० तक इस पद पर रहा। पामर्स्टन की गणना योग्य अंग्रेजी नीतिज्ञों में होती है। कठिन से कठिन कार्य्य उसको सहज ज्ञात होता था। उसके हृदय में देशप्रेम का सच्चा उत्साह भरा हुआ था। प्राय वह इङ्गलैण्ड के हित के लिये ऐसे कार्य्य कर बैठता जिनके कारण उसके दलवाले उस से अप्रसन्न हो जाते थे। परन्तु पामर्स्टन पार्लियामेण्ट के अन्दर तनिक भी सुधार न करना चाहता था। उसने अपनी वाह्यनीति में जो सफलता प्राप्त की उसका स्पष्ट वर्णन आगे करेंगे।



पामर्स्टन

* (१) रसल जौलाई १८४६—फरवरी १८५२ ई०
(२) डर्बी फरवरी १८५२—दिसम्बर १८५२ ई०
(३) एबर्डीन दिसम्बर १८५२—फरवरी १८५५ ई०
(४) पामर्स्टन फरवरी १८५५ फरवरी १८५८ ई०
(५) डर्बी फरवरी १८५८—जून १८५९ ई०
(६ पामर्स्टन जून १८५९—जनवरी १८६५ ई०

रसल का दूसरा और डर्बी का तीसरा मन्त्रित्व, १८६५-६८ ई०—सन् १८६१ ई० में विक्टोरिया के पति एल्बर्ट ऑफ कोबर्ग का मृत्यु हुई। एलबर्ट विक्टोरिया की बड़ी सहायता करता था और प्राय देश प्रबन्ध की देखभाल स्वय ही करता था। उसकी मृत्यु से विक्टोरिया को बहुत दुःख हुआ। अत दस वर्ष तक उसने राज प्रबन्ध में बहुत कम ध्यान लगाया। सन् १८६५ में लार्ड पामर्स्टन की भी मृत्यु हो गई। रसल दूसरी बार प्रधान मन्त्री बना। इसके आठ मास उपरान्त कञ्जरवेटिवदल का नेता डर्बी तीसरी बार प्रधान मन्त्री बनाया गया। इस समय इङ्गलैण्ड में स्थान २ पर राजनैतिक सभायें हो रहीं थीं। मजदूर पार्लियामेण्ट के अन्दर स्थान पाने का उपाय कर रहे थे। हाउस ऑफ कामन्स के सदस्य इस ओर बहुत कम ध्यान देते थे, परन्तु उनका नेता डिजरेली (Disraeli) इस बात को पूर्ण रूप से समझता था कि मजदूर पार्लियामेण्ट में स्थान पाने के अधिकारी हैं। उसके जीवन का एक उद्देश्य मजदूरदल को उच्चश्रेणी पर पहुंचाना था।

दूसरा सुधार बिल, १८६७ ई० डिजरेली ने दूसरा सुधार बिल पार्लियामेण्ट में उपस्थित किया, परन्तु हाउस आफ कामन्स और हाउस आफ लार्ड्स दोनों ने उस से प्रतिकूलता प्रकट की, अत डिजरेली को सुधार बिल लौटा लेना पड़ा। इसके कुछ समय पश्चात् एक बार पुनः उसने उसे पार्लियामेण्ट में प्रकाशित किया, परन्तु इस बार भी बहुत से सदस्यों ने उसका विरोध किया। केबिनेट के तीन सदस्यों ने पद त्याग दिया। इनमें एक लार्ड क्रेनबोर्न (Lord Cranborne) था जो सन् १८८५ ई० में सेलजबरी के नाम से प्रधान मन्त्री बना। यद्यपि लार्ड डर्बी स्वय कञ्जरवेटिव दल का नेता था, तथापि उसने डिजरेली का विरोध अधिक न करके सुधार बिल के पास होने का अवसर दिया। अत सुधारबिल दोनों हाउसों में स्वीकार हो गया। इस से

निम्न लिखित रीतियों से मनुष्यों को वोट देने का अधिकार मिला—

१—कस्बों और शहरों में उन लोगों को वोट देने का अधिकार मिला जो या तो किसी मकान के मालिक थे या सरकार को कोई कर देते थे और चुनाव के पहले एक ही मकान में कम से कम साल भर तक रह चुके थे।

२—प्रान्तों में उन मनुष्यों को वोट देने का अधिकार प्राप्त हुआ जो बारह पौण्ड या इस से अधिक प्रति वर्ष मकान का किराया अथवा खेत का लगान देते थे।

दूसरे सुधार बिल से वोट देने वालों की संख्या पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गई। लुहारों, सुनारों और इस प्रकार के दूसरे कारीगरों को वोट देने का अधिकार मिल गया। मजदूरों को भी वोट देने का अवसर प्राप्त हुआ। डिज़रेली को यह कदापि आशा न थी कि कारीगरों और मजदूरों को ऐसी बड़ी संख्या में वोट देने का अधिकार मिल जावेगा। सबों ने डिज़रेली के इस वीरता पूर्ण कार्य्य (Leap in the Dark) की प्रशंसा की। सन् १८६८ ई० में इस प्रकार के सुधार बिल स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड के लिये भी पास हुये जिनके द्वारा उन देशों में भी लगभग वही परिवर्तन हुये जो इङ्गलैण्ड में हुये थे।

ग्लैडस्टन का प्रथम मन्त्रित्व, १८६८-१८७४ ई०—फ़रवरी सन् १८६८ ई० में डर्बी ने पद त्याग दिया। महारानी विक्टोरिया ने डिज़रेली को प्रधान मन्त्री बनाया, किन्तु दिसम्बर सन् १८६८ ई० में उसके मन्त्रित्व का भी अन्त हो गया। अब शासन की बागडोर ग्लैडस्टन के हाथों में आई। विलियम एडवर्ड ग्लैडस्टन (William Edward Gladstone) इङ्गलैण्ड के मन्त्रियों में उच्चपद रखता है। वह लिबरलदल का नेता था। उसके माता पिता स्काटलैण्ड के निवासी

थे। उसने ऐटन और ऑक्सफोर्ड में शिक्षा पाई थी। २३ वर्ष की आयु में वह पार्लियामेण्ट का सदस्य बना। प्रारम्भ में वह राबर्ट पील के कन्ज़रवेटिव मन्त्रिमण्डल का सदस्य था। शनै शनै उसके विचारों में परिवर्तन हुआ। कुछ समय के पश्चात् वह लिबरलदल का नेता तथा दिसम्बर सन् १८६८ ई० के चुनाव मे प्रधान मन्त्री बन गया। भीतरी प्रबन्ध में ग्लेडस्टन ने कई आवश्यक सुधार किये। आयर्लैण्ड प्रदेश का वह परम मित्र था, परन्तु वाह्यनीति में वह सफल न हो सका, जिसके कारण इङ्गलैण्ड को कई बार दूर दूर देशों में लज्जा उठानी पड़ी।

ग्लेडस्टन के सुधार—सब से पहले ग्लेडस्टन की दृष्टि शिक्षा विभाग पर पड़ी। उसने मनुष्यों को स्वयं शिक्षा के लिये रुपया एकत्र करने और स्कूल खोलने को उत्साहित किया। जहाँ प्राइवेट स्कूल न होते वहाँ सरकारी स्कूल खुलते थे। निर्धन विद्यार्थियों को सरकार से सहायता मिलती थी। ग्लेडस्टन ने यह नियम भी बनाया कि लोग ६ वर्ष तक सेना में नौकरी करके घर लौट जा सकते हैं और निजी कार्यों में लग सकते हैं, परन्तु आपत्ति के समय में लौटना और देश की रक्षा करना उनके लिये आवश्यक ठहराया गया। सन् १८७२ ई० में सरकार ने यह नियम (Ballot Act) बनाया कि भविष्य में पार्लियामेण्ट के सदस्यों का चुनाव गुप्त रीति से हुआ करेगा जिस से यह पता न चले कि किसने किसके लिये वोट दिया है। सन् १८३९ ई० में चार्टिस्ट ने जिन छे बातों की प्रार्थना पार्लियामेण्ट से की थी, उन में से एक यह भी थी। ग्लेडस्टन ने न्यायालयों का सुधार किया और मदिरा की बिक्री कम करने को एक नियम बनाया। उसने मजदूरसंघों को नियमानुकूल ठहराया। खानों और बैंकों मे भी सुधार हुये। आयरलैण्ड मे ग्लेडस्टन ने अनेकों लाभदायक सुधार किये, जिनका वर्णन आगे किया जायेगा।

डिज़रेली का दूसरा मन्त्रित्व, १८७४–८० ई०—ग्लैडस्टन के कुछ सुधार ऐसे थे जिन से प्रजा प्रसन्न न हुई थी। अतः सन् १८७४ ई० के चुनाव में लिबरलदल के बहुत कम सदस्य चुने गये। इङ्गलैण्ड का शासन ग्लैडस्टन के शत्रु कंजरवेटिवदल के नेता डिजरेली* के हाथों में आया। डिजरेली के जीवन के तीन मुख्य उद्देश थे। प्रथम वह बोलिङ्गब्रुक, छोटे पिट और पील की भांति इङ्गलैण्ड की राजनीति ठीक रखना चाहता था। विशेष कर वह महारानी विक्टोरिया का बहुत आदर करता था। दूसरे, वह चाहता था कि इङ्गलैण्ड का राज्य और विस्तृत हो। तीसरे, वह मजदूरदल तथा कृषकों की अवस्था सुधारना चाहता था। यही तीन उद्देश सारे कंजरवेटिवदल को प्रिय थे।



बेञ्जिमन डिजरेली।

डिज़रेली के सुधार—दूसरे सुधार बिल से डिजरेली मजदूरों तथा कृषकों को पार्लियामेण्ट में सदस्य भेजने का अधिकार दिला चुका था। अब उसने कई और नियम बना कर उनकी अवस्था सँभाली। कृषकों को भूमि बेचने और खरीदने में सुविधायें प्रदान हुईं। किसान भूमि में जो सुधार करता था बेचते समय उसे उसका प्रतिफल मिलता था। निर्धनों की सहायता हेतु सरकार ने चरागाह बनाये जिन में वे अपने पशु चरा सकते थे। कारखानों के मजदूरों की अवस्था

* सन् १८७६ ई० में डिजरेली को अर्ल आफ बेकिंसफील्ड (Earl of Beaconsfield) की उपाधि मिली।

सुधारने के लिये डिजरेली ने कई नियम बनाये। उनके रहने के लिये मकानों का उचित प्रबन्ध हुआ। उनकी सभाओं को कई बहुमूल्य अधिकार मिले, परन्तु डिजरेली ने आयरलैण्ड की स्वाधीनता के बिल (Home Rule Bill) के मार्ग में, जिसके पास कराने के लिये ग्लेडस्टन जी जान से परिश्रम कर रहा था, कई रुकावटें खड़ी कर दी। इसके प्रतिकूल उसने अंग्रेजी साम्राज्य की उन्नति के लिये कई काम किये जिनका वर्णन आगे होगा।

ग्लेडस्टन का दूसरा मन्त्रित्व, १८८०-८५ ई०—अप्रल सन् १८८० ई० में डिजरेली का मन्त्रित्व समाप्त हुआ। ग्लेडस्टन दूसरी बार प्रधान मन्त्री बना। इस समय इङ्गलैण्ड अनेक आपत्तियों से घिरा हुआ था। आयरलैण्ड निवासी स्वराज्य पाने के अभिप्राय से पार्लियामेण्ट में बराबर शोर मचा रहे थे। दक्षिणी और पश्चिमी अफ्रीका में अङ्गरेजों की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। मिश्र में भी अङ्गरेज पराजित हो रहे थे। इन समस्त आपत्तियों के होते हुये भी ग्लेडस्टन ने तीसरा सुधार बिल पास करने को समय निकाल लिया।

तीसरा सुधारबिल, १८८४ ई०—दूसरे सुधार बिल से शहरों और नगरों में रहनेवाले मजदूरों दस्तकारों और दूकानदारों इत्यादि को सदस्य चुनने का अधिकार प्राप्त हो गया था परन्तु अभी तक गाँवों में रहने वाले मजदूरों और कृषकों को वोट देने का अधिकार प्राप्त न हुआ था। तीसरे सुधार बिल से यह दोष दूर हो गया। इसके द्वारा देहात में रहनेवाले मजदूरों और कृषकों को वोट देने का वही अधिकार प्राप्त हो गया जो अभी तक नगरों और शहरों में रहनेवाले मजदूरों तथा कारीगरों को प्राप्त था। सदस्य निर्वाचन करने के लिये देश के बराबर बराबर भाग किये गये। भविष्य में २२ कस्बों और कुछ विश्वविद्यालयों को छोड़ कर प्रति भाग एक सदस्य पार्लियामेण्ट में भेज सकता था।

इच्छा के विरुद्ध लुई के इस अनुचित कार्य्य से सहानुभूति प्रकट की। पामर्स्टन के अलग होने पर वाह्यनीति का प्रबन्ध रसल को सौंपा गया।

क्रिमिया का युद्ध, १८५४-५६ ई०—सन १८५४ ई० में क्रिमिया प्रायद्वीप में एक महान् युद्ध प्रारम्भ हुआ। इस युद्ध में इङ्गलैण्ड, फ्रान्स और टर्की एक ओर थे और रूस अकेला दूसरी ओर। १८५५ ई० में सारडीनिया के राजा विक्टर एमेनुयल (Victor Emmanuel) ने भी रूस के विरुद्ध एक सेना भेजी, जिसने इङ्गलैण्ड आदि से मिल कर क्रिमिया के प्रायद्वीप मे युद्ध किया।

जार निकोलस के विचार—इस युद्ध के कई कारण थे। रूस का जार निकोलस प्रथम (Nicholas I) टर्की के सम्राट का प्राचीन शत्रु था। वह चाहता था कि उसकी शक्ति बहुत कम हो जाने जिससे रूस को कालेसागर की ओर बढने का सुअवसर प्राप्त हो। जल्डमरूमध्य बास्फोरस और दानियाल दोनों इस समय टर्की के अधिकार मे थे। अतएव रूस के जहाज कालेसागर मे होकर रूमसागर तक न पहुच सकते थे, जिसके कारण उसके व्यापार की बडी हानि होती थी। जार निकोलस का टर्की को सदैव पीड़ित मनुष्य से दृष्टान्त देता था। उसका कथन था कि यूरप की बडी शक्तियों का कर्तव्य है कि वे टर्की की स्थिति का अन्त करके पुण्य प्राप्त करे क्योंकि टर्की सर्वदा पीडित रहने के कारण अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकती है।

अंग्रेज़ी केबिनेट और क्रिमियन युद्ध—अभाग्यवश इङ्गलैण्ड मे इस समय कंजरवेटिव तथा लियरलदलों का सम्मिलित शासन स्थापित था। कंजरवेटिवदल का नेता एबरडीन प्रधान मन्त्री था और लियरलदल के नेताओं के से लार्ड जान रसल वाह्यनीति का मन्त्री था तथा पामर्स्टन को आन्तरिक प्रबन्ध मिला हुआ था। अत स्वाभाविक

रीति से अंग्रेजी केबिनेट में क्रिमियन युद्ध के विषय में दो भिन्न मत थे। एब्रडीन युद्ध न करके सुल्तान तथा जार के बीच सन्धि कराना चाहता था। लॉर्ड पामर्स्टन अंग्रजी सेना भेज कर सुल्तान की सहायता करना चाहता था, परन्तु लॉर्ड जॉन रसल क्रिमियन युद्ध की ओर लेश मात्र ध्यान न देता था। कारण यह था कि वहां स्वयं को प्रधान मन्त्री बनाने तथा एक सुधार बिल पास कराने की चिन्ता में ग्रसित था। जब सुल्तान और जार के बीच सन्धि न हो सकी तो एब्रडीन ने भी टर्की के सुल्तान की ओर से युद्ध करने का दृढ विचार किया अथवा एक असाध्य रोगी को अमृत पिला कर अमर बनाने की ठानी। वह जार की चालों को भली भांति समझता था और यह भी अच्छी प्रकार से जानता था कि इङ्गलण्ड का हित इसी में है कि रूमसागर के पूर्वी कोने में एक शक्तिहीन सुल्तान राज्य करता रहे।

ज़ार तथा नैपोलियन की शत्रुता—लॉर्ड एब्रडीन तथा पामर्स्टन की भांति फ्रांस का राजा नैपोलियन तृतीय भी रूस के विरुद्ध युद्ध करना चाहता था। वह हाल ही में अनुचित रीति से फ्रांस का सम्राट बन चुका था।' फ्रांस में उसके सहस्रों शत्रु थे। अतएव उसकी इच्छा थी कि फ्रांसीसी सेनायें अन्य देशों में यश प्राप्त करें जिससे फ्रांस निवासी विजय की चमक में उसके अनुचित कार्य्य को भूल जावें। नैपोलियन तृतीय अपने चचा नैपोलियन महान् की भांति युद्ध का प्रेमी भी था। अतएव वह पूर्वीय घटनाओं मे तन, मन, धन से भाग लेना चाहता था। अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि नैपोलियन तृतीय युद्ध ही करना चाहता था, तो क्या कारण है जो उसने टर्की का साथ दिया ? उसने रूस की ओर से युद्ध क्यों न किया ? इन प्रश्नों का एक मुख्य उत्तर यह है कि इस समय ईसाइयों का पवित्र स्थान जेरूसलम ही क्या वरन् पेलिस्टाइन का समस्त देश टर्की के सुल्तान के अधिकार मे था।

वह यात्रियों को सैकड़ों प्रकार से कष्ट देता था। अतएव जार निकोलस और लुई नैपोलियन दोनों इन पवित्र स्थानों को अपने अधिकार में करने का विचार कर रहे थे। जार का कथन था कि मैं यूनानी चर्च का अधीश्वर हूँ, अतएव पवित्र स्थानों पर मेरा अधिकार होना चाहिये। लुई नैपोलियन कहता था कि मैं रोमन चर्च का अधीश्वर हूँ। अतएव उपरोक्त पवित्र स्थान मेरे अधिकार मे होने चाहिये। यही कारण है जो फ्रांस का सम्राट जार के विरुद्ध युद्ध करना चाहता था।

सुल्तान की ईसाई प्रजा—पवित्र स्थानों के सम्बन्ध में जो झगड़ा जार निकोलस और लुई नैपोलियन के मध्य था वह किसी प्रकार शान्त हो गया। परन्तु जार सुल्तान से युद्ध करने पर उतारू था। कुछ समय के उपरान्त जार ने यह बहाना ढूंढा कि टर्की का सुल्तान अपने राज्य में रहने वाले ईसाइयों के साथ क्रूरता और निर्दयता का व्यवहार करता है। अतएव मेरा कर्तव्य है कि मैं उनकी प्राणरक्षा के हेतु टर्की से युद्ध करूँ। वास्तव में उसने ऐसा ही किया।

टर्किश जलसेना की बर्बादी—जार निकोलस ने सुल्तान के राज्य के डन्यूब नदी पर बसे हुये दो प्रान्तों पर अधिकार करके अपने राज्य में मिला लिया। यही नहीं वरन् उसने नवम्बर सन् १८५३ ई० में सुल्तान के कई जहाज सिनोप (Sinope) के बन्दर में नष्ट कर दिये। इङ्गलैण्ड और फ्रांस को चिन्ता हुई। आस्ट्रिया और प्रशिया भी भयभीत हुये। इन्होंने युद्ध में भाग तो न लिया, परन्तु अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के साथ सहानुभूति निरन्तर प्रकट की। मार्च सन् १८५४ ई० में एबरडीन तथा लुई नैपोलियन ने युद्ध की घोषणा की। अंग्रेजी और फ्रांसीसी जहाज जलडमरूमध्य दानियाल और बास्फोरस से हो कर कालेसागर में आये और वारना के बन्दर मे पहुंचे। जार ने उनके भय से अपनी सेना डन्यूब नदी की घाटी से लौटा ली।

एल्मा का युद्ध, सितम्बर १८५४ ई०—एबर्डीन ने वारना के बेड़ों को रूस के प्रसिद्ध बन्दरगाह सेबस्टपोल (Sebastapol) की



क्रिमिया प्रायद्वीप का युद्ध।

ओर बढ़ने और उसके चारों ओर घेरा डालने की आज्ञा दी। अंग्रेजी तथा फ्रांसीसी सेनायें सेबस्टपोल की ओर बढ़ीं, परन्तु इस बन्दर में न पहुंच कर वे उसके ३० मील उत्तर की ओर ऐल्मा (Alma) नदी के समीप जा पहुंचीं। रूस की सेना निर्भीक पड़ी हुई थी। यदि अंग्रेजी और फ्रांसीसी सेनापति रेग्लन (Reglan) और आरनाड (Arnaud) समय नष्ट किये बिना सेबस्टपोल पर आक्रमण कर देते तो ज़ार की सेना नष्ट होगई होती, परन्तु उन्हों ने बहुत समय व्यर्थ नष्ट कर दिया। इतने में रूसी सेना के जनरल मेन्सचिकोफ (Menschikoff) को उनके आने की सूचना मिल चुकी थी। उसने एक सेना उनका सामना करने को भेजी। ऐल्मा नदी की घाटी में शत्रुओं के बीच युद्ध आरम्भ हुआ। कई घण्टों तक बराबर युद्ध होता रहा। अन्त में रूसी पराजित हुये। उनकी सेना भाग खड़ी हुई।

सेवस्टपोल का घेरा—ऐल्मा के युद्ध के पश्चात् अंग्रेजी और फ्रांसीसी सेनायें थल मार्ग से दक्षिण की ओर बढ़ीं, परन्तु सीधे सेवस्टपोल न जाकर वे उसके पूर्व की ओर से घूम कर बालाक्लावा (Balaclava) पहुँचीं, जो सेवस्टपोल के बन्दर से ६ मील दक्षिण की ओर है। यहाँ अङ्गरेजी और फ्रांसीसी सेनापतियों ने वही भूल फिर से की जो उन्होंने कुछ महीने पहिले की थी। सेवस्टपोल पर एकदम आक्रमण न करके उन्होंने सुविधा के साथ उसके चतुर्दिक घेरा डाला। इतने में रूसवालों ने सेवस्टपोल के बचाव का प्रयत्न कर लिया था। उनके प्रसिद्ध इञ्जीनियर टोडलेबन (Todleban) ने गढ़ की दीवारों पर भारी २ तोपें चढ़ा ली थीं। रूसियों ने अपने जहाजों को सेवस्टपोल बन्दर में डुबो कर शत्रुओं के जहाजों का गढ़ तक पहुचने का मार्ग रोक दिया था। अंग्रेजों और फ्रांसीसियों ने थल मार्ग से गढ़ के ऊपर गोले बरसाये, परन्तु उसके ऊपर कुछ भी प्रभाव न पड़ा

बालाक्लावा का युद्ध, अक्टूबर, १८५४ ई०—मेन्स चिकोफ अभी तक शत्रु की घात में था। उसने एक सेना बालाक्लावा विजय करने को भेजी। इस बन्दर में टर्की के सुल्तान और अंग्रेजों की कुछ सेनायें पड़ी हुई थीं। रूस की सेना ने सुल्तान की सेना को पराजित करके पीछे हटा दिया, परन्तु वह अंग्रेजी सेना के सामने न ठहर सकी। बालक्लावा के युद्ध में अङ्गरेजों को अत्यन्त क्षति पहुची।

इङ्करमेन का युद्ध, नवम्बर, १८५४ ई०—बालक्लावा के युद्ध के पश्चात मेन्सचिकोफ ने सेवस्टपोल को सहायता पहुचाने का प्रयत्न किया। उसने एक सेना पूर्व की ओर से उस की ओर भेजी। मार्ग में अङ्गरेजी सेना गढ़ के सम्मुख इङ्करमेन (Inkerman) के स्थान पर तम्बू डाले पड़ी थी। एक दिन प्रातःकाल दोनों सेनाओं की मुठभेड़ हो गई। चारों ओर कुहरा छाया हुआ था। हाथ को हाथ नहीं सूझता था। दोनों सेनाओं में घोर संग्राम हुआ। अन्त में रूस की सेना पराजित हुई।

अंग्रेज़ी सेना की शोचनीय अवस्था—अभी तक अङ्गरेजों और फ्रांसीसियों को रूस की सेनाओं से युद्ध करना पड़ा था। अब उनका सामना प्रकृति से हुआ *। १४ नवम्बर को एक भयङ्कर तूफान उठा जिसके कारण अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के तम्बू और जहाज नष्ट हो गये। जाड़े की ऋतु थी। चारों ओर बर्फ पड़ रही थी। नदियां और सड़कें बर्फ से भरी थीं। अङ्गरेजों को सेबस्टपोल से बालाक्लावा तक पहुंचना दुर्लभ था। उनके सम्पूर्ण पशु मर चुके थे। सिपाहियों के पास न कपड़े थे और न खाद्य पदार्थ। हेजा, ज्वर, पचिश और अन्य बीमारियों का प्रकोप था। औषधालयों के अन्दर रोगियों की संख्या अगणित थी।

पामर्स्टन का दुःख निवारण—जब इङ्गलैण्ड में यह समाचार पहुँचा कि अङ्गरेजी सिपाहियों को क्रिमिया के प्रायद्वीप में ऐसे कष्ट आपत्तियां सहन करनी पड़ रही हैं तो लोगों ने लॉर्ड एबर्डीन को उनका दोषी ठहराया। महारानी विक्टोरिया भी अति दुखित हुईं। उसने एबर्डीन को मन्त्रित्व से अलग कर दिया। यदि सच पूछिये तो एबर्डीन को यह दिन लॉर्ड जान रसल के कारण देखना पड़ा। इसी के कारण वह क्रिमियन युद्ध का उचित प्रबन्ध न कर सका था। डिज़रेली ने एक समय कहा था कि इङ्गलैण्ड सम्मिलित मन्त्रिमण्डल के शासन में कभी उन्नति नहीं कर सकता है। यह बात क्रिमिया के युद्ध से भली भांति सिद्ध होती है। एबर्डीन के स्थान पर पामर्स्टन प्रधान मन्त्री बना। पामर्स्टन के प्रधान मन्त्री बनते ही सारा प्रबन्ध ठीक हो गया। क्रिमिया को सेनायें और खाद्य पदार्थ भेजे गये। बालाक्लावा से सेबस्टपोल तक रेल की सड़क बनी जिस से सिपाहियों तक सामान पहुंचने में किसी प्रकार की अड़चन न रही। दो अंग्रेजी राजकुमारियाँ फ्लोरेंस नाइटिंगेल (Florence

* रूसी ज़ार कहते थे कि जनवरी और फरवरी हमारे सर्वोत्तम सेनापति हैं।

Nightingale) और स्टेनली (Stanley) कुछ स्त्रियों को लेकर स्कोतरी गईं और वहाँ के औषधालय का उचित प्रबन्ध किया। अङ्गरेजों और फ्रांसीसियों ने मिल कर एक बार पुनः सेबस्टपोल के गढ़ पर आक्रमण किया। शत्रु ने इसका उत्तर गोलों द्वारा दिया, परन्तु अङ्गरेजी और फ्रांसीसी सेनायें गढ़ के आगे वीरता से डटी रहीं। अन्त में रूसी लोग सेबस्टपोल त्याग कर भाग गये। उस पर अंग्रेजों और फ्रांसीसियों का अधिकार हो गया। विवश हो रूस के जार सिकन्दर द्वितीय* को सन्धि करनी पड़ी।

पेरिस की सन्धि, १८५६ ई०—सन् १८५६ ई० में फ्रांस की राजधानी पेरिस में सन्धि हुई। इङ्गलैण्ड तथा फ्रांस ने टर्की के सुल्तान की स्वतन्त्रता को स्थापित रक्खा, परन्तु सिकन्दर द्वितीय* ने यह प्रतिज्ञा कठिनाई से स्वीकार की। कालेसागर में प्रत्येक देश को व्यापार करने की आज्ञा मिल गई। सुल्तान ने ईसाइयों के साथ उत्तम व्यवहार करने की प्रतिज्ञा की। डेन्यूब की घाटी की रियासतों को अपना राज्य प्रबन्ध स्वयं करने का अवसर दिया गया, परन्तु वह कुछ काल तक टर्की के सुल्तान के आधीन ही रहीं। पाँच वर्ष पश्चात् इन रियासतों को मिला कर रूमानिया (Roumania) देश बना दिया गया।

इटैली की स्वाधीनता के युद्ध में इङ्गलैण्ड का भाग, १८५६-७० ई०—क्रिमिया का युद्ध समाप्त होने के पश्चात् यूरप की शक्तियों को अपना ध्यान इटैली प्रदेश की ओर आकर्षित करना पड़ा। देखने को नकशे पर इटैली का विस्तार बहुत बड़ा था, परन्तु सचमुच इटैली बिलकुल शक्तिहीन थी क्योंकि वह कई छोटी २ स्वतन्त्र रियासतों में बँटी हुई थी और उसके उत्तरी भाग में आस्ट्रिया का राजा राज्य कर रहा था। इटैली

* जार निकोलस की मृत्यु पर सिकन्दर द्वितीय फरवरी सन् १८५५ ई० में ज़ार बना।

निवासियों को समस्त रियासतो को सम्मिलित करके एक दृढ़ राज्य स्थापित करने तथा स्वतन्त्रता प्राप्त करने की लगन लगी हुई थी। उनके कई प्रसिद्ध नेता थे। इन में पीडमाण्ट का राजा विक्टर इमेनुअल (Victor Emmanuel) और उसका मन्त्री क्वूर (Cavour) श्रेष्ठ हैं। इटली का सुप्रसिद्ध कवि तथा विज्ञानवेत्ता मेजनी (Mazzini) स्वतन्त्रता प्राप्त करने का उपाय सोच रहा था। वीर सैनिक गेरीबाल्डी (Garibaldi) अपने शूरवीरों के साथ उनकी सहायता को उद्यत था। विक्टर इमेनुअल ने फ्रांस के सम्राट नैपोलियन तृतीय की सहायता से अपने प्राचीन शत्रु आस्ट्रिया निवासियों को उत्तरी प्रान्तों से निकाल दिया। सन् १८७० ई० तक इटैली की सारी रियासतें सम्मिलित हो गईं। समस्त देश पर इमेनुअल राज करने लगा। इङ्गलैण्ड में इस समय पामर्स्टन प्रधान मन्त्री था। वाह्यनीति का प्रबन्ध जॉन रसल के हाथों में था। इन दोनों ने नेपोलियन की भांति सेना भेज कर इटैली की सहायता तो अवश्य न की, परन्तु उन्हों ने आस्ट्रिया तथा यूरप की अन्य शक्तियों को इटैली में हस्तक्षेप न करने दिया।

अमेरिका का घरेलू युद्ध, १८६१–६५ ई०—सन् १८६१ में म युक्तप्रदेश की उत्तरी तथा दक्षिणी रियासतों के बीच एक युद्ध आरम्भ हुआ। उत्तरी रियासतें चाहती थीं कि दक्षिणी रियासतें हब्शियों का व्यापार बन्द कर दें, परन्तु ऐसा न करके वे उत्तरी रियासतों से अलग हो गईं और सब मिल कर अपना राजप्रबन्ध स्वयं करने लगीं। पामर्स्टन अमेरिका के घरेलू युद्ध में किंचित्मात्र भी भाग न लेना चाहता था, परन्तु अनेक कारणों से उसे दक्षिणी रियासतों के साथ सहानुभूति प्रकट करनी पड़ी। दक्षिणी रियासतें शक्तिहीन थीं और इङ्गलैण्ड के कारखानों को रुई भेजती थीं। जब उत्तरी प्रान्तों के जहाज दक्षिणी रियासतों के बन्दरगाहों के सामने आ डटे, तो रुई का इङ्गलैण्ड पहुंचना बन्द हो गया जिसके कारण

इङ्गलैण्ड के बहुत से कारखाने बन्द हो गये। सन् १८६१ ई० में दक्षिणी रियासतों के दो दूत ट्रेण्ट (Trent) नामी अङ्गरेजी जहाज में सवार होकर इङ्गलेण्ड को चले। मार्ग में उत्तरी रियासतों के नाविक इन्हें पकड़ कर अमेरिका लिवा ले गये। पामर्स्टन को बहुत बुरा लगा। महारानी विक्टोरिया ने उत्तरी रियासतों के प्रधान को लिखा। उसने तत्क्षण क्षमा माँगली। इसके पश्चात् एक जहाज एलबामा (Albama) नामी, जो दक्षिणी रियासतों ने इङ्गलैण्ड में बनवाया था, पामर्स्टन की इच्छा के प्रतिकूल इङ्गलैण्ड से छुट कर अटलाण्टिक महासागर में घूमने और उत्तरी रियासतों के जहाजों को डुबोने तथा नष्ट करने लगा। उत्तरी रियासतों के प्रधान ने इसके विषय में विक्टोरिया को लिखा। सन् १८६५ ई० में ग्लेडस्टन को केबिनेट की भूल स्वीकार करके बहुत सा धन उत्तरी रियासतों की हानि पूरी करने के लिये देना पड़ा।

ग्लेडस्टन की विदेशी नीति—इङ्गलैण्ड ने वाह्यनीति में जितनी ख्याति पामर्स्टन के समय में पाई थी वह सब ग्लेडस्टन के समय में गवाँ दी। ग्लेडस्टन वाह्य घटनाओं का उचित प्रबन्ध करने में लेशमात्र सफल न हुआ। सब से पहले उसे अपनी दृष्टि फ्रास और प्रशिया के युद्ध (१८७०-१८७१) की ओर आकर्षित करनी पड़ी। प्रशिया का प्रसिद्ध मन्त्री बिस्मार्क (Bismarck) चाहता था कि समस्त जर्मनी पर प्रशिया का राजा राज करने लगे। हाल ही में वह अपने शत्रु आस्ट्रिया के राजा को हरा चुका था। अब वह फ्रास से युद्ध करके जर्मनी की दक्षिणी रियासतों को प्रशिया की युद्धशक्ति दिखा कर अपने राजा के राज्य में सम्मिलित करना चाहता था। बिस्मार्क और फ्रास का सम्राट नैपोलियन तृतीय दोनो ग्लेडस्टन की सहायता चाहते थे, परन्तु ग्लेडस्टन ने एक की भी सहायता न की, जिस से दोनों उसे वैर भाव से देखने लगे। युद्ध में प्रशिया की विजय हुई। बिस्मार्क ने जर्मनी की समस्त रियासतों को

मेगा कर एक दृढ राज्य स्थापित कर लिया । इस युद्ध के कारण फ्रांस में नैपोलियन के राज्य का अन्त हो गया । फ्रांसीसियों ने राज्यप्रबन्ध अपने हाथों में लेकर स्वतन्त्र शासन (Republic) स्थापित कर लिया ।

ग्लेडस्टन के कारण और कई बातों में इङ्गलैण्ड को अपमान सहन करना पड़ा । रूस का जार १८५६ के सन्धिपत्र का पालन न कर रहा था, परन्तु ग्लेडस्टन उसका कुछ न बिगाड़ सका । उसे ऐलबामा जहाज की मार काट के कारण अमेरिका की उत्तरी रियासतों को बहुत धन देना पड़ा जैसा कि ऊपर वर्णन हो चुका है । अफगानिस्तान, सूडान और दक्षिणी अफ्रीका में भी ग्लेडस्टन को लज्जा उठानी पड़ी ।

डिजरेली की पूर्वी नीति—सन् १८७४ ई० में डिजरेली प्रधान मन्त्री बना । वह अंग्रेजी राज्य के बढ़ने के पक्ष में था । मुख्यकर वह पूर्वी देशों अर्थात् भारतवर्ष इत्यादि में अङ्गरेजी राज्य स्थापित करना चाहता था । उसने मिश्र के शासक से स्वेज नहर के हिस्से खरीद लिये और राजकुमार एडवर्ड को सैर करने के लिये भारतवर्ष भेजा । विक्टोरिया को 'भारतवर्ष की सम्राज्ञी' की उपाधि मिली । देहली नगर में एक दर्बार हुआ जिस में भारतवर्ष के राजाओं और अन्य पुरुषों ने विक्टोरिया को 'भारतवर्ष की सम्राज्ञी' स्वीकार किया ।

सुल्तान का अत्याचार, १८७६ ई०—सन् १८७६ ई० में डिजरेली को टर्की के सुल्तान से एक आवश्यक विषय में जवाब तलब करना पड़ा । टर्की का सुल्तान पेरिस की सन्धि के प्रतिकूल ईसाइयों के साथ अभी तक क्रूरता का व्यवहार कर रहा था । सरकारी कर्मचारी उनका अपमान तथा अनादर करने से न चूकते थे । प्राय कृषकों को नाज के पकने के पूर्व ही लगान दे देना पड़ता था । जो ऐसा स्वीकार न करते थे जीवित पृथ्वी में गाड़ दिये जाते अथवा किसी वृक्ष से बाँध दिये जाते थे और उस वृक्ष में आग लगा दी जाती थी । शीत ऋतु में सुल्तान

ईसाइयों को नङ्गा करके बरफ पर सुलवा देता था। विशेष कर बलोरिया में रहने वाले ईसाइयों की दशा अति शोचनीय थी। यहाँ के निवासी सुल्तान के शासन से स्वतन्त्र बनने के स्वप्न देख रहे थे। उन्हों ने कुछ अफसरों को मार डाला था। यह देख कर सुल्तान ने एक शक्तिशाली सेना बलोरिया भेजी जिसने उसके निवासियों को सहस्रों की संख्या में मार डाला।

डिजरेली टर्की की सहायता करना चाहता था परन्तु उसका शत्रु ग्लेडस्टन बलोरिया के पक्ष में था। इन दिनों रूस का जार टर्की से युद्ध छेड़े हुये था। डिजरेली को भय था कि यदि वह टर्की के विरुद्ध युद्ध करेगा तो जार की खूब चढ़ बनेगी। अतएव डिजरेली ने सुल्तान के विरुद्ध कोई कार्य्य न किया। सन् १८७८ ई० में जार ने सुल्तान को पराजित करके उस से एक सन्धि-पत्र लिखवा लिया जो प्रत्येक प्रकार से रूस के पक्ष में था। डिजरेली डरा और रूस के ज़ार को इस बात पर विवश किया कि वह अपने और सुल्तान के झगड़ों को एक यूरुपी कांग्रेस में उपस्थित करे और जो कुछ न्याय उस में हो उसके अनुसार कार्य्य करे।

बरलिन कांग्रेस, १८७८ ई०—सन् १८७८ ई० में जर्मनी की राजधानी बरलिन में यूरप की महान् शक्तियों के मध्य एक सन्धि पत्र लिखा गया। रूमानिया, सरविया और माण्टीनिग्रो को पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान हुई। यूनान प्रथम ही से स्वतन्त्र था। बलकान प्रायद्वीप की शेष रियासतें सुल्तान के अधिकार में छोड़ दी गईं। इङ्गलैण्ड को साइप्रस का द्वीप मिला। सुल्तान ने प्रतिज्ञा की कि वह भविष्य में ईसाइयों के साथ उत्तम व्यवहार करेगा।

सन् १८९५ में सुल्तान ने अपनी प्रतिज्ञा के प्रतिकूल आरमीनिया के ईसाइयों पर अत्यन्त अत्याचार किया। लार्ड सालजबरी ने, जो इस समय इङ्गलैण्ड में प्रधान मन्त्री था, सुल्तान को दण्ड देने का प्रत्येक

प्रकार से प्रयत्न किया परन्तु महाद्वीप की शक्तियां उसका साथ न देना चाहती थीं। अतः यह कुछ न कर सका।

इङ्गलैण्ड और चीन—इसके विरुद्ध महाद्वीप की शक्तियां चीन के भीतरी प्रबन्ध में भाग लेने को सब प्रकार से तत्पर थीं। इसका एक मुख्य कारण यह था कि चीन अभी जापान के विरुद्ध एक घोर संग्राम कर चुका था जिसके कारण उसकी शक्ति अत्यन्त क्षीण हो गई थी। इङ्गलैण्ड भी चीन से दो बार युद्ध कर चुका था। चीन को दुर्बल देख कर रूस ने आर्थर (Arthur) बन्दर छीन लिया। जर्मनी ने क्यौचौ (Kiau-Chau) पर अधिकार कर लिया। वेहावे (Wei hai wei) का बन्दर गाह अंग्रेजों के अधिकार में आ गया।

बाक्सर्स आन्दोलन, १९०१ ई०—कुछ समय तक चीनियों ने उपरोक्त महान् शक्तियों के विरुद्ध कोई कार्य्य न किया, परन्तु अन्त में विवश हो कुछ चीनियों ने एक संस्था बनाई जो बाक्सर्स (Boxers) के नाम से प्रसिद्ध है। इस संस्था का काम अन्य देशों के निवासियों को चीन से बाहर निकालना और खोये हुये अधिकारों को पुनः प्राप्त करना था। सन् १९०१ ई० में इसके सदस्यों ने पेकिन शहर में ठहरे हुये अन्य देशों के दूतों पर आक्रमण किया और जर्मनी के दूत को जान से मार डाला। इसके पश्चात् उन्होंने अङ्गरेजी दूत के भवनों को चारों ओर से घेर लिया। यह दशा देख कर यूरप की शक्तियों ने सम्मति करके एक सेना चीन भेजी। चीन के राजा को यूरप की शक्तियों से हार माननी पड़ी और उन्हें कुछ धन भी देना पड़ा।

'बाक्सर्स आन्दोलन बहुत प्रसिद्ध है। इस से यूरपियन देशों के अत्याचारों का, जो वे पूर्वी देशों में कर रहे थे, और चीनियों के स्वदेशप्रेम का प्रमाण मिलता है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो ज्ञात होगा कि अभी २ चीनियों ने जिस वीरता तथा साहस के साथ विदेशियों को बाहर निकाल

कर स्वतंत्र राज्य (Republic) स्थापित किया है, उसका प्रारम्भ सन् १९०१ ई० के बाक्सर्स आन्दोलन ही से हुआ था।

(स) आयरलैण्ड का इतिहास।

ओकोनल और पृथकता का प्रश्न, १८४१ ई०—

महारानी विक्टोरिया के शासन के पूर्व आयरलैण्ड निवासियों की कई शिकायतें दूर हो चुकी थीं, तिस पर भी वे इङ्गलैण्ड की सरकार से प्रसन्न न थे। वे उसके अधिकार से बाहर होकर स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना चाहते थे। परन्तु स्वतन्त्र राज्य स्थापित होने के लिये यह बात आवश्यक थी कि आयरलैण्ड निवासी सब से पहले छोटे पिट के सन् १८०१ ई० के प्रबन्ध को तोड़ कर आयरलैण्ड में पृथक पार्लियामेण्ट स्थापित करें। इस उद्देश के प्राप्त करने को आयरलैण्ड के प्रसिद्ध नेता ओकोनल ने सन् १८४१ ई० में ऐसे शूरवीरों को बड़ी संख्या एकत्रित कर ली थी जो मातृभूमि पर जान न्योछावर करने को उद्यत थे। यह लोग स्थान २ पर सभायें करके मनुष्यों का उत्साह बढ़ा रहे थे। ओकोनल स्वयं वक्तृता देने तथा उत्साह पूर्ण शब्दों में मृत शरीरों में नवजीवन का संचार करने के लिये प्रसिद्ध था। एक बार सन् १८४३ ई० में उसने क्लोण्टार्फ (Clontarf) नामी नगर में, जो डबलिन के उत्तर पूर्व की ओर स्थित है। सभा करने की घोषणा की। वह इस सभा में पृथकत्व के प्रश्न पर अपने विचार प्रकट करना चाहता था। राबर्ट पील को, जो इस समय प्रधान मन्त्री था, भय हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि सभा के समाप्त होते ही आयरलैण्ड में विद्रोह आरम्भ हो जावें। अतएव उसने केवल एक दिवस पूर्व आयरलैण्ड के कर्मचारियों को सभा के रोक देने की आज्ञा दी। ओकोनल और उसके दलवालों को बहुत बुरा लगा, परन्तु वे विवश थे। सरकार की आज्ञानुसार उन्हों ने सभा न की परन्तु कृतज्ञ होने के स्थान पर पील ने ओकोनल के विरुद्ध अभियोग

चला कर उसे एक वर्ष के लिये कठिन कारागार का दण्ड दिया। अपील करने पर हाउस ऑफ लॉर्डस् न ओकोनल को क्षमा कर दिया, परन्तु उसका दिल बिल्कुल टूट गया था। उसका दल प्रति दिन शक्तिहीन होता गया। सन् १८४६ ई० में ओकोनल ने स्वय ससार से प्रस्थान किया।

१८४८ ई० का आन्दोलन—जिस समय ओकोनल की मृत्यु हुइ उस समय आयरलैण्ड में घोर दुर्भिक्ष फैला हुआ था। अत बहुत से मनुष्य अमेरिका चले गये थे। जो बचे थे वे पृथकता के प्रश्न को बिल्कुल भूल गये थे। अत दो वर्ष तक आयरलैण्ड में कोई बात उल्लेख करने योग्य नहीं हुई। इसके पश्चात् सन् १८४८ ई० में, जब महाद्वीप पर स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने के अभिप्राय से विद्रोह हो रहे थे और जब इङ्गलैण्ड में चारटिस्ट्स प्रबल थे, आयरलैण्ड में कुछ युवकों ने उसे इङ्गलैण्ड की सरकार के अधिकार से पृथक् करने तथा स्वराज्य दिलाने के अभिप्राय से एक समिति स्थापित की। उन का नेता स्मिथ ओब्रियन (Smith O Brien) था। ओकोनल के प्रतिकूल ओब्रियन नियम भङ्ग करके तथा रक्त बहा कर स्वराज्य प्राप्त करना चाहता था। उसके कथनानुसार मनुष्य अङ्गरेजों को वध करने तथा सरकारी दफ्तरों को जलाने लगे। अत प्रधान म त्री लॉर्ड जॉन रसल ने ओब्रियन को बन्दी करके आस्ट्रेलिया भेज दिया। इसके पश्चात् महारानी विक्टोरिया स्वय आयरलैण्ड पधारीं और मनुष्यों को बहुत कुछ दिलासा दी। अतएव उन्हों ने पुन कुछ वर्षों के लिये राजनतिक प्रश्न भुला दिय।

फेनाइन्स और स्वाधीनता का उद्योग, १८६५-६७ ई०--सन् १८६५ ई० में आयरलैण्ड के निवासियों को फिर स्वाधीनता प्राप्त करने की धुन लगी। सन् १८४८ की भांति इस वर्ष भी कुछ नवयुवकों ने मिल कर, जो स्वय को फेनाइन (Fenian-) * कह कर पुकारते थे, एक

* सचमुच फेनाइन्स उन सैनिकों का नाम था जो इतिहास लिखे जाने के पूर्व अपने सरदारों के साथ शत्रु से युद्ध करने जाते थे।

सभा स्थापित की, जिसका उद्देश तलवार के बल से स्वतन्त्रता प्राप्त करना था। फेनाइन्स का नेता जेम्स स्टेफन्स (James Stephens) था। आयरलैण्ड के वे निवासी, जो सन् १८४५ के दुर्भिक्ष के कारण अमेरिका चले गये थे, आयरलैण्डनिवासियों की सहायता कर रहे थे। उन में से अनेकों उनकी ओर से युद्ध करने के अभिप्राय से आयरलैण्ड लौट आये, परन्तु पहले की भांति इस बार भी आयरलैण्ड निवासियों का प्रयत्न निष्फल हुआ। अकस्मात् जिस दिन फेनाइन्स विद्रोह करना चाहते थे, उसी दिन कुहरा अत्यन्त प्रबलता से पड़ा जिस के कारण उन से कोई कार्य्य करते न बना। फेनाइन्स के पास बन्दूकों और बारूद की भी कमी थी। प्रधान मन्त्री लार्ड डर्बी की आज्ञा से वे बहुत बड़ी संख्या में बन्दी कर लिये गये और उन में से अनेकों को मृत्यु का दण्ड मिला, परन्तु जेम्स स्टेफन्स आयरलैण्ड के बाहर चला गया और सरकार उसे पकड़ न सकी।

ग्लेडस्टन के सुधार—सन् १८६८ ई० में ग्लेडस्टन इङ्गलेण्ड में प्रधान मन्त्री बना। वह आयरलैण्ड का परम मित्र था। उसे स्वतन्त्रता दिलाना उसके जीवन का मुख्य उद्देश था। उसने देखा कि आयरलैण्ड निवासियों की तीन मुख्य शिकायतें हैं। प्रथम, गिर्जा के विषय में, द्वितीय, कृषी के विषय में, और तृतीय, शासन प्रबन्ध के विषय में। उसने इन शिकायतों को दूर करने का प्रयत्न पूर्ण रीति से किया और प्रथम दो में पूर्ण सफलता प्राप्त की।

सब से पहले ग्लेडस्टन ने आयरलैण्ड की गिर्जा में एक आवश्यक सुधार किया। प्राचीन समय से आयरलैण्ड निवासी अधिकतर कैथोलिक धर्म के अनुयायी थे और उनकी मनुष्यसंख्या का केवल चौथाई भाग प्रोटेस्टेण्ट धर्म को मानता था। परन्तु आयरलैण्ड की सरकारी गिर्जा प्रोटेस्टेण्ट थी, जैसा कि हम एक बार पहले बता आये हैं। इसका व्यय टाइद्स तथा

जागीरों द्वारा चलता था। टाइथ्स का उचित प्रबन्ध विलियम चतुर्थ के समय में हो चुका था। ग्लेडस्टन ने जागीरों का ठीक प्रबन्ध किया। सन् १८६९ ई० में उसने एक नियम बनाया जिससे यह बात निश्चित हुई कि भविष्य में आयरलैण्ड की प्रोटेस्टेण्ट गिर्जा से सरकार का कोई सम्बन्ध न होगा और उसकी दृष्टि मे प्रोटस्टण्ट और कैथोलिक गिर्जायें समान होंगी और जागीरों की आय से दोनों को बराबर सहायता मिला करेगी। आयरलैण्डनिवासी अर्वाचीन नियम से अत्यन्त प्रसन्न हुये।

सन् १८७० ई० में ग्लेडस्टन ने आयरलैण्ड क कृपकों की अवस्था ठीक करने के लिये एक नियम बनाया। इन को सैकड़ों आपत्तियाँ सहन करनी पडती थीं। जमींदार लगान उगाहने क सिवा कुछ काम न करते थे। अत कृषी की देखभाल का सारा भार कृपकों के ऊपर पडता था। यदि कृपक भूमि की अवस्था सुधारते, तो कृतज्ञ होने के स्थान पर जमींदार कर बढा देते थे और जो देना स्वीकार न करता, उस से खेत छीन लेते थे। ग्लेडस्टन ने यह नियम बनाया कि कृपक केवल उचित लगान न देने के कारण कृषी से अलग किया जा सकता है। यदि जमींदार कृपक का कर न देने के कारण अलग करना चाहता है, तो उसे कृपक को उस उन्नति का वेतन देना पडेगा जो उसने पृथ्वी मे की है। यदि कोई कृपक जमींदार से खेत मोल लेना चाहता है तो वह सरकार से ऋण ले सकता है और उसे थोडा २ करके चुका सकता है। सन् १८८१ ई० मे ग्लेडस्टन ने कृपकों की अवस्था सँभालने को दूसरा नियम बनाया। इस मे जमींदारों और कृपकों के पारस्परिक झगडों के निपटाने के लिये पृथक् न्यायालय खुले। यही न्यायालय कर भी निश्चित करते थे और अन्य रीतियों से कृपकों के हित का ध्यान रखते थे। उपरोक्त सुधारों के कारण सब कोई ग्लेडस्टन की प्रशसा करने लगे।

परनल तथा स्वतंत्रता का प्रश्न—इसके पश्चात् ग्लेडस्टन

ने आयरलैण्ड को स्वतन्त्रता प्रदान करने का उपाय किया। ओकोनर, स्मिथ ओब्रियन तथा जेम्स स्टेफन्स ने इस उद्देश को प्राप्त करने के प्रयत्न में प्राण दे दिये थे। अब आयरलैण्ड में एक और प्रसिद्ध नेता उत्पन्न हुआ। उसका नाम परनल (Parnell) था। परनल का पिता आयरलैण्ड की प्रोटेस्टेण्ट गिर्जा का अनुयायी था। उसकी माता अमेरिका की निवासिनी थी। अतएव आयरलैण्ड के वे निवासी, जो सन् १८४५ ई० के दुर्भिक्ष और अन्य कारणों से अमेरिका चले गये थे और वहीं निवास करने लगे थे, जेम्स स्टेफन्स की भांति परनल को भी धन भेजने को उद्यत थे। पिछले नेताओं की भांति परनल ने भी आयरलैण्ड में स्थान स्थान पर भाषण दिये। सहस्रों पुरुष उसकी सहायता करने को उद्यत हो गये। परनल और उसके दल के अन्य पुरुष आयरलैण्ड की ओर से इङ्गलैण्ड की पार्लियामेण्ट के सदस्य बन कर हाउस आफ कामन्स में आये और मातृभूमि को दासता की बेडियों से स्वतन्त्र करने का प्रयत्न करने लगे।

आयरिश स्वाधीनता का बिल, १८७४-१९०१ ई०— पार्लियामेण्ट में परनल को डिजरली का सामना करना पडा क्योंकि सन् १८७४ ई० में उस का कन्जरवेटिव मन्त्रिमण्डल शासन कर रहा था। डिजरेली आयरलैण्ड को स्वराज्य न देना चाहता था, अतः परनल ने उस के मार्ग में बहुत सी अडचनें डाल दीं। परन्तु उनके हर एक प्रकार का प्रयत्न करने पर भी डिजरेली के समय में आयरलैण्ड निवासी स्वराज्य के विषय में तनिक भी सफल न हुये। डिजरेली की अवनति पर ग्लैडस्टन प्रधान मन्त्री बना। ग्लैडस्टन दो बार अर्थात् सन् १८८६ ई० तथा सन् १८९३ ई० में आयरिश स्वाधीनता के बिल को पार्लियामेण्ट में पास कराने का प्रयत्न कर चुका था। परन्तु दोनों बार उसका प्रयत्न निष्फल हुआ था। इस बिल के पास न होने का मुख्य कारण यह था कि

लार्डस आयरलेण्ड को स्वराज्य दिये जाने के विरोध में थे।

ग्लेडस्टन के पतन पर सन् १८९५ ई० से १९०२ ई० तक सालजबरी तासरी बार प्रधान मन्त्री रहा। वह यूनियनिस्ट दल का सदस्य था। इस लिये उसने स्वराज्य बिल स्वीकार न होने दिया। इस समय तक पारनल की मृत्यु हो चुकी थी। उसका दल भी बहुत शक्तिहीन हो गया था। सन् १८९८ ई० में ग्लेडस्टन ने भी स्वर्गवास किया। अतः महारानी विक्टोरिया के शासनकाल में आयरलेण्डनिवासियों को स्वतन्त्रता न मिल सकी।

(द) अंग्रेजी साम्राज्य की बढती।

उपनिवेशों के शासन की नवीन नीति—उन्नीसवीं शताब्दि अङ्गरेजी साम्राज्य के इतिहास मे बहुत प्रसिद्ध है। प्रथम, इस शताब्दि में अङ्गरेजी साम्राज्य का विस्तार बहुत बढ गया। अफ्रीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया और एशिया में अनेकों बहुमूल्य भाग अंग्रेजों के अधिकार में हो गये, जिनके कारण इङ्गलेण्ड की सरकार ब्रृटिश द्वीप समूह से कई गुना विस्तृत साम्राज्य पर शासन करने लगी। द्वितीय, इस शताब्दि में इङ्गलेण्ड की सरकार ने उपनिवेशों पर शासन करने में एक नवीन नीति का उपयोग किया। अमेरिकन स्वाधीनता के युद्ध से अंग्रेजी नीतिज्ञों ने, जैसा कि सीले (Seeley) नामक इतिहासलेखक का कथन है यह शिक्षा ग्रहण की थी कि यदि उपनिवेशों पर शासन करने का कोई उचित प्रबन्ध न निकाला जावेगा तो वे पके हुये सेब के समान किसी दिन पेड से सम्बन्ध विच्छेद अवश्य कर लेंगे। इङ्गलैण्ड में स्वयं इस समय पार्लियामेण्ट सुधार हो रहा था और जनता बडी संख्या में उस में बढने का अधिकार प्राप्त कर रही थी। अतएव उन्नीसवीं शताब्दि में इङ्गलेण्ड की सरकार ने उपनिवेशों पर शासन करने मे एक नवीन नीति का पालन किया जिसके मुख्य सिद्धान्त इस प्रकार थे—(१) जो उपनिवेश अपना

राज्यप्रबन्ध स्वय करने के योग्य हैं उनको स्वतन्त्रता प्रदान करना, (२) उनके आन्तरिक प्रबन्ध में हस्तक्षेप न करना, (३) उनकी विदेशी नीति अपने अधिकार में रखना। परन्तु यह बडे शोक की बात है कि इङ्गलैण्ड की सरकार ने भारतवर्ष तथा उष्ण कटिबन्ध में बसे हुये अन्य देशों को नवीन रीति से लाभ उठाने का अवसर नहीं दिया जिसके कारण आधुनिक काल में अंग्रेजी साम्राज्य के कई भाग घायल भुजाओं की भांति ठीक काम नहीं कर रहे हैं और समस्त साम्राज्य को शक्तिहीन बनाये हुये हैं। जिन देशों को नवीन नीति से लाभ उठाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है अथवा जो उस से लाभ उठाने की चेष्टा कर रहे हैं उन में से मुख्य देशों का वर्णन इस रीति से करेंगे —

(अ) कनाडा, (ब) आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलेण्ड, (द) दक्षिणी अफ्रीका, (र) मिश्र तथा सूडान, (स) भारतवर्ष।

कनाडा का इतिहास—नवीन नीति से लाभ उठाने वाले देशों में कनाडा की गणना सब से प्रथम होती है। कनाडा में अंग्रेजी शासन की नींव वुल्फ की सन् १७५९ ई० की विजय से पडी थी। उस समय इस देश के पश्चिमी भाग में जंगली जातियां रहती थीं और पूर्वी भाग में फ्रांसीसी बसे हुए थे। वुल्फ की विजय के पश्चात् अंग्रेज कनाडा जाने लगे और इस देश में बसने लगे। अमेरिका की स्वाधीनता के युद्ध के दिनों में सैकड़ों अङ्गरेज (United Empire Loyalists) जो इङ्गलैण्ड के विरुद्ध हथियार न उठाना चाहते थे, उपनिवेशों को छोड कर कनाडा चले गये और वहीं रहने लगे। इनके आने से कनाडा की अङ्गरेजी मनुष्य सख्या बहुत बढ गई, परन्तु फ्रांसीसियों की सख्या में विशेष अन्तर न पडा।

ऊपर और नीचे के कनाडा, १७९१ ई०— फ्रांसीसी अंग्रेजों के प्राचीन शत्रु थे। उनका धर्म और जीवन भी अङ्गरेजों के धर्म और

जीवन में भिन्न थे। अतः जब कनाडा में अंग्रेजों की संख्या बढ़ गई तो उनके और फ्रांसीसियों के पारस्परिक झगड़े भी बढ़ गये। इनको दूर करने के अभिप्राय से छोटे पिट ने सन् १७९१ ई० में कनाडा को दो बड़े भागों में विभक्त कर दिया। सेन्टलारेंस की घाटी का ऊपरी भाग, जहाँ वर्तमान समय में आण्टेरियो (Ontario) का प्रान्त स्थित है, अंग्रेजों को मिला, और उसके नीचे का भाग जहां आजकल क्यूबेक का प्रान्त है फ्रांसीसियों को मिला। दोनों भागों के लिये पृथक् गवर्नर नियत हुए। गवर्नर इङ्गलैण्ड से आते थे और प्रत्येक बात में अंग्रेजी सरकार के शुभचिन्तक थे।

लार्ड डरहम की छानबीन, १८३८ ई०—कुछ समय तक दोनों कनाडा अङ्गरेजी सरकार के आधीन बने रहे, परन्तु जिस वर्ष महारानी विक्टोरिया सिंहासनारूढ़ हुई उस वर्ष दोनों भागों में अङ्गरेजी अफसरों के अत्याचार के कारण विद्रोह के चिन्ह दृष्टिगोचर हुये। ऐसा दिखाई देता था मानों दोनों कनाडा भी तेरह उपनिवेशों की भांति अंग्रेजों के अधिकार से निकल जावेंगे। यह देख कर लॉर्ड मेलबोर्न ने, जो इस समय इङ्गलैण्ड में प्रधान मन्त्री था, एक अंग्रेजी अमीर लॉर्ड डरहम (Durham) नामक को विद्रोहों की छानबीन करने तथा कनाडा निवासियों को सन्तुष्ट करने का उपाय सोचने को कनाडा भेजा। लगभग एक वर्ष तक देख भाल करने के पश्चात् लॉर्ड डरहम ने लार्ड मेलबोर्न को यह सम्मति दी कि ऊपरी और नीचे के कनाडाओं को सम्मिलित करके स्वतन्त्र कर देना चाहिये मेलबोर्न ने लॉर्ड डरहम की सम्मति मान ली। उस ने सन् १८४० ई० में दोनों कनाडाओं को सम्मिलित करके समस्त देश को स्वतन्त्रता प्रदान कर दी और केवल वाह्यनीति का प्रबन्ध अपने हाथों में रक्खा।

कनाडा की बढ़ती, १८४०–१९०५ ई०—शनैः शनैः अंग्रेजों ने पश्चिमी कनाडा के वन काटे और उन भागों पर भी अधिकार किया जो अभी तक उनके अधिकार में न आये थे। इस प्रकार सन्

लगाया था। प्रारम्भ में अङ्गरेज उत्तरी द्वीप में बसे। इसके पश्चात् वे दक्षिणी द्वीप में फैल गये। इन दोनों के मध्य का जलडमरूमध्य हमको आज तक कुक की याद दिलाता है। अङ्गरेजी सरकार ने सर जॉन ग्रे (Sir John Grey) को न्यूज़ीलैण्ड पर शासन करने को भेजा। सन् १८५५ ई० में उसने उसके कथनानुसार न्यूज़ीलैण्ड को स्वतन्त्रता प्रदान की, परन्तु कनाडा और आस्ट्रेलिया की भांति न्यूज़ीलैण्ड की आद्यनीति भी अपने हाथों में रक्खी।

दक्षिणी अफ्रीका-अङ्गरेजों ने सब से पहले जेम्स प्रथम के समय में दक्षिणा अफ्रीका में टेबिल खाडी के तट पर एक उपनिवेश स्थापित किया, परन्तु अन्य उपनिवेशों की भांति वे आरम्भ में यहा भी सफल न हो सके। इसके पश्चात् हालैण्ड के व्यापारियों ने उसी स्थान पर जहाँ अङ्गरेज बसे थे एक उपनिवेश बसाया और अङ्गरेजों से अधिक सफल हुये। परन्तु जगली जातियों से, जिन में होटण्टोज (Hottentots), जुलूस Zulus) और काफिर्स (Kafirs) सब से अधिक शक्तिशाली जातियाँ थीं, उन्हें अति क्षति पहुँची। अत हालैण्ड की सरकार ने सन् १८१५ ई० में पेरिस की सन्धि में केप आफ गुड होप का सारा प्रान्त, जिस में उनके उपनिवेश बसे हुये थे, अङ्गरेजों को दे दिया।

बोअर्स का महान् प्रस्थान १८३६ ई०—पेरिस की सन्धि के कई वर्ष पश्चात् तक अङ्गरेजों ने केप आफ गुड होप मे अति उन्नति की परन्तु हालैण्डनिवासी अंग्रेजों को बराबर दुःख देते रहे। उनकी शत्रुता के अनेकों कारण थे। वे अंग्रेजों के आधीन न रहना चाहते थे। अंग्रेजी सरकार ने डच किसानों के, जो बोर (Boers) कहलाते थे, बहुत से खेत छीन कर अंग्रेजों तथा काफिरों को दे दिये थे। सन् १८३३ ई० के नियम के अनुसार हब्शियों के स्वतन्त्र हो जाने से बोर बचे हुये खेतों मे कठिनाई से काम कर सकते थे। अत सन् १८३६ ई० मे अनेकों बोर केप

ऑफ गुड होप के प्रान्त को छोड कर पूर्व और उत्तर की ओर चले गये और वहीं उपनिवेश बसा कर रहने लगे। उनका यह कार्य्य "महान् प्रस्थान" (Great Trek) कहलाता है।

नेटाल में अंग्रेजी राज्य, १८४४ ई०—अनेकों बोर नेटाल में बस गये, परन्तु यहा भी उन्हे चैन न मिला। नेटाल में जुलू जाति बहुत प्रबल थी। उस ने अनेकों बोर को काट डाला। विवश होकर उन को नेटाल छोड कर उत्तर और पश्चिम की ओर प्रस्थान करना पडा। उन्हों ने ट्रांसवाल (Transwaal) और ऑरेंज फ्री स्टेट (Orange Free State) के प्रान्त बसाये। नेटाल को इङ्गलेण्ड की सरकार ने अपने राज्य में मिला लिया।

ट्रांसवाल पर अंग्रेजी अधिकार, १८७७ ई०—ट्रांसवाल और आरेंज फ्री स्टेट में भी बोर जाति को सुख न मिला। ट्रांसवाल का प्रबन्ध बहुत बुरा था। अत केप ऑफ गुड होप और नेटाल के अङ्गरेजों को भय हुआ कि कहीं ट्रांसवाल की निर्बलता के कारण जुलूज और अन्य स्थानीय जातियाँ उन पर आक्रमण न कर बैठें। अतएव उन्हों ने सन् १८७७ ई० में बोर जाति की सम्मति से ट्रांसवाल पर अधिकार कर लिया।

प्रथम बोर युद्ध, १८८१ ई०—ट्रांसवाल के अङ्गरेजी राज्य में सम्मिलित हो जाने से बोर जाति को अधिक लाभ न हुआ। उन्हे आशा थी कि अङ्गरेज ट्रांसवाल का भीतरी प्रबन्ध उन्ही के हाथों में छोड देंगे, परन्तु ऐसा न हुआ। विवश हो बोर लोगों ने अस्त्र शस्त्रों से काम लिया। उन्हों ने युद्ध की घोषणा की और अंग्रेजी सेना को मजूबा की पहाडी (Majuba Hill) के निकट पराजित किया जिसके कारण इङ्गलेण्ड की सरकार को ट्रांसवाल का भीतरी प्रबन्ध बोर ही को सौंप देना पडा।

जेम्सन का धावा, १८९५ ई०—बोर युद्ध से अंग्रेजों और बोर का पारस्परिक बैर और अधिक बढ गया। दोनों एक दूसरे का

परास्त करने की चिन्ता करने लगे। कुछ समय पश्चात् ट्रांसवाल में सोने की खानों का पता लगा, जिसके कारण सहस्रों अङ्गरेज केप ऑफ गुड होप, नेटाल तथा इङ्गलैण्ड से ट्रांसवाल गये और वहीं रहने लगे। इस से बोरों और अङ्गरेजों की शत्रुता और भी अधिक बढ गई। बोर अङ्गरेजों से युद्ध करने का प्रयत्न सोचने लगे। यह देख कर अङ्गरेजी अफसर, जिसका नाम जेम्सन (Jameson) था, उन्हें नीचा दिखाने के विचार से कुछ सेना लेकर केप ऑफ गुड होप से ट्रॉंसवाल गया, परन्तु वह उन के विरुद्ध कुछ न कर सका। विवश हो उसे हार माननी पडी। इसके तीन वर्ष पश्चात् अङ्गरेजों तथा बोरो के मध्य दूसरा युद्ध हुआ। यह युद्ध सन् १९०२ ई० तक होता रहा। इस में बोर परास्त हुये।

यूनियन ऑफ़ साउथ अफ्रीका, १९०९ ई०—अङ्गरेजो से दो बार युद्ध करने से बोरों को इस बात का ज्ञान हो गया कि वे उनके विरुद्ध कभी सफल नहीं होंगे। अतएव उन्हों ने उन से मिल कर दक्षिणी अफ्रीका के लिये ठीक प्रबन्ध करने का उपाय किया। सन् १९०८ ई० में दोनों ने सम्मिलित हो कर स्वाराज्य के प्रश्न पर विचार करने के अभिप्राय से एक सभा की। इस में बोर की ओर से उनके नेता बोथा (General Botha) नामक ने बडी योग्यता दिखलाई। सभा की सम्मति से सन् १९०९ ई० में इङ्गलेण्ड की सरकार ने केप ऑफ गुड होप, ट्रांसवाल, नेटाल और आरेंज फ्री स्टेट को मिला कर स्वतन्त्र राज्य (Union of South Africa) स्थापित किया। जनरल बोथा इसका प्रथम प्रधान मन्त्री बना।

मिश्र और सूडान—मिश्र देश रूमसागर के दक्षिण पूर्व में स्थित है। उसका सब से प्रसिद्ध बन्दरगाह सिकन्दरिया है। व्यापारी जहाज, जो स्वेज नहर से होकर यूरप तथा भारतवर्ष के मध्य यात्रा करते हैं, प्रायः कुछ घण्टों के लिये सिकन्दरिया के बन्दरगाह में ठहरते हैं। सूडान

का देश मिश्र के दक्षिण में स्थित है। उन्नीसवीं शताब्दि की मध्यवर्ती वर्षों तक मिश्र टर्की के सुल्तान के आधीन था और सूडान की देखभाल मिश्र का शासक करता था।

मुहम्मदअली का पौत्र इस्माइल पाशा (Ismail Pasha) उस की भांति भला पुरुष न था। उसका व्यय आय से सदा अधिक रहता था। धन उसने अंग्रेजों तथा फ्रांसीसियों से धन उधार ले रक्खा था। जब ऋण अधिक बढ़ गया तो इस्माइल ने उसके लौटाने से कोरा जवाब दे दिया। अंग्रेजों को चिन्ता हुई। मिश्र इङ्गलण्ड तथा भारतवर्ष के मध्यवर्ती व्यापारिक मार्ग पर स्थित था। अतएव अङ्गरेज उसे अपने अधिकार में करना चाहते थे। उन्हों ने सन् १८७९ ई० में इस्माइलपाशा को सिंहासन से उतार कर उसके पौत्र तौफीक (Towfik) को मिश्र का शासक बनाया और ऋण के चुकने का उचित प्रबन्ध किया।

अरेबी पाशा, १८८१ ई०—इसके दो वर्ष पश्चात् मिश्रियों ने अङ्गरेजों, फ्रासीसियों तथा टर्की के सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह किया। इसमें मिश्र की सेना ने जी तोड़ कर भाग लिया। एक सैनिक अफसर जिसका नाम अरेबी पाशा (Arab Pasha) था, विद्रोहियों का नेता बना। विद्रोहियों ने सिकन्दरिया नगर में कुछ अङ्गरेजों को जान से मार डाला। यह समाचार सुन कर प्रधान मन्त्री ग्लेडस्टन के क्रोध की सीमा न रही। उसने फ्रासीसियों से अरेबी पाशा से बदला लेने को कहा, परन्तु फ्रास की सरकार ने कोरा जवाब दे दिया।



ग्लेडस्टन।

अत ग्लेडस्टन की आज्ञा से अङ्गरेजों ने अबले सिकन्दरिया पर गोले बरसा कर शहर की चारदीवारी चूर २ करदी। इसके दो मास पश्चात् उन्हों ने अरबी पाशा को तेल्लक्बीर (Tel el Kabu) के स्थान पर पराजित किया।

अंग्रेज़ी अधिकार का स्थापित होना—तेल्लकबीर के युद्ध से मिश्र देश की स्वतन्त्रता का अन्त हो गया। अङ्गरेजों ने अरेबी पाशा को देशनिकाला देकर लङ्का द्वीप भेज दिया। तौफीक फिर मिश्र का शासक बनाया गया। अङ्गरेजों ने अपनी ओर से स्थानीय सेना को नये ढङ्ग से ठीक किय। तौफीक को आर्थिक प्रबन्ध के विषय में सम्मित देने और उसकी अन्य रीतियों से सहायता करने को एक अङ्गरेजी एजेण्ट नियत हुआ। जैसे २ दिन व्यतीत होते गये इङ्गलैण्ट की सरकार मिश्र देश का प्रबन्ध अपने हाथों में लेती गई यहा तक कि कुछ समय के पश्चात् उसका पदाधिकार इस देश पर भली प्रकार से स्थापित होगया।

पिछले महान् युद्ध के अन्त मे अङ्गरेजों ने मिश्र पर अपना अधिकार कम करके स्वरक्षित राज्य (Protected State) स्थापित किया। उन्होंने मिश्रियों को इस बात का भी विश्वास दिलाया कि जिस समय वे अपना प्रबन्ध स्वय करने के योग्य हो जायेंगे वे मिश्र को स्वतन्त्र कर देंगे, परन्तु अभी तक मिश्र पूर्ण रीति से स्वतन्त्र नहीं हुआ है।

सूडान और महदी—अभी मिश्र देश में अङ्गरेजी शासन भली भाति स्थापित न होने पाया था कि उसके दक्षिण में सूडान प्रदेश में अकस्मात् एक आश्चर्यजनक घटना हुई। कहने को सूडान मिश्र के आधीन था, परन्तु उस में अनेकों स्वतन्त्र शक्तिशाली जातिया रहती थीं। सन् १८८३ ई० में एक मुसलमान ने चारों ओर के मनुष्यों को एकत्रित करके यह घोषणा की कि मैं महदी (Mahdi) हूँ और ससार में ईश्वर की

ओर से इस्लामी राज्य स्थापित करने को आया हूँ * सबों ने उसके कहने को सत्य जाना। महदी ने एक शक्तिशाली दल एकत्रित करके स्वयं को सूडान का स्वामी बना लिया।

गॉर्डन की हत्या, १८८५ ई०—यह समाचार सुन कर ग्लैडस्टन ने गार्डन (Gordon) नामी सेनापति को एक सेना देकर महदी को परास्त करने को सूडान भेजा, परन्तु गार्डन महदी की सेना के सामने ठहर न सका। विवश हो वह भाग निकला। वह मिश्र पहुँचना चाहता था, परन्तु इसके पूर्व कि वह ऐसा कर महदी के सहायकों ने उसे सूडान की राजधानी खरतूम में घेर लिया। एक वर्ष तक वह अपने वीर सैनिकों के साथ शत्रु का सामना करता रहा, परन्तु इङ्गलैण्ड अथवा मिश्र से सहायता आने की कोई आशा नहीं देख पड़ती थी। ग्लेडस्टन सूडान की ओर ध्यान तक न देता था। यह देख महारानी विक्टोरिया को बड़ी चिन्ता हुई। केबिनेट के दो मंत्रियों ने पद त्याग देने की धमकी दी। तब कहीं ग्लेडस्टन ने एक छोटी सेना गार्डन की सहायता को सूडान भेजी। इस निश्चिन्तता के कारण ग्लेडस्टन जैसे सुप्रसिद्ध मंत्री के नाम पर बड़ी कालिमा आती है। अंग्रेजी सेना के सूडान पहुँचने के पूर्व ही गार्डन अपने शूरवीरों सहित महदी के हाथों मृत्यु को प्राप्त हो चुका था। खरतूम पर महदी के सहायकों का अधिकार हो गया। इस हत्याकाण्ड के केवल दो ही दिन पश्चात एक अंग्रेजी सेना मिश्र से खरतूम आई, परन्तु अब क्या हो सकता था।

सूडान विजय, १८९८ ई०—गार्डन के वध के ग्यारह वर्ष तक अंग्रेजी सरकार सूडान के विरुद्ध कुछ न कर सकी। सन् १८९८ में उसने फिर सूडान विजय करने का प्रयत्न किया। महदी की मृत्यु हो

* आजकल भी मनुष्यों का विश्वास है कि किसी समय महदी (मुहम्मद का अनुयायी) इस्लामी राज्य स्थापित करने को जन्म लेगा।

चुकी थी। उसके स्थान पर एक मनुष्य खलीफा (Khalifa) नामक शासन कर रहा था। अङ्गरेजी सेनानायक किचनर (Kitchener) नामी ने खलीफा को ओम्डरमन (Omdurman) के स्थान पर परास्त करके सूडान पर अधिकार कर लिया। अङ्गरेजी सरकार ने मिश्र के शासक से मिल कर उसका उचित प्रबन्ध किया। आजकल सूडान इङ्गलेण्ड की सरकार तथा मिश्र के शासक के आधीन है।

भारतवर्ष—भारतवर्ष भी एक ऐसा देश है जिसे अभी तक स्वराज्य नहीं मिला है। भारतवर्ष में अङ्गरेजी साम्राज्य की नींव क्लाइव ने प्लासी के युद्ध के पश्चात डाली थी। वारन हेस्टिङ्गज ने इसे आवश्यक सुधार करके उसे दृढ़ बना दिया था। इसके पश्चात् लार्ड हेस्टिङ्गज एक प्रसिद्ध गवर्नर जनरल हुआ। सन् १८२३ में, जब वह इङ्गलैण्ड लौट कर गया, तो ठगों तथा पिण्डारियों के नष्ट हो जाने से देश में सुख चैन विराजमान था। कामोरिन अन्तरीप से सतलज नदी तक सारा देश अंग्रेजों के आधीन हो चुका था। इस विस्तृत राज्य के कुछ भागों में अङ्गरेज स्वयं राज्य करते थे और कुछ भाग देशी राजाओं तथा नवाबों के आधीन था, परन्तु वे भी स्वयं को अङ्गरेजों की प्रजा मानते थे।

लार्ड डलहौज़ी, १८४८–५६ ई०—लार्ड डलहौजी के समय में अंग्रेजी राज्य और भी दृढ़ तथा विस्तृत हो गया। डलहौजी ने अनेकों देश जीते थे। दक्षिणी ब्रह्मा और अवध अंग्रेजी राज्य में मिला लिये गये। जब नागपुर और झाँसी के राजाओं की मृत्यु के समय सिंहासन के अधिकारी न मिले, तो डलहौजी ने दोनों राज्यों को अङ्गरेजी राज्य में मिला लिया। कर्नाटक के नवाब की पेन्शन बन्द कर दी गई। जब डलहौजी इङ्गलैण्ड लौटा, उस समय कुछ रियासतों को छोड़ कर सम्पूर्ण भारतवर्ष अङ्गरेजों के अधिकार में आ गया था।

१८५७ ई० का ग़दर—लॉर्ड डलहौज़ी ने कुछ ऐसे सुधार

क्रिय थे जिन से भारतवर्ष निवासियों को बहुत दुःख प्राप्त हुआ था। अत उस के लौटने के दूसरी वर्ष भारतवर्ष में एक गदर हुआ जो मनुष्यों को आजतक स्मरण है। गदर के कई कारण थे। इन में सब से प्रसिद्ध रेल, तार, इत्यादि का बनना तथा कारतूसों के कारण सेनाओं का असन्तुष्ट होना है। हिन्दू तथा मुसलमान सेनाओं ने मिल कर मेरठ शहर में विद्रोह किया। मेरठ से देहली और देहली से कानपुर और लखनऊ इत्यादि नगरों में विद्रोह फैला और धीरे धीरे समस्त उत्तरी भारतवर्ष अङ्गरेजों के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। सिपाहियों के अतिरिक्त इसमें कई हिन्दोस्तानी राजा भी सम्मिलित थे। झाँसी की रानी और नाना साहब ने इस में मुख्य भाग लिया। सैकड़ों अंग्रेजों और भारतवासियों के प्राण व्यर्थ गये। अङ्गरेजी अफसरों में से निकोल्सन और हैवलॉक ने वीरता से काम लिया। नवम्बर सन् १८५७ ई० तक विद्रोही सब स्थानों में परास्त हो गये।

गदर का मुख्य परिणाम—गदर का एक मुख्य परिणाम यह हुआ कि महारानी विक्टोरिया ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन को समाप्त करके भारतवर्ष का शासन अपने अधिकार में ले लिया। अङ्गरेजी राज्य में भारतवर्ष के निवासियों ने बहुत उन्नति की है, परन्तु देशी मर्यादायें नष्ट होती दिखाई देती है।

विक्टोरिया की मृत्यु, १९०१ ई०—२२ जनवरी सन् १९०१ ई० को महारानी विक्टोरिया की मृत्यु हुई। इस समय उसकी आयु ८२ वर्ष की थी। उसने एलिजबेथ और जार्ज तृतीय से भी अधिक समय तक शासन किया। विक्टोरिया सब की प्रिय थी और अपनी प्रजा से अत्यन्त प्रेम करती थी। यद्यपि जब से इङ्गलैण्ड का सिंहासन हनोवरवंश को मिला था राजा की शक्ति प्रथम की अपेक्षा अति क्षीण हो गई थी, परन्तु महारानी विक्टोरिया राज्य कार्य्यों में स्वतन्त्रता-

पूर्वक भाग लेती थी और भिन्न २ दलों के बीच समानता रखती थी। उसके ६४ वर्ष के शासन में इङ्गलैण्ड ने कई प्रकार से उन्नति की। अनेकों उपयोगी आविष्कार हुये और देशों धन तथा सुख बहुत बढ़ गये। अङ्गरेजों ने कई बहुमूल्य देश जीते और उपनिवेशों के शासन की एक नवीन नीति निकाली। विक्टोरिया के शासनकाल में शिक्षा तथा विज्ञान में भी बड़ी उन्नति हुई। कई ऐसे कवि तथा विज्ञानी हुये जिनकी पुस्तकें आज तक



महारानी विक्टोरिया।

चाव से पढ़ी जाती हैं। तीन सुधार बिलों के पास होने से बृटिश द्वीप समूह का शासन मध्यम तथा धनहीन श्रेणियों के हाथों में आ गया। मजदूरों का जीवन सुधर गया था और वे निजी संस्थायें बना कर कारखानों के स्वामियों का विरोध करने लगे थे। आयरलैण्ड निवासियों की दशा सुधर गई थी, परन्तु उनको स्वराज्य अभी तक न मिला था। भारतवर्ष में सन् १८५७ ई० के गदर के पश्चात् कई प्रसिद्ध वाइसराय हुये जिनके शासन को देख कर मनुष्य इस सोचनीय घटना को कुछ २ भूलने लगे।



अभ्यास ।



(१) नीचे कुछ ऐतिहासिक घटनायें दी जाती हैं । उनकी तारीखें लिखो और बताओ कि उनके होने से इङ्गलण्ड को क्या हानि अथवा लाभ हुआ —

सबस्टपोल का घेरा, गॉर्डन का वध, कार्न लाज का स्थगित होना फेनाइन आन्दोलन, विक्टोरिया के पति की मृत्यु ।

(२) क्रिमियन युद्ध के कारण लिखो और बताओ कि उस में भाग लेने से इङ्गलण्ड को क्या लाभ हुआ ?

(३) दक्षिणी अफ्रीका अपना राज्य में किस प्रकार सम्मिलित हुआ ?

(४) सन् १८६७ तथा सन् १८८४ ई० के सुधार बिलों से उस कार्य्य में किस प्रकार से उन्नति हुई जो प्रथम सुधार बिल से प्रारम्भ हुआ था ? क्या तुम बता सकते हो कि अभी इङ्गलैण्ड में एक सुधार बिल की और आवश्यकता थी अथवा नहीं ?

(५) ग्लेडस्टन तथा डिजरेली में क्यों शत्रुता थी ? आयरिश स्वाधीनता के बिल पर इसका क्या प्रभाव पड़ा ?

(६) निम्न लिखित स्थानों में कौनसी ऐतिहासिक घटनायें हुई हैं —

[अ] बालाक्लावा, [ब] रवनूम, [स] सिनोप, [द] नानकिन, [र] क्लोण्टार्फ ।

(७) चार्टिस्ट कौन थे और क्या चाहते थे ? वे अपने उद्देश में फलीभूत क्यों न हुये ?

(८) "पामर्स्टन की विदेशी नीति में आदि से अन्त तक एक विशेष सम्बन्ध है" । यह सम्बन्ध क्या है ? उदाहरण देकर समझाओ ।

(९) महारानी विक्टोरिया के शासनकाल में कौन २ समाज सुधार हुये ?

(१०) यूनियनिस्ट दल किस प्रकार बना था ? वर्तमान काल में इङ्गलैण्ड में कौन सा दल शासन कर रहा है ?

(११) आयरिश स्वाधीनता का बिल क्या था ? उस प्रधान मन्त्री का नाम बताओ जो इसके लिये सब से अधिक उद्योग कर रहा था।

(१२) कनाडा और आस्ट्रेलिया कब और किस प्रकार बृटिश साम्राज्य में सम्मिलित हुये ?

(१३) नीचे दी हुई तारीखों क्यों प्रसिद्ध हैं ?

सन् १८३८, १८४६, १८५७, १८६९, १८७७, १९०१ ई०।

(१४) महारानी विक्टोरिया के समय का आयरलैण्ड का इतिहास स्पष्ट रीति से वर्णन करो।

(१५) [अ] ग्लेडस्टन ने कौन २ सुधार किये थे ?

[ब] विदेशी नीति में वह सफल क्यों न हुआ ?

(१६) सन् १८८२ ई० में अङ्गरेजों ने मिश्र पर क्यों आक्रमण किया ? इसका वर्णन स्पष्ट रीति से करो।

(१७) निम्न लिखित पर नोट लिखो —

बानसर्स आन्दोलन, स्मिथ ओब्रियन, लॉर्ड डरहम जनरल बोथा, बोर युद्ध, केपटेन कुक, एलबामा, पैनी पोस्टेज।

(१८) डिजरेली की पूर्वी नीति क्या थी ? उसके चित्र की तुलना ग्लेडस्टन के चित्र से करो।

(१९) इस पुस्तक के अन्त में तारीखों की जो सूची दी हुई है उसे देख कर महारानी विक्टोरिया के समय की प्रसिद्ध घटनायें याद करो।

(२०) अपने छोटे भाई के नाम एक पत्र लिखो और उस में विक्टोरिया के चरित्र की व्याख्या करो। यह भी लिखो कि तुम विक्टोरिया और एलिजबेथ में से किसको अच्छा समझते हो?

(२१) पृष्ठ ३०६ पर हनोवरवंश का जो वंशवृक्ष दिया हुआ है उसे देख कर यह जानने का प्रयत्न करो कि विलियम चतुर्थ के पश्चात् बृटिश द्वीप समूह का सिंहासन विक्टोरिया को क्यों मिला।

(२२) महारानी विक्टोरिया का शासन इतिहास में किन २ बातों के लिये प्रसिद्ध है।

(२३) उन्नीसवीं शताब्दि में उपनिवेशों के शासन की कौनसी नवीन नीति का प्रयोग हुआ था? इस का अनुकरण होने के क्या कारण थे? इस से कौन २ से देशों ने लाभ उठाया



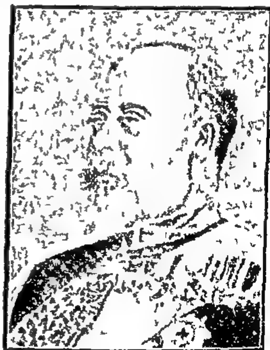
तेतालीसवां अध्याय।



एडवर्ड सप्तम् (१६०१–१६१०)



एडवर्ड का चरित्र—एडवर्ड सप्तम् महारानी विक्टोरिया के सब से बड़े बेटे थे। राजा बनने के समय उनकी आयु लगभग ६० वर्ष की थी। अपनी माता की भांति वह भी प्रजा से अत्यन्त प्रेम करते थे। उसके लिये वह तुच्छ से तुच्छ काम करने को उद्यत रहते थे। सम्राट एडवर्ड जेम्स प्रथम तथा वालपोल की भांति युद्ध के विरोधी थे। उनकी अभिलाषा थी कि यूरप महाद्वीप में प्रत्येक देश शान्ति पूर्वक उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़े और अन्य देशों को किसी प्रकार से उलहना का अवसर न दे। उनके मन्त्री भी इसी चिन्ता में थे कि यूरप की महान शक्तियाँ



एडवर्ड सप्तम्।

परस्पर प्रेम रक्खें और एक दूसरे के अधिकारों को बलात् छीनने का प्रयत्न न करें ।

प्रधान मन्त्री—जिस समय एडवर्ड सप्तम राजा बने, इङ्गलैण्ड में लॉर्ड साल्जबरी का मन्त्रिमण्डल शासन कर रहा था । सन् १९०२ ई० में उसका अन्त हुआ और साल्जबरी के भतीजे मिस्टर बेल्फोर (Mr Balfour) ने यूनियनिस्ट शासन स्थापित किया । दिसम्बर सन् १९०५ ई० में उसका भी अन्त हो गया। अब सर हेनरी कैम्पबेल बैनरमैन (Sir Henry Campbell Bannerman) ने अपना लिबरल मन्त्रिमण्डल स्थापित किया। उसने अप्रैल सन् १९०८ ई० तक शासन किया। इसके पश्चात् लिबरल दल के नेता मिस्टर एसक्विथ (Mr Asquith) प्रधान मन्त्री बने । इन मन्त्रिमण्डलों के समय में कई प्रसिद्ध घटनायें हुईं ।

एडवर्ड की विदेशी नीति—कुछ काल से फ्रांस इङ्गलैण्ड की उन्नति को ईर्षा की दृष्टि से देख रहा था। इङ्गलैण्ड के उपनिवेश कनाडा अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा पृथ्वी के अन्य भागों में स्थापित हो रहे थे। वह पृथ्वी के बड़े २ महाद्वीपों को अपने अधिकार में लाने का प्रयत्न कर रहा था। फ्रांस यह न देख सकता था। मुख्य कर वह इङ्गलैण्ड से उस के मिश्र देश पर अधिकार कर लेने के कारण अत्यन्त अप्रसन्न था । कारण यह था कि फ्रांस स्वय नैपोलियन के समय से मिश्र को अपने अधिकार में लाने और उसके द्वारा पूर्व की ओर बढने का प्रयत्न कर रहा था। सन् १९०४ ई० में इङ्गलैण्ड और फ्रांस के मध्य एक सन्धि हुई, जिसने पारस्परिक भेद को दूर करके एकता का मार्ग खोला। इसी प्रकार एडवर्ड ने सन् १९०५ ई० में जापान और सन् १९०७ ई० में रूस से सन्धि कर ली। परिणाम यह हुआ कि उसके समय में इङ्गलैण्ड को कोई युद्ध न करना पड़ा। यही कारण है जो वह इतिहास में शान्तिप्रिय (Peacemaker) के नाम से प्रसिद्ध है।

समाज सुधार—अन्य देशों से मित्रता होने के कारण पार्लियामेण्ट को भीतरी प्रबन्ध की ओर ध्यान देने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उसने कुछ ऐसे लाभदायक सुधार किये जिनकी प्रजा को अत्यन्त आवश्यकता थी। सब से प्रथम उसकी दृष्टि शिक्षा विभाग पर पड़ी। अभी तक इङ्गलैण्ड में प्रारम्भिक शिक्षा के लिये दो प्रकार के स्कूल थे। प्रथम, वे जो चन्दे से चलते, द्वितीय, वे जिनका व्यय फ़ीसों से दिया जाता था। सरकार प्रति वर्ष कुछ धन दोनों प्रकार के स्कूलों की सहायता के लिये स्वीकार करती थी। मिस्टर बेल्फ़ोर ने, जो इस समय प्रधान मन्त्री था, यह नियम बना दिया कि दोनों प्रकार के स्कूलों को सरकार की ओर से पूरी सहायता मिला करेगी। स्कूलों का प्रबन्ध स्थानीय सभाओं के हाथों में छोड़ दिया गया। इसके छ वर्ष पश्चात् सरकार ने दो नियम और बनाये। प्रथम से यह बात निश्चित हुई कि उन लोगों को, जिन्हों ने जीवन भर परिश्रम तथा सचाई से काम किया है परन्तु जो अपनी भूल अथवा किसी अन्य कारण से वृद्धावस्था के लिये कुछ नहीं बचा सके हैं, ५ शिलिंग प्रति सप्ताह की दर से पेन्शन मिला करेगी। दूसरे नियम से यह बात निश्चित हुई कि अंग्रेजी बालक अनुचित कार्य्यों और दुर्व्यवहारों में भाग न लें। सरकार ने उनका निरीक्षण पुलिस को सौंपा। उनके अभियोग का न्याय करने के लिये अलग न्यायालय खुले। कुछ वर्ष पश्चात् बालकों के स्वास्थ में प्रशंसायोग्य परिवर्तन दिखाई देने लगा।

व्यापारिक संघों की बढ़ती—सरकार ने व्यापारिक संस्थाओं की दशा भी सँभारी। सन् १९०६ ई० के प्रथम कोई पुरुष मजदूरों को काम बंद करने तथा अपने स्वामी का विरोध करने की सम्मति न दे सकता था। यदि कोई मजदूर काम बिगाड़ता, तो उसका हर्जा व्यापारिक संघों को देना पड़ता था। सन् १९०६ ई० में यह दोनों बुराइयां दूर हो गईं अब यह बात निश्चित हुई कि यदि कोई पुरुष मजदूरों को काम बन्द

करने की सम्मति देगा तो वह दोषी नहीं ठहराया जावेगा। दूसरे, यदि कोई मजदूर काम बिगाड़ेगा तो वह स्वयं दण्ड का भागी होगा, नकि व्यापारिक संघ। इन सुधारों से व्यापारिक संघों की संख्या तथा शक्ति बहुत बढ़ गई। वर्तमान समय में मजदूर राजनैतिक आन्दोलन के लिये धन एकत्रित कर सकते हैं और व्यापारिक संघों के भेजे हुये सदस्यों को पार्लियामेण्ट में बने रखने का प्रयत्न कर सकते हैं।

कामन्स तथा लार्डस् में विरोध, १६०६ ई०—उपरोक्त नियम बनाते समय हाउस ऑफ कामन्स और हाउस ऑफ लार्डस् में कभी विरोध नहीं हुआ, परन्तु इसके पश्चात् दोनों में मतभेद होने लगा। उपरोक्त नियमों को कार्य्यरूप में परिणत करने के लिये धन की अत्यन्त आवश्यकता थी। सरकार के पास धन की कमी थी। अतः मिस्टर लायड जार्ज ने, जो इस समय कोष विभाग का मन्त्री था, यह प्रस्ताव पार्लियामेण्ट के सम्मुख रक्खा कि सरकार को चाहिये कि शक्कर, तम्बाकू और अन्य नशीली वस्तुओं का कर बढ़ा दे और कुछ एक नवीन कर भी लगाये जिन से धन की कमी पूरी हो जावे। सन् १९०९ ई० के बजट में यह कर सम्मिलित कर लिये गये। हाउस ऑफ कॉमन्स ने बजट स्वीकार कर लिया, परन्तु हाउस ऑफ लॉर्डस् ने उसे अस्वीकार किया। इस पर हाउस ऑफ कॉमन्स के सदस्यों ने बड़ा कोलाहल मचाया। कारण यह था कि इङ्गलैण्ड में यह एक प्राचीन नियम था कि लॉर्डस् धन के सम्बन्ध में कॉमन्स की सम्मति के विरुद्ध कभी कोई कार्य्य नहीं करते थे और प्रति वर्ष बजट शान्तिपूर्वक स्वीकार कर लेते थे। परन्तु जब सन् १९०९ ई० में लॉर्डस् ने बजट स्वीकार न किया तो कॉमन्स ने एक मत हो कर लॉर्डस् के इस अनुचित कार्य्य के विरुद्ध अप्रसन्नता प्रकट की। फिर वे अपनी अप्रसन्नता को नियम रूप में परिणत करने का उद्योग करने लगे, परन्तु एडवर्ड सप्तम् के शासनकाल में वे ऐसा न कर सके।

जब सन् १९०९ ई० का बजट दूसरी बार हाउस ऑफ लॉर्डस् में आया, तो लॉर्डस् ने उसे स्वीकार कर लिया। इस प्रकार कॉमन्स की विजय हुई।

एडवर्ड की मृत्यु, १९१० ई०—इसके प्रथम कि कॉमन्स लॉर्डस् को शक्तिहीन करने में सफल हों, एडवर्ड की मृत्यु हो गई। बृटिश द्वीपसमूह, कनाडा, आस्ट्रेलिया, भारतवर्ष और दक्षिणी अफ्रीका सभी ने शोक मनाया।



अभ्यास।



(१) एडवर्ड सप्तम शान्तिप्रिय क्यों कहलाते थे?

(२) एडवर्ड सप्तम के शासनकाल में अंग्रेजी मन्त्रियों ने समाज सुधार किस प्रकार से किया?

(३) सन् १९०९ में कामन्स तथा लॉर्डस् में क्यों विरोध हुआ? दोनों में से कौन उचित मार्ग पर थे?



चवालीसवां अध्याय।



जार्ज पञ्चम (१९१०-   )



सम्राट जार्ज का स्वभाव—हमारे सम्राट जार्ज पञ्चम एडवर्ड सप्तम के द्वितीय पुत्र हैं। उनके ज्येष्ठ भ्राता एलबर्ट की मृत्यु सन् १८९२ ई० में हो चुकी थी, अतएव एडवर्ड सप्तम की मृत्यु पर जार्ज पञ्चम ने बृटिश द्वीपसमूह के सिंहासन को सुशोभित किया। राजा बनने के समय उनकी आयु लगभग ४५ वर्ष की थी। अतएव वे राज्य के शासन प्रबन्ध को भली भांति समझते थे। सम्राट जार्ज बड़े दयालु, चतुर, शीलवान् तथा उदारचरित्र राजा हैं। परन्तु वह महारानी विक्टोरिया की भांति राजनैतिक बातों में हस्तक्षेप नहीं कर सकते क्योंकि आजकल प्रधान मन्त्री की शक्ति बहुत बढ़ी हुई है।

(अ) आन्तरिक घटनायें।

पार्लियामेण्ट एक्ट, १९११ ई०—जार्ज पञ्चम के राजा बनते ही हाउस ऑफ कॉमन्स ने लॉर्डस् को शक्तिहीन करने का उपाय किया। उन्हों ने इस अभिप्राय से एक बिल स्वीकार कराने का प्रयत्न किया, परन्तु लॉर्डस् ने उसे स्वीकार न किया। इस पर मिस्टर एस्क्विथ के कहने से सम्राट जार्ज ने लॉर्डस् को यह धमकी दी कि यदि तुम इस बिल को अस्वीकार करोगे तो हम उसको स्वीकार कराने के लिये कुछ नये लॉर्डस् बना देंगे जो तुम्हारे साथ बैठ कर इस बिल को स्वीकार कर

लॅगे। यही धमकी एक बार महारानी ऐन तथा विलियम चतुर्थ ने हाउस



जार्ज पञ्चम।

ऑफ लॉर्डस् के सदस्यों को दी थी और उसका भी वही परिणाम हुआ

था जो इस समय हुआ, अर्थात् लॉर्डस् ने नवीन बिल को स्वीकार कर लिया। इस से निम्न लिखित बातें निश्चित हुईं —

१—लॉर्डस् धन-सम्बन्धी बिल (Money Bill) को अस्वीकार नहीं कर सकते।

२—यदि कोई अन्य बिल हाउस ऑफ कॉमन्स में तीन बराबर बैठकों में स्वीकार होकर लॉर्डस् के सम्मुख आवेगा और वे तीनों बार उसको अस्वीकार करेंगे तो वह बिल उनकी स्वीकृति के बिना ही नियम बन जावेगा।

३—पार्लियामेण्ट की स्थिति ७ वर्ष की जगह पर, जैसा कि अभी तक नियम था, ५ वर्ष तक रहा करेगी।

४—पार्लियामेण्ट के सदस्यों को प्रति वर्ष वेतन मिलेगा।

इस नियम के बनने से हाउस आफ लार्डस् के अधिकार बिलकुल कम हो गये। अभी तक यदि लार्डस् किसी बिल को स्वीकार न करते तो वह नियम के रूप में परिणत न हो सकता था चाहे कामन्स उसके लिये कितना ही सर क्यों न पटकते, परन्तु भविष्य में ऐसा न हो सकता था।

आयरिश स्वाधीनता का तीसरा बिल, १९१२-१४ ई०— नवीन नियम कितना लाभदायक था यह बात सन् १९१४ ई० में दो बार सिद्ध हुई। प्रथम, आयरिश स्वाधीनता के बिल के विषय में, दूसरे वेल्स की गिर्जा के सुधार के विषय में। सन् १८८६ ई० और सन् १८९३ ई० में ग्लेडस्टन ने आयरिश स्वाधीनता के बिल के स्वीकार कराने का भरसक उपाय किया था, परन्तु वह सफल न हो सका था। सन् १९१२—१४ ई० में यह बिल तीन बार हाउस आफ लार्डस् के सम्मुख लाया गया, परन्तु तीनों बार उन्होंने उसे अस्वीकार किया।

इसके पश्चात् वह सन् १९१४ ई० में सन् १९११ ई० के नियम के अनुसार लॉर्ड्स् की स्वीकृति के बिना ही नियम के रूप में परिणत हो गया। आयरलैण्ड के लिये नियम बनाने को पृथक् पार्लियामेण्ट स्थापित हुई, परन्तु कुछ सदस्य आयरलैण्ट से इङ्गलैण्ड की पार्लियामेण्ट में बैठने को आते रहे। आयरलैण्ड की पार्लियामेण्ट वाह्यनीति, सेना, समुद्री बेड़ा इत्यादि के सम्बन्ध में नियम न बना सकती थी।

वेल्स की गिर्जा का सुधार, १९१४ ई०—दूसरा नियम जिस के लिये सन् १९११ ई० का नियम अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ, वेल्स की गिर्जा से सम्बन्ध रखता है। इस के द्वारा अंग्रेजी सरकार ने वेल्स की गिर्जा से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया और गिर्जा का प्रबन्ध करने के लिये एक सभा स्थापित हुई। हाउस ऑफ लॉर्ड्स् के सदस्य इस बिल को भी स्वीकार न करते थे, परन्तु सन् १९११ ई० के नियम द्वारा यह बिल भी उनकी सम्मति के बिना ही नियम बन गया। लार्ड्स् अपना सा मुंह लिये रह गये।

चतुर्थ सुधार बिल, १९१८ ई०—उपरोक्त नियमों के बनने के चार वर्ष उपरान्त लिबरल दल ने चौथा सुधार बिल पास कराया। तीन सुधार बिलों के स्वीकार होने पर भी समस्त प्रजा को वोट देने का अधिकार न मिल सका था। स्त्रियों को अभी तक न पार्लियामेण्ट में बैठने की आज्ञा थी और न सदस्य निर्वाचन की। चतुर्थ सुधार बिल से यह बुराई दूर हो गई। भविष्य में उन स्त्रियों को सदस्य निर्वाचन करने की आज्ञा मिल गई जिनकी आयु कम से कम ३० वर्ष की थी और जो नागरिक कौंसिल के लिये सदस्य भेजती थीं, अथवा जो उसके लिये सदस्य निर्वाचन करनेवाले पुरुषों से विवाहित थीं। इसके अतिरिक्त स्त्रियाँ स्वयं पार्लियामेण्ट की सदस्य भी बन सकती थीं। नवीन सुधार बिल से पुरुषों को भी बड़ी संख्या में सदस्य निर्वाचन करने का अधिकार मिला। भविष्य में वे पुरुष, जिनकी आयु कम से कम २१ वर्ष की

थी और जो ६ महीने अथवा अधिक से था तो कोई व्यापारिक सम्पत्ति के स्वामी थे अथवा किसी व्यापारिक स्थान में रहते थे, सदस्य निर्वाचन कर सकते थे। इस प्रकार चतुर्थ सुधार बिल के अनुसार इङ्गलैण्ड में वर्तमान समय में लगभग प्रत्येक युवा स्त्री तथा पुरुष पार्लियामेण्ट का सदस्य बन सकता है और उसके लिये सदस्य निर्वाचन कर सकता है।

शिक्षा सुधार, १६१८ ई०—जिस वर्ष चौथा सुधार बिल पास हुआ उसी वर्ष शिक्षा के प्रचार के लिये भी एक नियम बना। एडवर्ड सप्तम के शासनकाल में सरकार ने समस्त स्कूलों को समान सहायता देना स्वीकार किया था। नवीन नियम से यह बात निश्चित हुई कि १४ वर्ष तक की आयु वाले बालकों को शिक्षा पाना अनिवार्य्य है। बालकों का स्वास्थ्य ठीक रखने का आवश्यक प्रबन्ध हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा पानेवाले बालकों को मुफ्त शिक्षा मिलने लगा। यह बात भी निश्चित हो गई कि किस आयु वाले बालक कितने घण्टों तक शिक्षा पावें।

गवर्नमेंट आफ़ आयरलैंड एक्ट, सन् १६२० ई०—उपरोक्त सुधार करने के पश्चात् सरकार को अपना ध्यान आयरलैण्ड की ओर आकर्षित करना पड़ा। कुछ आयरलैण्ड निवासी पृथक् पार्लियामेण्ट स्थापित होने पर भी सन्तुष्ट न हुये थे। कारण यह था कि उत्तरी और दक्षिणी प्रान्त अलग २ पार्लियामेण्ट स्थापित करना चाहते थे। सन् १९२० ई० में अङ्गरेजी सरकार ने एक नियम (Government of Ireland Act) बनाया जिस से उत्तरी और दक्षिणी आयरलैण्ड में अलग २ पार्लियामेण्ट स्थापित हुई, परन्तु पहले की भांति आयरलैण्ड की पार्लियामेण्ट सेना, बेड़ा, वाह्यनीति आदि के विषय में नियम न बना सक्ती थी।

आयरलैंड को स्वराज्य की प्राप्ति, १६२१ ई०-- नवीन नियम के बनने से भी आयरलैण्ड निवासियों की समस्त इच्छायें पूर्ण न हुईं। वे वास्तव में आयरलैण्ड में अमेरिका के संयुक्तप्रदेश की भाँति

स्वतन्त्र शासन स्थापित करना चाहते थे। उनका कथन था कि आयरलैण्ड के निवासियों को देशी शासन के सम्पूर्ण अधिकार मिलने चाहिये और इङ्गलैण्ड की सरकार को आयरलैण्ड के शासन से कोई सम्बन्ध न रखना चाहिये। इङ्गलैण्ड की सरकार ने आयरलैण्ड निवासियों की बात स्वीकार कर ली। सन् १९२१ ई० में आयरलैण्ड में स्वतन्त्र शासन स्थापित हुआ। दो पार्लियामेण्टों के स्थान पर एक पार्लियामेन्ट बनी। मिस्टर डि वलेरा (Mr de Valera) आयरलैण्ड का प्रथम प्रेसीडेण्ट बना। आजकल आयरलैण्ड की गणना भी डुमानियन्स में होती है।

(व) महान् युद्ध (१९१४--१९१८)।

यूरपीय महान् युद्ध का प्रारम्भ सन् १९१४ ई० में हुआ। इसमें यूरप की समस्त महान् शक्तियाँ और अनेकों छोटे देश, अमेरिका तथा जापान सम्मिलित हुये। युद्ध स्थल, जल और आकाश तीनों पर हुआ। लाखों मनुष्यों का परलोकगमन हुआ। सभी देशों की हानि हुई। जर्मनी का तो पूर्णतया पतन हो गया, और उचित भी यही था क्योंकि महान् युद्ध का सब से बड़ा उत्तरदायी वही था।

कैसर की इच्छायें—जर्मनी का सम्राट केसर विलियम वीर, निपुण, साहसी तथा उत्साही पुरुष था। उसकी इच्छा थी कि जिस प्रकार अङ्गरेजी साम्राज्य सारे संसार में विस्तृत है उसी भांति जर्मन साम्राज्य भी समस्त भूमण्डल में फैल जाय। जर्मनी की बढ़ती आसपास के देशों की विजय करके ही हुई थी, अतएव यदि कैसर सारे भूमण्डल को विजय करने का स्वप्न देख रहा था तो कोई आश्चर्यजनक बात न थी। वह भारतवर्ष में पहुचने के हेतु बर्लिन से कुस्तुनतुनिया, बगदाद तथा फारिस होकर अफगानिस्तान तक रेल की सड़क बनाने की चिन्ता में था। यद्यपि कुछ वर्ष पूर्व यूरप की अनेकों शक्तियाँ, जिनमें जर्मनी भी सम्मि

लित थी, हेग नगर में युद्ध सामग्री के कम करने की शपथ खा चुकी थीं, परन्तु कैसर बराबर युद्ध सामग्री एकत्रित करने में सलग्न था। जर्मनी के कार्यालय तोपों, बारूद, वायुयान तथा भयानक गैसों के बनाने में चौबीसो घण्टे काम कर रहे थे।

आस्ट्रियन आर्च ड्यूक का वध, २८ जून १९१४ ई०

जब कैसर युद्ध सामग्री को उपार्जन किये बैठा था तब बलकान प्रायद्वीप में एक ऐसी घटना हुई जिसने सारे यूरुप में खलबली मचा दी। २८ जून सन् १९१४ ई० को आस्ट्रिया का आर्चड्यूक (राजकुमार) फर्डीनेण्ड अपनी स्त्री के साथ बोसिनिया की राजधानी सेरेजवो (Serajevo) में भ्रमण कर रहा था। अचानक किसी ने उस पर गोली चलाई। गोली के लगते ही राजकुमार की लोथ पृथ्वी पर गिर पड़ी। इस घटना का समाचार फैलते ही समस्त यूरुप में कोलाहल मच गया। बोसिनिया का देश आस्ट्रिया के राजा के आधीन था, परन्तु उसके निवासियों में से सर्बियन जाति के मनुष्य सर्बिया के राजा की अध्यक्षता में आस्ट्रिया से स्वाधीन होने की चेष्टा कर रहे थे। गोली चलानेवाला सर्बियन जाति का मनुष्य था। इस कारण आस्ट्रिया के राजा ने सर्बियाकी सरकार को राजकुमार के वध का उत्तरदायित्व ठहराया। आस्ट्रिया और सर्बिया में पूर्व काल ही से शत्रुता थी। इस कारण सब को उपरोक्त घटना में सर्बिया के आँख दिखाने का विश्वास हो गया। यह बात आस्ट्रिया के राजा ने सर्बिया की सरकार को ४८ घण्टे के भीतर क्षमा माँगने और भविष्य में उसके विरुद्ध कोई कार्य्य न करने की शपथ खाने के लिये लिखा। सर्बिया की सरकार ने दोनों बातों को स्वीकार कर लिया, परन्तु आस्ट्रिया का राजा शान्त न हुआ।

विरोधी दलों की तैयारियाँ—आस्ट्रिया ने अपने मित्रों में से जर्मनी तथा इटैली को सहायतार्थ लिखा। जर्मनी का सम्राट कैसर

स्वतन्त्र शासन स्थापित करना चाहते थे। उनका कथन था कि आयरलैण्ड के निवासियों को देशी शासन के सम्पूर्ण अधिकार मिलने चाहिये और इङ्गलैण्ड की सरकार को आयरलैण्ड के शासन से कोई सम्बन्ध न रखना चाहिये। इङ्गलैण्ड की सरकार ने आयरलैण्ड निवासियों की बात स्वीकार कर ली। सन् १९२१ ई० में आयरलैण्ड में स्वतन्त्र शासन स्थापित हुआ। दो पार्लियामेण्टों के स्थान पर एक पार्लियामेन्ट बनी। मिस्टर डि वलेरा (Mr de Valera) आयरलैण्ड का प्रथम प्रेसीडेण्ट बना। आजकल आयरलैण्ड की गणना भी डुमानियन्स में होती है।

(व) महान् युद्ध (१९१४--१९१८)।

यूरपीय महान् युद्ध का प्रारम्भ सन् १९१४ ई० में हुआ। इसमें यूरप की समस्त महान् शक्तियाँ और अनेकों छोटे देश, अमेरिका तथा जापान सम्मिलित हुये। युद्ध स्थल, जल और आकाश तीनों पर हुआ। लाखों मनुष्यों का परलोकगमन हुआ। सभी देशों की हानि हुई। जर्मनी का तो पूर्णतया पतन हो गया, और उचित भी यही था क्योंकि महान् युद्ध का सब से बडा उत्तरदायी वही था।

कैसर की इच्छायें—जर्मनी का सम्राट कैसर विलियम वीर, निपुण, साहसी तथा उत्साही पुरुष था। उसकी इच्छा थी कि जिस प्रकार अङ्गरेजी साम्राज्य सारे संसार में विस्तृत है उसी भांति जर्मन साम्राज्य भी समस्त भूमण्डल में फैल जाय। जर्मनी की बढ़ती आसपास के देशों को विजय करके ही हुई थी, अतएव यदि कैसर सारे भूमण्डल को विजय करने का स्वप्न देख रहा था तो कोई आश्चर्यजनक बात न थी। वह भारतवर्ष में पहुचने के हेतु बर्लिन से कुस्तुनतुनिया, बगदाद तथा फारिस होकर अफगानिस्तान तक रेल की सड़क बनाने की चिन्ता में था। यद्यपि कुछ वर्ष पूर्व यूरप की अनेकों शक्तियाँ, जिनमें जर्मनी भी सम्मि

लित थीं, हेग नगर में युद्ध सामग्री के कम करने की शपथ खा चुकी थीं, परन्तु कैसर बराबर युद्ध सामग्री एकत्रित करने में संलग्न था। जर्मनी के कार्यालय तोपों, बारूद, वायुयान तथा भयानक गैसों के बनाने में चौबीसों घण्टे काम कर रहे थे।

आस्ट्रियन आर्च ड्यूक का वध, २८ जून १९१४ ई०

जब कैसर युद्ध सामग्री को उपयुक्त किये बैठा था तब बल्कान प्रायद्वीप में एक ऐसी घटना हुई जिसने सारे यूरप में खलबली मचा दी। २८ जून सन् १९१४ ई० को आस्ट्रिया का आर्चड्यूक (राजकुमार) फर्डीनेण्ड अपनी स्त्री के साथ बोसिनिया की राजधानी सेरेजवो (Serageio) में भ्रमण कर रहा था। अचानक किसी ने उस पर गोली चलाई। गोली के लगते ही राजकुमार की लोथ पृथ्वी पर गिर पड़ी। इस घटना का समाचार फैलते ही समस्त यूरप में कोलाहल मच गया। बोसिनिया का देश आस्ट्रिया के राजा के आधीन था परन्तु उसके निवासियों में से सर्बियन जाति के मनुष्य सर्बिया के राजा की अध्यक्षता में आस्ट्रिया से स्वाधीन होने की चेष्टा कर रहे थे। गोला चलानेवाला सर्बियन जाति का मनुष्य था। इस कारण आस्ट्रिया के राजा ने सर्बियाकी सरकार को राजकुमार के वध का उत्तरदायित्व ठहराया। आस्ट्रिया और सर्बिया में पूर्व काल ही से शत्रुता थी। इस कारण सब का उपरोक्त घटना में सर्बिया के षड्यन्त्र से होने का विश्वास हो गया। यह बल आस्ट्रिया के राजा ने सर्बिया की सरकार को ४८ घण्टे के भीतर क्षमा माँगने और भविष्य में उसके विरुद्ध कोई कार्य्य न करने की शपथ खाने के लिये लिखा। सर्बिया की सरकार ने दोनों बातों को स्वीकार कर लिया, परन्तु आस्ट्रिया का राजा शान्त न हुआ।

विरोधी दलों की तैयारियाँ—आस्ट्रिया ने अपने मित्रों में से जर्मनी तथा इटली को सहायतार्थ लिखा। जर्मनी का सम्राट कैसर

विलियम तो युद्ध करने के लिये पूर्व ही से प्रस्तुत था। उसने आस्ट्रिया की प्रार्थना तुरन्त ही स्वीकार कर ली, परन्तु इटैली ने उसकी बात न मानी। कारण यह था कि इटैली के राजा की सम्मति में सर्विया का राजा वध की घटना में पूर्णतया निरपराधी था। जब सर्विया के राजा ने जर्मनी और आस्ट्रिया की सेनाओं को सजते देखा तो उसने रूस के जार से सहायता माँगी। रूस का जार प्राचीन काल से ही बलकान प्रायद्वीप की रियासतों का पक्षपाती था। वह केसर की अफगानिस्तान तक रेल की सडक बनाने की इच्छा के भी विरुद्ध था। अत वह सर्विया की ओर से युद्ध करने को तुरन्त उद्यत हो गया। रूस के मित्र फ्रास ने भी उसके कहने से सर्विया की ओर से युद्ध करने को कमर कसी। महाद्वीप की महान् पञ्चशक्तियों में से केवल इङ्गलेण्ड ही ऐसा था जो अभी तक शान्तिपूर्वक बैठा था, परन्तु वह कब तक शान्ति धारण कर सकता था?

इङ्गलैण्ड और महान् युद्ध—जब यह निश्चय हो गया कि फ्रास तथा रूस सर्विया की सहायता करेंगे, तो कैसर ने अपनी सेनायें फ्रास से युद्ध करने तथा फ्रासीसी सेनाओं को बलकान प्रायद्वीप तक पहुचने से रोकने के हेतु पश्चिम की ओर भेजीं, परन्तु बेल्जियम के राजा एल्बर्ट ने उन्हें अपने राज्य में होकर न जाने दिया। कैसर ने क्रोधित होकर अपनी सेना को बेल्जियम से युद्ध करने और उसे नष्ट भ्रष्ट करने की आज्ञा दी। उसका यह कृत्य इङ्गलैण्ड को बहुत बुरा लगा। अंग्रेजी सरकार पूर्व ही से कैसर की युद्ध प्रस्तुति और भारतवर्ष पहुचने की इच्छा के विरुद्ध थी। जर्मनी सेना को बेल्जियम में प्रवेश करने देख प्रधान मन्त्री एस्क्विथ ने अङ्गरेजी सेनायें बेल्जियम भेजीं। इस भाँति महान् युद्ध के प्रारम्भकाल में सर्विया, रूस, फ्रास, बेल्जियम तथा इङ्गलैण्ड एक ओर थे और आस्ट्रिया तथा जर्मनी दूसरी ओर।

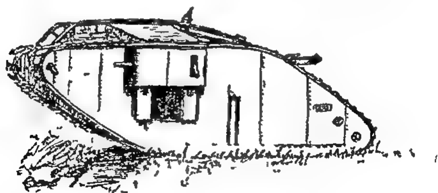
मित्रमंडल की हार, १९१४-१५ ई०—जर्मनी और

आस्ट्रिया के शत्रु पश्चिम तथा पूर्व दोनों दिशाओं में थ। इस कारण उन्हें दोनों दिशाओं में युद्ध करना पड़ा। पश्चिम में उनका सामना बेल्जियम, फ्रांस तथा इङ्गलण्ड स हुआ। पूर्व की ओर रूस और सर्बिया उनके शत्रु थे, परन्तु महान् युद्ध की बड़ी २ लड़ाइयाँ पश्चिम में ही हुईं। कारण यह था कि इस ओर आस्ट्रिया और जर्मनी के सब से शक्तिमान् शत्रु थे। इन में से बेल्जियम बेचारे का तो युद्ध होते ही अन्त हो गया। अभी फ्रांसीसी और अंग्रेजी सेनायें बड़ी सख्या में बेल्जियम तक पहुँचने भी न पाई थीं, कि जर्मनी सेनाओं ने लीज, ब्रुसल्स, नामूर और अन्य प्रसिद्ध नगरों को विजय करके बेल्जियम के तीन चतुर्थांश को विजय कर लिया। नगरों को उन्हों ने अग्नि लगा कर भस्म कर दिया। जो २ निर्दयता का कार्य्य शत्रु ने इस समय बेल्जियमनिवासियों के साथ किये वे अकथनीय हैं। जर्मनी सेनायें प्रसन्नचित्त बेल्जियम को पार करके पेरिस की ओर बढ़ीं। अंग्रेजी और फ्रांसीसी सेनायें उनको न रोक सकीं। पेरिस केवल १५ मील की दूरी पर रह गया। यह मित्रों का सौभाग्य था जो उनकी सेनाओं ने, जो फ्रांसीसी सेनापति जॉफ्रे (Joffre) की अध्यक्षता में थी, मार्न नदी के तट पर शत्रुसेना को पराजित करके पेरिस सरकार को सान्त्वना दी, परन्तु शत्रु ने बेल्जियम के शेष चतुर्थांश पर भी स्वाधिकार कर लिया। पूर्वी सीमा पर भी सर्बिया तथा रूस सब स्थानों पर पराजित हुये। इसके पश्चात् जापान मित्रदल की ओर से और टर्की शत्रुदल की ओर से युद्ध में सम्मिलित हुये।

सन् १९१५ ई० मे भी मित्रदल की बराबर पराजय होती रही। जर्मनी सेना ने रूस की सेना को मेजूरिया प्रान्त में "झीलों के युद्ध" (Battle of the Mazurian lakes) मे पराजित किया। टर्की ने अङ्गरेजी और फ्रांसीसी जलसेना को रूस की सहायतार्थ कालेसागर मे प्रवेश न करने दिया। कैसर की सेना ने समस्त पोलैण्ड विजय कर

लिया । इसके अनन्तर इटैली मित्रदल की ओर से और बल्गेरिया शत्रुदल की ओर से युद्ध में सम्मिलित हुये । बल्गेरिया और आस्टिया की सेनाओं ने सर्बिया विजय करके उसे उसी प्रकार से उजाड़ दिया जिस प्रकार जर्मनी की सेना ने बेल्जियम को उजाड़ दिया था । पश्चिमी सीमा पर भी मित्रदल की बराबर पराजय हो रही थी । यहाँ इतने अंग्रेज मर चुके थे जितने शेष महान् युद्ध में भी नहीं मरे ।

मित्रमंडल की विजय, १९१६--१८ ई०—सन् १९१६ ई० से मित्रमण्डल की विजय प्रारम्भ हुई । जर्मनी सेना ने द्वितीय बार फ्रांस में प्रविसित होने की चेष्टा की, परन्तु वरडुन का ऐतिहासिक गढ़ मार्ग को रोके था । मित्रदल वालों ने वीरतापूर्वक इस गढ़ की रक्षा की, यद्यपि शत्रुसेना महीनों उसको घेरे पड़ी रहीं । इसके पश्चात् उन्हों ने जर्मन सेनाओं को सोम नदी के किनारे इस भांति पराजित किया कि कैसर ने पेरिस विजय करने का विचार त्याग दिया । उसकी सेनायें वरडुन छोड़ कर पीछे हट गईं । इस युद्ध में अङ्गरेजों ने टैंक (Tank) * नामक



टैंक ।

* टैंक एक भांति का मोटर है जो बड़े २ गड्ढों को सुगमतापूर्वक पार कर सकता है, दृढ़ कांटेदार तारों को काट सकता है और तोपों द्वारा चारों ओर प्राणघातक गोले फेंक सकता है ।

मशीन का सब मे प्रथम प्रयोग किया । जब जर्मनी बेडे ने, जो अङ्गरेजी जलसेना क भय से कील नहर के बाहर न निकल सकता था, उसके बाहर आने का उपाय किया तो अङ्गरेजी जलसेना ने उसे इस भांति पराजित किया कि वह उसके भीतर प्रस्थान कर गया ।

सन् १९१६ ई० की भांति सन् १९१७ ई० में भी मित्रदल की विजय होती रही । इस वर्ष के आरम्भ में अमेरिका के सयुक्त प्रदेश और मैक्सिको मित्रदल के पक्ष में सम्मिलित हुये । इस कारण उनका साहस बहुत अधिक हो गया । परन्तु इसी वर्ष बोल्शेविक (Bolshevik) दल* ने जार का वध करके रूस का राज्य अपने अधिकार में कर लिया । कुछ दिनों तक बोल्शेविक मित्रदल की ओर से लडते रहे । इसके पश्चात् उन्हों ने युद्ध में भाग लेना स्थगित कर दिया । इस कारण पूर्वी सीमा पर मित्रदल की शक्ति बहुत घट गई । परन्तु पश्चिमी सीमा पर अङ्गरेजी तथा फ्रांसीसी सेनाओं ने जर्मनी सेना को पीछे हटा दिया । भारतीय सेना ने एशियाई कोचक में तुर्की सेना से युद्ध करके बगदाद और जेरूसलम पर अधिकार कर लिया । केवल इटली में शत्रुसेना ने कुछ विजय प्राप्त की ।

युद्ध का स्थगित होना, नवम्बर १९१८ ई०—सन् १९१८ ई० में भी पूर्व दो वर्षों की भांति मित्रदल की विजय होती रही । सब से बडी विजय पश्चिमी सीमा पर हुई । वहाँ इङ्गलैण्ड, फ्रांस और अमेरिका की सेनाओं ने शत्रुसेना को इस भाँति पराजित किया कि उसे फ्रांस त्यागते ही बना । बेल्जियम के सैकडों ग्राम और उपनगर भी मित्रों के अधिकार में आ गये । इसी समय पश्चिमी एशिया में भी टर्की के कई नगर छीन लिये गये । इन में दमस्कश और एलिपो मुख्य थे । अपने

* धनाढ्य तथा दीनों की भिन्नता को हटाना और ससार की अवनत जातियों की उन्नति करना इस दल का मुख्य उद्देश है ।

विस्तृत राज्य को क्षीण होते देख टर्की के सुल्तान ने सन्धि की प्रार्थना की । उसकी प्रार्थना स्वीकार हुई । टर्की युद्ध के बाहर हो गई । बल्गेरिया ने भी उसका अनुकरण किया । अतः आस्ट्रिया और जर्मनी की शक्ति बहुत घट गई । उन दोनों ने भी युद्ध रोकने की प्रार्थना की । इस कारण ३१ अक्तूबर को आस्ट्रिया और ११ नवम्बर को दिन के ११ बजे जर्मनी से युद्ध स्थगित कर दिया गया । जर्मनी का सम्राट कैसर विलियम ऐसा लज्जित हुआ कि वह राज्यकार्य्य त्याग कर हालैण्ड चला गया । देश का राज्यप्रबन्ध जर्मन राष्ट्र के हाथों में आया ।

पेरिस की सन्धि, १९१९ ई०—सन् १९१९ ई० में फ्रास की राजधानी पेरिस में एक महासभा हुई, जो लगभग छ मास तक होती रही । इसमें यूरप की शक्तियों, अमेरिका, जापान और अङ्गरेजी डुमीनियन्स के प्रतिनिधियों ने भाग लिया । बड़े विचार के पश्चात् सबों ने सन्धि की प्रतिज्ञायें निश्चित कीं । ये प्रतिज्ञायें पेरिस के सन्धिपत्र में सम्मिलित हुईं । इन प्रतिज्ञाओं द्वारा यूरप की शक्तियों की सीमायें उचित प्रकार से निश्चित हुईं । द्वितीय, छोटी २ जातियों को, जो इन शक्तियों के आधीन थीं, स्वतन्त्र बनने का सुअवसर प्राप्त हुआ । तृतीय, भविष्य में युद्ध के रोकने का उचित प्रबन्ध हुआ ।

जर्मनी, आस्ट्रिया और टर्की की सैनिक शक्ति और राज्य का विस्तार कम कर दिये गये । फ्रास और इङ्गलैण्ड के राज्य में यूरप में बहुत कम अन्तर आया । रूस के राज्य का विस्तार भी कम हो गया । उस से बाल्टिक समुद्र के किनारे पर तीन स्वतन्त्र राज्य बने । पोलैण्ड का प्रजातन्त्रराज्य दक्षिण पश्चिम की दिशा में बना । सर्बिया और माण्टीनिग्रो के स्थान पर जूगो स्लेविया (Jugo Slavaia) का राज्य बना । जर्मनी और आस्ट्रिया के राज्यों से कुछ भूमि लेकर जेको-स्लोवेकिया (Czecho Slovakia) का राज्य स्थापित हुआ । इन भिन्न भिन्न राज्यों के स्थापित

करने से महान् शक्तियों की इच्छा पृथक् राष्ट्रों की इच्छानुसार यूरुप के चित्र को सँभालना थी । इस भांति यूरुप की शक्तियों ने वह भूल ठीक की जो उन्हों ने सन् १८१५ ई० में पेरिस की सन्धि के समय की थी । अफ्रीका और पश्चिमी एशिया में जो प्रदेश जर्मनी और टर्की से छीने गये थे वे स्वतन्त्र शासन स्थापित करने योग्य न थे । इस कारण वे इङ्गलैण्ड



तथा फ्रांस के अधिकार में छोड दिये गये । उनके विषय में यह निश्चित हुआ कि जब ये प्रदेश अपना प्रबन्ध स्वयं करने के योग्य हो जावें, तब इङ्गलैण्ड और फ्रांस उन्हें स्वतन्त्र कर दें ।

लीग आफ् नेशन्स—उपरोक्त प्रबन्धों से युद्ध की सम्भावना बहुत कम हो गई। महाशक्तियों ने भविष्य में युद्ध रोकने का और भी एक उचित प्रबन्ध किया। उन्होंने सयुक्त प्रदेश अमेरिका के सभापति मिस्टर विल्सन (Mr Wilson) के कथनानुसार स्वीटजरलैण्ड के प्रसिद्ध नगर जेनेवा में एक लीग आफ नेशन्स (League of Nations) स्थापित की। यह लीग दो बडी सभाओं से बन कर निर्मित हुई है जिनकी बैठक प्राय होती रहती है। देशी झगडों के निर्धारित करने को लीग की ओर से एक न्यायालय नियत है जिसकी बैठक हालैण्ड के प्रसिद्ध नगर हेग में होती है। लीग का मुख्य लक्ष्य संसार की राष्ट्रों के झगडों को निर्धारित करना और यथा शक्ति युद्ध रोकना है। जब कोई राष्ट्र, जो लीग में सम्मिलित है, उसकी आज्ञा का उल्लघन करती है तो उसके शेष सदस्य उसे प्रतिज्ञापत्रानुसार कार्य्य करने पर विवस करते हैं। लीग ऑफ नेशन्स अपने कार्य्य और लक्ष्य में अधिक सफल होती नहीं दीखती है।



अभ्यास।



(१) कामन्स तथा लार्डस का विरोध, जो एडवर्ड सप्तम के शासन काल में प्रारम्भ हुआ था, उनके पुत्र के शासनकाल में किस प्रकार समाप्त हुआ ?

(२) विक्टोरिया की मृत्यु के समय आयरलैण्ड की क्या अवस्था थी ? जार्ज पञ्चम के राज्य काल में आयरलैण्ड किस प्रकार शान्त हुआ ?

(३) आगे सुधार बिलों का चार्ट दिया जाता है। जो खाने खाली हैं उनको भरने का प्रयत्न करो :—

न०	नाम बिल	तारीख	प्रधान मंत्री	किसको वोट देनेका अधिकार मिला
१	पहला सुधार बिल			
२	दूसरा सुधार बिल			
३	तीसरा सुधार बिल			
४	चौथा सुधार बिल			

(४) उन घटनाओं का वर्णन करो जिनके कारण यूरपी महान् युद्ध हुआ था ?

(५) कभी २ मनुष्य कहते हैं कि महान् युद्ध को रोकना आरम्भ ही से असम्भव था । जर्मनी की जो अवस्था जौलाई सन् १९१४ ई० में थी उसका सहायता से इस कथन के सिद्ध करने का प्रयत्न करो ।

(६) इङ्गलैण्ड ने महान् युद्ध में सर्विया की ओर से क्यों भाग लिया ? क्या उसके लिये ऐसा करना उचित था ?

(७) पृष्ठ ५१३ के नक्शे को देखो । उसकी सहायता से पेरिस की सन्धि की प्रतिज्ञाओं को समझने का प्रयत्न करो । क्या तुम बता सकते हो कि पेरिस की सन्धि से यूरपी राष्ट्रों की एक प्राचीन शिकायत किस प्रकार दूर हुई ?

(८) टैंक किसे कहते हैं ? इसका एक चित्र बनाओ । टैंक में कौन से अद्भुत गुण होते हैं ?

(९) तीसरे प्रश्न के चार्ट की भाँति एक चार्ट महान् युद्ध का तैयार करो । भिन्न २ जातियों के युद्ध में सम्मिलित होने और उस से अलग

होने का समय, उनके हानि लाभ इत्यादि को लिखाओ और अन्त में यह लिखो कि यूरुपीय राष्ट्रों ने भविष्य में युद्ध स्थगित करने के लिये क्या प्रबन्ध किया ?



इति।

अंग्रेज़ी राजाओं, प्रधान मन्त्रियों

तथा

प्रसिद्ध घटनाओं की

सूची

(१) प्राचीन इङ्गलैण्ड (५५ बी. सी.--१४८५ ए. डी.)

शताब्दि	राजा	आन्तरिक घटनायें	तारीख ई०	विदेशी घटनायें
		केल्ट जाति का आगमन	७ सौ या ८ सौ बी सी	
		रोमन विजय	५५ बी सी	
		पिक्ट तथा स्काट के आक्रमण	३५ ए डी	
		अँग्रेजों का आगमन	४४९	
		केण्ट का ईसाई मत स्वीकार करना	५९७	
		समस्त इङ्गलैण्ड का ,, ,,	६६४	
		थ्यूडोर के सुधार	६७२	
		डेन जाति के धावे	७८९	
	एल्फ्रेड (८७१–९०१)	एलफ्रेड तथा डेन्स में सन्धि	८७९	
	हेरोल्ड द्वितीय (१०६६)	नार्मन विजय	१०६६	
	हेनरी द्वि० (११५४-८९)	बेकेट का कण्टरबरी का आर्च विशप बनना	११६२	
	जॉन (११९९–१२१६)	मेगना कार्टा	१२१५	

तेरहवीं शताब्दि	हेनरी तृ० (१२१६–७२)	उन्मत्त पार्लियामेण्ट	१२५८	
		हाउस ऑफ कॉमन्स की उत्पत्ति	१२६५	
	एडवर्ड प्र०(१२७२-१३०७)	पूर्णांत तथा आदर्श पार्लियामेण्ट	१२९५	
	एडवर्ड द्वि० (१३०७–२७)	पार्लियामेण्ट की दो सभाओं का बनना	१३२२	
चौदहवीं शताब्दि	एडवर्ड तृ० १३२७–७७		१३३८	शतवर्षीय युद्ध का प्रारम्भ
			१३४६	क्रेसी का युद्ध
		भयङ्कर मृत्यु (१३४७–५०)	१३४९	
		मजदूरी का नियम	१३४९	
			१३५६	पोटियर्स का युद्ध
			१३६०	ब्रिटिग्नी की सन्धि
		ब्लैक प्रिन्स की मृत्यु	१३७६	
	रिचर्ड द्वितीय (१३७७ ९९)	कृषक विद्रोह	१३८१	
पन्द्रहवीं शताब्दि	हेनरी पञ्चम (१४१३–२२)		१४१५	अगिनकोर्ट का युद्ध
			१४२०	ट्रोयस की सन्धि
	हेनरी षष्ठ (१४२२–६१)		१४२९	जोन ऑफ आर्क
		गुलाबों के युद्ध का प्रारम्भ	१४५३	शतवर्षीय युद्ध का अन्त
		वेकफील्ड तथा सेण्ट एलबन्स के युद्ध	१४६०	

शताब्दि	राजा	आन्तरिक घटनायें	तारीख [illegible] डी	विदेशी घटनायें
पन्द्रहवीं शताब्दि	एडवर्ड चतुर्थ (१४६१-८३)	टोटन का युद्ध	१४६२	
		ट्यूकेसबरी का युद्ध	१४७१	
	एडवर्ड पञ्चम (१४८३)	राजकुमारों का वध	१४८३	लूथर का जन्म
	रिचर्ड तृ० (१४८३-८५)	ट्यूडरवंश का आगमन	१४८५	
(२) ट्यूडरवंश (१४८५--१६०३)				
पन्द्रहवीं शताब्दि	हेनरी सप्तम (१४८५-१५०९)	हेनरी सप्तम का राजा बनना	१४८५	
		लेम्बर्ट सिमनल का विद्रोह, स्टार चेम्बर की स्थापना	१४८७	
		परकिन वारबेक का विद्रोह	१४९२	कोलम्बस अमेरिका खोजता है
		पोनिङ्ग का नियम (आयरलैण्ड)	१४९४	फ्रांस के राजा हेनरी अष्टम का इटली पर आक्रमण
			१४९६	नेदरलैण्डस् से सन्धि
			१४९७	केबट अमेरिका में
			१४९८	वास्को डी गामा भारतवर्ष पहुँचता है

सोलहवीं शताब्दि	मेरी (१५५३–१५५८)	डडले का जाल (षड्यंत्र पत्र)	१५५३	विलोबी तथा चान्सलर की रूस यात्रा
		लेडी जेन ग्रे का वध, पोप से मित्रता, वाट का विद्रोह	१५५४	मेरी तथा फिलिप का विवाह
		मेरी के अत्याचार का प्रारम्भ	१५५५	
			१५५८	केले का हाथसे निकल जाना
	एलिजबेथ (१५५८-१६०३)	प्रधानता का नियम, धार्मिक प्रबन्ध	१५५९	
		मेरी स्टुअर्ट फ्रांस से लौटती है	१५६१	
			१५६२	हाकिन्स हब्शियों का व्यापार प्रारम्भ करता है
		मेरी स्टुअर्ट तथा डार्नले का विवाह	१५६५	
		रिजियो का वध	१५६६	
		डार्नले का वध, बाथवेल से विवाह	१५६७	
		लैंगसाइड का युद्ध, मेरी का इङ्गलैण्ड में आगमन	१५६८	
		उत्तरी प्रान्तों का विद्रोह	१५६९	
		पोप का बुल एलिजबेथ के विरुद्ध	१८७०	
		रिडोल्फी का षडयन्त्र	१५७१	
			१५७२	बारथोलोमियो का वध

शताब्दि	राजा	आन्तरिक घटनायें	तारीख ई०	विदेशी घटनायें
सोलहवीं शताब्दि		वुल्जे का पतन, रिफार्मेशन पार्लियामेण्ट की बैठक, (१५२९-३६)	—१५२९	पोप चार्ल्स पञ्चम के अधिकार में
		अपील का नियम	१५३३	
		प्रधानता का नियम	१५३४	
		हेनरी के विरुद्ध पोप का बुल	१५३५	
		दैवी यात्रा	१५३६	
		इञ्जील का अनुवाद	१५३७	
		कैथोलिक मत की छ० धारायें	१५३९	
		क्रॉम्वेल का पतन	१५४०	
			१५४२	साल्वेमास का युद्ध, मेरी का स्काटलैण्ड की रानी बनना
	एडवर्ड षष्ठ (१५४७-५३)	पिंकी का युद्ध	१५४७	
		डेवनशायर का विद्रोह	१५४८	
		एडवर्ड की प्रथम प्रार्थना पुस्तक	१५४९	
		केट का विद्रोह	१५५०	
		सामर्सेट का वध, दूसरी प्रार्थना पु	१५५२	

सोलहवीं शताब्दि	मेरी (१५५३–१५५८	डडले का जाल (षड्यन्त्र वद्ध)	१५५३	विलोबी तथा चान्सलर की रूस यात्रा
		लेडी जेन ग्रे का वध, पोप से मित्रता, वाट का विद्रोह	१५५४	मेरी तथा फिलिप का विवाह
		मेरी के अत्याचार का प्रारम्भ	१५५५	
			१५५८	केले का हाथ से निकल जाना
	एलिजबेथ (१५५८–१६०३)	प्रधानता का नियम, धार्मिक प्रबन्ध	१५५९	
		मेरी स्टुअर्ट फ्रांस से लौटती है	१५६१	
			१५६२	हाकिन्स हब्शियों का व्यापार प्रारम्भ करता है
		मेरी स्टुअर्ट तथा डार्नले का विवाह	१५६५	
		रिजियो का वध	१५६६	
		डार्नले का वध, बाथवेल से विवाह	१५६७	
		लैंगसाइड का युद्ध, मेरी का इङ्गलैण्ड में आगमन	१५६८	
		उत्तरी प्रान्तों का विद्रोह	१५६९	
		पोप का बुल एलिजबेथ के विरुद्ध	१८७०	
		रिडोल्फी का षड्यन्त्र	१५७१	
			१५७२	बारथोलोमियो का वध

शताब्दि	राजा	आन्तरिक घटनायें	तारीख ई०	विदेशी घटनायें
सोलहवीं शताब्दि			१५७७	ड्रेक का ससार भ्रमण (१५७७–८०)
		डेसमण्ड का विद्रोह, १५८८ तक	१५७६	
		थ्राकमार्टन का षडयन्त्र	१५८४	
			१५८५	लीस्टर नेदरलैण्डस् जाता है
		बैबिङ्टन का षड्यन्त्र	१५८६	
		मेरी स्टुअर्ट का वध	१५८७	फिलप की दाढ़ी में अग्नि
			१५८८	अजेय आर्मेडा की पराजय
		टायरन का विद्रोह	१५६५	
		ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना	१६००	
		एलिजबेथ व पार्लियामेंट में खटपट		
		निर्धनों की सहायता का नियम	१६०१	
		(३) स्टुअर्ट वंश (१६०३--१६८८)		
सत्रहवीं शताब्दि	जेम्स प्रथम (१६०३–२५)	बाई तथा मेन के षडयन्त्र	१६०३	उपनिवेश बसाने के उद्योग (एलिजबेथ)
		हैम्पटन कोर्ट की सभा	१६०४	

सत्रहवीं शताब्दि		बारूद का षड्यन्त्र	१६०५	
			१६०७	वर्जीनिया का दूसरी बार बसाया जाना
		अल्सटर का बसाना	१६०८	
		सेसिल की मृत्यु	१६१२	
		रेले का वध	१६१८	तीसवर्षीय युद्ध (१६१८–४८)
		मेफ्लावर का प्रस्थान	१६२०	
			१६२३	चार्ल्स तथा बकिंघम की मेड्रिड यात्रा
	चार्ल्स प्रथम (१६२५–४९)		१६२७	र्‌ही टापू पर आक्रमण
		पिटीशन ऑफ राइट बकिंघम का वध	१६२८	
		एकादशवर्षीय अनीति राज्य का आरम्भ	१६२६	
		इलियट की मृत्यु	१६३२	
		वेण्टवर्थ आयरलैण्ड जाता है	१६३३	
		जहाजी कर का आरम्भ	१६३५	

शताब्दि	राजा	आन्तरिक घटनायें	तारीख ई०	विदेशी घटनायें
सत्रहवीं शताब्दि		अत्याचार की पराकाष्ठा, हेम्पडन का न्याय, नई प्रार्थना पुस्तक स्काटलैण्ड मे	१६३७	
		प्रथम बिशप युद्ध	१६३९	
		क्षणिक पार्लियामेण्ट, द्वितीय बिशप युद्ध, दीर्घ पार्लियामेण्ट (सन् १६५३ ई० तक)	१६४०	
		स्ट्रेफर्ड का अन्त, आयरिश विद्रोह, ग्राण्ड रिमान्स्ट्रेन्स	१६४१	
		प्रथम घरेलू युद्ध का प्रारम्भ (१६४२–४५), एजहिल	१६४२	
		न्यूबरी का प्रथम युद्ध, सोलिम लीग एण्ड कवनण्ट	१६४३	
		मार्सटन मूर	१६४४	
		नेजबी का युद्ध	१६४५	
		चार्ल्स प्रथम की फाँसी, क्रॉम्वेल आयरलैण्ड में	१६४९	

सत्रहवीं शताब्दि		बोयन का युद्ध	१६६०	
		मैक ऐन के दल की हत्या	१६६२	लाहोग का युद्ध
		जातीय ऋण	१६६३	
		मेरी की मृत्यु, बैंक ऑफ इङ्गलैण्ड	१६६४	
			१६६५	नामूर का घेरा
			१६६७	रिजविक की सन्धि
			१७००	स्पेन के चार्ल्स द्वि की मृत्यु
अठारहवीं शताब्दि		एक्ट ऑफ सेटूलमेण्ट	१७०१	
	महारानी ऐन (१७०२–१७१४)	गुडोलफिन का मन्त्रित्व	१७०२	स्पेनीय उत्तराधिकार का युद्ध (१७०२–१७१३)
			१७०४	जिब्राल्टर का विजय, ब्लेन०
			१७०६	रेमेलीज का युद्ध
		इङ्गलेण्ड तथा स्काटलैण्ड का संयोग	१७०७	
			१७०८	उडेनार्ड का युद्ध
		शेचरल का अभियोग	१७०९	मालप्लाके का युद्ध
		हार्ले तथा सेण्ट जॉन का मन्त्रित्व	१७१०	
		आकजनल कन्फार्मिटी एक्ट, दक्षिणी सागर की कम्पनी	१७११	

शताब्दि	राजा	आन्तरिक घटनायें	तारीख ई०	विदेशी घटनायें
सत्रहवीं शताब्दि			१६६८	इङ्गलैण्ड, हालैण्ड तथा स्वीडेन की सन्धि
			१६७०	डोवर की गुप्त सन्धि
			१६७२	तृ० डच युद्ध (१६७२ ७४)
		डेन्बी, टेस्ट एक्ट	१६७३	
		पोपिश षड्यन्त्र, डेन्बी का पतन	१६७८	
		हेबियस कार्पस एक्ट	१३७९	
	जेम्स द्वि० (१६८५–८८)	मानमथ का विद्रोह	१६८५	
		धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा, मेगडेलन कालेज का सुधार	१६८७	
		पुत्र की उत्पत्ति, विशप का अभियोग, रक्तहीन क्रान्ति	१६८८	

(४) इङ्गलैण्ड सन् १६८८ ई० के पश्चात् (१६८८–१८१५)

शताब्दि	राजा	आन्तरिक घटनायें	तारीख ई०	विदेशी घटनायें
	विलियम (१६८९–१७०२) मेरी (१६८९–९४)	विलियम तथा मेरी का सिंहासनारूढ़ होना, बिल ऑफ राइट्स, टालरेशन एक्ट, ह्विगदल का प्रबन्ध	१६८९	अंग्रेजी उत्तराधिकार का युद्ध (१६८९–९७)

सत्रहवीं शताब्दि		बोयन का युद्ध	१६९०	
		मैक ऐन के दल की हत्या	१६९२	लाहोग का युद्ध
		जातीय ऋण	१६९३	
		मेरी की मृत्यु, बैङ्क ऑफ इङ्गलैण्ड	१६९४	
			१६९५	नामूर का घेरा
			१६९७	रिजविक की सन्धि
			१७००	स्पेन के चार्ल्स द्वि० की मृत्यु
अठारहवीं शताब्दि		एक्ट ऑफ सेट्लमेण्ट	१७०१	
	महारानी ऐन (१७०२–१७१४)	गुडोलफिन का मन्त्रित्व	१७०२	स्पेनीय उत्तराधिकार का युद्ध (१७०२–१७१३)
			१७०४	जिब्राल्टर का विजय, ब्लेन०
			१७०६	रेमेलीज का युद्ध
		इङ्गलैण्ड तथा स्काटलैण्ड का संयोग	१७०७	
			१७०८	ऊडेनार्ड का युद्ध
		शेवरल का अभियोग	१७०९	माल्प्लाके का युद्ध
		हार्ले तथा सेण्ट जॉन का मन्त्रित्व	१७१०	
		आक्केजनल कन्फार्मिटी एक्ट, दक्षिणी सागर की कम्पनी	१७११	

शताब्दि	राजा	प्रधान मन्त्री	आन्तरिक घटनायें	तारीख ईसवी	विदेशी घटनायें
उन्नीसवीं शताब्दि		पामर्स्टन फ० १८५५ ई०		१८५६	पेरिस की सन्धि
				१८५७	हिन्दुस्तानी गदर
		डर्बी फ १८५८ई०		१८५८	ईस्ट इण्डिया कम्पनी का अन्त
		पामर्स्टन जून १८५९ ई०			
			विक्टोरिया के पति की मृत्यु	१८६१	अमेरिका का घरेलू युद्ध (१८६१–६५)
		रसल नव० १८६५ ई०	फेनाइन आन्दोलन, १८६७ तक	१८६५	
		डर्बी, जून १८६६ई०	दूसरा सुधार बिल	१८६७	कैनाडा की डुमीनियन
		डिजरेली, फ० १८६८ ई०		१८६९	स्वेज नहर का बनना
		ग्लेडस्टन, दि० १८६८ ई०	आयरलैण्ड में कृषी सुधार, प्रारंभिक शिक्षा सम्बन्धी नियम	१८७०	फ्रांस तथा प्रशिया का युद्ध
			बैलट एक्ट	१८७२	
		डिजरेली, १८७४ ई०		१८७६	बल्गार्स पर अत्याचार

उन्नीसवीं शताब्दि			विक्टोरिया "भारतवर्ष की सम्राज्ञी" की उपाधि ग्रहण करती है	१८७७	रूस तथा टर्की का युद्ध
				१८७८	बर्लिन की सन्धि
				१८७९	जूलू युद्ध
		ग्लेडस्टन, १८८० ई		१८८१	पहला बुअर युद्ध
				१८८२	मिश्र में विद्रोह
			तीसरा सुधार बिल	१८८४	
				१८८५	गार्डन का वध
		सालजबरी, १८८५ ई	प्रथम स्वराज बिल	१८८६	
		ग्लेड १८८६ ई			
		सालज १८८६ ई	मुफ्त शिक्षा की प्रथा	१८९१	
		ग्ले १८९२ ४ ई	द्वितीय स्वराज बिल	१८९३	
		सालज १८९५ ई	विक्टोरिया की डायमण्ड जुब्ली	१८९७	डुमीनियन्स के प्रतिनिधियों की पहली सभा
				१८९८	सूडान विजय
				१८९९	दूसरा बूअर युद्ध
				१९००	आस्ट्रेलिया की डुमीनियन

शताब्दि	राजा	प्रधान मन्त्री	आन्तरिक घटनायें	तारीख ईसवी	विदेशी घटनायें
बीसवीं शताब्दि	एडवर्ड सप्तम, (१९०१-१०)		विक्टोरिया की मृत्यु	१९०१	
		बेफ्लोर, १९०२ ई	शिक्षा सम्बन्धी नियम	१९०२	
				१९०४	रूस तथा जापान का युद्ध
		हेनरी कैम्पबेल बैनरमेन, १९०५ ई०			
		मिस्टर एसक्विथ, १९०८ ई०	वृद्धों की पेनशन का नियम	१९०८	
				१९०९	अफ्रीकन डुमीनियन
	जार्ज पञ्चम, (१९१०—)		पार्लियामेण्ट एक्ट	१९११	
			तीसरा स्वराज्य बिल	१९१४	महान् युद्ध (१९१४ १९)
		लायड जार्ज, १९१८–२२ ई	चौथा सुधार बिल	१९१८	वारसेल्स की सन्धि
			गवर्नमेण्ट ऑफ आयरलेण्ड एक्ट	१९२०	
			आयरलैण्ड से सन्धि	१९२१	

REVIEWS OF THE LAST EDITION

Dr Ishwari Pershad D Litt, Allahabad, says —

I have read your History of England in the Vernacular with great interest To me it seems well adapted or the purpose which it is intended to fulfil

The narration is clear and straightforward and the presentation of historical facts fair and attractive I wish your venture every success

Mr Chand Behari Lal M A, L T of Govt High School Amroha, writes —

Babu Ram Krishna Mathur, M A is to be congratulated on his bringing out the Urdu and Hindi editions of a History of England It covers the syllabus prescribed for the High School Examination of the U P Intermediate Board and appears to be very popular with the students

It was probably one of the earliest books of its kind in the market and also one of the best I have seen, when its subject matter, size and price are taken into account The boys of this school have preferred it to all others and I think they are right